

---

Printed by  
PUNDIT KRISHNA GOPAL MISHRA  
at the  
B. L. PRESS

1-2, Machhabhar Street, Calcutta. Except pp. 1-62  
Printed by Ramdhan Singh at the Vishvavinode Press, Azimganj.

AND

Published by V. J. JOSHI, Hony. Manager,  
Jaina Vaidika Sahitya Shastra Mala Office, Benares City.

---

# जैन लेख संग्रह ।

कतिपय चित्र और आवश्यक तालिकाओं से युक्त ।

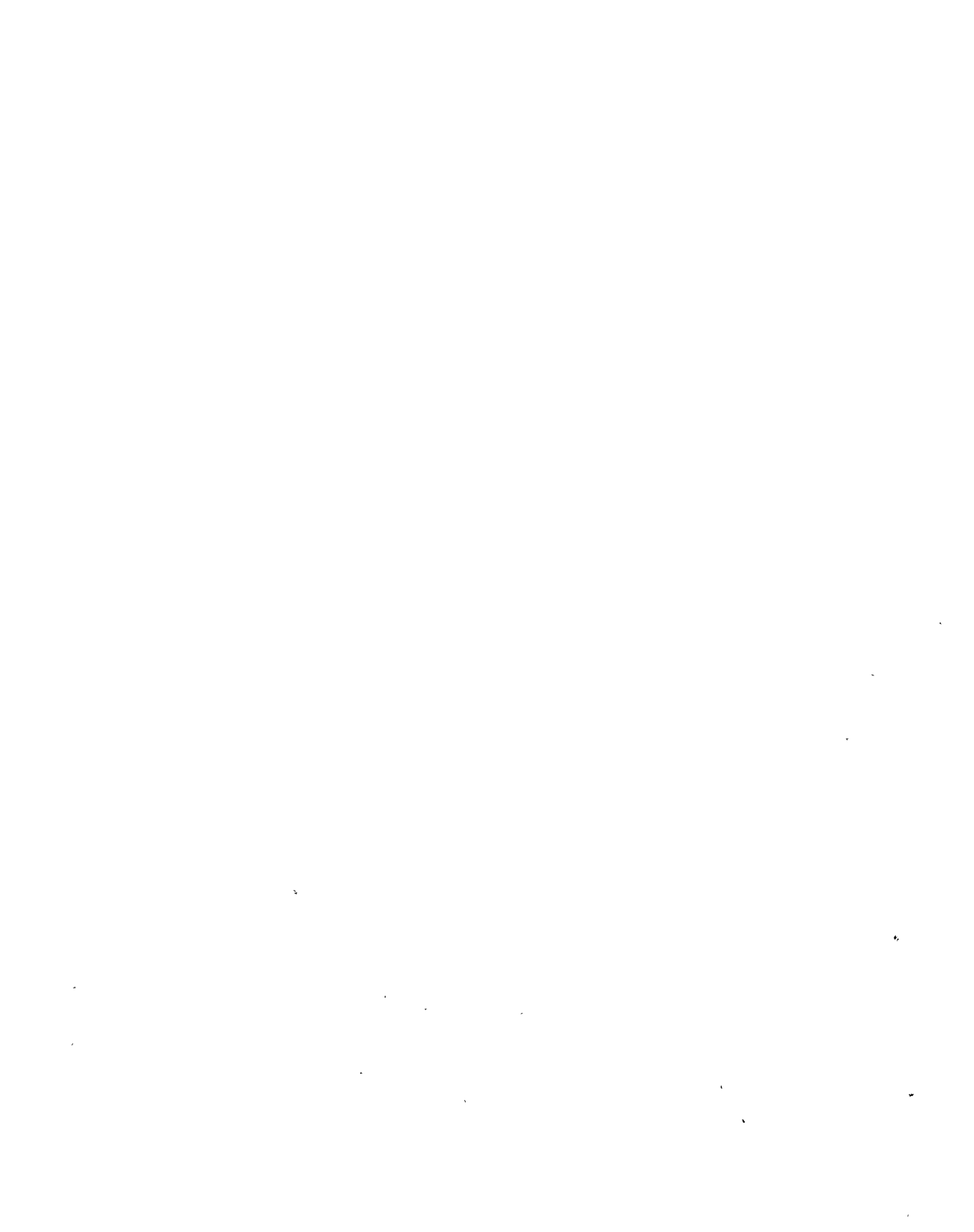
## प्रथम खण्ड ।

संग्रहकर्ता

पूरणचन्द्र नाहर, एम. ए., वि. एल.,  
बकील, हाईकोर्ट, रयाल एसियाटिक सोसायटी, एसियाटिक  
सोसायटी बेंगल, रिसर्च सोसाइटी बिहार-उद्दिसा जादि के  
मेंबर; विभवविद्यालय कलकत्ता के परीक्षक इत्यादि २

कलकत्ता

पोस्संवत् २४४४



# MAIN INSCRIPTIONS.

## जैन लेख संग्रह ।

भारतके प्राचीन इतिहासके प्रमाणोंके प्रधान साधन लेख ही हैं। विशेषतः जैनियोंके सिद्धांतके पार इतिहासके अभाव में इन्हों के लेखों का संग्रह बहुत ही आवश्यक है। इतिहास का बहुतसा भाग शिलालेख पर निर्भर है। जो बात शिलालेखसे जानी जा सकती है वह इतिहाससे नहीं, क्योंकि इतिहास में समय परिवर्तनसे फेरफार पड़ जाता है किन्तु पत्थर पर जो कुछ लिखा गया वह पत्थर के अन्त तक बना रहता है। अतएव लेखों से इतिहास को बहुत सी सहायता मिल जाती है। यह आनन्दकी बात है कि आज कल बहुतसे सज्जनोंकी इस पर दृष्टि भी आकर्षित हुई है। मैं इस विषय पर अधिक लिखकर पाठकोंका समय नष्ट करना नहीं चाहता, किन्तु संक्षेपमें कुछ सूचना देना चाहता हूँ ताकि इस ओर और भी लोग ध्यान देकर ऐसे संग्रहसे लाभ उठायें और मेरा परिचय सफल करें। मुझे लेखों का बहुत दिनों से प्रेम था, खास करके हमारे जैन लेख देखनेकी मेरा जो हुराहुरा हो जाता था, परन्तु पढ़नेकी इच्छा, पत्रिका, रिपोर्ट और स्वदेशी भाषाके पत्र या पुस्तकों में लेख देखने के विषय मध्य कोई लेख देखनेका अवसर न मिला था। कुछ दिनोंसे यह जैन लेखों की उपयोगिता मेरे मस्तिष्क में ऐसी धुन पड़ी कि जहाँ पाहों किसीके पास लेखका हाल सुना या किसी मन्दिरादि स्थानों में गया तो वहाँके लेख देखे बिना चित्त को गांठि नहीं लेती थी। इस कारण मैंने स्वयं जो लेख पढ़े हैं इतने इकट्ठे हो गये कि उनका एक संग्रह हो सकता है। इसी विचारसे यह कार्यमें मैं प्रवृत्त हुआ हूँ। मेरा संस्कृत भादि भाषाओंमें अधिक प्रवेश नहीं है या मैं कोई बड़ा विद्वान नहीं हूँ, विशेष कर जैन शास्त्र में मेरा खल्य प्रवेश है, इस कारण बहुतसे लेख पढ़नेमें क्षम हो गया होगा, यद्यपि, यद्यपि रूपया सुधी जन सुधार कर पढ़ेंगे।

लेख खास करके पत्थर और धातु पर ही होते हैं। पत्थर परका लेख धातु से गीला कर हो जाता है। इस कारण प्रायः पत्थर पर का लेख कुछ काल में अस्पष्ट हो जाता है। अतएव मैंने विदेह करके धातु परके लेखों को अधिक पढ़ने का प्रयास किया है। लेखों पर प्रायः निम्नलिखित बातें लिखी जाती हैं:—



- १ । वर्ष, मास, तिथि, वार आदि । २ । वंश, गोत्र, कुलों के नाम ।  
 ३ । कुर्शनामा । ४ । गच्छ, शाखा, गण आदिके नाम ।  
 ५ । आचार्योंके नाम, शिष्योंके नाम, पहावली ।  
 ६ । देश, नगर, ग्रामोंके नाम । ७ । कारिगरोके, खोदनेवालोंके नाम ।  
 ८ । राजाओंके, मंत्रियोंके नाम । ९ । समसामयिक वृत्तान्त इत्यादि ।

उपर्युक्त विवरणों में जैन धावकोंकी ज्ञाति, वंश, गोत्रादि और जैन आचार्योंके गच्छ शाखादिकी दो सुनो पाठकोंकी लेखमें उपस्थित की जायगी, जिसमें सुगमता के लिये (१) ज्ञाति, वंश, गोत्र (२) संवत्, आचार्योंके नाम और गच्छ रहेगा। सुप्र पाठकगणकी ज्ञात होना कि बहुतसे लेखोंमें वंश, गोत्रादिका उल्लेख पूर्णरूपसे पाया नहीं जाता है—जैसे कि कोई २ लेखमें केवल गोत्र ही लिखा है, ज्ञाति, वंशका नाम या पता नहीं है। ज्ञाति वंशादिके नाम भी कई प्रकारसे लिखे हुए मिलते हैं, जैसे कि "भोजपाल" ज्ञातिके नाम लेखोंमें आठ प्रकार से लिखे हुए मिलते हैं [ १ ] उपकेश [ २ ] उकेम [ ३ ] उवकश [ ४ ] ऊरक [ ५ ] उयसवाल [ ६ ] ओसलवाल [ ७ ] ओश [ ८ ] ओनवाल । लिखना भिन्नप्रयोजन है कि यहाँ सुनोमें ऐसे आठ प्रकारके नामोंको एक 'ओसवाल' हेडिङ्ग में दिया गया है। इसी प्रकार कोई २ लेखोंमें आचार्योंके नाम, उनके शिष्योंके नाम, गच्छादि का विवरण पूर्णतया नहीं है। प्रतिष्ठास्थानोंके नाम भी बहुतसे लेखोंमें मिलते हैं। पुरातत्त्वप्रेमी सज्जनगण अच्छी तरह जानते हैं कि प्राचीन विषय में जैसा बहुतसी फटिगाइयाँ मिलती हैं, स्थान २ में प्राचीन लेख विस्तृत गये हैं, इस कारण बहुत सी जगह प्रयत्न करने पर भी सुनोका पढ़ा नहीं गया है।

यह "लेख संग्रह" संग्रह करनेमें हमें कहां तक परिश्रम और व्यय उठाना पड़ा है सो सुप्र पाठक समझ सकते हैं; "नहि चरन्त्या विजानाति गर्भप्रसववेदुषाम् ।" अधिक लिपिता व्यर्थ है। यह संग्रह किसी भी विषयमें उपयोगी हुआ तो मैं अपना समस्त परिश्रम सफल समझूंगा।

आशा है कि और-२ आचार्य, मुनि, विद्वान् और सज्जन लोग भी जैन लेख संग्रह करनेमें सहायता पहुँचायें और उनके पास वे, या जिस स्थानमें वे विराजते हों वहाँके जैन लेखोंको प्रकाशित करने में बहुत व्याय होगा और शीघ्र ही एक अत्युत्तम संग्रह बन जायगा। किं बहुना ।

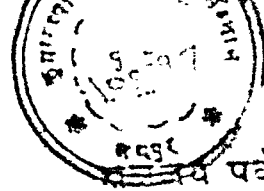
कटकता  
 ३० स० १९१५ }

निवेदन—  
 पूरणचन्द्र नाहर ।

# सूचीपत्र ।

पत्रांक				पत्रांक			
<b>अजिमगंज [ मुर्शिदाबाद ]</b>				<b>कलकत्ता</b>			
सुमतिनाथजीका मन्दिर	...	...	१	धर्मनाथ स्वामीका मन्दिर	...	...	२३१९
मण्णप्रभुजीका	...	...	२	महावीर स्वामीका	...	...	२७
निमिनाथजीका	...	...	४	चंद्रप्रभुजीका	...	...	२८
चिंतामणिजीका	...	...	५	शीतलगायत्रीका	...	...	२९
संभवनाथजीका	...	...	६	माधोलालजीका घर दे० ( बड़गाँव )	...	...	३०
शान्तिनाथजीका	...	...	७	माधोलालजीका घर दे० ( मुर्शिदाबाद )	...	...	३१
सांवलीयाजीका	...	...	८	जीवनदासजीका घर दे०	...	...	३२
राय बुधसिंहजी का घर दे०	...	...	९	पन्नालालजीका घर दे०	...	...	८५
<b>बालूचर [ मुर्शिदाबाद ]</b>				<b>आदिनाथजीका देरामर</b>			
आदिनाथजीका मन्दिर	...	...	८	...	...	...	३३
विमलनाथजीका	...	...	१०	<b>चंपापुरी [ भागलपुर ]</b>			
संभवनाथजीका	...	...	१२	वासुपूज्यजीका मन्दिर	...	...	३५
सांवलीयाजीका	...	...	१५	<b>नाथनगर ( भागलपुर )</b>			
दादाजीकास्थान	...	...	१७	सुखराजजीका घर देरामर	...	...	३६
रायधनपंतसिंहजीका घर दे०	...	...	१८	<b>भागलपुर</b>			
किरतचन्दजीका घर दे०	...	...	१५	वासुपूज्यजीका मन्दिर	...	...	३८
<b>कठगोला [ मुर्शिदाबाद ]</b>				<b>काकंदी [ बिहार ]</b>			
आदिनाथजीका मन्दिर	...	...	१७	सुविधिनाथजीका मन्दिर	...	...	४१
<b>महिमापुर [ मुर्शिदाबाद ]</b>				<b>क्षत्रिय कुंड [ बिहार ]</b>			
बगत्शेठजीका मन्दिर	...	...	१८	महावीर स्वामीजीका मन्दिर	...	...	४२
<b>कासिमबाजार [ मुर्शिदाबाद ]</b>				<b>गुणाया [ बिहार ]</b>			
निमिनाथजीका मन्दिर	...	...	१९	श्रीमहावीरजीका मन्दिर	...	...	४३
<b>दस्तुरहाट [ मुर्शिदाबाद ]</b>				<b>पावापुरी [ बिहार ]</b>			
श्रीर्ष मन्दिर	...	...	२१	संभवनाथ	...	...	४४
				जलमन्दिर	...	...	४५
				गांव मन्दिर	...	...	४६

विहार	पत्रांक	पत्रांक	चिकागो [ अमेरीका ]
मथियान महलाका मन्दिर ...	... ५२	...	डॉ० कुमार स्वामी ... ६६
चंद्रप्रभुजीका ...	... ५४	...	इङ्ग्लैन्ड
शादिनाथजीका ...	... ५५	...	मे० लुगार्ड ...
राजगृह			जयपुर [ राजपूताना ]
पार्श्वनाथजीका मन्दिर ...	... ५८	...	ध्यापारीओंके पासकी मूर्तिपर ... ६९
विपुलगिरि ...	... ६४	...	अजमेर [ राजपूताना ]
रत्नगिरि ...	... ६५	...	घारलीं गाव से प्राप्त पत्थर ...
उदयगिरि ...	... ६६	...	घनारस [ काशी ]
स्वर्णगिरि ...	... ६७	...	सुतटोला का मन्दिर ... ६८
वैभार गिरि ...	... ७१	...	वट्टूजीका ... ६६
कुंडलपुर			पट्टनीटोलेका ...
शादिनाथजीका मन्दिर ...	... ७०	...	चुन्नीजीका ...
पटना			रामचन्द्रजीका ... १००
पार्श्वनाथजीका मन्दिर ...	... ७१	...	प्रतापसिंहजीका ... १०२
दादावाड़ी ...	... ८३	...	कुशाला जीका ... १०१
स्युलभद्रजीका मन्दिर ...	... ८२	...	सिंहपुरी [ बनारस ]
शेठ सुदर्शनजीका ...	... ८३	...	कुशालाजीका मन्दिर ... १०३
समेत शिखर			मिर्जापुर
ऋजुपालुका ...	... ८४	...	पंचायती मन्दिर ...
मधुवत ...	... ८५	...	धनसुखदासजीका ... १०५
टोक्के चरणों पर ...	... ८६	...	दिसली
तेजपुर [ आसाम ]			चेलपुरीका मन्दिर ... १०६
रायमेघराजजी का मन्दिर ...	... ८३	...	नयवरेका ... १०८
म्युनिक [ जर्मनी ]			विरेश्वरनेका ... ११३
जादुघर ...	... ८६	...	छोटे दादाजीका ... १०७
			दशरामलजीका घर दे० ... १२१



## अजमेर ।

गौड़ी पार्श्वनाथजी का मन्दिर	...	...	१२४
सम्भवनाथजी का	...	...	१२७
दादाजीकी छत्री	...	...	१३३

## जयपुर ।

यति श्यामलालजीके पास मूर्तियों पर	...	...	१३४
यति किशनचन्दजीके पास मूर्तियों पर	...	...	१३५

## जोधपुर ।

महावीर स्वामीजीका मन्दिर	...	...	१३६
केसरीयानाथजीका	...	...	१४१
मुनिसुब्रत स्वामीजीका	...	...	१४३
धर्मनाथजीका	...	...	१४४

## दिनाजपुर ।

चन्द्रप्रभु स्वामीका मन्दिर	...	...	१४६
-----------------------------	-----	-----	-----

## धुलेधा रिखतदेव ( मेवाड़ )

केसरीयानाथजीका मन्दिर	...	...	१४८
दादाजीकी छत्री	...	...	१५१
पगलीयाजी	...	...	"

## पालीताणा ( काठियावाड़ )

मोतीसुखीयाजीका मन्दिर	...	...	१५२
शेठ नरसिंह केशवजीका	...	...	१५३
शेठ नरसिंह नाथाका	...	...	१५४
शेठ फस्तुरचन्दजीका	...	...	"
गौड़ी पार्श्वनाथजीका	...	...	१५५
यति करमचन्द हेमचन्दका	...	...	१५८
पड़ा मन्दिर ( गांचने )	...	...	"
दिगंबरिका पञ्चायती	...	...	१६०

## पर्वत ।

साकरचन्द प्रेमचन्दकी टुंफ	...	...	१६०
प्रेमामाई हेमामाईकी	...	...	१६१
प्रेमचन्द मोदीकी	...	...	"
शेठ चालदाभाईकी	...	...	१६२
शेठ मोतीशामी	...	...	१६४
मूल ( धादिश्वरकी )	...	...	"

## राणकपुर ।

धादिनाथजीका मन्दिर	...	...	१६५
--------------------	-----	-----	-----

## सादही ।

पार्श्वनाथजीका मन्दिर	...	...	१६६
-----------------------	-----	-----	-----

## नाकोडा ।

जैनमन्दिर	...	...	"
-----------	-----	-----	---

## बालोतरा ।

श्रीतलनाथजीका मन्दिर	...	...	१६७
केसरीयानाथजीका मन्दिर	...	...	१६८

## वाहमेड़ ।

बड़ा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजीका	...	...	१६९
यति इन्द्रचन्दजीका उपाधय	...	...	१७०
गोपीका	...	...	"

## मेहता ।

धादिनाथजीका मन्दिर	...	...	१७१
पार्श्वनाथजीका मन्दिर	...	...	१७१
वासुदेवस्वामीका	...	...	१७२
धर्मनाथजीका	...	...	"
धादिश्वरजीका मन्दा	...	...	१७३

		पत्रांक			पत्रांक
त्रिन्तामणिपार्श्वनाथका	...	१८७	केकिंद ।	...	...
कटुलाजीका	...	१८६	पार्श्वनाथजीका मन्दिर	...	२२२
महावीरजीका	...	"	सेवाही ।	...	...
तपमच्छका उपाध्य	...	१६१	महावीरजीका मन्दिर	...	२२६
<b>ओसिया ।</b>			सांडेशाव ।	...	...
महावीर स्वामीका मन्दिर	...	१६२	शान्तिनाथजीका मन्दिर	...	२२८
सचियाय माताका	...	१६८	नाना ।	...	...
डुंगरीके चरण पर	...	१६६	जैन मन्दिर	...	२२६
<b>पाली ।</b>			छालराई ।	...	...
नौलखा मन्दिर	...	"	जैन मन्दिर	...	२५१
गोडीपार्श्वनाथका मन्दिर	...	२०४	हटुंदी	...	...
लोढारो वासका	...	२०५	महावीरजीका मन्दिर	...	"
शान्तिनाथजीका	...	"	माताजीका	...	२३२
सोमनाथजीका	...	"	खण्डरमें मिला हुआ पत्थर पर	...	२३४
<b>नाडोल ।</b>			जालोर ।	...	...
आदिनाथजीका मन्दिर	...	२०६	महावीरजीका मन्दिर	...	२५१
ताम्र शासनमें	...	२०८	चोमुखजीका	...	२५३
<b>नाडलाई ।</b>			तोपखानामें	...	२३८
अदिनाथजीका मन्दिर	...	२१२	हरजी ।	...	...
त्रेमिनाथजीका	...	२१७	जैन मन्दिर	...	२५२
<b>कोट सोलंकी ।</b>			जूना ।	...	...
जैन मन्दिर	...	२१८	जूना वेढा ।	...	२४४
<b>घाणोराव ।</b>			जैन मन्दिर	...	२४५
जैन मन्दिर	...	"	नगर गांव ।	...	२४७
<b>घेलार ।</b>			जैन मन्दिर	...	...
आदिनाथजीका मन्दिर	...	२१८	जैन मन्दिर	...	२४७
<b>फलोदी ।</b>			जैन मन्दिर	...	२४७
महा जैन मन्दिर	...	२२१			

		पत्रांक		पत्रांक			
जैन मंदिर	सांचोर	...	२४८	जैन मन्दिर	वधीणा	...	२४९
जैन मंदिर	रत्नपुर	...	२४८	जैन मन्दिर	ठाज-नीतीडा	...	२४९
जैन मंदिर	त्रिलाडा	...	२५०	जैन मन्दिर	नोदिया	...	२५१
जैन मंदिर	बोहिया (मारवाड़)	...	२५०	जैन मन्दिर	कोटरा	...	२५१
जैन मन्दिर	कोटार [ गोड़वाड़ ]	...	२५१	जैन मन्दिर	वरमाण	...	२६०
कुमारपालका जीर्ण मन्दिर	किराडू	...	२५१	जैन मन्दिर	लोटाना	...	२६१
जैन मन्दिर	सुंधा पहाड़ी	...	२५३	जैन मन्दिर	माकरोरा	...	२६१
जैन मन्दिर	घटियाला	...	२५६	जैन मन्दिर	घवली	...	२६२
जैन मन्दिर	पिंडवाडा	...	२६२	जैन मन्दिर	सीवेरा	...	२६३
जैन मन्दिर	वीरवाडा	...	२६५	जैन मन्दिर	जीरावल पार्श्वनाथ	...	२६३
जैन मन्दिर	वसंतगढ़	...	२६५	जैन मन्दिर	अंजारा पार्श्वनाथ	...	२६३
जैन मन्दिर	पालडी	...	२६५	जैन मन्दिर	कापडा पार्श्वनाथ	...	२६३
जैन मन्दिर	कालाजर	...	२६६	जैन मन्दिर	छावर	...	२६४
जैन मंदिर	कामद्रा	...	२६६	जैन मन्दिर	पटना म्युक्कूम	...	२६४
जैन मन्दिर	उधमा	...	२६६	पत्तनपत्ते वरजी पर		...	२६४

# प्रतिष्ठा स्थान ।

	लेखांक
अजमेर ... ..	५६६
अजिमेर ( मुर्शिदाबाद ) ...	८५७६१४२
अतरी ... ..	४७
अलवर ... ..	१०००
अष्टार ... ..	५३२
अहमदाबाद ...	६६७१११२३५६३६०३७२३८२
	४४४५२६
अहिलानी ...	४४८
आगरा ...	२८५३०७३०६३१०३१६
	३२२३४३३५०६
आमेण ... ..	१२५
आरामपुर ... ..	३२७
आवरणी ... ..	७६८
आसलपुर ... ..	८५६
इंदर ... ..	६२७
इन्द्रप्रस्थ ( दिल्ली ) ...	५२६
उदयगिरि ( राजगढ़ ) ...	२५३१२५४२५५
उदयपुर ... ..	६४५७४४
उन्नतनगर ... ..	६५७
उपकेश ( सोनिया ) ...	१३४
उमापुर ... ..	४८८
उज्जवालका ... ..	३३६
कड़ी ... ..	३५
कमलमेरु ... ..	४८३
कर्पटोटक ... ..	६६१
कलकत्ता ... ..	८७
कलघर्षा ... ..	६७४६७५६७६

	लेखांक
कलागर ( कालाजर ) ...	६५६
काकंदी ... ..	१७३
काकर ... ..	४८१
कायना ... ..	४७१
कालघरी ... ..	६४
कालुपुर ... ..	६६७
कास्मावजार ( मुर्शिदाबाद )	८१८४
फीराट कूप ... ..	६४२
कोठारा ... ..	६५२
कोरडा ... ..	१०६
कहेडा ... ..	८८६
कुदीमपुर ... ..	२२१
गणवाडा ... ..	६४७
गंधार ... ..	३८१६०८६५३१६६
गुनशिला ... ..	१७७१७८१७६१८०
गुज्जर ग्राम ( बड़गांव ) ...	२७१
ग्रीहडी ... ..	३
गोरखिया ... ..	५५४
गोलकुंडा ... ..	७५२
गोलीपा ... ..	४७६
चंपकदुर्ग ... ..	८५०
चंपकनर ... ..	४५४
चंपानगर ... ..	१४३१६५
चंपापुरी ... ..	६३७१४३१५८
चिमणीया ... ..	५१०
चुंभरा ग्राम ... ..	६२४
जयनगर ... ..	१६३
जन्दाह ... ..	२०८
जवाच ... ..	१६

	लेखांक	लेखांक
जाणांधारा	३८३	नन्दियाक ( नोडिया )
जालोर	८३७।६०५	नल
जावरनगर	७१५	नलीतपुर
जावालीपुर	८६६।६००	नागपुर
जीरावला पार्श्वनाथ	६७३।६७६	नाणा
जीर्णदुर्ग	६७७	नापलीया
जेनगर	५१६	पत्तन
जोधपुर	६१२।८२८।८३८	पाटण
झंझणू	६२१	पहिका
डिंडिला ग्राम	८६६	पानिका
ढेढेया	५६८	पानी
तिजारा	४२१	पलरपट्ट
दंतराई	७७	पाटलिपुर
दधालीया	४६६	पाटलिपुर
दिह्लि	५२०	पाडली
दिवसा	६२४	पाडलीपुर
द्विपथन्दर	१३०	पडलीपुर
देवक पसन	६६६।६७०	पटना
धंधू का	६	पाटलि ( पानडी )
धमडका ( कच्छ )	१२३	पाटली
धांडू	४२३	पानविलार
धार	६२१	पावापुरी
धुलेवा	६२७ ६५६	पीडरवाड़ा
नडुल	८३७।८३६।८४५।८६२	पीडवाड़ा
नडुल	६४३।६४७	प्रयाग
नडुल डागिका	८४१।८४३।८४६।८५७	कनचलिफा
नडुलाइ	८४०।८५४।८५६।८५८	
नाडलाई	८४७	
गन्दकुलवती	८५२	



## लेखांक

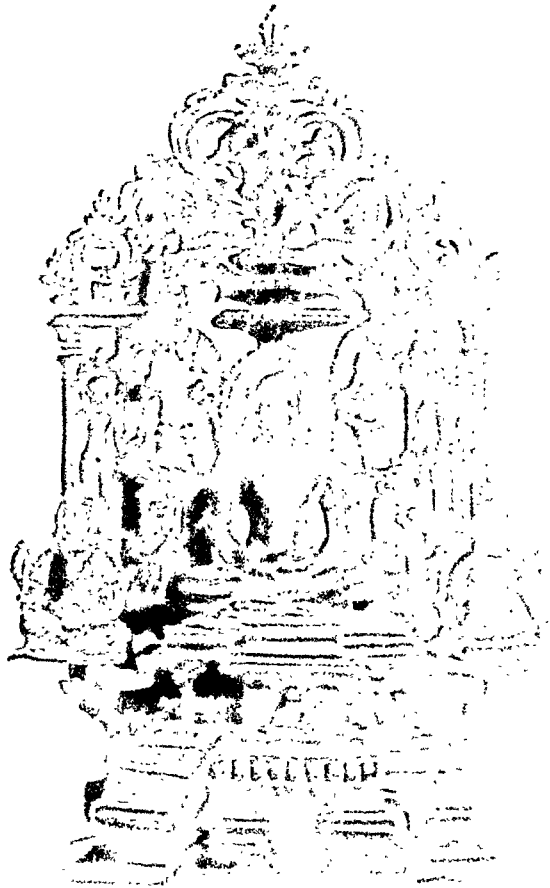
## लेखांक

बम्बई	...	...	...	३७०, ३७४
बरागाव	...	...	...	२१७
बहादूरपुर	...	...	...	४८५
बाहुचिन्न	...	...	...	६३८
बालुचर ( मुर्शिदाबाद )	...	३१, ३२, ४५, ४६, ३३८	...	
बाहडमेर	...	...	...	६१८
बीकानेर	...	...	...	१३८
बीलाडा	...	...	...	६३७
बूढयाणा	...	...	...	१११
बेगमपुर ( पटना )	...	...	...	३३२, ३३३
भट्टनगर	...	...	...	५०
भरतपुर	...	...	...	६६२
भाणाचट्ट	...	...	...	७७१
भारठा	...	...	...	६६८
भिल्लमाल	...	...	...	५४१
भिल्लमाल	...	...	...	६५७
भुडपट्ट	...	...	...	६३८
भैया	...	...	...	१०४
भंडपट्टर्ग	...	...	...	११८
भंडपाचल	...	...	...	७०७
भंडोवर	...	...	...	६४५
भंडुपे	...	...	...	४२०
भनेर	...	...	...	३२१
भाक्रोडा	...	...	...	६७७
भाडपा	...	...	...	६४१
भानंरपुर	...	...	...	१६६

मानपुर	...	...	...	३००
मालवक	...	...	...	११
माल्यवन	...	...	...	१५२
माल्हेणसू	...	...	...	६२२
मिथिला	...	...	...	१६६, १६८
मिरजापुर	...	...	...	२३३
मुंजिगपुर	...	...	...	८४६
मुर्शिदाबाद	...	५६, ६७, १३८, १४७, ६८६	...	
मेरुता ( मेडता )	...	४५५, ५४३, ७५०, ७५४, ७८३, ७८४, ७८७, ८२६, ८२६, ८०६,	...	
मेलीपुर	...	...	...	६६५
मोढ़	...	...	...	७६५
मोरकरा	...	...	...	८४२
रणसण	...	...	...	५७४
रतनगिरि ( राजगृह )	...	२४६, २५०, २५१, २५२	...	
रतपुर	...	...	...	६३५, ६३६
राजगृह	...	...	...	५४०
राजपुर	...	...	...	५३६
राणपुर	...	...	७००, ७१३, ७१४, ७१६	
रोहिन्सकूप	...	...	...	६४२
लच्छवाड	...	...	...	१७४
लीचही	...	...	...	१८, २८५
बगुदा	...	...	...	११७
बघजोर	...	...	...	२८४
बडनगर	...	...	...	५७७
बरजा	...	...	...	१३२
बलहरा	...	...	...	५६१

	लेखांक				
बलहारो	६६३	ननीपुर	...	...	६३८
बसंतनगर	३६६	सद्र'उलिया	...	...	५३३
बसंतपुर	६५४	सम्भेदेश्वर	...	...	३५५, ३६६, ३७७
बहडा	६२३, ६२५	सर्पगिरि ( जालोर )	...	...	३०३, ३०४
बाकपत्राकानगर	७४३	साहाय्या	...	...	६००
बाघसीण ( बघीणा )	६५८	संभनीर्थ	२५, ११४, ६०५, ६५०, ७१०, ७११, ७१२		७१
बाराणसी	३३५, ३४५	सांघोमण	...	...	७३
बासहड	८८०	स्याहजानाबाद ( दिही )	...	...	५३७
बिक्रमनगर	७६५	सिमला	...	...	५५५
बिक्रमपुर	६२७	सिधना	...	...	५०३
बिपुलगिरि ( राजगृह )	२४५	सिंहपुर	...	...	४२२
बिपुलाचल ( राजगृह )	२३६, २४६, २४७, २४६	सीणोत	...	...	६२६
बीजापुर	६०१	सीणुग	...	...	२८०, ४८४, ५०५
बीरमग्राम	८४६	सीनामडी ( मिथिला )	...	...	१७१
बीरमपुर	७२३, ७२४, ८२२	सीवेरा	...	...	६७२
बीरपल्ली	६६६	सीरोही	...	...	११८
बीरवाडा	६५३	सेंगुर ( डागा )	...	...	३२६
बोसलनगर	६४६, ६७७	हासियकुंडि ( मधुडि )	...	...	८१८, ८१९
बोसाडा	८३३, ८३४	हासियकुंड	...	...	२०८, २०९
बुमुज	२४				
बेदर	१०५				
बैभारगिरि ( राजगृह )	२५७, २५८, २६०, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७				
बघवारगिरि ( राजगृह )	२६१, २६२, ५२५				
शंडली	७४४				
शमीपाटी	८७६, ८७७, ८७८				
शीलतंडडी	८४३				
पेटेस्क	८८१, ८८२, ८८३, ८८४				
सत्यपुर	१३३				





Metal Image (Ardha Padma) of Lord Venkateswara of Tirumala, Southern Chola Art, 12th Century, Tirumala Temple, Tirumala



# JAIN INSCRIPTIONS



## जैन लेख संग्रह ।

प्रान्त - पूर्व ।

जिला मुर्शिदाबाद । स्थान अजिमगञ्ज ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर ॐ ।

धातुयों के मूर्ति पर ।

[ 1 ]

ॐ ॥ श्री लखाव गढे असासृकेन कारित ॥ संतु १११० ५ ।

\* नाहारों के पूर्वजों के प्रतिष्ठित जिनालयों में यह एक मन्दिर शमके राज्य भागमें विद्यमान है । पूर्वजों श्रीमति मयाकुमर के पुत्र स्वर्गीय बाबु गुलालचन्द्रजी तत्पुत्र संवत् १११० के प्रथम राज्य जिला गण मयाकुमर नाहार बाहादुर हैं । पूर्व मन्दिर गङ्गाज्योतिषे नष्ट हो जानेसे आठ यह नवीन जैन मन्दिर १११५ में निर्माण करवाया है । प्रथम मन्दिरका लेख- ॥ श्री ॥ सं १११३ मिति वैशाख सुदि ५ इत्यदिनाम् श्री जिन भक्ति सूरि साखायां ड ० श्री आनन्द बह्मन गति । तत शिव प । म । महाकाम म्नि इतिनाथ श्री सुमतिनाथ गक्ष वास्तव्य नाहर श्री खड्गसिंहजी तत्पुत्र श्री उज्ज्वलचन्द्रजी तत्पुत्रायां श्री मयाकुमर एव श्री सुमति जिन प्रासाद कारितः प्रतिष्ठाप्य श्री संघाय समर्पितश्च विधिना सत्तां ॥ सं । पु । म । श्री जिन सीमान्त मुर्शिदा विजय राज्ये ॥ श्री रत्तुः ॥ कल्याणवन्तुः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ १ ॥

\* यह लेख श्री पार्श्वनाथजी के मूर्तिके पीछे खुदा भगा है, बहर जैत नाहार है । सुमतिनाथके मूर्तिके दक्षिण करनेके पूर्वमें यह मूर्ति यहाँ पर थी ।

(२)

[2]

सं० १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ श्री आंचल गढे प्रग्वाट झातीवव्य० उदा नार्या-  
चत्त तत्पुत्र जोला नार्या डमणादे तत्पुत्रेण व्य० मंडनेन श्री गहेश श्री मेरुतुंग सुरीणामुप-  
देशेन त्राता श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

[3]

संवत् १४७९ वर्षे पौष वदि ५ शुके श्रेहकी वास्तव्य श्रीमाख झाती श्रे० प्रतापतीह  
जा० सोहगदे सुत डूदाकेन पितु मातु श्रेयोर्थ श्री वासुपूज्य विंवं कारितं पूर्णिसा गढे  
प्रतिष्ठितं श्री सूरि जिनवह्वन सूरि ।

[4]

सं० १५१० व० फा० शु० १२ उकेश वंशे जाणेचा गोत्रे सा० पदम पुत्र रठला सु०  
साजण जा० जइत्तिरि पु० पेढा जा० कणसिरि पेढा जा० लफमत्तिरि पुत्र ३ कालु खेमधर  
देवराज जा० चांङ्ग सा० हापाकेन जा० ३ शूजरि सु० पुंजा राजीदि कुटुंब तुतेन स्वधेयते  
श्रीश्रेयांस चतुर्विंशति पदः कारितः तपा श्रीरत्नशेखरसूरि श्रीउदयनंदिसूरिभिः प्रतिष्ठितः ।

[5]

सं १५१७ वर्षे माह सु० ५ शुके श्री उपकेश झाती नाहर गोत्रे सा० लेढा पु० लावा जा०  
लोहिगि पु० चांपा साखू लादा सहितैः पितु श्रेवसे श्री श्रेयांस नाथ विंवं का० प्रति० श्री  
धर्मघोष ग० श्री विजयचंद्र सूरि पदे ज० श्री साधू रत्नसूरिभिः ।

[6]

संवत् १५३६ वर्षे मार्गशिर सु० ६ शुके श्री श्रीमाख झा० व्यद० आका नार्या रत्नउदे  
सुत लांवाकेन जा० सानू नापा निमि । श्री शांतिनाथ विंवं कारा० प्र० पिपक० श्री सुनि सिंधु  
सूरि पदे श्री अमरचंद्र सूरिभिः ॥ नापदिया त्रासे ।

[ 7 ]

संवत् १६४१ वर्षे मागसर मासे । सी० श्री राजा जा० रजमखदे पु० दोला ठाकुर धना  
हाथी लीवा हाथा जा० हरपमदे पु० जीवा एतत् स्वकुटुंब युतेः श्री पार्श्वनाथ विंशं कारि-  
पितं श्री संडेर गछे वा० श्रीसहिज सुंदर पदे उ० दोमासुंदर पदे उ० श्रीनय सुंदर प्रतिष्ठितं ।

॥ श्री पद्मप्रभुजी का मंदिर ॥

[ 8 ]

संवत् १४९७ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ३ बुधे उकेश वंशे लूणीया गोत्रे साः पीमा पुत्र साः  
सधारण श्रावकेण पुत्र सीहा सहितेन श्री पार्श्वनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनदंड  
सूरिजिः खरतर गछे ।

[ 9 ]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख शु० ३ श्रीमाख झातीय सा० खाईयाकेन नाराय गांगी पुत्र  
हासादि कुटुंब युतेन पुत्री रसाई श्रेयोर्थ श्री शान्तिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीनया गछे  
श्री रत्नशेखर सूरि पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । धंधूका वास्तव्य ॥

[ 10 ]

संवत् १५५० वर्षे माघ सुदि १२ गुरौ शोकेश झातीय चारदा सुत मेहा नाराय पदनाई  
श्रेयसे जणसावी एताकेन श्रीवासुपूज्य विंशं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्रीजिनदंड सूरिजिः ।

[ 11 ]

संवत् १५६४ वर्षे शा० १४१४ वर्तमाने माघवक देस ॥ उरकेन शान्ति ना० देवर्मी  
जा० देसा पु० सा० सागा जा० रूपखं पुत्र जसपाल जा० लपमी पुत्र रजा विंशं प्रतिष्ठितं ।  
तपा गछे श्री हेमवद ( विमल ) सूरिजिः ॥



संवत् १९०० मिति आषाढ सित ए गुरौ श्री आदिनाथ विंशं प्रतिष्ठितं । वृद्धत खरतर  
जटारक गच्छेश ज० । श्री जिन हर्य पष्टे दिनकर ज० श्री जिन सौभाग्य सूरिनिः कारितं च  
श्रीमाल वंशे टाक गोत्रे मोह्या दास पुत्र हनुतसिंहस्य नार्या फूलकुमार्या स्वश्रेयोर्य ।

॥ श्री नैमिनाथजी का पंचायति मन्दिर ॥

संवत् १५११ व० माघ सु० ५ सोमे उंसवाल झाती क्षिगा गोत्रे समदरीया उडकेण०  
सुहडा जा० सुहागदे पु० कम्माकेन जा० कस्मीरदे पु० हेमा संसारचंद देवराज युतेन  
स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ विंशं कारितं श्री उपकेश गछे श्री कुकुदाचार्य संतामे प्र० श्री कक  
सूरिनिः ।

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ उंसवाल झाती कटारीया गोत्रे सा० सरवण  
जा० राणी सुत सा० सिंधा जा० सोमसिरि सु० सा० आडु नामा नार्या बिरणि सुत सा०  
पुनपाल सा० लोनपाल सुरपति प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंशं कारितं  
प्रतिष्ठितं च । श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः ॥ श्री ॥

संवत् १५५३ वर्षे वैशाख सुदि ० प्राग्वाट झा० व्यव० पेता नार्या मदी सुत व्य०  
जोजाकेन जा० राजू ब्रातृ राजा रत्ना देवा सहितेन स्वपुर्विज श्रेयोर्य श्री शांतिनाथ विंशं  
का० प्र० तपागछे श्री हेमविमल सूरि श्री कमल कलस सूरिनिः सिरुत्रा वास्तव्य ।

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे जवाठ वास्तव्य डुवड झातीय लंजीश्वर गोत्रे

दो० स० देसाकेन जा० राणी स० श्री पार्श्वनाथ विंशं का० प्र० श्री तेजरत्न स्मृतिः ॥

॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ॥

[ 17 ]

संवत् १५०५ वर्षे माघ वदि २ रत्रौ उग्रदास ज्ञातीय जगन्मारी गोत्रे सा० गेवडा पु० सो० पी जा० पौदश्री पु० हराकेन आत्म पुण्ड्यार्थ श्री अजिनंदन विंशं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मधोप गद्ये ज० श्री विजयचंद्र सुरि पद्ये श्री साधुरत्न स्मृतिः ।

[ 18 ]

संवत् १५१७ वर्षे वै० व० ११ बुधे लांबडी वास्तव्य उकेश ज्ञातीय व्य० पीमनी ता० वान् पुत्र व्य० गणसा जा० वान् पुत्र व्य० केव्हाकेन जा० मान् बुद्ध जा० पूषा पुत्र नेयादि कुटुंब सुतेन श्री सुनिसुव्रत स्वामी चतुर्विंशति पद्ये कारितः प्रतिष्ठितः ॥ • यत्रगत चांडवर्गीया श्री मर्त सुरि श्री उकेश विंशदलीक • गद्ये प्रतिष्ठा कारिता । • ( अक्षर अस्वष्ट ६ ) :

[ 19 ]

संवत् १५२७ वर्षे माघ वदि ५ शुके मंत्रि दली० वंश सुहृद् गोत्रे ठ० पाण्डवर्गीकेन पु० ठ० कर्णली ठ० उदयचंद्र ठ० हेमा पुत्री अजाश्व सद्दितेन परिवार सुतेन श्री दीननाथ विंशं कारितं श्री अक्षर गद्ये श्री जिनसागर सुरि पद्ये श्री जिनमुंजर सुवचनपद्ये श्री जिनहर्ष स्मृतिः प्रतिष्ठितं ।

[ 20 ]

संवत् १५६३ वर्षे साद स्मृदि ५ सुभे श्रेष्ठि गोत्रे सा० पता जा० वाडपुं सु० गदा ना० पद्ये सु० तिरा गिरा सांवा सद्द जया सुतेन श्री पद्मप्रभु विंशं कारितं उपोप गद्ये अक्षर चार्थ संज्ञाने ज० श्री देवहृत स्मृतिः प्रतिष्ठितं ॥

संवत् १६३० वर्षे माघ सुदि १३ दिने पत्तन वास्तव्य सा० सांडा जार्या खपमाइ सुत  
धीर पाखेन जार्या रंगाइ प्रमुख कुटुंब युतेन श्री संजवनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तथा  
गठाधिराज श्री हीरविजय सूरिजिश्चिरं नंदतात् ।

॥ रौप्य के मूर्ति पर ॥

संवत् १७३३ का जैष्ठ शुक्ले १३ शनिवासरे श्री शांतिजिन पंचतिथीका उस वंशे दुधे-  
ड़िया गोत्रे चाबु हर्षचंद तत्पुत्र चाबु विसनचंडेन कारितं पुनमिया विजय गछे श्री शांति  
सागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

॥ श्री संजवनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १५११ वर्षे ज्ये० सु० ३ गुरौ दिने ज० ज्ञातीय श्री वरखच्च गोत्रे नाशु संताने  
राजा जार्या राजखदे सुत सह सावलू राणा हुदा श्री मल्लयुतौ पितृ मातृ श्रेयसे श्री चंद्र  
प्रज स्वामी विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहज्जठे श्री मुनिशेखर सूरि संताने श्री महेंद्र सूरि  
पट्टे श्री श्री श्री रत्नाकर सूरिजिः शुभं ॥

संवत् १५४६ वर्षे माघ सु० १० रवौ श्री श्रीमाख ज्ञा० सं० जूजच जार्या सं० जरमादे  
सुत सं० समरसी जार्या धनाइ सु० रा० थर्जन केन जार्या अहिवदे पु० सं० राणा शाणा  
प्र० कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य विंबं कारि० प्रति० श्री बृहत्तपा श्री ज्ञानसागर  
सूरि पट्टे श्री उदय सागर सूरिजिः । बुगुज ग्राम ॥

संवत् १५६३ वर्षे माह वदि ११ दिने रवौ श्री श्रीमास ज्ञातीय क्षु प्रापायां । व्य०  
केसव चा० चरमी सुत व्य० व्रीका चा० संपू । चा० व्य० आसाकेन चार्या अमरादे जानु  
व्य० लाडण प्रमुख कुटुंब युतेन श्री वामुपूज्य चतुर्विंशति पट कारितः प्र० श्री सुरिजिः श्री  
स्तम्भ तीर्थे । कुतवपुर वास्तव्यः ॥ शुभं भवतु ।

संवत् १५७९ वर्षे वैशाख सुदि ९ सोमे उस्वाख ज्ञातीय सृष्टाणा गोत्रे लाह शिवदास  
जिनदासकेन श्द्वे चार्या नाई नारिग सुत चातु राजपास सद्धितेन मातु नागिन श्रेयार्थ श्री  
कुंथुनाथ विंबं श्री चतुर्विंशति जिन सद्धित काराणित प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गष्टे नंदिपत्तन  
सुरि पदे नयचंद सुरिजिः ॥

संवत् १९०० वर्षे फागुण सु० १२ — — — — गष्टे चन्द्रारक शुभतीर्णि करदे-  
सात् अत्ताख ज्ञाती गोपल गोत्रे सं । दोर राज चार्या सेद्वल पुत्र सं० चेरद् राज चार्या जीरी  
पुत्र लाळूमणी नित्यं प्रणमंति ॥

॥ श्री शान्तिनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १५१० वर्षे पौ० सु० १५ जुके उपकेश ज्ञातीय फ० शिवा जा० प्रीमसदे सुत फ०  
रामाकेन चा० आसु प्रमुख कुटुंब युतेन निज श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंबं फा० प्र० श्री तन  
गष्ट नायक श्री श्री श्री रत्नशेखर सुरिजिः ॥

॥ राय बुधसिंहजी सुभेडिया का परदेवासर ॥

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री उकेश वंते सेदि गोत्रे श्रे० श्रीपंगु जा०

धिरी सुलूणी पु० यावरसिंह । जटादि युतेनं स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंभं का० प्र० श्री सर  
तर गठे श्री जिनजद्र सुरि पदे श्री जिनचंद्र सुरिजिः ।

॥ श्री सांवखियाजी का मंदिर - रामवाग ॥

[ 30 ]

संवत् १५४६ माघ वदि ४ सुचिंतित गोत्रे सा० सोनपाल सु० सा० दासु जा० लाडे  
नाम्न्या पु० सिवराज चार्या सिंगारदे पु० चूहड़धन्ना आसकरणादि सहितया स्वपुण्यार्थं श्री  
अजितनाथ विंभं का० प्र० उपकेश गठे कुकुदाचार्य सं० श्री देवगुप्त सुरिजिः ॥

जिदा - मुर्शिदाबाद । स्थान - बाबुचर ।

॥ श्री आदिनाथजी का मंदिर ॥

[ 31 ]

पथरो परका सेस ।

॥ श्री जिनाय नमः ॥ श्री मत्त्रिक्रमादित्य राज्यात् संवत् १७४५ मिते । श्री शाखिवाहन  
शकाब्दाष्टके १७१० प्रवर्त्तमाने । मासोत्तम माघ मासे शुक्ले पक्षे ३ तृतीयायां तिस्रो शुक्रवासरे  
श्री तपगठाधिराज जदटारक श्री विजय जेनेंद्र सुरीश्वर विजय राज्ये । महिमापुर वास्तव्य  
वजलानी गोत्रे । साहजी श्री जीवणदासजी तत्पुत्र भर्मजार धुरंधर साहजी श्री केशरी  
सिंहजी तस्यचार्या भर्म कर्मणि रता श्रीवी सरूपोजी पं । श्री जावविजय गणिरुपदेशात् ।  
स्वयं जिन विंभं स्थापनार्थं ॥ बासोचर नगरे श्री जिन प्रासाद कारितं । प्रतिष्ठितं पं जाव  
विजय पं गंतीर विजय गणिजिः । यावत्त्वरासुमेरोडि । यावत्त्रैलोक्य जाखरं । तावत्तिष्ठतु  
प्रासादं निधिघ्नन्तु मुनिश्रमं ॥ १ ॥ सिपिकृतं पं जूपविजयेन ।

श्री जिन शासनो जयति ॥ श्री मत्तपागण शुतांबर धर्मरक्षिः । श्री सूरि छोर दिङ्ग-  
 योर्जिन ज्ञान लक्ष्मीः ॥ यस्योपदेश वचनाव्यवनेश मुख्यो । छिन्नानिगच्छन परे प्रगुणो प्रद्वय  
 १ ॥ तत्पष्टे क्रमतोरर्वाय विजय जेनेन्द्र सूरीश्वर । म्नाज्ये प्रगुणो जिनालय परे पाज्ञोयं  
 डंगके ॥ श्री संवेश सहायता शुनरुद्धिः श्री केशरी सिद्धक । स्तरल्या जिन राज रक्षि  
 नशतः कारापिनोयं सुदा ॥ २ ॥ श्री वीर हीर सूरेश संघाटक गुणाकरः । यान्कोनम  
 च्चुमान्यः श्री रुद्धि विजयोनवत् ॥ ३ ॥ तद्विषय जाव विजयोपदेश दाक्येन कारितं रम्मे  
 प्रतिष्ठितं च सदनं जिन देव निवेशनं । शुचतः ॥ ४ ॥ चङ्गं चवतु संवन्व चङ्गं प्राप्ताय कारकं  
 तथा चङ्गं तपा गष्टे चङ्गं चवतु भर्मिणां ॥

### ॥ धातुयोपरका लेख ॥

संवत् १४९० वैशाख सुदि ५ जार रुडिया गोत्रे । ना० नौदा सुत । ना० पदाकेन पु०  
 फासु रजनादि सद्धितेन स्वचार्या पदम श्री पुष्पार्थ श्री विमलनाथ विंशं श्रीहृमद्देव सुनिनिः

संवत् १५१३ वै० सुदि ५ गुरो श्री तुंबड ज्ञानीय फडी० शिवराज सुत मदीया श्रेयसे  
 त्रातृ हीराकेन त्रातृज कुनूया सुतेन श्री शांतिनाथ विंशं कारितं प्रति० कुरु तथा परे श्री  
 रत्नसिंह सूरिनिः ॥

संवत् १५२० वर्षे माघ वदि ५ गुरो ऊपकेरु ज्ञानीय श्रे० नेला ना० नेजकेरे पुत्र सुता  
 चा० पलसनादे पुत्र देवदास गणपति पोस्ट लक्षिन शेवा सुतेन कण्ठा श्रेयार्थ संवत्सनाय  
 विंशं का० श्री साधु पुर्णिमा पक्षे श्री पुष्पवन्द्य सूरिणामुपदेशेन प्र० श्री विजयराज सुनिनिः  
 कडी वास्तव्यः ॥

संवत् १५३४ वर्षे — शुभ ३ दिने सा० अरसी जार्या रानूं पुत्र सा० दूणाकेन जार्या टीनु प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गष्ठे श्री सद्गती सागर सूरिजिः पान बिहार नगरे ॥

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ६ दिने वारडेचा गोत्रे सा० कोडा जा० सोनी पु० साह सीहा सहजा सीहा जा० होरू श्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ विंवं कारितं प्र० श्री कारंट गष्ठे श्री — सूरिजिः ।

संवत् १५७० वर्षे आषाढ सुदि २ रवौ श्री श्रीमाखान्वये डउडा गोत्रे साह श्री चंद्र पुत्र चौतादृण अजय राजा रायमह्य आसधीर आजा जार्या केखी पुत्र सा० योगा इव्हा शकतन पासा नरपाल साह सहसमह्य पुत्र चिः कीर्त्तिसिंह साह रायमह्य पुत्र हेमा गजपति ठकुरती । सा योगा पुत्र महिपाख ठा० इव्हा जार्या इव्हाणदे पुत्र सहसमह्य सीहमह्य साह आसधर जार्या दासी सिंगारदे पुत्र राया शकतन जा० शकतादे पुत्र पेता जइतमख । पेता पुत्र जैरोदास जइतमखेन राया शकतन पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ चउवीस पट्ट कारित प्र० श्री धर्मघोष गष्ठे श्री साधुरत्न सूरि पट्टे श्री कमलप्रज सूरि तत्पट्टे श्री उदयप्रज सूरिजिः ।

॥ श्री विमलनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १४०२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शनि० दुगड़ गोत्रे सा० धीढा पु० डाडा पुत्र साटा हारा रग सुकनाच्या डाडा पितृव्य सा० रूव्हा पु० रेडा श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्र० वृहज्जीय श्री अन्नरप्रज सूरिजिः ॥ शुभं चवतुः ।

संवत् १५१५ वै० च० ५ अतरी ग्रामे प्राग्वाट सा० आसा जा० संसारी पुत्र सा०

कर्म सीद्धिं न जा० सारु सुत गोइंद गोपा द्वापादि कुटुंब सुतेन नाचुं न नाचुं गज शेरने श्री  
मुनि सुव्रत विं वं का० श० तथा श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नसंखर सुरिनिः ॥

[ ४१ ]

सं० १५५१ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने श्री उकेश पंशे सखवाल गोत्र सा० लाला जा०  
बलतादे पुत्र सा० जायदेन जा० जवखादे पुत्र नायपात्र तेजा पेला लीजा रामपाल नार्या  
थावू पुत्र सोइंट प्रमुख सपरिवार सुतेन श्री मुनि सुव्रत विं वं कारिनं प्रतिष्ठितं श्री शरतर  
गछे श्री ३ जिनसमुद्र सूरिनिः ॥

[ ४२ ]

सं० संवत् १५९६ वर्षे श्री शरतर गछ नाईया गोत्रे ना० नायू पुत्र सा० पास्टू ना०  
सकू जा० नीप्पा रा—सटकया सपमीसू प्रमुख कुटुंबिभ्या श्री आदिनाप विं वं का० न०  
श्री जिनहंस सुरिनिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[ ४३ ]

सं० १६५७ वर्षे वै० श्रु० ५ चौमे श्रीमाव ज्ञानीय डोर गोत्रे ना० भरमगज नार्या श्रीरू  
सुत सा० सतीदास नार्या वा० ईजाखी ताच्यां पूष्यार्य श्री शान्तिनाप विं वं कारिनं प्र० शर-  
तर गछे श्री जिनचंद्र सुरिनिः । श्री जिनपानु सूरिणामुपदेशेन । अर्चाईः ४१ वर्षे श्री  
अकवर राज्ये ।

[ ४४ ]

॥ रौप्यके मूर्तिपर ॥

॥ सं० १७१० मि । आसोज सुदि ए तिथौ बुधचारे नू । बाबू श्री प्रताप विं वंजी तखुद्र  
बठमीपत्त चि । धनपत्त उत्रसिं व श्री आदिजिन विं वं कारापितं वा० सदाज्ञान प्रतिष्ठितं ॥  
शान्ति जिनं, नेम जिनं, पार्श्व जिनं, वीर जिनं पञ्चतिथी । मिः निगसर सुइ १ ॥ श्रीः ॥



॥ श्री सम्भव नाथजी का मन्दिर ॥

॥ पठरोंपरका लेख ॥

[ 45 ]

संवत् १७४४ मिते वैशाख सुदि ५ रवौ । श्री बालूचर पुरे । ज्ञ० श्री जिनचंद्र सूरि जी  
त्रिजय राज्ये वाचनाचार्य श्री अमृतधर्म गणिनां० पं० दामाकल्याण गणिः । तच्च कुमारादि  
युतानामुपदेशतः श्री मक्सूदापाद शास्तव्य समस्त श्री सत्त्वेन श्री सम्भव जिन प्रासादः  
कारितः प्रतिष्ठापितश्च निधिना । सतां कट्याण वृव्यर्थम् ॥

[ 46 ]

अथ चेत्य वर्णनं । निधान कट्यैर्नवजिर्मनोरमे । विंशुद्ध हेमः कल्पशैर्विराजितं ॥  
सुचारु घंटावस्त्रि कारणाकृति । ध्वनि प्रसन्नी कृत शिष्टमानसम् ॥ १ ॥ चतुत्पताका प्रकारैः  
प्रकाम । साकारयन्नमनिन्द्यसत्त्वान् ॥ निषेधयन्निश्चित दुष्टबुद्धीन् । पापात्मनश्चापततः  
कथंचित् ॥ २ ॥ संसेव्यमानं सुतरां सुधीजि । ज्ञेव्यात्मनिर्चुरितर प्रमोदात् ॥ बालूचराख्ये  
प्रवरे पुरेदो । जीयाच्चिरं सम्भवनाथ चेत्यम् ॥ ३ ॥

धातुयोके मूर्त्तिपर ।

[ 47 ]

सं संवत् १५१५ वर्षे व्यापाद् वदि १ जकेश वंशे ढोंक गोत्रे म० सिवा ज्ञा० हर्षु पु०  
म० हीराकेण ज्ञा० रङ्गादे पुत्री सेनाइ प्रमुख परिवार युतेन श्री चंद्रप्रज चिंवं कारितं श्री  
स्वरतर गष्ठे श्री जिनचंद्र सूरि पटे श्री जिनचंद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रीः ॥

[ 48 ]

सं १५१५ वर्षे व्यापाद् वदि १ श्री संत्रिदलीय ठ० साधू ज्ञाचो धर्मिणि पुत्र म० अच्युत  
दासेन पुत्र उग्रसेन दक्षीनेन सुर्यसेन बुद्धिसेन देवपाद वीरसेन पट्टिराजादि युतेन स्तंभे

यसे श्री आदिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री लखन गठे श्री जिनसागर सुरि पठे श्री जिन  
सुन्दर सुरि पट्टाबद्धार श्री जिनहर्ष सुरिः ॥ श्री ॥

[ 49 ]

सं० १५२३ वर्षे वैशाख षदि ४ शुभे श्री उपकेश वंशे सं० देव्या चार्या हृद्वादे पुत्र पद्मना  
सुभावकेण चार्या मेघ पुत्र जयजयता पौत्र पूना सहितेन स्वश्रयसे श्री अश्वस गठेश्वर श्री जय  
केसरि सूरीणासुपदेशेन श्री सरुचयनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ।

[ 50 ]

सं १५२४ वर्षे मार्गशार्प सुदि १० शुभे उपकेश ज्ञातो । आदित्यनाथ गोत्रे सं० गुणधर  
पुत्र सं० कालण जा० कपूरी पुत्र सं० हेमपाल जा० जिणदेवाष्ट पुत्र सा० सोहितेन जानू पान  
वृक्ष देवदत्त चार्या जानू युतेन पित्रोः पुण्यार्थं श्री चंद्रप्रत्त चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः  
श्री उपकेश गठे ककुदाचार्य सन्ताने श्री कक सुरिः श्री जहनगरे ॥

[ 51 ]

सं १५२५ वर्षे ज्येष्ठ व० १ शुभे उपके० पत्तन वास्तव्य सा० देवा जा० कपूरी पु० सा०  
आसा जा० नाजं पु० हर्षा जा० मनी जा० साङ्गा रत्नली सा० साजकेन रत्नली नगि  
श्री वासुपूज्य विंशं उपश० श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्र० न० श्री सिद्ध सुरिः ॥

[ 52 ]

उं संवत् १५२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ० सोमे प्राग्वाट ज्ञानीय वृ० गांगा वृ० सुजा पुत्र सु०  
महिराज जा० रमाङ्ग आविकदा श्री वासुपूज्य विंशं कारितं श्री लखन गठे श्री जिनसागर  
सूरी श्री जिनसुन्दर सुरि पट्टराज श्री ३ जिनहर्ष सुरिः प्रतिष्ठितं श्रीरन्तु सखायं नृपत ॥

[ 53 ]

सं १५३४ वर्षे उपकेश ज्ञानीय वांज गोत्रे सुहर्षी ज्ञाता जा० जयजयदे पु० साः

अग्निन्या वीरिणी नाम्न्या श्री भर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री रत्नशेखर सुरि  
पदे श्री ब्रह्मीसागर सुरिभिः ॥

[ 54 ]

सं १५९१ वर्षे वैशाख वदि ६ शुक्ले प्राग्वाट ज्ञातीय म० पाट्टा पुत्र म० पांचा जार्या  
वाइ देऊ पुत्र म० नाथा जार्या आ० नाथी पुत्र म० विद्याभरण पु० म० हंसराज हेमराज  
श्रीमा पुत्री इंद्राणी इत्यादि कुटुंब युतेन श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं  
कुतव पुरा गच्छे श्री इंद्रनन्दि सुरिपदे श्री सौजाग्य नन्दि सुरिभिः श्री पचन चास्तव्यः ॥

[ 55 ]

सं० १६०० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ शनौ श्री श्रीमाख ज्ञातीय सा० जेठा जा० मढ्वाई पुत्र  
सोनाकर जा० वाइ कमळादे पु० सोना वीराकेन श्री पूषिमा पदे श्री मुनि रत्न सुरिया-  
मुपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संवेन ॥ शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।

॥ सौप्यके मूर्तिपर ॥

[ 56 ]

संवत् १९०३ शके १९६० प्र । माघ मासे कृष्ण पञ्चम्यां मृगौ वासरे श्री मङ्गुदावाद  
वास्तव्य संसवाख ज्ञाती वृद्धशास्त्रावां साह निहाखचन्व इंद्रसिंघ स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ  
जिन विंवं कारापितं । स्वतर गच्छे श्री शांतिसागर सुरिभिः प्रतिष्ठितं । तप्या सागर गच्छे ।

राय धनपत सिंहजी का घरदेरासर ।

[ 57 ]

सं० १९२० फा० शु० ३ बुधे प्रताप सिंहजी इमड जार्या महताव कुंवर चंद्रप्रज पञ्च-  
तीर्थिका । उ । सदा साजेन प्र० श्री अमृत चंद्र सुरि राग्ये सं १९४७ आषाढ शुक्ल १०  
आत्मनः कल्याणार्थं ।

## किरतचन्दजी सेठिया का घरदेरासर - चावडगोजा ।

[ 58 ]

सं० १५३३ वैशाख वदि ४ प्राग्वाट व्य० अथा सा० श्यास्त्री पुत्र व्य० नरसीदेन सा०  
पद् पु - साह्यादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० तथा रत्नमंथर नृदि  
पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः ।

श्री सांवलियाजी का मन्दिर - कीरतवाग ।

[ 59 ]

पापाण के सूक्तियोंपर ।

॥ श्री सं० १७३० माघ शुक्ल ५ चंद्र श्री पार्श्वचंद्र गते ठ० श्री लक्ष्मिचंद्रजी मित्तवेंद्र  
जीत्कानामुपदेशेन । उंस वंशे गांधी गोत्रे साहजी श्री कमल नयनजी नरपुत्र सा० लक्ष्म  
चंद्रजी तत्तर्भपत्नी तथा उंस वं० गहलड़ा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फतेचंद्रजी नरपुत्र मंग  
श्राणन्द चंद्रजी तत्पुत्री वाइ अजबोजी श्री मत्तार्थनाथ विं० कारावितं । प्रतिष्ठितम वि०  
सूरिनिः श्री जानुचंदेणेति आचंडार्कचिरं नन्दतात्नडं ज्ञ्यामश्चियं ।

[ 60 ]

॥ श्री सं० १७३० माघ शुक्ल ५ चंद्र श्री पार्श्वचंद्र गते ठ० श्री लक्ष्मिचंद्रजी मित्तवेंद्र  
जीत्कानामुपदेशेन उंस वं० गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन नरपुत्र सा० लक्ष्म चंद्रजी  
तत्तर्भपत्नी तथा उंस वंशे गहलड़ा गोत्रे जगत्सेठ श्री फतेचंद्र जी नरपुत्र मंग मत्तार्थ  
चंद्र तत्पुत्री वाइ अजबोजी श्री वासुपूज्य विं० कारावितं । प्र० नृदि श्री जानुचंदेणेति नड  
ज्ञ्यामश्चियं सदा ॥

[ 61 ]

पापाणके चरणोंपर ।

सं० १७३० वर्षे माघ शुक्ल ४ चंद्रवात्सरे उंस वंशे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन

जी तत्पुत्र सा० उदयचन्द्र जी तज्ञायां वाइ अजवोजीकेन श्री पार्श्व प्रथम आर्यविद्य गण-  
धर पाण्डुका कारापितं ।

[ 62 ]

सं० १८३० वर्षे माघ शुक्ल ५ सोमे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन जी तत्पुत्र सा०  
श्री उदयचंद्र जी तत्पत्नी वाइ अजवोजीकेन श्री वासुदेव प्रथम सुचुम गणधर  
पाण्डुका कारापितं ।

[ 63 ]

सं० १८६१ चैत्र शुक्ल पञ्चम्यां शनिवासरे चंद्र कुलाधिप श्री जिनदत्त सूरीयां चर-  
स्यापनं श्री सहायदेव श्री जिनदत्त सूरीणामुपदेशात्प्रतिष्ठितं ॥

[ 64 ]

धातुके मूर्तियोंपर ।

सं० १५१४ वर्षे वै० व० ४ उके० व्य० गोइन्द्र जा० राजू पुत्र नाथू जायां रूपिदि  
जातृ—नाइहा केन जायां लीलू प्रमुख कुटुंब युतेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्री सोमसुन्दर तूरिपदे श्री रत्नशेखर सूरि राज्यः ४ ॥ कालधरी ॥

[ 65 ]

सं० १५३० वर्षे चैत्र वदि ५ गुरु रजीश्राण गोत्रे दुवड़ ज्ञातीय दोसी नाइर ली जा०  
नाइ हस्ती सुत दोसी वाळाकेन इरपाळ दासा पागा युतेन मातृ श्रेयसे श्री सुधुनाथ विंवं  
कारितं दुवड़ नष्ट श्री सिंददत्त तूरि प्रतिष्ठितं । उपाध्याय श्री जीसकुअर नाण ।

[ 66 ]

सं० १५३१ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे श्री श्रीमाल हा० जा० गोआ जा० नाऊ सु०  
सा० साजण जा० मदीअरि सु० सा० लटकष जा० सुराइ सु० सा० सोम सा० पासा

सहस्राक्षैः पितृ मातृ श्रेयसे श्री अजितनाथादि चतुर्विंशति पट्टः पूर्विमा पट्टे श्री सुभारत्न  
सूरीणामुपदेशम कारितः प्रतिष्ठितश्च विधिना श्री अहमदाबाद नगरे ।

श्री दादास्थान का मन्दिर ।

पायाण के चरणोंपर ।

[ 67 ]

॥ श्री ॐ नमः ॥ संवत् १८२१ मिति माघ सुदि १५ दिने महोपाध्याय जी श्री १०० श्री  
समयसुन्दर जी गणि गजेंद्राणां शिष्य मुख्योत्तम श्री १०५ श्री हर्षनन्दन जी शास्तायां  
पंक्तितोत्तम प्रवर श्री ७ श्री जीमजी श्री सारङ्गजी तत्शिष्य पं० बोधाजी तत्शिष्य पं० रुजारी  
चन्दस्य उपदेशेन सुश्रावक पुण्य प्रजावक कातेस गोत्रे साहजी श्री सोनाचन्द जी तत्  
मोतीचन्द जी श्री मत् बृहत् खरतर गच्छे जङ्गम युगप्रधान चाग्नि चूडामणि जहारण प्रद  
श्री १०८ श्री दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी दादाजी श्री १०७ श्री जिनकृष्ण सुदि नृनीश-  
राणां पाण्डुका कारापिता मङ्गशूदाबाद मध्ये प्रतिष्ठितं महेंद्र सागर सूरिनिः ॥ गुजरातम् ।

[ 68 ]

सं० १८७६ ग वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० तिथौ शुक्रवारे सुदृग श्री नरहर गणे  
जं० । यु० । ज० । श्री १०८ श्री जिनचंद्र सूरि सन्तानीय सदाशिव स्वामीय पावन प्रधान सुदि  
निधान । श्री मधुपाध्याय जी श्री १०८ श्री रत्नसुन्दर गणितविद्वानां सदाशिव स्वामीय  
साहजी हूगड़ गोत्रीय श्री बाबु श्री बुधसिंह जी तत्पुत्र बाबु श्री प्रतापसिंह जी स्वामीय  
प्रतिष्ठितं श्री रस्तुः कल्याणमस्तुः ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर - कठगंथा ।

[ 69 ]

ॐ संवत् १४८० वर्षे पौष वदि १० युगे श्री नीला इत्यादीय सं० गङ्गा नदी मङ्गल मन्त्रे

सुनेन सह सायरेण स्वश्रेयसे श्री जीवत्स्वामि श्री सुपार्श्वनाथ विं वं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री  
बृहत्तपा पदं श्री रत्नसिंह सुरिजिः शुभंभवतु ।

[ 70 ]

सं० १५३० वर्षे माघ सुदि ४ शुके सांघोसण वासि प्राग्वाट झा० व्य० सोना जा० माऊ  
पु० व्य० नारद बंधु व्य० विरूआकेन जा० वीट्टणदे पु० देधर मेखा साइयादि कुटुंब सुतेन  
निज श्रेयसे श्री सम्भवनाथ विं वं का० प्र० श्री तपा गढे श्री छद्मीसागर सुरिजिः ॥

[ 71 ]

सं० १५०३ शाके १९६० प्रवर्तमाने माघ कृष्ण ५ भृगु अहमदावाद वास्तव्य उंसवाख  
ज्ञाती बृद्ध शाखायां सा० केसरीसिंह तत्पुत्र साह विसंवजि तत्तार्या रुपमणी स्वश्रेयं श्री  
आदिश्वर जिन विं वं जरापितं श्री शांतिसागर सुरिजिः प्र० ॥

श्री जगत्सेठजी का मन्दिर - महिमापूर ।

[ 72 ]

सं० १५२२ वर्षे माघ वदि १ गुरो प्रा० झा० म० जेसा जा० सुरी पुत्र सर्वणेन जा०  
रूपाइ मातृ पितृ श्रेयसे स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विं वं का० प्र० श्री साधु पूर्णिमा पदं श्री  
पुण्ड्रचंद्र सुरीणामुपदेशेन विधिना श्री विजयचंद्र सुरिजिः ॥ श्री रस्तु ।

[ 73 ]

सं० १५३६ व० फा० सु० १२ प्राग्वाट व्य० होरा जा० रूपादे पुत्र व्य० देवा जा०  
गीमति पु० गांगाकेन जा० नाथी पुत्र मेरा जातृ गोगादि कुटुंब सुतेन श्री नमिनाथ विं वं  
का० प्र० तपा गढे श्री छद्मीसागर सुरिजिः । पीरवाड़ा ग्रामे मुंठविया बंशे श्रीः ।

सं १५७७ वैशाख सुदि ६ सोमे उपवेश झातो बलदि गोत्रे गका शक्यातां सा०  
पासड जा० हापू पु० पेशाकेन जा० जीका पु० २ देवा इदादि पशियार सुतेन मनुज्याप  
श्री पञ्चप्रत्न विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपवेश गछे कछुदाचार्य सन्ताने त० श्री सिद्ध  
सूरिनिः दन्तराइ वास्तव्यः ।

स्फटिक के विंव पर ।

सं १७१० व० ज्येष्ठ सु० १ श्री स्तम्म तीर्थ वा० उवेश झा० गांभि गोत्रे प - र्नी र्नीरनि  
जा० शिवा श्री कुन्धुनाथ विवं प्र० श्री विजयानन्द सूरिनिः । तप ( नय ) करण ।

सोप्यके मृत्ति पर ।

सं० १७७६ वर्षे वैशाख शुक्ल ५ तिथौ । उतवाज बंशीय श्रेष्ठ श्री माणिक पन्डरी मधमं  
पत्नी माणिक देवी प्रतिष्ठितं श्रीमत् चतुर्विंशति जिन विवं चिरं जयतात ॥ श्रेयोवचः ॥  
जडं भवतुः ॥ १४

॥ श्री नमिनाथजी का मन्दिर — कातिमपजार ॥

धातुयोके मृत्तिपर ।

सं० १४७० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ उपवेश झातीप श्यावपन्डार गोत्रे सा० श्यावा सा०  
वादि पु० राजू नाहू जा० रूपी पु० सोमा नाब्दा सावह श्री नमीनाथ विवं जा० पूर्वमक्षि  
पु० आत्मा श्रे० उपवेश कुक० प्र० श्री सिद्ध सूरिनिः ।



(२०)  
[78]

सं० १५२९ वर्षे फागुण वदि १ दिने शुक्ले श्रीमाख वंशे साहू गोत्रे श्री सा० पद्म पुत्र  
सा० पासा ज्ञा० पुनादे पुत्र साना पाइनादि परिवार परिवृतेन श्री श्रेयांसनाथ त्रिवं स्वपु  
न्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गष्टे श्री जिनचंद्र सुरि पष्टे श्री जिनचंद्र सुरिनिः ॥

[79]

पापाणोंके मूर्ति थोर चरणपर ।

सम्बत १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ७ श्री मुखसंके जहारक जी श्री जिनचंद्र देव साहू  
जीवराज पापड़ीवाल --- ।

[80]

॥ सं० १७५९ वर्षे मित्ती फागुण सुदि ५ गुरौ श्री गौतम स्वामि पाडुका कारापितं  
काकरेचा गोत्रे सा० वीरदास पुत्र लपमीपतिकेन ।

[81]

सम्बत १७७० वर्षे मित्ती माह वदि ३ वार गुरु दिने कारितमिदं पंक्ति मुनिचंद्र गणि  
वरेष प्रतिष्ठितश्च विधिना उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिनिः --- कास्मावाजार --- ।

[82]

सं० १७७१ मित्ती थापाह शुक्ल १० तिथौ शनिवारे पूज्य श्री हीरागरिजीना पाडुका  
कारापिता सेठिया गुलाबचन्द्र ॥

[83]

सं० १७२१ माघ शुक्ल १३ रवौ महोपाध्याय श्री नित्यचंद्रजी स्वर्गगतः । श्री गार्धर्षी  
सुरि गष्टे ।

॥ सम्बत १०६७ वर्षे मिति आषाढ सुदि ९ शुभदिन बुधवारे श्री जिनकुण्ड मूर्ति  
सद्गुरुणा चरणन्यासः कारितः श्री सत्जन । कामायाजार वास्तव्य आदकैः सुशुभोत्सवैः  
पूजनीयाः प्रतिदिनं गुरुपादाः — — — तिः १ ॥

॥ श्री सम्भवनाथजी का मन्दिर — अजिमेगञ्ज ॥

पापाणकी विशाख मूढ विष पर ।

॥ श्री वीर गताब्दा १४०३ विक्रमादित्य सम्बत १९३३ सावित्राष्टमे १०५५ माघ शुक्ल  
एकादश्यां गुरुवासरे रोहिणी नक्षत्रे मीन खत्रे वक्रवेगे मन्वन्तारावांतराज्यादिबन्धन पाप  
वृद्धत थोस्त वंशे कुंभक गठे बुधसिंह पुत्र प्रतापसिंह नक्षत्रां सप्तकार कुम्भर्षे वद १०५५  
राय लक्ष्मीपतिरसिंह बहादुर तत् जहू द्वाता राय धनपतिरसिंह बहादुर स्वयं वरुं भवपतिरसिंह  
नरपतिरसिंह सपरिवारेण श्री सम्भवजिन विंशं शान्तिनाथ जी नेमनाथ जी पार्श्वनाथ जी भव  
वीर जी परिकर सहित कारापितं निवृत्तरिया सत्राट दिव्यानामे प्रतिष्ठितं सर्व सुविनि ।

जोषे मन्दिर — बरतुम्हाट ।

ॐ जगपते नमः ॥ सम्बत अष्टारदू ले ग्वाण्ड ( १०१२ ) सुष्य श्रावणी शुक्लपंचम  
उसनाल कुल गोत्र गोखरु श्री मङ्गल धर्मही जाल ॥ सत्तामन्द के समस्तान्तर शुभ वि  
सुत मुद्कमसिंह सुनाल । निन्के धाम राय मन्दिर यह जागीरधी नीर विमान ॥

कलकत्ता — बड़ावजार ।

॥ श्री भर्मनाथ स्वामी का पञ्चायति मन्दिर ॥

परथर परका क्षेत्र ।

[ 87 ]

श्री ॥ सम्बत चंद्रमुनि सिद्धि मेदिनी । १७७१ । प्रतिष्ठितं शाके रसवह्नि मुनि शशी  
१७३९ । संख्ये प्रवर्तमाने माघ मासे धवलपष्टि तिथौ बुधवासरे श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राद्या  
प्रासादोद्यम् । श्री कलकत्ता नगर वास्तव्यः श्री समस्त सङ्केन कारितः प्रतिष्ठितः श्री स्वरतर  
गणेश जटारक श्री जिनहर्ष सुरिजिः । श्रीरस्तु ॥

[ 88 ]

धातुर्यो के मूर्तिपर ।

सम्बत ११९४ माघ सु० १४ पद्मप्रज्ञ सुत स्थिरदेव पत्नी रेवतिया श्रेयो ———

[ 89 ]

सं० ११५९ वैशाख सु० ३ बुधे सौ० जेदड़ सुत सा० बट्टदेव हीर जडाच्यां मातृ राज  
श्री श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता मलभारी श्री देवानन्द सुरिजिः ।

[ 90 ]

सम्बत १३४९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ वर्षे प्राग्वाट जाति० महं० सादा सुत महं० राजा  
श्रेयसे ससुत महं० माखहिवि श्री आदिनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठापितं ।

[ 91 ]

सं० १३७५ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आमचंद्र चार्या रत्नादेवी पुत्र सहजा श्री शान्ति-  
नाथ का० श्री हेमप्रज्ञ सुरिजिः प्र० महाद्वय ।

( ३१ )

[ ७२ ]

सं० १४३४ वर्षे ज्यैष्ठ्ये वदि २ गुरो वरदृङ्गिया गोत्रे सा० नैजदेव पुत्र सु० सन्निधि  
श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विवं कारितं प्र० देवाचार्य सं० — — सूरिनिः ।

[ ७३ ]

सम्बत १४४९ आषाढ सुदि २ गुरो श्री अश्वत्थ गच्छे उकेश वंशे गोतक गोत्रे सा० साज्या  
घार्या तिद्धणसिरि पुत्र सा० नाग राजेन सूरितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विवं कारितं प्र०  
प्रित्तश्च श्री सूरिनिः ।

[ ७४ ]

सं० १४५९ वर्षे ज्यैष्ठ्ये वदि १३ शनैः प्राग्व्याट ज्ञानीय श्रे० रचना जार्या सन्निधि पुत्र  
सोगाकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथ विवं कारि प्र० श्रीः — — ।

[ ७५ ]

सं० १४५९ वर्षे मासि चैत वदि १ उषस्य ज्ञानीय वर्ष० देवराज जार्या सन्निधि पुत्र  
वृषा सा० धवृणादे सहितेन पित्रो ज्ञानु रामती श्रेयसे श्री पद्मप्रद विवं कारितं प्र० प्रद  
णीय गच्छे श्री उदयानन्द सूरिनिः ।

[ ७६ ]

स्वस्ति ॥ सम्बत १४७१ वर्षे फागुण सु० १२ बुधे श्रीनाथ महेश गोत्रे सा० देवा पुत्र  
सा० खेमराजे स० महादेवेन श्री आदिनाथ विवं प्र० श्री विजयप्रद सूरिनिः ॥

[ ७७ ]

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ५ शोस वंशे काकनिया गोत्रे सा० साज्या पुत्र सा० साधिका  
जाय्या पद्माईना शान्तिनाथ विवं कारि प्र० प्रतिष्ठितं कर्षणीय श्री नरपंडु सूरिनिः ।

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि ५ उत्त वंशे चत्तकरीया गोत्रे सा० पाद्देव जा० करण पुत्र  
सामल जार्या नयणादे पु० श्रीवठ सहिता आत्म पुण्यार्थ श्री श्रेयांस विं० का० प्र० — — पि  
गठे श्री नयचंद्र सूरिजिः ।

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि १५ सोमै उपकेश वंशे श्री काकरिया गोत्रे सं० सुरजन जा०  
चंजी पुत्र श्रीरङ्गेन आत्म श्रेयसे निज मातृ पितृ श्रेयसे श्री चंद्रप्रज विं० का० प्र० श्री कृष्णि  
गठे श्री नयचंद्र सूरिजिः ॥

सं० १५१० वर्षे फागुण वदि ३ शुके श्री श्रीमाख ज्ञातीय ठकुर भरणी जार्या वाई गात्री  
सुत ठकुर मांनण जार्या वाई अरघू तेन स्वकुटुम्ब श्रेयसे श्री आदिनाथ विं० कारितं प्रति-  
ष्ठितं आगम गठे श्री जिन रत्न सुरिनामुपदेशेन ॥ श्रीरस्तु कख्याण ॥

सन्वत १५१३ वर्षे मा० सु० ६ रवौ उत्तवाल ज्ञातीय बहुरा गोत्रे सा० स्त्रीमा पुत्र  
वरणा जा० वालहदे स० जातृ रव्हा श्री विमलनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री चित्रवाल  
गठे श्री दाणाकर सूरिजिः ।

सं० १५१४ वर्षे आषा० वदि १३ दिने वपुडाणा गोत्रे तुंफिला गोत्रे सुत देवराजेन पु०  
पद्मराज युते विं० का० प्र० श्री सर्वानन्द सूरिजिः ।

सं० १५१९ वर्षे आषा० सुदि १० त्रिदलीय श्री काणा गोत्रे ठ० लातृ जा० धर्मिणि

पु० अचक्ष दासेन पु० उप्रसेन सद्दीसेन सुर्पसेन बुद्धिसेन देवदास दीग्गेन महिभारति  
युतेन श्री शान्तिनाथ का० श्री जिनचंद्र सूरि पदं श्री जिनचंद्र सूरिः प्रतिष्ठितं ॥

[ 104 ]

सम्पत् १५१९ वर्षे कार्तिके वदि ४ गुरु श्रीमाजी ज्ञातीय मंत्रि वेया नार्या महिभारति सुत  
वरजांगकेन जातु जेसा नरवद द्यापा सद्धितेन पितृ मातृ श्रेयार्थ श्री मज्जिमनाथारि पदु  
विंशति पद कारित प्रतिष्ठित श्री ब्रह्माण गणे श्री सुनिचंद्र सूरि पदं श्री श्रीर सूरिः ॥  
जेया वास्तव्यः श्री शुभं चवतु ॥ श्रीः ॥

[ 105 ]

सं० १५२४ वै० शु० १० उकेश वेदर वासि सं० महिराज नार्या पपाई सुत पपाईसेन  
जगिनी पपाई प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री शीतलनाथ विवं का० प्र० तथा श्री सोमसुन्दर सूरि  
सन्ताने श्री सद्दीसागर सूरिः ॥ श्रीरस्तु ॥

[ 106 ]

सं० १५२४ वै० शु० प्रा० श्रे० पाता जा० वातु पुत्र जेताकेन जा० जायदि पु० नगदास  
जातु अर्जुन जा० सोनाइ प्र० कु० युतेन श्री शीतलनाथ विवं का० प्र० श्री सोमसुन्दर  
सूरि सन्ताने श्री सद्दीसागर सूरिः ॥

[ 107 ]

सं० १५२२ वर्षे वै० सु० ६ सोमे श्री उकेश वेगे जातु सन्ताने सं० जेया नर नारदास  
पूना ज० जेदटा नारदास श्री अजिनन्दन जिन विवं कारि सं० श्री सोमसुन्दर सूरि श्री  
जिनचंद्र सूरिः ॥

[ 108 ]

सं० १५२२ वर्षे वैशाख सु० १० सुते श्री नरदास वेगे सं० जेया नर नारदास सूरि

काष्ठी पुत्र सा० सीद्दा सुश्रावकेण जा० सूहृदिदे पुत्र श्रीवंत श्रीचंद स्तदाजड रव शिवदास  
पौत्र सिद्धपाल प्रमुख कुटुम्ब युनेन श्री अश्वल गणेश श्री जयकेशरि सूरीणामुपदेशन  
मातृ पुण्यार्थं श्री कुन्थुनाथ विवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री सजेन ॥

[ 109 ]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ५ जामे उपकेश ज्ञातीय ठ० धरणी जा० ऊखी सु० देवासा  
जा० कुंती कनसू चतृ आत्म श्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ विवं का० प्रति० श्री नाणवाल गणेश श्री  
धनेश्वर सूरिनिः । कोरडा वास्तव्यः ।

[ 110 ]

सम्बत १५५१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शुके श्रीमाल ज्ञातीय माथलपूरा गौत्रे म० हंसराज  
जा० हासकदे पु० सा० पेढा जा० पीमादे आत्म श्रेयसे श्री चंद्रप्रज विवं कारापितं श्री भक्त  
घोष गणेश ज० कमलप्रज सूरि तत्पदे ज० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिनिः प्रतिष्ठितं ॥ ठ ॥

[ 111 ]

सम्बत १५७५ वर्षे माघ सुदि ६ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि लामण जार्या अर्जा  
सुत वासण रूढा जेसिंग हूडा जा० रमादे स्वपितृ मातृ श्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ विवं कारितं  
श्री आगम गणेश श्रीमुनिरत्न सूरि पदे श्री आनन्दरत्न सूरिनिः प्रतिष्ठितं ब्रूयाणा वास्तव्यः ॥

[ 112 ]

सं० १५७८ वर्षे फागुण सु० ए बुधे राजाधिराज श्री नाजि नरेश्वर तझाया श्री मरु  
देव्या तत्पुत्र श्री ५ आदिनाथ विवं का० इंद्राणी अजिधानेन कर्मकार्यार्थं श्रेयोस्तु शुभं भवतु ॥

[ 113 ]

सं० १६५८ वर्षे माघ सित पञ्चमी सोमे वृद्ध शाखायां अहम्मदावाद वास्तव्य उतवाळ  
ज्ञातीय । सा० घोषा जार्या कल्हा सुत सा० राजा जार्या अदक सुत सा० जयतमाळ । जार्या

जीवादे सुत सा० गकुर नात्रा जानृ सा० पुण्यपात्र सा० नाकर स्वदादा नरकारे सु० सा०  
वीरजी प्रमुख छट्टुन्व युतेन स्वश्रेयसे श्री सन्तवनाथ विंशं कारिं प्र० श्री नर गते महासु  
प्रतिबोधक ज० श्री ईरविजय सूरि तराट्ट प्रदावक सुविहित ज० श्री जिनपतेन सूरि  
आचार्य श्री ५ श्री विजयदेव सूरि उपाध्याय श्री कल्याणविजय गणि प्रमुख परिच्छेदः ॥

[ 114 ]

सम्बत १६९७ वर्षे फागुण सित पञ्चमि गुरुवासरे श्री सन्तवनीये चान्दक्य सुत सा०  
उपकेश ज्ञातीय सा० लक्ष्मीधर चार्या वाई लखनादे पुत्री वा० फते वाई चान्दक्य नरमण  
सा० धनजी सा० रतनजी सा० पञ्चासण प्रमुख सुतया श्री नमिनाथ विंशं कारिं प्रदिव्य  
पिनं च स्वप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च तथा गडाधिराज नटारक श्री विजयसेन सूरि  
श्री विजयदेव सूरिश्वर पट्टप्रजाकराचार्य श्री श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥

॥ श्री सह्याचीरस्वामी का मन्दिर — माणिकजळ ॥

[ 115 ]

सं० १३४० वर्षे — — — उयलवाज ज्ञातीय सा० कालना श्रेयोर्थ श्री माणिकजळ  
विंशं माता चापल श्रेयोर्थ श्री शान्तिनाथ विंशं कुनर सिंहेन श्याम पुण्यार्थ श्री वासीनाथ  
चार्या लखनादेवी श्रेयोर्थ श्री महावीर विंशं सुत जेवसिंह पुण्यार्थ श्री जेजिनाथ विंशं  
कारितं साह कुमरसिंहेन प्रतिष्ठितं कोरंटक गते श्री नर सूरि सन्तवने श्री फका सूरि  
श्री सर्वदेव सूरिजिः ।

[ 116 ]

सं० १४०४ वर्षे श्री श्रीनाज घंशे सा० कामा सा० दास सत्यवर्षेण पुत्र पत्नी सूरिसेन  
स्वपुण्यार्थ श्री वर्द्धमान विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री लखनर गते श्री जिनराज सूरि गते श्री  
जिनजळ सूरिजिः ॥



सं० १५११ वर्षे पोप वदि ए बुधे श्री ब्रह्माण गढे श्री श्रीमाख ज्ञातीयः श्रे० मांड्या  
जा० राणा सु० वस्ता जा० अलवेसरि नाम्न्या खजतृ श्रे० श्री कुन्धुनाथ वि० प्र० श्री  
विमल सूरिजिः । वगुडा वास्तव्यः ॥

सं० १५३३ वर्षे वैशाख वदि ए रवौ श्री जावकार गढे उपदेश ज्ञातीय वांठीया गोत्रे  
व्य० मीमण जा० हलू पु० सादा जा० सूहगदे पु० नेमीचन्द — — — जातृ नेमा पुण्यार्थ  
सनस्त कुटुम्ब श्रेयसे श्री सुविधिनाथ प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री कालकाचार्य  
सन्ताने ज० श्री जावदेव सूरिजिः ॥ सीरोही वास्तव्यः शुचम्भवतु ॥

सम्बत १५५१ वर्षे पोप सुदि १३ शुके श्री श्रीवंशे ता० अदा जा० धर्मिणि पुत्र सा०  
वस्ता सा० तेजा सा० पीमा सा० तेजा चार्या लीलादे सुश्राविकया स्वपुण्यार्थ श्री शान्ति-  
नाथ विंवं श्री अंचल गढेश श्रीमत् श्री सिद्धान्त सागर सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं  
श्री पत्तन नगरे श्री सङ्घेन ॥ श्रीः ॥

सं० १६६७ व० उ० झा० जड़िया गो० स० होला पुत्र स० पूरणमल्ल पुत्र सं० भूपतिना  
श्री विमलनाथ विंवं महोपाध्याय श्री विवेकहर्ष गण्युपदेशात्का० प्र० तथा गठेड ज० श्री  
विजयसेन सूरिजिः ॥

॥ श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मन्दिर — नाणिकतला ॥

सं० १५११ वर्षे आपाड वदि ए रागा उदेश ज्ञातीय सा० जैतिंग जा० चंदी पुत्रेण



सम्बत १५५७ वर्षे माघ वदि १२ बुधे प्रा० सा० गेखा ज्ञा० चाडू सुन सा० राजा बना  
तपा हरपाल ज्ञा० जीवणी सु० हासा वसुपालादि कुटुम्ब सहितेन कारारितं श्री कुन्धुनाथ  
विंवं प्रतिष्ठितं सूरिजिः सीणोत नगरि गोत्र दीवां ।

सं० १५५९ वर्षे माघ सु० ५ श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० शिवा ज्ञा० सिरियादे शृङ्गारदे  
सुत दो० धनसिंहेन ज्ञा० चांविहा सा० कुंअरि ज्ञा० देवसी धीरादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे  
श्री शान्ति विंवं कारितं श्री सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

सं० १५६२ वर्षे वै० सु० १० रवौ श्री तातहरु गोत्रे स० जेठू जार्या जिपूहो पुत्र० ३  
सा० आडू सा० तुडू सा० ठाहड़ तन्मध्यात् सा० ठाहरु जार्याया मेयाही नाम्न्या स्वश्रेयसे  
स्वपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० श्री उपकेश गछे ककुदाचार्य सन्ताने श्री देवगुप्त  
सूरिजिः ॥

माधोलालजी डुगड़ का घरदेरासर — बड़तला ।

उं सं० १५१५ वर्षे आषाढ वदि ३ श्री उकेश वंशे वरड़ा गोत्रे सा० हरिपाल सुत ज्ञा०  
आसा सापू तत्पुत्र मं मरुलिक सुश्रावकेण जार्या सं० रोहिणि पुत्र स० साजण प्रमुख सप-  
रिवार सहितेन निज श्रेयसे श्री विमलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री खरतर गछे श्री  
जिनराज सूरि प दे श्री जिनजङ्ग सूरिजिः ।

माधोलाल बाबुका घरदेरासर — मृगीहाटा ।

सं० १६९४ वर्षे माघ सु० ६ गुरो रेवती नक्षत्र श्री छीप बंदिर वास्तव्य श्री उकेश

ज्ञातीय वृद्ध शाखायां सा० श्री करण चार्या श्री सिरा आदि सुत सा० सोणसी चार्या श्री  
संपुराई पुत्र रत्न सा० शवराज नाम्ना श्री आदिनाथ विंवं कारितं स्वप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठापितं  
प्रतिष्ठितं तपा गढे ज० श्री विजयदेव सूरिनिः ॥

जीवनदासजी का घरदेरासर — हरिसनरोड ।

[ 131 ]

सं १४९५ वर्षे ज्येष्ठ मास २१ रवौ श्रे० धणरी चार्या मच्च सुत सा० ठ० पराकेन चन्द्रगिनी  
श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागढमंडन श्री सोमसुन्दर सूरिनिः ।

[ 132 ]

सं १५९९ व० वैशाख सु० १३ दिने श्री श्रीमाली श्रे० बहजा चा० बहजसदे पु० सा०  
करणसी चा० जीवादे काना लहितेन श्री शांतिनाथ विंवं का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री मुनि  
चन्द्र सूरिनिः बरजा वा० ॥

[ 133 ]

सं १६०४ वर्षे वैशाख वदि ९ सोमे श्री उंसवाल ज्ञातीय सा० देवदास चार्या वा० देव  
लदे तत्पुत्र सा० श्री रतनपाल चा० वा० रतनादे सपत्ने सा० जावड़ चा० वा० चासलदे तस  
पुत्री वा० जीवण श्री धरमनाथ आ० — जिदास परिवार वृत्तः ।

४० न० ईण्डियन मिरर स्ट्रीट — धरमतला ।

श्री रत्नप्रभ सूरि प्रतिष्ठित मारवाड़ के प्रसिद्ध टपकेश (ओसियां) नगर की श्री महादेव न्यासीके मन्दिरके  
पार्श्वमें धर्मशालाकी नींव खोदनेमें मिली भई श्री पार्श्वनाथ जी के मूर्तिके परकरके पश्चात्तया लेख ।

[ 134 ]

उं संवत् १०११ चैत्र सुदि ६ श्री ककाचार्य्य शिष्य देवदत्त मुक्ता उपदेशीय चेत्य गृहे  
अखयुजू चैत्र पष्टयां शांति प्रतिमा स्थापनीया गंधोदकान् दिवासिका जामुस प्रतिमा इति ।

## तीर्थ श्री चंपापुरी ।

यह प्राचीन जैनतीर्थ ई, आई रेलवेके लुप लैनके जागलपुरके पास नाथनगर ट्रेसन से मिला हुआ है । यहां चंपापुरी-चंपानगर-चंपा-हालमे जिस्को चम्पनालात्ती कहते हैं १२ मां तीर्थङ्कर श्री वासुपुज्य स्वामीके पञ्चकल्याणक जये हैं । यहां श्वेताम्बरी दिगम्बरी दोनो सम्प्रदायके जुदे २ मन्दिर वर्तमान हैं । राजगृहके श्रेणिक राजाका बेटा कोणिक जिस्को अजातशत्रु वा अशोकचंद्र जी कहते हैं राजगृहसे अपनी राजधानी उठाकर यहां चंपामें लायाथा । सुन्नद्रा सतीजी इसी नगरकी रहनेवाली थी । तीर्थङ्कर महावीर स्वामीने यहां ३ चौमासे कियेथे और उनके आनन्दादि मुख्य श्रावकोमें कामदेव श्रावक यहांका रहनेवाला था और जैनागमके प्रसिद्ध दश वैकालिक सूत्रजी श्री शय्यंजव सूरी महाराजने इसी चंपापुरीमें रचा था । वसुपूज्य राजा जया रानीके पुत्र श्री वासुपूज्यस्वामीका चवन जन्म फाट्गुण वदि १४, दिक्षा-फाट्गुण सुदि १५, केवल ज्ञान-माघ सुदि २ और मोक्ष-आषाढ़ सुदि १४ यह पांच कल्याणक इसी नगरमें जयेथे इस कारण यह पवित्र क्षेत्र है ।

पापाखोंके विंव और चरणोंपर ।

[ 135 ]

सं १६६७ । श्री धर्मनाथ विंव का० सा० हीगनंदेन ० । प्र० श्री जिनचंद्र सुरिजिः ॥

[ 136 ]

सं १७२७ वर्षे वै० सु० ११ — — — श्री तमा गछे श्री वीरविजय सुरिजिः प्रतिष्ठितं ॥  
श्री लहेन ।

\* यह मुशिदावाद के प्रसिद्ध जगत्सेठके पूर्वज साह हीरानन्दजी हैं, जैसा सम्भव है ।

संवत् १८५६ वर्षे वैशाख मासे शुद्ध पक्षे बुधवासरे । तृतीयायां । चंपापूरी तीर्थाधिगज । श्री देवाधिदेव श्री वासुपूज्य जिन विंशं समस्त श्री सङ्घेन कारितं । कोटिक गगचक्र कुलालङ्कार । श्री मत् श्री सर्व सुरिभिः प्रतिष्ठितं ।

संवत् १८५६ वैशाख मास शुद्ध पक्षे बुधवासरे ३ तियो श्री अजितनाथ ज्ञानि विंशं प्रतिष्ठितं । श्री जिनचंद्र सुरिभिः वृहत् खरतर गछे कारितं मकसुदावाद वास्तव्य — — — ।

सं १८५६ वैशाख मासे शुद्ध पक्षे तियो ३ ॥ बुधवासरे । श्री चंद्रप्रज जिन विंशं प्रतिष्ठितं ज० । श्री जिनचंद्र सुरिभिः । वृहत् खरतर गछे कारितं च । वीकानेर वास्तव्य पोठारी अनोपचंद तत्पुत्र जेठमलेन श्रेयोर्थं ।

सं १८५६ वैशाख मासे शुद्ध पक्षे बुधवासरे । तृतीया तिथौ । श्री महावीर ज्ञानि विंशं प्रतिष्ठितं । ज० । श्री जिनचंद्र सुरिभिः । वृहत् खरतर गछे कारितं समस्त श्री सङ्घेन श्रेयोर्थं ।

संवत् १८५६ वैशाख मासे शुद्ध प० ३ दिने । श्री ज्ञानितनाथ जिन विंशं प्रतिष्ठितं । खरतर गछाधिराज ज० । श्री जिनलाल सुरि पट्टालङ्कार । ज० श्री जिनचंद्र सुरिभिः ज्ञानि । — — — समस्त श्री सङ्घेन श्रेयोर्थं ॥

सं १८५६ वैशाख मासे शुद्ध पक्षे बुधवासरे ३ तियो श्री वासुपूज्य ज्ञानि विंशं प्रतिष्ठितं

श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गढे अजिमगञ्ज वास्तव्य कारितं गोलेष्टा गोत्रे --  
-- श्राविकया कारि ॥

( १ । शान्तिनाथ ३ । चंद्रप्रभु ४ । विमलनाथ -- -- अजयराजेन श्रेयर्थं । )

[143]

॥ सं । १७५६ फाद्युण कृष्ण प्रतिपत्तथौ श्री वासुपूज्य जिन चरण न्यासः प्र । सर्व  
सूरिजिः । कारितं । सर्व संघेन । चंपानगर मध्ये ॥

[144]

॥ संवत् । १७५६ वैशाख शुक्ल पक्षे तृतीयायां तिथौ श्री जिनकुशल सूरि पाण्डके ।  
प्रतिष्ठितं जः श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गढे कारितं । समस्त श्री संघेन श्रेयर्थं ।

[145]

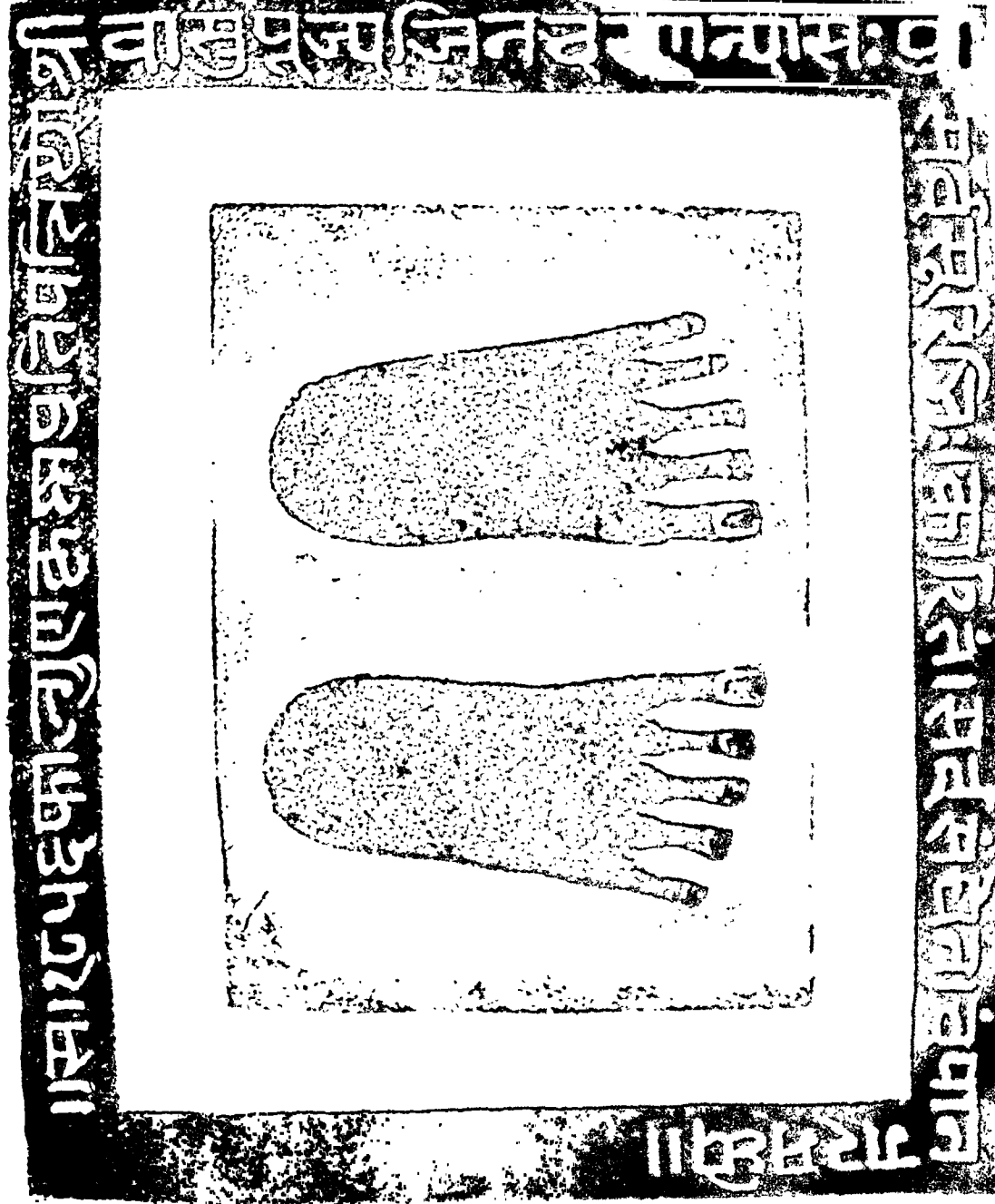
संवत् १७७१ मिति माग शुक्ल षष्ठ्यां शुक्रवार काष्ठासंघ माधुर गढे पुस्कर गणे लोहा-  
चार्याम्नाय जट्टारक श्री जगत्कीर्ति सदान्नाय अग्रोत कान्वये पिपल गोत्रे प्रयाग नगर  
वास्तव्य सा० क श्री हीरालाल पुत्र रूपनदास पुत्र सन्नूलाल -- -- अजरवाल प्रजा सा  
-- श्री पद्मप्रज्ञ -- -- प्रतिष्ठा कारिता ।

[146]

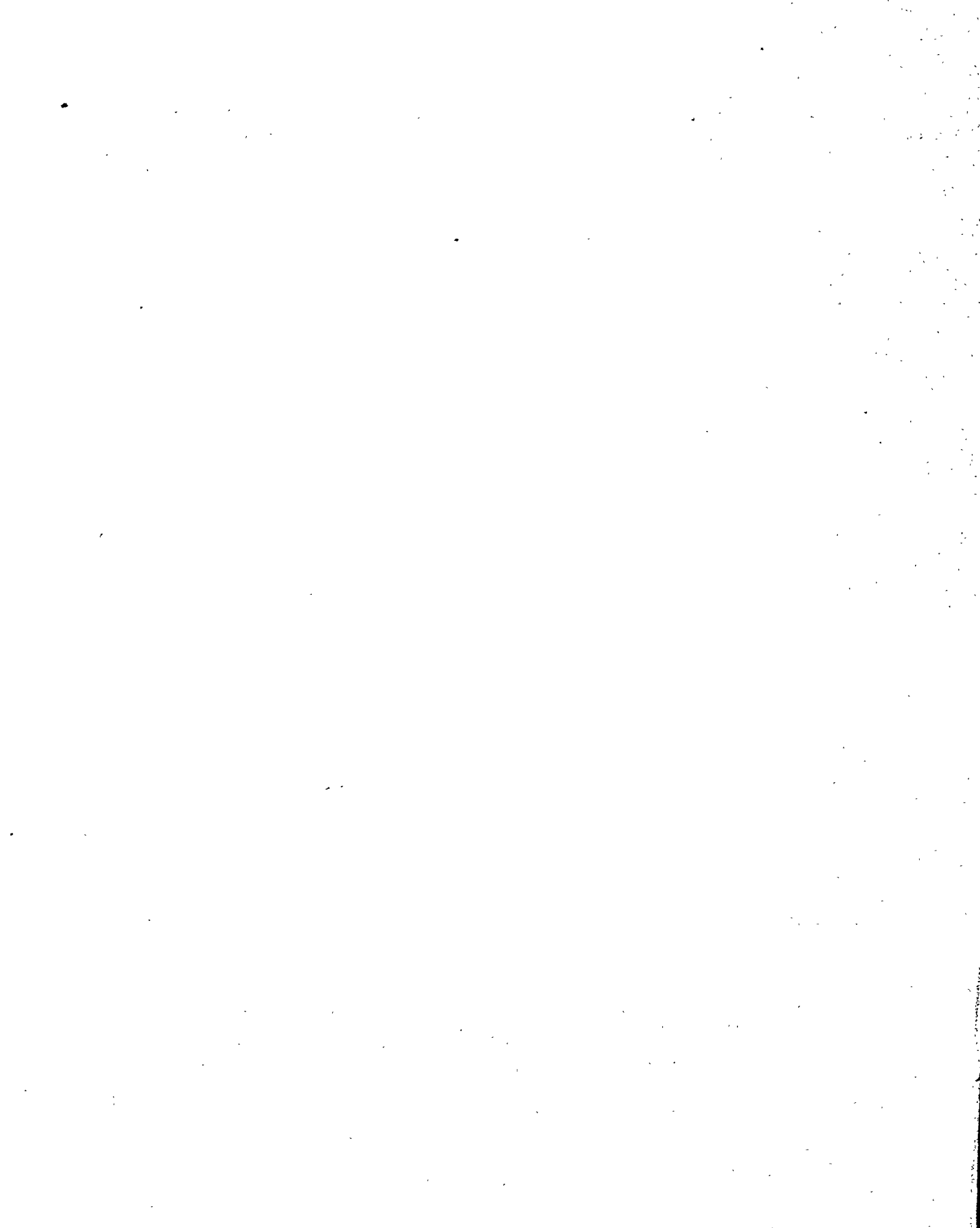
सं १७७७ आषाढ शित ए गुरौ श्री संजवनाथ विं वं प्रतिष्ठितं बृहत् -- -- सूरिजिः  
कारितं च झूगड़ सरूपचंद्र त्राट् करमचंद्र हुलासचंद्र जननी प्राण वीवी श्रेयर्थं ।

[147]

संवत् १७७७ वर्षे मिः फागुण सुदि ३ दिने । श्री शान्तिनाथ विं वं कारितं मकसुदावाद  
वास्तव्य श्री संघेन श्रेयसे प्रतिष्ठितं च ज । श्री जिनहर्ष सूरि पट्टालङ्कार ज । श्री जिन  
सौजाग्य सूरिजिः बृहत् खरतर गढे ।







सं १९२० सि । फा० कृष्ण २ बुध — — हृगड़ प्रताप — —

[ 140 ]

॥ संवत् १९२५ मिति जेठ शुक्ल त्रीतीका तिथौ स्वीकारे हृगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी लक्ष्मण्य सहाय कुंवर तत्पुत्र राय लठमीपत्तसिंघ बहादुर तत् त्रुद्राना राय धनपत्तसिंघ बहादुर तत्पत्नी प्राणकुंवर जन्म सकली कन्यार्थ । जं । शु० ज० श्री जिनहंस सूरिजी (विजेराज ॥ उ० श्री आणन्दवल्लभ गणि तत् शिष्य उ० श्री सदाशक्त गणि प्रसिद्धि ॥ पूज्याचार्य श्री रतनचन्द्र सूरि दुंपक गछे ॥ श्रीः ॥ कल्याणगरु ॥ श्री नवपदजी श्री चंदा पूराजी सदाविताः ॥ श्रीः ॥

[ 150 ]

श्री वासुपूज्यजी जन्म कल्याणक । सं० १९२५ निःफाटगुन कृष्ण ५ तिथौ । हृगड़ श्री प्रतापसिंहजी तत्पुत्र राय लठमीपत्तसिंघ बहादुर तत्रात्र श्री धनपत्तसिंघ बहादुर कारापिथं जं० । शु० । प्र० । ज० । श्री जिनहंस सूरिजी विजेराज्ये ॥ उ० श्री सागरचन्द्र गणि प्रसिद्धि ॥ शुभं चूयात् ।

[ 151 ]

धातुयोंके मूर्तिपर ।

सं १९०९ वर्षे ज्ये० शु० — रवौ रंशू जा० रमाई — — देना द्याग द्यापा पु० सादर जा० लक्ष्मीसुदिधि पुण्ड्रार्थ श्री चतुर्विंशति जिन प्रतिमा श्री नमिनाथ शिवं का० प्र० श्री संभर गछे श्री शांति सूरिजिः ॥ श्रीः

[ 152 ]

संवत् १९२७ वर्षे भाद्र प० १ सोमे प्रा० सं० धारा जा० तत्पुत्र सुमेन सा० देवा देवता

सं वनाकेन जा० सीत्र प्रमुख कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री सम्भवनाथ विं वं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ माख्यवन ग्रामे ॥

[ 153 ]

सं १५३० श्री मूलसंघे श्री मानिकचन्द देवराज प्रतिष्ठापितं - - - ।

[ 154 ]

सं १५५१ वर्षे मा० सु० १३ गुरू लकेश वंशे सिंघाड़िया गोत्रे सा० चांपा जा० राळं  
पु० सा० जोला जा० लहिकू पु० सा० पूजा० सा० काजा सा० राजा पु० धना सा० कालू सा०  
काजा जा० कुनिगदे इत्यादि परिवृतेन सा० काजाकेन श्री आदिनाथ चतुर्विंशति पट्टे का०  
प्र० श्री खरतर गठे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टे श्री पूज्य श्री जिन  
हर्ष सूरिभिः ॥

[ 155 ]

संवत् १५०१ वर्षे माघ वदि १० शुक्ले श्री प्राग्वाट झा० वृद्धशाखायां व्य० सहिसा  
सु० व्य० समधर जा० वड़धू सुत व्य० हेमा चार्या दिमाई सुत व्य० तेजा जीवा वर्द्धमान  
एते प्रतिष्ठापितं श्री निगम अजावक श्री आणंदसागर सूरिभिः ॥ श्री शान्तिनाथ विं वं श्री  
रस्तु श्री पतन नगरे ॥

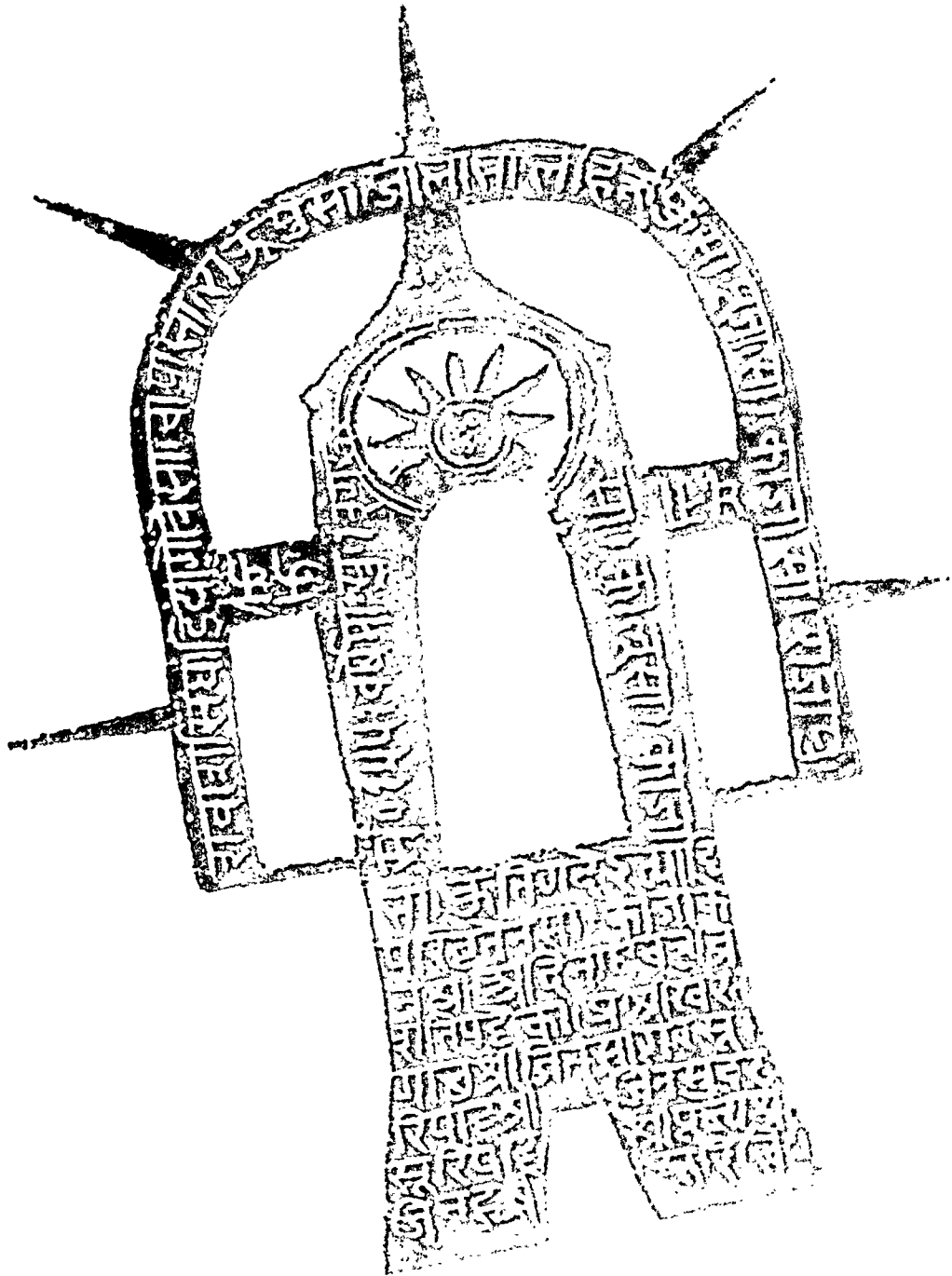
[ 156 ]

संवत् १५०५ वर्षे आपाड़ सुदि ५ सोमे श्री उसवाल झातीय आइचणी गोत्रे चोर  
वेड़ीया शाखायं सं० जइता चार्या जइतलदे पु० सं० चूहड़ा चार्या जूरी सुत ऊधरण चंड  
पाल आत्म श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विं वं कारितं श्री उपकेश गठे कुकदाचार्य सन्ताने प्रति  
ष्ठितं श्री श्री श्री सिद्धि सूरिभिः । - - - -

[ 157 ]

संवत् १६०३ वर्षे माघशिर सुद ३ शुक्ले प्रा० झा - - वास्तव्य - - जा० रङ्गादे सा०

Choubisi (Metal) Champapur Temple, dated S. 1551 (1469 A.D.)





सुग चा० सूरमादे जा० श्री रङ्ग सदारङ्ग असीपलादि कुटुम्ब युक्तेन साद् ल० नर्षणिग श्री  
सुमतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गद्ये श्री विद्यावसोम चूरि शिष्य श्री श्री ए —  
सूरिनिः ।

[ 158 ]

झींकार चंत्रपर ।

सम्यत् १६६९ वर्षे शुक्लेपक्षे त्रयोदशी दिने शुक्रवारे श्री मूलसंघे सरन्यति गद्ये चन्द्र-  
त्कार गणे चंपापूरी नगर शुभस्थाने — — —

[ 159 ]

सम्यत् १६७३ वर्षे मूलसंघे ज० श्री रत्नचंद्र उपदेशेन उपा० श्री जयश्रीनि प्रतिष्ठितं  
— — — ग्रामे समस्त श्री संघेन कारापितं ।

बाबु सुखराज रायजी का बन्देरासर — नाथनगर

पापाण्डके सूरिपर ।

[ 160 ]

सं० १७७७ साघ सुदि १३ बुधे श्योल वंशे कठारा गोत्रीय लाला जयन्तादास तामरा  
घ्यासकुवर तथा श्री बाबुपूज्य जिन विंवं कारितं सुनि हंसचंजोपदेशात्प्रतिष्ठितं श्री कृष्ण  
खरतर गठीय श्री जिन — — — ।

पञ्चतीर्थीयो पर ।

[ 161 ]

सं० १९१९ — — — मंत्रिद्वलीय श्री काणामोक्ष ह० साद् ल० नर्षणिग सुग नर

( १८ )  
अचल दासेन पुं अग्रसेन बद्धमीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री शान्तिनाथ विं  
कां प्रति श्री जिनसुन्दर सूरि पदे श्री जिनहर्ष सूरिजिः ।

[ 162 ]

सम्बत १५७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोने श्रीमत्परा ॥ ते ॥ निभूज गोत्रे । स० इन च०  
— — सुश्रावकेण चा० जीवादे पु० आनन्द सा० सोहित प्रमुख सहितेन श्री आदिनाथ  
विं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गद्ये ॥ श्री जिनरत्न सूरिजिः ॥

छींकारके चंद्रपर ।

[ 163 ]

सम्बत १७५६ वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र चंद्र प्रतिष्ठितं  
श्री जिन अक्षय सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनचंद्र सूरिजिः जयनगर वास्तव्य श्री मादान्वये  
भरगड़ गोत्रीय सुश्रावक खुबचन्द तत्पुत्र रोसनराय वृद्धिचन्द खुत्यालचन्द सरूपचन्द  
मोतीचन्द रूपचन्द सपरिकरण कारित स्वश्रेयार्थ ॥

स्थान — जागलपुर ।

श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर ( धर्मशालामे )

पाषाणपर ।

[ 164 ]

॥ शुभ सं० वीर गताब्दा १४०५ विक्रम नृपात् १७३६ रा जेठमासे वरे शुक्लपक्षे त्रयो-  
दश्यां तिथौ — चम्पा नगर्यां श्री वासुपूज्यजी पञ्चकल्याणक चूम्युपरि ओश वंशे झगड़ गोत्रे  
वृ । शा । वा । श्री बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघस्य चतुर्थ वधूः महतावकुमरी स्वजव  
सफल करणार्थं इष्टा कृतासिच कादवशात् सं० १७३२ श्रावण कृ० ६ दिने कादधर्म प्राप्तस्य  
सुनोरथाय तत्पुत्र राय श्री बद्धमीपत सिंघजी बहाडुर राय श्री धनपत सिंघजी बहाडुर







तेन उच्येण धर्मशाखा जिनालय कारापितं प्रतिष्ठितं सर्वं सृजितः श्रीसंघ च संतापनी श्री  
संघ माखिक श्री रस्तु श्री कल्याण मस्तु श्री जीकटरीया इमप्रेत राज्ये पृथग् १०३२ ।

पापाणके चरणों पर ।

[ 165 ]

( १ ) च्यवन ( २ ) जन्म ( ३ ) दीक्षा ( ४ ) केवल ( ५ ) निर्वाण कल्याणक पाहुका ॥  
साधु ७२००० । साध्वी १२५००० । श्रावक २१५००० । श्राविका ४३६००० ॥ — — — श्री वासु  
पूज्य पञ्चकल्याणक चरण कारापितं चंश नगरे थोशवास वृ । शा । हृगढ़ गोत्रे वा । श्री  
बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघजी तत्तार्या महतावकुमर घोवी तत्पुत्र राय श्री खदमी  
पतसिंघ श्री धनपतसिंघ वहाडुर कारापितं प्रतिष्ठितं सर्वसृजित श्री संघस्य शुभंभवतु ॥

[ 166 ]

॥ ए ए ० ॥ सम्बद्धाणर्षि नागेन्दो राध शुक्लादशी ऋगौ महि नम्योः पदं जीणसुद्धन  
खरतरेण श्री जिनहर्ष निवेशी वा ज्ञान्यधीर गणि किञ्च मावद् गोत्रस्य प्रणेन्द्रोर्षितसृजित्य  
काय्यकृत् २ शुभम् ॥ सं० १०७५ मिति वैशाख सुदि १० शुके मिथिला नगर्षा ७ श्री महि  
जिन चरणन्यासः ॥

[ 167 ]

सं० १९३१ माघ शुक्लपक्षे १२ बुधे श्री वासुपूज्य ( अजितनाथ, सन्तवनाथ ) जिन

\* यह चरण दरभङ्गा लैन में सोतामहो छेमनक नाम मिथिला नगरी में उदाहर लाया गया है । वहाँ इस  
समय कोई जैन मन्दिर नहीं है । १९ मां तीर्थहर श्री महिनाथ स्वामीके चार कल्याणक और २१ मां श्री नाथ  
नाथ स्वामीके चार कल्याणक यहां भये थे । श्री महिनाथ मिथिलाके छुंन राजा और प्रभासो राजाके पुत्रों  
थी । जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सुदि ११ के दिन भया था । इसी नगरीके विजय राजा के विजय  
रानीके पुत्र श्री नामिनाथ स्वामीका जन्म थावन वदी ८, दीक्षा जाषठ वदि ९, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सुदि ११  
के दिन भयाथा किसी २ ग्रन्थमें " मिथिला " के नाममें " नयुग " नगरी श्री दरभङ्गमें लाया है । इसका  
सत्य ज्ञानोपम्य है । चरन तीर्थहर महावीर भगवानका जो ६ चौमासा यहां भयाथा ।

विंशं श्योस वंशे झूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंह पुत्र राय बहादुर धनपतसिंहेन कारापितं ।  
मखधार पूर्णिमा श्री मद्धिजय गढे जटारक श्री जिन शांतिसागर सूरिजिः ॥

[ 168 ]

॥ सं० १९३३ मा । शु । ११ श्री मद्धिजिन विंशमिदं मकसुदावाद वास्तव्य श्योश  
वंशीय लुंपक गणोपाशक झूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य जार्या महताव कुंवरिकस्य लघु  
पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागढीयेन ॥  
श्री मिथिलापुरवरे ।

[ 169 ]

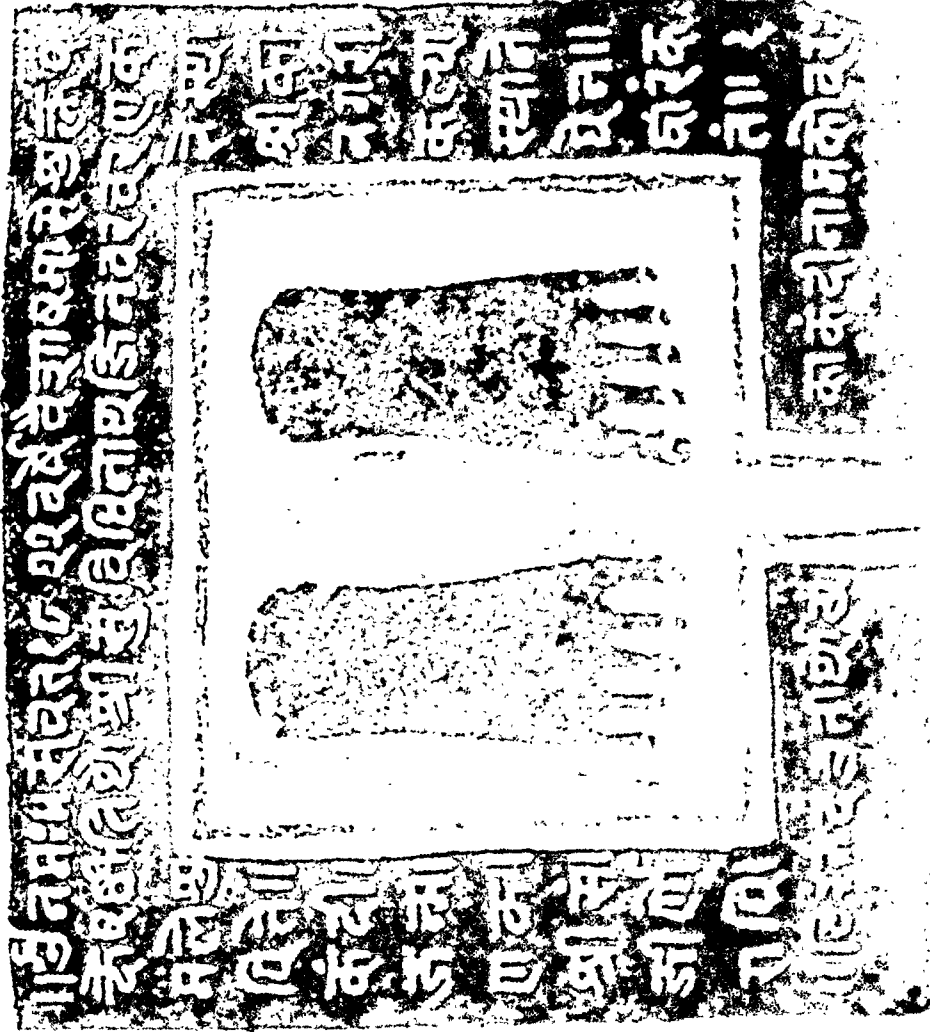
सं० १९३३ मि । मा । सु । १२ श्री नमिजिन विंशमिदं मकसुदावाद वास्तव्य श्योश  
वंशीय लुंपकगणोपाशक झूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य जार्या महताव कुंवरिकस्य लघु  
पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागढीयेन  
सीतामढी मिथिलायां ।

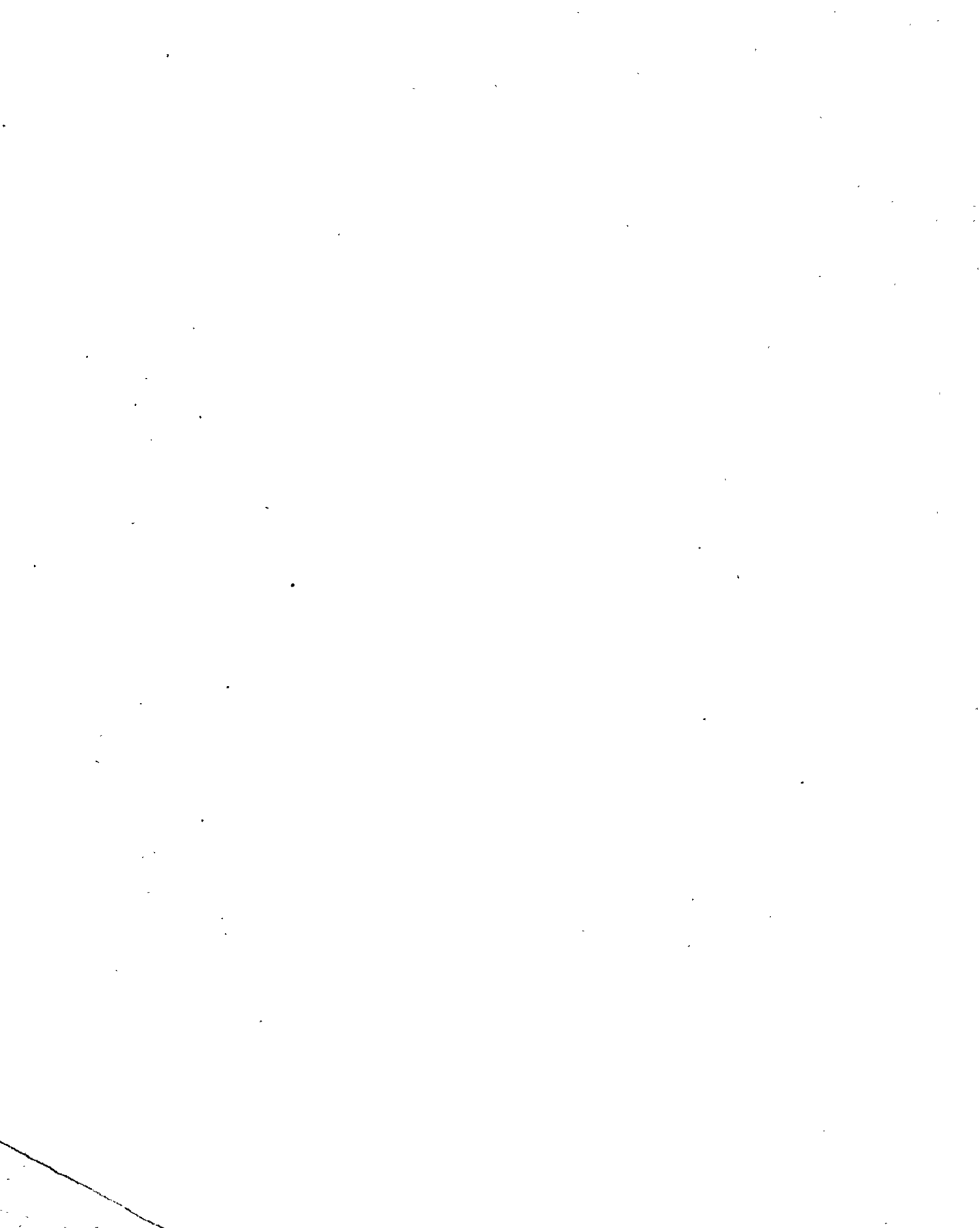
पंचतीर्थी पर ।

[ 170 ]

॥ सं० १५ आषाढादि ए६ वर्षे आषाढ शु० ११ दिनेः रा० जण्फारी गोत्रे जं० सिवा  
जा० रत्नादे पु० ज० हेमराज बेला जा० बालहदे पु० पता — — विंशं कारापितं पुण्यार्थं श्री  
संमेर गढे ज० श्री साब सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ सू० तानाकेन कृतं ।

Footprints, Kikandi Temple, dated S. 1822 (1765 A. D.)





## तीर्थ काकंदी और क्षत्रियकुण्ड ।

लखीसराय स्टेशन से ६ कोस पर काकंदी है । नवमा तीर्थकर श्री सुविधिनाथ जी का चवन-जन्म-दीक्षा और केवल ज्ञान यह चार कल्याणक यहां जये हैं । सुग्रीव राजा रामा रानी के पुत्र थे । मृगशीर वदि ५ जन्म, मृगशीर वदि ६ दीक्षा और कार्तिक सुदी ३ के दिन केवल ज्ञान जया । जैन मुनि धन्ना काकंदी जी यहीं जये हैं ।

यहां से नव कोस पर खत्रिय कुण्ड ध्याज कल लठवाड़ गांव के नामसे प्रसिद्ध है । चौविंशमां तीर्थकर श्री महावीर स्वामी का चवन, जन्म और दीक्षा यह ३ कल्याणक यहां जये हैं ।

मूर्तियों पर ।

[ 171 ]

संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ महतिषाण वंशे मुंनतोड़ गोत्रे । सं० नटपत्नी पुत्र  
 सं० देपाल चार्या मू० महिणि स्वकुटुंबेन ज्ञाना व० मित्र लखमी पुत्र व्य० दंनगत पुत्र -  
 - श्री महावीर विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर वा० शुजशील गणितः - - - ।

[ 172 ]

संवत् १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महतिषाण वंशे मुंनतोड़ गोत्रे । सं० - - राजपुत्र  
 सं० महादेपाल ज० साहिणि पुत्र सं० सिवाई ।

चरण पर ।

[ 173 ]

श्री नमः । संवत् १७१२ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथी श्री सुविधिनाथ जिन-  
 पर चरण कमले शुजे स्थापिते ॥ श्री काकंदी नगरी जन्म कल्याणक नराने श्री स्वयं  
 जीर्णोद्धारं कारापितं ॥ १ चिरं नन्दतु तीर्थोपं काकंदी नामको परः ।

पापाण पर ।

[ 174 ]

मकरशूदावाद अजीमगञ्ज वास्तव्य झूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंहजी तझार्या महताव कुंवर तत्पुत्र राय खदमीपत तख्तघु सहोदर राय धनपतासिंह बहादुरेण न्याय ड्रव्यण व्यय वोर प्रभू का जिनाखय करापितः खठवाड़ मध्ये उ० श्री सागरचंद्र गणि प्रतिष्ठितं । सं० १९३० मिति वैशाख वदी २ चन्द्रे - - ।

## श्री गुनायाजी ।

नवादा ( गया लाईन ) छेसनसे १॥ माईल पर यह स्थान है । इसका नाम शास्त्रमें "गुणशील चैत्य" से प्रसिद्ध है । यहां २४ मां तीर्थकर श्री महावीर स्वामीका १४ चौमासा प्रयाया । स्थान मनोहर और श्री पावापुरी तीर्थके जलमन्दिर की तरह ताखाव वा विचमें मन्दिर है ।

घातूके मूर्त्तिपर ।

[ 175 ]

संवत् १५१० वर्षे फागुण वदि १२ उसवादान्वये मूधावा गोत्रे स० - मीला जा० वीदू पुत्र सा० तोड्हा जा० पई नाम्न्या स्वपुण्यार्थं पद्मप्रज्ञ विवं कारितं प्र० श्री पद्मानंद सूरिनिः ।

पापाणके चरणोंपर ।

[ 176 ]

संवत् १६०० वर्षे वैशाख सुदि १५ तिथौ मंत्रीदल वंसे चोपरा गोत्रे ठा० विमलदास तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र श्री ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठकुरी श्री निहासो तत्पु० चार्या ठकुरेटी यु० ज० श्री जिनकुसल सूरिका कारापिता पूज्य श्रीश्री ५ श्री श्रीराजे सूरि विद्यमाने उपाध्याय अज्ञय धर्मेन प्रतिष्ठा कृता स्थिर सभे खरतर गछे ।

Feet of the Ganesha (Ganava) Temple, dated S. 1688 (1631 A. D.)







संवत् १९२४ मिति माघ कृष्ण ५ तौमे श्री गुरुशिक्षाण्ये चेत्ये श्री इगङ्ग प्रतापसिद्धि  
जीस्कानां चार्या मङ्गलाय कुंवर तस्कुचितोरस्य कनिष्ठ पुत्र श्री नय भनपसिद्धि महाश्वर  
माझा खपत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करणार्थ श्री अष्टारव तीर्थे श्री सपुत्र्य निर्वाण  
याचक्या श्री थादि जिन चरण पाहुका कारापिता श्री जिननकि सूरि शास्त्रायां उ० म०  
लाज गणिना प्रतिष्ठितं शुभम्

सं० १९३० ज्ञान शुभ ५ सकय संयन श्री धीर पाहुका कारापिता सपुत्रिय श्री सुभा  
शील्य चेत्ये आसादिताय ॥

पापाय पर ।

सं० १९२४ मिति माघ कृष्ण ५ तौमे गुरुशिक्षे चेत्ये इगङ्ग गोमे श्री प्रतापसिद्धिजी  
तत्पुत्र्या मङ्गलाय कुंवर तत्पुत्र चिरु राय महाश्वर तत्प्रथम पत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली  
कारापिता जीर्णोद्धारं । उ० श्री आषाढ वहुज गवि तमशिव्य उ० श्री सागरानंद मति उ०  
देशात् ॥ श्रीः ॥ शुभंशुभात् ।

पापाय पर ।

-- । श्री जिनेन्द्र जयती । सस्ती श्री गद श्रीजिनेन्द्र सं० १९२४ वि० सं० १९२४  
वर्षे वै० च० ८ शुभानंदे श्री तथा गद्यमनाय धारक सुश्रावक दास श्रीभाटा शरणीये साद  
रुपचन्द्र रंगीकदास देवचन्द्र पाटनवाडा ज्ञाय मुक्ताय वेरदा सुंरुं से पनना सगर्भाय सग  
वन्धु सपुर चन्द्र सुत वेद चन्द्र बास चन्द्र धाम चन्द्र जग चन्द्रे वै ॥ श्री सुभायां उ० शिवे मया

धर्मशास्त्रा यंधावीठे त्या बेरासरमा पद्मसयो गोखलाओ दरवाजो जमतीनी देरी = ४ सहीत सरवे थारसनु काम तथा तळावनी जीत तथा रीपेर वीगेरे जीनोंद्वार करावोठे श्री शुभं चवतु सदा । सळाट जाइचंइ जगजीवन मीजी पाळीताया वाळा --- ।

## तीर्थ श्री पावापुरी ।

शासन नायक श्री महाधीर खामीका यह निर्वाण कछ्राणक का स्थान जैनीयोंका प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र है । २४ सां तीर्थकर के समयसरण की रचना और उनका मोक्ष यहां पये हैं । समयसरण के स्थानमें १ स्तंभ वर्तमान है कोई देख नहीं है । यहांसे प्राचीन चरण उठाकर जलमंदिर के पासमें तळावके पाड़ पर धिराजमान हुये हैं । अश्लिस्कार की जगह तळाव और मंदिर है । प्राचीन मंदिर १ गांवमें है और नवीन मंदिर = १ खेताज्वरी और १ दिनस्परी उस सायाव के पाड़में बनाई और कई धर्मसाधारण है ।

समयसरणजी के प्राचीन चरणों पर ।

[ 181 ]

ते सं० १६४५ वर्ष वैशाख सुदि ३ गुरो श्री ----- कनकविजय नष्टिभिः --- ।  
( अक्षर बल जानेके कारण पढ़ा नहीं जाता )

जलमंदिर — पावापुरीजी ।

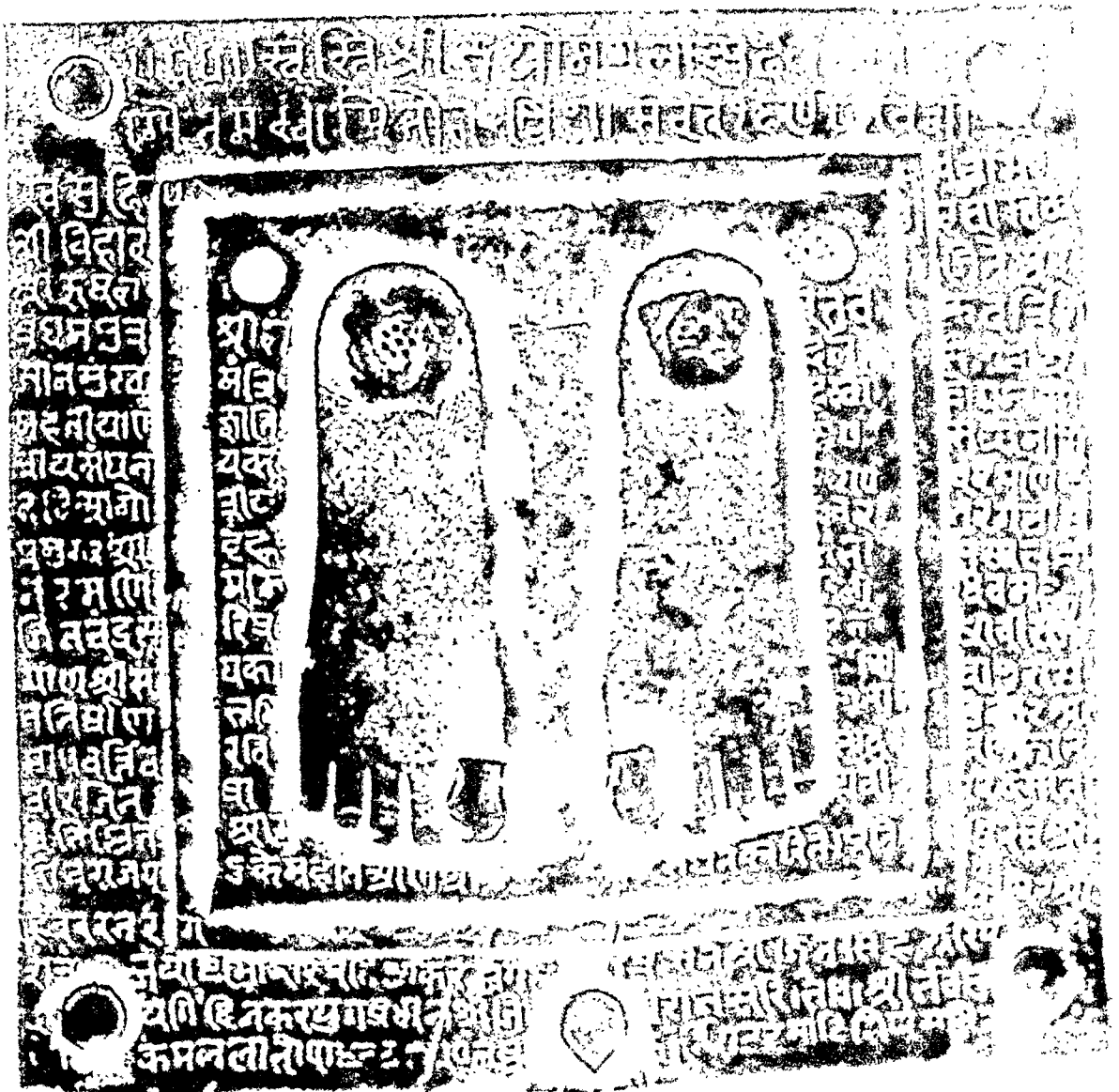
श्री गौतमस्वामीजीके चरणोंपर ।

[ 182 ]

सं० १९३५ सि० व्या० शुद्ध ५ शुभं गौतम स्वामीपर पाड़ुकां काराधितं उलपल औरिया













... १५० ...  
... १५१ ...  
... १५२ ...  
... १५३ ...  
... १५४ ...  
... १५५ ...  
... १५६ ...  
... १५७ ...  
... १५८ ...  
... १५९ ...  
... १६० ...  
... १६१ ...  
... १६२ ...  
... १६३ ...  
... १६४ ...  
... १६५ ...  
... १६६ ...  
... १६७ ...  
... १६८ ...  
... १६९ ...  
... १७० ...  
... १७१ ...  
... १७२ ...  
... १७३ ...  
... १७४ ...  
... १७५ ...  
... १७६ ...  
... १७७ ...  
... १७८ ...  
... १७९ ...  
... १८० ...  
... १८१ ...  
... १८२ ...  
... १८३ ...  
... १८४ ...  
... १८५ ...  
... १८६ ...  
... १८७ ...  
... १८८ ...  
... १८९ ...  
... १९० ...  
... १९१ ...  
... १९२ ...  
... १९३ ...  
... १९४ ...  
... १९५ ...  
... १९६ ...  
... १९७ ...  
... १९८ ...  
... १९९ ...  
... २०० ...

श्री धाम प्रतिष्ठित श्री महाशैल वर्द्धमान जिनराज पादुके महानिधान श्री संवत् १६७७ ।  
प्रतिष्ठिते च श्री वृद्धवन्तर गजधीश्वर श्री शंभुजयाष्टमोत्सव प्रविष्टाकर सुमन्त्र श्री  
जिनसिंह सूरि पद्मेदयनिर हिनरा सुमन्त्र श्री जिनराज नृपतिः ॥ श्री गणेश ॥ श्री  
कमल खालः भावनाः सं० जयवर्द्धी राजहंतादि शिष्य प्रतिष्ठाः प्रदर्शिते ।

११ गणेशदेवके चरणों पर ।

[ 191 ]

१ । संवत् १६७७ प्रतिष्ठिते । वैशाख सुदि ५ सोमवार । श्री विष्णु नगर वास्तव श्री  
नरत चक्रवर्त्ति महाराजाय सत्तज मंत्रि पुत्र मंत्रिश्चः वज्रानवीय नरननि संविद्ध श्री जिन  
चंद्र सूरि प्रबंधित महतिषाय ज्ञानि मण्डन चोपड़ा गोत्रीय संवत् १६७७ संवत् १६७७ ।

श्री गौतम स्वामि ॥ १ श्री अतिकृति ॥ २ श्री वासुदेवि ॥ ३ श्री गणेश स्वामि ॥ ४  
श्री सुधर्मा स्वामि ॥ ५ श्री संज्ञिकपुत्र स्वामि ॥ ६ श्री मोरेश्वर स्वामि ॥ ७ श्री अक्षय  
स्वामि ॥ ८ श्री अचलव्रता स्वामि ॥ ९ श्री गंतार्य स्वामि ॥ १० श्री प्रसाद स्वामि ॥ ११

मंदिर प्रशस्ति ० ।

[ 192 ]

। सं० ॥ स्वस्ति श्री संवत् १६७७ वैशाख सुदि ५ सोमवार । वास्तव श्री वा  
जां दुसकल नूर मण्डलाधीश्वर विजयिगज्यं ॥ श्री चतुर्विजयितन जिनविगत श्री पौर  
वर्द्धमान स्वामि निर्वाण कद्राणक परिद्रित पादावृत्ती पतिने श्री श्री जिन वैद्य विवेक ॥  
श्री इपत जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्त्ति श्री जग नहराज महत्तज मंत्रि मण्डल विदु मंत्रि  
श्री इल संतानीय महतिषाय ज्ञानि शृंगार चोपड़ा गोत्रीय संवत् १६७७ संवत् १६७७ ।  
निहालो पुत्र सं० संग्राम खडुनालु गोवर्द्धन तेजपाल गोजगज । मोरेश्वर गोत्रीय सं० १६७७

३ पर देशिके मन्दर दत्त भया है इस कारण से दत्त गरी मन्त्र ।

भाणंद सपरिवार महधारा श्रीय विशेष धर्म कर्मोच्चम विधायक ठण डुखीचंद काड्डा गोत्रीय  
 मण मदन सामीदास मनोदर कुशला सुंदरदास रोहधिया पुत्र मथुरादास नारायणदास  
 गिरिधर संतोदास प्रसादी । वार्तिदिपा गोण गूजरमह्व पूदड़मह्व मोहनदास नाणिकचंद  
 बूदमह्व जेठमह्व । ठण जगन नूरीचंद । दान्हरा गोण ठण कल्याणमह्व मलूकचंद संतोपचंद  
 सयखा गोत्रीय ठण सिंह कीर्त्तिपात्र बाबूराय केसवराय सूरतिसिंघ । काड्डा गोण दयाश  
 दास नोवालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किडू । काणी गोत्रीय ठण राजपाल रामचंद  
 -- महावीर -- कीर्त्तिसिंघ ठण ठवीचंद । जीजीयाण गोण संण लखमल नंदलाव ।  
 नान्हड़ा गोत्रीय -- १३ -- दास सुंदरदास सागरमति कसजदास । रोण सुंदर सूरति  
 मूरति सवलकृती प्रताप -- ठण मदमह्व जाण हरदासपुर --- ।

पापालके सूत्तिपर ।

[ 193 ]

॥ सिरि देवहि गणि खमा समणा होत्ता तेसिं सिरि वीर निवाणाउ नवसय असीइ  
 वरि सेहिं जिणागम रक्कमा तुठवेह कारणाउ विंविमिणं पइछावियं सिरि जिण महिंइ  
 सुरीहिं ॥ संण १९१० वर्षे मा । सुण १ ।

वेदी पर ।

[ 194 ]

संण १९३५ मिति जेष्ठ शुक्ल ५ बुधवालेरे इदं वेदिका कारापितं उतवाय ज्ञातौ रांका  
 सेठिया गोत्रे सेठजी श्री लठमखदासजी तत्पुत्र कल्लुमलजी तत्पुत्र धनसुख दासजी ।

दाहिने तर्फ दादाजी की कोठरीके चरणोंपर ।

[ 195 ]

माह सुदि १३ दिने --- सूरीणा पाडुके --- ।

संवत् १६७६ वर्षे - क - - - । प्रवर्त्त - - - : । श्री गणेश गणेश श्री शिवगणेश गणेश  
 तिलक सूरिनां तण शिष्येन श्री लखिभसेन गणेश श्री युगप्रधान श्री जिनबंद गणेशनां शिव  
 पितं उपदेन - - गुजु - - पाठकस्य - - - श्री रत्ननिष्ठक गणेश प्रतिष्ठितं पाठ लखि  
 सेन गणेश प्रतिष्ठा कृता ॥ श्री रस्तु श्रीः ॥ २ ॥

मूल नायक - - - - राज लक्ष्मण धारकं । ० । ० पुत्रे गणेश - न नि - - गोत्रे  
 - - गण धेनीदास । तुलसीदास - गणिक - - दास - - कागारिदं । श्री - - - गण  
 पाहुका श्री - - स्य गुरु - - श्री जिन लखिभसेन सूरि कृता ॥ पत्नी गणेशे पुत्र श्री गण  
 तर गणा - यं गण - - श्री युगप्रधान - - श्री जिनबंद सूरि गणेशनां श्री शिवगणेश -  
 श्री रत्ननिष्ठक - - तत्पुत्राजहार श्री दाचनाचार्य - लखिभसेन गणेश गणेशेन श्री गणेश  
 - - याणा वासिष्ठिना गोत्रे । कैरवन - - गण गुजरमठेन - - श्री गणनिष्ठक गणेश - - - ग  
 गण - करेन प्रतिष्ठा पुननीवा - - ।

॥ संवत् १७०२ वर्षे माघ शुद्ध १३ दिने सोमवारे श्री जिन गणेश सूरिणां गणेशे ॥  
 महतीयाण चोपड़ा गोत्रे । लखी तुलसी दास चार्वा कृतामी निदासी पुत्र लखी दोगा  
 सिद्ध - - - गणेशिः प्रतिष्ठिता श्री पाचापूरी लखेश श्री लख सूरिना श्री रस्तु ।

॥ सं० । १७१० वर्षे शके १७७५ माघ शुद्ध २ श्री जिनदत्त सूरि लखेशनां श्री जिन  
 कुशल सूरिणां पादन्दासो प्रतिष्ठितं च श्री जिन महेश सूरिनिः । गण । गण । गो । श्री  
 शिवप्रसाद पुत्र शीतल प्रसादेन शैवार्थ नामं कृतं ॥

दाहिने श्री स्थूलचन्द्र कोठरी के चरणों पर ।

[ 200 ]

श्री ॥ नमनिधि गज गोत्रा सन्मितायां समायां ( १७९७ ) नयन रस सरत्वाञ्चन्द्र  
शुक्लेषु शाके ( १७६३ ) ॥ सित पटधर पादो फाल्गुने शुक्ल पक्षे शुभ्रगपति त्रिथौ ( ५ )  
सङ्गर्भवे वासरेहै ॥ १ ॥ श्री मद्ब्रह्मचर्य्य धर्म वृद्धर्य्य श्री स्थूलचन्द्राचार्य पादपत्र प्रतिष्ठा  
वृहत् खरतर गणेश श्री जिनहर्ष सूरि पट्ट प्रजाकर श्री जिन मद्देन्द्र सूरिणा कारिता उ० ॥  
श्री हीरधर्म गणि दिनय विष्टत्कुलकञ्ज प्रजाकर श्री कुशलचंद्र गण्युपदेशतः । काशीस्य  
श्री संघैः ॥ षडक्षिया गोत्रीयोत्तम चंद्रात्मज मुन्निवालात्रिभेन ॥

[ 201 ]

( १ ) ॥ स० श्री ५ श्री जिन विमल सूरि पाडुका । ( २ ) ॥ श्री जिन वदित सूरि  
पाडुका ।

[ 202 ]

सं० १७९७ वर्षे कार्तिक मासि शुक्ल पक्षे पूर्णिमा त्रिथौ १५ गुरुवासरेण वृहत् खरतर  
गठे शु० ज० श्री जिनरंग — — — ।

[ 203 ]

सं० १७९७ वर्षे कार्तिक शुक्ल पक्षे राका त्रिथौ १५ गुरु वासरे वृहत् खरतर गठे शु०  
ज० श्री जिनरंग सूरि शाखायां आचार्य श्री जिनचंद्र सूरिणां शिष्य वा० श्री सुमतिलंदन  
गणिनां पादपत्रे स्थाप्यते० वा० जुवनचंद्रेण । वा० सुमतनन्दन गणिनां चरण कमले जवतः  
श्री० श्री जिनचन्द्र सूरिणां चरण कमले श्मे जवतः ।

श्री चंदनवाला कोठरी के चरणों पर ।

[ 204 ]

॥ सं० १७९० प्र० श्री सुजाण विजयाजी पाडुका ।

( ५१ )

[ २०५ ]



सं० १७०० मा वर्षे सिते १२ ॥ बृहत् खरतर गणे सु० ज० श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां  
शि० चरण रेणुना दीप विजयायाः स्थापिते । श्री कीर्ति विजयायां — — परम कमली गे  
प्रतिष्ठितं ॥ साध्वी ॥ श्री सौभाग्य विजयाया । पादपत्रे प्रतिष्ठितं ।

[ २०६ ]

1888

सन्वत् १७४७ शाके १७१३ वर्षे मिति वैशाख शुक्ल ३ तिथी सु० पादपत्रे श्री गज गणना  
गणे चट्टारक श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां साध्वीगङ्गा गति विजयाया पादपत्रे विजया  
रूपविजया पादापुरी मध्ये प्रतिष्ठापितेः

[ २०७ ]

॥ श्री संवत् १९३१ का मिति माघ शुक्ल दशमी तिथी चन्द्र पदे श्री महाशय्ये वा  
शुक्लराधिपति ॥ श्री पुज्याचार्य जी श्रीश्री १००० श्रीश्री महाशय्ये श्रीश्री परम कमली  
स्थापितौ श्री अजयराज सुरिनिः प्रतिष्ठितं च श्री गुजरात ॥

[ २०८ ]

॥ ॐ नमः ॥ संवत् १७१९ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे एतौ तिथौ नवरात्रे श्री महाशय्ये  
जिनवर चरण कमले शुभे स्थापिते । गुगली वास्तव्य एतं पदे गांधि गोप्रे गलादी कस  
तत्पुत्र साद् माषिक चंदेन श्री द्वादीपकुंठ नगर जन्तक्याने जन्तक्यानाक सीधे कीर्तिशय  
करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ १ वावस्तवस्तवे सूर्य चंद्रमसौ तिथौ पदे नारायण गोपेधि  
त = = = = = ।

[ २०९ ]

॥ ॐ नमः ॥ संवत् १७१९ वर्षे श्री महाशय्ये जिन परम कमले स्थापिते श्री श्रीशय्ये  
संपाटे साद् माषिकचंदेन जीर्णोत्तर करापितं ॥ श्री रस्तु ॥

सं १८३० माघ शु० ५ सकल संघेन श्री वीर पाण्डुका कारापितं स्थापितं श्री पावापूयां ।  
 आत्म हितायः श्री रस्तुः ॥

## बिहार ।

बिहार वा सूवेबिहार का प्राचीन नाम "तुंगिया नगरी" था । निकट में विशाला नगरी  
 भी थी । जैन सहर था, पश्चात् बौद्ध लोगों के समयसे "बिहार" नाम प्रसिद्ध जया ।

धातुओं के मूर्ति पर ।

मथियान महद्वा ।

सं० १४३० श्री -- तिनाथ प्रति० सा० पद्मसिंहेन समस्त परिवार युतेन निज पितृ  
 सा देव्हा पुण्यार्थं का० प्र० श्री जिनराज सूरि ।

प० ॥ सं० १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ दिने उकेश वंशे सा० सामंत पुत्रेण सा० सषमणेन  
 पुत्र रतना नरसिंह नयणा जा० - दादि परिवार सहितेन निज पुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ विं  
 कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गढे श्री जिन वर्द्धन सूरिजिः ॥

सं० १५०६ माघ सुदि ५ -- लोढा गोत्र -- पुत्र जाकाकेन जा० जाऊ श्री पु० --  
 माखा - जा० हेम -- नाथू जा० कुमिन्दे स्वश्रे० धर्मनाथः का० प्र० चैत्र गढे श्री मुनि  
 तिषक सूरि ।

ए।सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ शुद्धि २ दिने श्री लोकाय संज्ञे खोदा गोत्रे सा० लोकाय संज्ञे सा० वीरा जार्या जावखदे पुत्र सा० जादाकेन पुत्र नीलस पीतस इदा मारा सहितेन श्री वासुपूज्य विवं कारितं प्रति० श्री खरतर गछाधीश श्री जिनराज सूरि पट्टालङ्कार श्री जिन चक्र सूरि युगप्रधान गुरुराजो ।

सं० १५१९ वर्षे श्रापाद् वदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० नगराज पुत्र ठ० लोकाय संज्ञे धामिणि पु० सं० श्री अवलदासेन पुत्र ठ० लोकाय संज्ञे लदमीतेन नृपतेन वसिष्ठेन पीणसेन देपाल पहिराजादि परिवार वृतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ विवं कारितं प्रसिद्धिं श्री खरतर गछे श्री जिनचक्र सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरिनिः ॥

सं० १५१९ वर्षे श्रापाद् वदि १ श्री मंत्रिदलीय शात्यायां प्रायज्ञा गोत्रे स० पौनराज सा० सुरदेवी पुत्र ठ० दासू जा० कपूरदे पु० ठ० सद्य वध ( ? ) प्रमुख परिवार सहितेन गोत्रे यसे श्री शितखनाथ विवं कारितं प्र० श्री खरतर गछे श्री जिनसुंदर सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरिनिः ॥ श्री ॥

सं० १५१९ वर्षे श्रापाद् वदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० श्री नगराज पुत्र ठ० श्री लोकाय संज्ञे धामिणि पुत्र स० सिंगारली जा० कुंवरदे पु० स० राजमल्ल सुभारकेन पुत्रादि परि-  
वार सहितेन श्री आदिनाथ सून विवंधतुर्विशति पद कारितः प्रसिद्धिः खरतर श्री जिन  
चक्र सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरि युगप्र० परागामेः ॥ ५१ ॥

सं० १५२० वर्षे साध शुद्धि दशम्यां शुभे श्रीनाथ शकतीय मर चाहु जार्या जार्या शकतीय



श्रेयोर्थं श्री नेमिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनजद्र सूरि पदे श्री जिन  
चंद सूरिराजैः ॥ श्री मंरुपे दूर्गे महता गोत्रे ॥

श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मंदिर ।

[ 219 ]

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ उरकेण सूर गोत्रे सा० सिवराज ज्ञा० माकु पु०  
पासा सहसा जातु वठराज पुखार्यं श्री शितत्रनाथ विंशं का० प्रति० श्री उपकेश गढे ककु-  
दाचार्य संताने श्री कक सूरिभिः ॥ ७ ॥

[ 220 ]

सं० १५४७ वर्षे वैशाख मासे उकेश वंशे दोसी गोत्रे सा० कडू पुत्र सा० लया चार्या  
रुवाई पुत्र० लवमी धरेण चार्या लोजादे सङ्घितेन श्री अजितनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं  
खरतर गढे श्री जिनसमुद्र सूरिभिः श्रेयोस्तु ॥ १ ॥

चतुष्कोण पट्टक पर ।

[ 221 ]

सं० १६३७ समये फाट्पुण सुदी ५ जौमे श्री मूत्रसंघ सरस्वति गढे वजात्कार गणे  
श्री कुंडकुंदाचार्यान्वये ज० श्री धर्मकीर्त्ति देव तरट्टे ज० श्री शीखनूपण तत्पट्टे ज० श्री ज्ञान  
नूपण अथ ज० सुमित्रनी तत्पट्टे ज० श्री सुमतिकीर्त्ति ततशिष्य । मंरुवाचार्य श्री मेरुकीर्त्ति  
गुरुपदे - जू ॥ मगध देसे । खुदिमपुर वास्तव्य जेसवावान्वये कष्टहार गोत्रे सा० धीरम  
तज्ञार्या वंशत्रयोः पुत्र सहसी तज्ञार्या अजेतिरि त्रयो पुत्रौ प्रथम किनू तज्ञार्या परिमख  
तत्पुत्र जिनदास तज्ञार्या मोना त्रयो पुत्र जगदीस द्वितिय संघ पति श्री रामदास चार्या  
रुकमिनि मेतेषां मग्ये संघपति रामदास नित्यं प्रणमंति । शुभं भवतु ॥

लाखनऊ का मंदिर ।

[ १२१ ]

सं० १५३९ च० वै० शु० ३ सोम प्र० शु० मं माईया जा० परम पु० श्री० जा० म०  
पुत्र गोरा जा० रुकमिणि पु० वर्द्धमान सातु पितृ श्रे० श्री हंसुनाथ पि० कारागिरि प्र० ह०  
श्री लक्ष्मीलागर सूरिनिः ।

[ १२२ ]

सं० १६४३ पा० ति० ११ श्री हीर विजय निग्य श्री विजयपेन सूरिनिः प्र० म०  
नाथ — — ।

[ १२३ ]

सं० १६७७ वैश्र शु० १५ — — वि० श्री जिनर्ष सूरिणा — — म०  
श्राविका — — तथा गुलाबचंद पुत्र सुतवा — — ।

[ १२४ ]

सं० १७९६ ज्येष्ठ वदि ७ श्यामबाल जाली जन्मद मोतीय परम प्रेमचंद म०  
लासेन श्री सिद्धचक्र पटं कारागिरि प्रनिष्ठितं विष्णुदय गणिना ।

आनाम पर ।

[ १२५ ]

सं० १५२४ जेष्ठ वदि ४ श्री उबदेन जाली म० श्री म०  
— — साह मोना जाली म० म० परम देवदे श्री म०  
श्री उबदेन म० श्री म० सूरिनिः ॥ श्री म०

[ 227 ]

संवत् १६७४ वर्षे -- माघ सुदि ए दिने जोम वासरे श्रवण नक्षत्रे -- -- -- गोत्रे  
ठाकुर -- -- -- ठाकुर जाडेन तत्पुत्र ठाकुर दुखीचंद श्री जिन कुशल सूरीण पाडुके कारितं ।

[ 228 ]

सं० १६९४ शाके १५५९ ईश्वर वर्षे सम्बतसरं चेत्र वदि १३ शुके शुभे सुहुत्ते दक्षिण  
देशे ज० श्री कुमुदचंद्र दिनंद पट्टे ज० श्री मूल शृंगार हा -- -- -- वधेरवाल झातौ स०  
श्री तोला जा० सं -- -- -- पुत्र स० श्री कृष्ण ॥ -- -- -- देव नार्या सोहि -- -- -- श्रेयोर्थ  
-- -- -- श्री महावीर पाडुका स्थापितं ।

[ 229 ]

सं० १७३० माघ शुदि ५ -- श्री सकल संघे श्री पार्श्व ना० पा० कारापि -- ।

[ 230 ]

सं० १७३० माघ शु० ५ सकल संघेन शान्तिनाथ पाडु० कारापिता --

[ 231 ]

प्रणमद्विये गूणवीस सय वरसे वइसाह -- सुद्ध -- -- बह पियामह सिरि लिन  
कुशल सूरि पाय छवणा कारिया सिरिमाल वंसे वदलीया गुत्तेसाह कमला वइणा विसाला  
सुपइ छिय सयल सूरीहिं ॥ श्री ॥ ;

[ 232 ]

श्री दादाजी श्री कुशल सुरजी सहायः

सं० १७४६ मीती वेसाख सुदी १३ -- -- -- ।

सं० । १९३९ फाल्गुन कृष्ण ७ पुष्ये श्री जिन मुद्राङ्क सूरि । सत्सङ्गस्य । सं० । १९३९ ।  
न । श्री जिन मुक्ति सूरिश्वराणामादेशात् श्री दाक्षचंद गणितः प्रकृतितः ॥ मेरु गोपीच  
ताराचंद्रात्मज रामचंडेण कारितः सश्रेयोर्थ गिरजापुर को

॥ ॐ नमः सिद्धम् । संवत् १९५० सि० फाल्गुन सुदि ३ श्री मुद्राङ्क सूरि । सत्सङ्गस्य । सं० ।  
स्कार गण कुंद कुंदाचार्य श्यामाय सज्जल श्रीचिं जहायक सज्जल । सत्सङ्गस्य । सं० ।  
उपदेशात् शा० कुंभचंद दूरीचंद तज्जया केशवभाई सूरदेवासे प्रकृतः

संवत् १९५५ पौष सुद १५ पुष्य ॥ श्री सुंपक गणे श्री पुष्य सज्जलस्य सूरि । प्रकृतित-  
सम् ॥ वानु सत्रभीपत्र गोविंदचंद की माली कनपितं श्री दाक्षसी सज्जल सत्सङ्गस्य । सं० ।  
॥ श्री स्वृक्षसज्जल सूरिः ॥ श्री जिनदत्त सूरिः ॥ श्री जिनमुद्राङ्क सूरिः ॥ श्री जिनमेरु सूरिः ॥

### राज गृह ।

मगध देशकी राजधानी यह राजगृह ( राजनिधि ) कह्ये प्राचीन नगर है । इस में  
नीर्यकर श्री मुक्ति मुद्राङ्क ज्ञानीका है जहायक ज्येष्ठ पदि-७ जन्म फाल्गुन सुदि-११ । ईश्वर  
फाल्गुन वदि-१२ केवला ज्ञान यहां होमके कारण यह नगर पदित है । इस में नीर्यकर  
श्री नेमिनाथ के सत्सव में जगत्संधरी जी रही राजधानी थी । इस में नीर्यकर श्री महावीर  
स्वामी के सत्सवमें प्रकृत नगर था । गौतम बुद्ध भी रही हीका सूरि थी । इसमें विना  
उनके पुत्र अष्टिज, उनके पुत्र यौगिक बलके राजा थे । श्री महावीर स्वामी जी २५ वीं वर्षके  
यहां किये । जंडुस्वामी, भगव. शांडिल्यजी सुदि सं० २ योग बर्षके रहने लगे थे । यहां

पर पहाड़के निचे ब्रह्मकुण्ड, सूर्यकुण्ड आदि उष्ण कुण्ड बहुतसे है और स्थान देखने योग्य है। पांच पाहाड़ जो सामने दिखाई देते हैं (१) विपुत्रगिरि (२) रत्नगिरि (३) उदयगिरि (४) स्वर्णगिरि (५) वैज्रगिरि। पहाड़ पर बहुतसे जैन मंदिर बने हुये हैं। बहुतसे चरण वा मूर्ति इधरसे उधर विराजमान है इस कारण यहांके सब लेख एक साथ मिला दिया गया है।

### पार्श्वनाथ मंदिर प्रशस्ति । ❁

[ 236 ]

( १ ) प० ॥ ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय ॥ श्रेयः श्री विपुत्राचलामरगिरि स्थेयः स्थिति स्वीकृतिः पत्र श्रेणि रमाजिराम जुजगाधीशस्फटासंस्थितिः । पादासीन दिवस्पतिः शुक्र फल श्री कीर्ति पुष्पोद्गमः श्री संघाय ददातु वाञ्छित फ

( २ ) लं श्री पार्श्वकल्पद्रुमः ॥ १ यत्र श्री मुनि सुव्रतस्य सुविनोर्जन्म व्रतं केवलं साम्राजां जय राम लक्षण जरासंधादि जूमीजुजां । जज्ञे चक्रि वलाच्युत प्रतिहरि श्री शालिनां संजवः प्रापुः श्रेणिक ऋधवादि

“जैन तीर्थ गाईड” के तवारिख सुवे विहार में उसके ग्रंथकर्ता लिखते है कि मयीयान महल्लाके “मंदिर में एक शिला लेख जो अलग रखा हुआ है — — — संवत तियि वगेरा की जगह टुटी हुई है पंक्ति ( १६ ) हर्फ टमदा मगर घीस जानेकी वजह से कम पढ़नेमें आता है अखीर की पंक्तिमें जहां गच्छ का नाम है वहां किसीने तोड़ दिया है वज्र शाखा वगेरह नाम वेशक मौजूद है” यह पढ़ कर मुझे देखने की बहुत अभिलाषा हुई। पता लगाने पर १७ पंक्तिका एक लेख दिवार पर लगा भया पाया। किसी २ जगह टूट गया है संवत वगेरह साफ है और दुसरा टुकड़ा मालूम भया। पहिले टुकड़ेके लिये बहुत परिश्रम करने पर पता लगा और अब वहांके रईस बाबु धन्नुलालजी सुचंति के यहां रखा गया है। यह प्रशस्ति पूर्व देशकी अपूर्व वस्तु है आज तक अप्रकाशित था। इसमें श्री खरतर गच्छकी पट्टावली है जिसे बहुत पक्षपातीयों का भ्रम दूर हो जावेगा। यह पांच सौ साठ वर्ष प्राचीन है और उस समयके मुसलमान सम्राट और प्रादेशिक शासन कर्ताका भी नाम विद्यमान है। पांडित्य और पद लालित्य भी पुरा है।

( ३ ) त्विनो धीराज जैर्ना रमां ॥ २ यत्रात्तय कुमार श्री माणिक्यवर्मादि मन्त्रिणा ।  
सर्वार्थे निष्ठि संज्ञाग जुज्ञो जाता द्विधापिदि ॥ ३ यत्र श्री विदुञ्जनिपौरनि चरो वेत्ता  
नामापिच श्री जैनेन्द्र विद्वार नृपण भरो पुर्वाप

( ४ ) राजास्थितो । श्रेयो खोक्त युगेपि निश्चिन तिनो कन्यं कृताये नृपते तीर्थे मन्त्र  
श्रुदानिधानमिद् तस्केः केन संन्तुयते ॥ ४ सत्रच संनारासार पागसार परणार प्रणार प्रणार  
महत्तम तीर्थे । श्री राजशुद्धम

( ५ ) ह्यतीर्थे । राजेन्द्राकार महापोन प्रसार श्री विदुञ्जनिरि विदुञ्ज नृपते तीर्थे मन्त्र  
महीपाल चक्रनृपता माणिक्य मरीचि संजरी पिंजरित चरण संगेजे । सुगन्ध श्री माणिक्य  
पैरोजे महीमनुशासति । तदीय

( ६ ) नियोगान्मगधेषु मखिक वयोनाम माण्डुजेभार समये । तदीय मन्त्रक मद् द्याय  
छुरदीन साहाय्येन । यादाय निर्गुण स्वनिर्गुणि रंग नाजं ॥ पुंमौरिकावक्षि समं कृतं सुगन्ध  
वक्रः श्रुती अपि शिरः

( ७ ) सुतरां सुतारा सौयं विजानि नुपि मंत्रि दक्षीय संतः ॥ ५ संतुञ्ज परिष्क श्रीः  
सहज पादाख्यः सुमुण्डयः सतां जज्ञे नन्यसमान सहस्रमणी भृंगानिनांगः पुरा । सन्तुञ्ज  
जनस्तुत स्तिष्ठुण पासेति प्रतीतो नव

( ८ ) ज्ञातस्तस्य कुञ्जे सुधांशु धवले महात्तिधानो धनी ॥ ६ कन्यात्मजोऽनिय मन्त्र  
मंननारूपः सहस्रं कर्म विधि शिष्ट जनेषु सुख्यः । निःसीम शील कलहादि सुताधिभाम संतः  
शुद्धेस्वः रुद्रिणी धिर देवि नाम

( ९ ) ॥ ७ पुत्रास्तयोः समन्वयन् सुवने विनिष्ठाः पंचाप्र संतति भूतः सुसुतो परिष्क ।  
तत्रादिमात्रय इमे सहदेव कामदेवात्तिधान महाराज इति प्रतीताः ॥ सुयं पुंमौरिका  
संप्रति कछराजः श्री मा

( १० ) न् सुवुद्धि सप्तु मांधव देवनाजः । सान्नां जगत्पिचतया प्रनसंक्त पुंयं वेदेनि धर्म-  
रव धुर्य पदं प्रपेदे ॥ ९ प्रथम मनस ताया कछराजक जाया सुतकनि रव मोदि दक्षीणि  
सुतांति रीतिः । प्रनसति पदराजः सह

( ११ ) ण श्री समाजः सुत इत इह मुख्यस्तत्परश्रोढराख्यः ॥ १० द्वितीया च प्रिया  
नाति वीधी रिति विधि प्रिया । धनसिंहादयश्चास्याः सुता बहु रमाश्रिताः ॥ ११ अजनि च  
दयिताद्या देवराजस्य राजी गुण म

( १२ ) णि मयतारा पार शृंगार सारा । समञ्जवति तनुजातो धमसिंहोत्र धुर्य स्तदनुच  
गुणराजः सत्कला केलिवर्यः ॥ १२ अपरमथ कलत्रं पद्मिनी तस्य गेहे तत उरु गुणजातः  
पीमराजो ग जातः । प्रथम उदित पद्मः पद्म

( १३ ) सिंहे द्वितीयस्तदपर घनासिंहः पुत्रिका चाञ्चरीति ॥ १३ इतश्च ॥ श्रीवर्द्धमान  
जिनशासन मूलकंदः पुण्यात्मनां समुपदर्शित मुक्तिजंदः । सिद्धांत सूत्र रचको गणभृत  
सुधर्मनामाजनि प्रथम कोत्रयुग

( १४ ) प्रधानः ॥ १४ तस्यान्वये समञ्जवद्दशपूर्वि वज्र स्वामी मनोजव महीधर जेद वज्रः  
यस्मात्परं प्रवचने प्रससार वज्र साखा सुपात्र सुमनः सफल प्रशाखा ॥ १५ तस्यामहर्निश  
मतीव विकाशवत्यां चांद्रेकु

( १५ ) ले विमल सर्वकला विलासः । उद्योतनो गुरुरजाह्वुधो यदीये पट्टे जनिष्ट सु  
मुनि र्गणि वर्द्धमानः ॥ १६ तदनु ज्वनाश्रांत ख्यातावदात गुणोत्तरः सुचरण रमाचूरिः  
सूरिर्वचूव जिनेश्वरः । खरतर इ

( १६ ) तिख्याति यस्मादवाप गणोप्ययं परिमलकर्ता श्रीबंद - - - दुगणो वनौ ॥ १७  
ततः श्रीजिन चंद्राख्यी वचूव मुनि पुंगवः । संवेग रंगशाखां यश्चकारच वजारच ॥ १८  
स्तुत्वा मंत्र पदाकारै र्वनितः श्रीपा

दुसरा पत्थर ।

( १७ ) श्वं चिंतामणिं - - - - ताकारिणं । स्थानेनंत सुखोदयं विवरणं चक्रे  
नवान्यायके । - - ताऽ जय देव सुरिगुरव स्तेतः परं जज्ञिरें ॥ १९ - - -

( १८ ) - - - ( जिनवद्धन्न ) - - शांगनोवद्धन्नो - - - - प्रियः यदीय गुण  
गौरवं श्रुतिपुटेन सौधोपमं निपीये शिरसो धुनापि कुरुते नकस्तां डवं ॥ २० तत्पट्टे जिन-  
वृत्तसूरिरजवयोंगीरु चूडामणि मिथ्याधवां

( १९ ) त निरुद्ध दर्शन — — — — श्रावक यान्य देशि सुगुरुः क्षेत्रे च सर्वाननः लेख्यः  
पुण्यवतां सतां सुचरण ज्ञान श्रिया सत्तमः ॥ ११ ततः परं श्रीजिनचंद्र नृरिर्विजुव निःसंग  
गुणास्त नृरिः ।

( २० ) चिंतामणि ज्वालितले यदीये घ्युवास वासादिव ज्ञान्य लक्ष्म्याः ॥ १२ पद्ये  
लक्ष्य गतेसु शासनमपि प्रेत्यापि दुःसाधनं दृष्टान्त स्थिति बंध बंधुरमपि प्रकीण दृष्टान्तं ।  
वादेर्वादिगत प्रमाणमपि ये वाक्यं ।

( २१ ) प्रमाण स्थितं ते वागीश्वर पुंगवा जिनपति प्रख्या वचनू सुतः ॥ १३ अथ जिनेश्वर  
सूरि यतीश्वरा दिनकरा इव गोचर जास्वराः । जुवि विवोधित सत्कमला करा समुदिता  
वियति स्थिति सुन्दराः ॥ १४ जिन प्र

( २२ ) बोधा हृत मोह योधा जने विरेजुर्जनित प्रबोधाः । ततः पदे पुण्य पदे दसीये मन्त्रं  
छ चर्या यति धर्म धुर्याः ॥ १५ निरुंधानो गोत्रिः प्रकृति जरुधीनां विदसितं ब्रमब्रह्म  
ज्जोतो रस दश कला केलि

( २३ ) विकलः । उदितस्तत्पद्ये प्रतिहत तमः कुग्रह मति नवीनो लो चंद्रो जगति  
जिन चंद्रो यत्तिपतिः ॥ १६ प्राकट्यं पंचमारे दधति विधि पथ श्रीविलास प्रकारे धर्मा धारे  
सुसारे विपुल गिरिवरे मानतुंगे विहा

( २४ ) रे कृत्वा संस्थापनां श्रीप्रथम जिनपते येन सौचे यशोजि ध्विचंद्रो जगत्यां  
जिन कुशल गुरु स्तपदे जाव शोजि ॥ १७ वाटपेपियत्र गण नायक लक्ष्मिकांतां केडी विलां  
क्य सरसा हृदि शारदापि । सौजाग्य

( २५ ) तः सरज संविललास सोयं जातस्ततो मुनि पतिंजिन पद्मसूरिः ॥ दृष्टा पद्ये  
सुविशिष्ट निज्ञान्य शाल व्याख्यान सम्यगवधान निधान सिद्धेः । जहे ततो उक्त कक्षिकाय  
जना समान ज्ञान क्रिया

( २६ ) विध जिन लब्धि युग प्रधानः ॥ १८ तस्यासने विजयते सम नृरि पर्यः सन्पग  
दृगंगि गण रंजक चारु चर्यः । श्रीजैन शासन विकासन नृरि धामा कानापनादन मना जिन  
चंद्र नामा ॥ ३० तत्कोपदेश



( २७ ) वशतः प्रभु पार्श्वनाथ प्रासाद मुत्तम मची करत - - - । श्रीमद्विहार पुर  
वस्थिति वधराजः श्रीसिद्धये सुमति सोदर देवराजः ॥ ३१ महेन गुरुणा चात्र वधराजः सवा-  
न्धवः । प्रतिष्ठां कारयामास मंरुनान्वय

( २८ ) मंरुनः ॥ ३२ श्रीजिनचंद्र सूरीन्द्रा येषां संयम दायकाः । शास्त्रेष्व ध्यापकास्तु  
श्रीजिनलब्धि यतीश्वराः ॥ ३३ कर्त्तारोश्च प्रतिष्ठाया स्ते उपाध्याय पुङ्गवाः । श्री मंतो जुवन  
हिताजिधाना गुरु शासनात् ॥ ३४ न

( २९ ) यनचंद्र पयोनिधि जूमिते व्रजति विक्रम जूमृदनेहसि । बहुल पष्टि दिने श्रुचि  
मासगे मही मचीकर देव मयं सुधीः ॥ ३५ श्रीपार्श्वनाथ जिन नाथ सनाथ मध्यः प्रामाद  
एष कलसध्वज मणिरतो

( ३० ) ऋः । निर्माप कोस्य गुरवोत्र कृत प्रतिष्ठा नंदंतु संघ सहिता जुवि सुप्रतिष्ठा ॥  
३६ श्रीमद्विजुवन हिताजिपेक वर्यै प्रशस्ति रेपाच । कृत्वा विचित्र वृत्ता लिखिता श्रीकीर्त्ति  
रिव मूर्त्ता ॥ ३७ उत्कीर्णाच सुवर्णा ठकुर मा

( ३१ ) द्वांगजेन पुण्यार्थं । वैज्ञानिक सुश्रावक वरेण वीधाजिधानेन ॥ ३८ इति  
विक्रम संवत् १४१२ आषाढ वदि ६ दिने । श्रीखरतर गढ शृङ्गार सुगुरु श्रीजिनलब्धि सूरि  
पट्टालङ्कार श्रीजिनेन्द्र सूरिणामुपदे

( ३२ ) शेन । श्रीमंत्रि वंश मंरुन ठं० मंरुन नंदनाज्यां । श्रीजुवन हितोपाध्ययानां  
पं० हरिप्रज गणि । मोद मूर्त्ति गणि । हर्ष मूर्त्ति गणि । पुण्य प्रधान गणि सहितानां पूर्व  
देश विहार श्रीमहातीर्थ यात्रा संसूत्र

( ३३ ) णादि महा प्रजावनया सकल श्रीविधि संघ समान नंदनाज्यां । ठं० वधराज  
ठं० देवराज सुश्रावकाज्यां कारि - - - - - स्य । श्रीपार्श्वनाथ प्रसादस्य प्रशस्तिः ॥  
जवतु श्रीसंघस्य ॥ ९ ॥ ७ ॥



( ६३ )

गांव मन्दिर-घातुओंके मूर्ति पर ।

( 237 )

सम्बत १११० चैत मास सुदि १३ संतनाथ प्रतिमा कारित--।

( 238 )

सं० १४९७ वर्षे आपाढ़ वदि ८ रवी ज० ज्ञा० सा० सपुरा प्रा० सीतादे पु० कर्मचिह्न  
श्री नमिनाथ विंविपितृ मातृ श्रेयसे कारितं उक्तेषु गच्छे श्रीसिद्धाचार्य संताने प्र० श्रीदेव  
गुप्त सूरिभिः ।

पाषाण पर ।

( 239 )

सम्बत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतिजाण वंशे जाटङ्गोत्रे सा० देवराज पुत्र  
सं० पीमराज पुत्र सं० सिवराज तेन पुत्र सं० रणमल घर्मदास । श्रीशांतिनाथ विंविं  
कारितं प्रतिष्ठिते खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिपद्वे श्रीजिन चन्द सूरिपद्वे श्री जिन  
सागर सूरिणां निदेशेन वाचनाचार्य शुभशील गणिभिः ।

( 240 )

ॐ नमः सिद्धं ॥ सम्बत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ६ तियो गुरुवासरे श्रीमुनि  
सुव्रत स्वामि जन्म कल्याणक चरण कमले स्यापिते हुगली वास्तव्य औचवंगे मंथी गोत्रे  
बुलाकीदास पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे जीर्णोद्धारं करापितं ।

( 241 )

सं० १८२५ माघ सु० ३ गुरुपेतासाह पुत्र्या उमरप्याई केन शांतिनाथ विंविं कारापिता ।

श्री शुभ सम्प्रत १९०० वर्षे मार्गशीर्षमासे शुक्र पक्षे दशम्यां तिथौ शुभवासरे श्री  
वर्द्धमान तीर्थंकरस्य चरण पादुका प्र० श्री वृहत्खरतर गच्छे जंगम युग प्रधान महारक  
श्री जिनरंग सूरीश्वर शाखायां य० यु० महारक श्रीजिन नंदीवर्द्धन सूरी राज्ये श्री वाच-  
नाचार्य श्री मुनि विनय विजयजी तत् शिष्य पं० कीर्त्योदयोपदेशात् ओसवाल वंशी-  
द्वय वायू खुस्यालचन्दस्य पत्नी वीवी पराण कवरी तेन प्र० का० श्री संघस्य कल्याण  
कारिणी भवतु शुभमस्तु ।

शु० स० १९०० व० मार्गशीर्षमासे शु० वा० श्रीचन्द्रप्रभकस्य च० क० प्र० श्री वृ० ख०  
ग० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सू० व० मुनिकीर्त्युदयोपदेशात् महतावचन्द संचीतीकस्य पत्नी  
चीरोंजी वीवी प्र० का० शुभमस्तु ।

सं० १९११ व० शा० १७७६ प्र० शुचि शु० १० ति० श्रीचन्द्र प्रभ विंशं प्र० । प्र० । श्री  
जिन महेंद्र सूरिभिः का० सा श्री हकु-----खरतर गच्छे ।

विपुलगिरि ।

संवत् १७०७ शाके १५७२ प्रवर्त्तमाने आश्विन शुक्र पक्षे त्रयोदश्यां शुक्र वासरे । श्री  
बिहार वास्तव्येन महलीयाण ज्ञातीय चोपडा गोत्रेण म० तुलसीदास तत्तार्या संघवण  
निहालो तत्तनयेन मं० संग्रामेण यवीसात्पुत्र गोवर्द्धनेन सह श्रीराजगृह विपुल गिरी-----  
अमै जीर्णा उद्दुरिता संघवी संग्रामेण प्र० कल्याण कीर्त्युपदेशात् श्रीखरतर गच्छे--  
लिपतं रतनसी खंडेलवाल गोत्रे पाटनी गुमानासिंही रासिंग ग्राम मुकाम राजग्रिही ।

सं० १८४८ मितौ कातिक सुदि ७ तिथौ । श्रीसंवेन । श्रीविपुलाचले मुक्तिंगतस्याति  
मुक्तकमुने मूर्तिः कारिता । प्रतिष्ठिता च श्रीजमृतधर्म वाचकेः ।

सम्बत १९३८ ज्येष्ठमासे शुक्ल पक्षे द्वादशी गुरु वासरे श्रीचन्द्रप्रज्ञ जिन चरण न्यासः  
प्रतिष्ठितं वृद्ध विजय गणि प्रथम जीर्णोद्धार माणिकचन्द्र गंधी करापितं विपुलाचल  
दुतिय जीर्णोद्धार राय लछमीपति सिंह धनपति सिंह करापितं । श्रीरस्तु ॥

संबत १९३८ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां श्री मुनि सुव्रत जिन चरण न्यासः वृद्ध  
विजय प्रतिष्ठितं राय लछमीपति सिंह धनपति सिंह जीर्णोद्धार करापितं श्रीरस्तुशुभं  
भूयात् विपुलाचल ।

रत्नगिरि ।

॥ अंनमः ॥ सम्बत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्रीनेमिनाथ जिन चरण कमले  
स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गंधी गोत्रे बुढाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्द्रेन  
श्रीराजगृहे रत्नगिरौ जीर्णोद्धार करापिते ॥ श्रियोस्तु ॥

॥ अंनमः ॥ सम्बत १८१९ वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्रीशांतिनाथ जिन चरण  
कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गंधी गोत्रे बुढाकीदास तत्पुत्र साह माणिक  
चन्द्रेन श्रीराजगृहे रत्नगिरौ जीर्णोद्धारं क० ।

॥ अंनमः ॥ संवत् १८१६ वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री पार्श्वनाथ जिन  
चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र सा  
माणिक चन्देन श्रीराजगृहे रतनगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥ श्रीः ॥ १ ॥

अंनमः ॥ संवत् १८१६ वर्षे माघमासे ६ तिथौ श्री वासु पुज्य जिन चरण कमले  
स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचंदेन श्री  
राजगृहे रतनगिरि पर्वते जीर्णोद्धारं करापितं । स्वपरयोः शुभम् ॥ श्रीः ॥

उदयगिरि ।

॥ अं नमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री अभिनन्दन जिन चरण  
कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक  
चन्देन उदयगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

॥ अंनमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री सुमति जिन चरण कमले  
स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचन्देन उदय  
गिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

अंनमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथौ श्री पार्श्वनाथ जिन  
चरण कमले स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधीगोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह  
माणिकचन्देन श्री राजगृहे उदयगिरि राजे जीर्णोद्धारं करापितं ॥ स्वपरयो कल्याण  
हेतवे ॥ श्रीः ॥

## स्वर्ण गिरि ।

( 255 )

सं० १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महत्तियाण वंशे जाट्टह गोत्रे सं० देवराज नं० पीमराज पुत्र सं० चिवराजेन । भार्या सं० माणिकदे पुत्र सं० रणमल घर्मदास लक्ष्मुन्वेन श्री आदिनाथ विंवांकारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिन वर्द्धन सूरि पद्मे श्रीजिन चन्द्र नूरि पद्मे श्रीजिन सागरसूरीणां निदेशेन वाचकाचार्य शुभ शील गणित्तिः श्रीखरतर गच्छे ।

## वैभार गिरि ।

( 257 )

सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्रीजिन चन्द्रनूरि विजय राज्ये तदादेशे श्रीवैभार गिरी मुनि मेरुणा जिन० ॥ — श्री कमल संयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिन भद्र सूरि पादुके प्र० का० श्री माल वं० भीपू पुत्र ठ० छीतमल श्रावकेण ।

( 258 )

सं० १५२७ आषाढ सुदि १३ श्रीजिन चंद्र सूरिणामादेशेन श्री कमल संयमोपाध्यायैः घनाशालि भद्र सूर्ति -- का० प्र० पीनसिंह ( ? ) श्रावकेण ।

( 259 )

अंनमः ॥ सन्वत् १८२६ वर्षे माघ मासे शुक्र पक्षे १३ तिथी श्री आदिनाथ जिन परम कमले स्थापितं हुगली वास्तव्य श्रीसवंशे गांधि गोत्रे ब्रुजाकीदास तत्पुत्र साहू भार्या चंदेन राजगृहे वैभार गिरे जीर्णोद्धार करापितं ॥ स्वपरयोः मुजाय ॥ श्री ॥

॥ श्री सम्बत १८३० माघ शुक्र ५ चन्द्रे ओसवंशे गहलडा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फते  
चन्दजी तत्पुत्र सेठ आणंदचन्दजी तत्पुत्र जगत्सेठजी श्री महताव रायजी तद्दुर्म पत्नी  
जगत्सेठाणीजी श्रीशुंगारदेजी श्रीमदेकादश गणधर पादुका कारापितं । स्या० राजगृह  
नगरोपरि वैजार गिरी ॥

सम्बत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति ज्येष्ठ वदि ५ सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिपरे  
श्री पार्श्वनाथ चरणन्यासः प्रतिष्ठितं । श्री जिन हर्ष सूरिभिः ।

सम्बत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति ज्येष्ठ वदि ५ सोम दिने । श्री व्यवहार गिरि  
शिपरे । श्रीयुगादि देव चरण न्यासः प्रतिष्ठितं । महारक श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

सुभ सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्रपक्षे १० दशम्यां तिथौ शुभवासरे श्रीमत्  
शांतिनाथ चरण कमलप्र० श्रीमत् वृहत्खरतर ग० श्री जिन रंगसूरीश्वर साखायां वृ० प्र०  
यं० युं० श्री जिननन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य पं० मु०  
कीर्त्युदयोपदेशात् ओसवाल वं० बाबू मोहन लाल कस्यात्मज बाबू हकुमत रायेन प्र०  
का० शुभमस्तु ॥

अनसः सु० सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शु० पक्षे १० द० श्री पद्म प्रभुकस्य चरण  
क० प्र० श्री वृ० प० ग० प्र० श्री जिननन्दी वर्द्धन सूरि वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत्  
शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात् बाबू पुस्याल चन्द पीपाडा गोत्रीयास्य पत्नी पराण कुंवरेन  
प्र० का० श्री वैजार गिरे सुभमस्तु ॥

॥ सु० स० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्र पक्षे १० दशम्यां शुभयासरे श्रीमत्पारश्व-  
नाथस्य चरण कमल प्र० श्रीमत् वृहत परतर ग० श्रीजिन रंग नृरीश्वर सापायां श्रीजिन  
नन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात्  
ज्यो० वं० पुस्यालचन्द्र पीपाढा गोत्रस्य पत्नी पराणकुंवरश्राविका प्र० का० वैजार गिरि ।

॥ अंनमः सिद्धं सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्र पक्ष १० दशम्यां तिथी शुभ वा०  
श्री कुंथनाथस्य चरण क० प्र० श्री मत्स्य० ख० ग० श्री जिन रंग सूरेश्वर सापा० श्रीजिन  
नन्दी वर्द्धन सूरि व० वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य मुनि कीर्त्युदयोपदेशात्  
ज्योसवाल वंसोद्भव वावु मोहनलालजीत्कस्यात्मज वावु हकुमत राय—कस्य गोत्रीय  
प्र० काशापित शुभमस्तु । वैजार गिरी ।

अं नमःसिद्धं ॥ शु० सं १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्र पक्षे १० दशम्यां तिथी शुभ  
वा० श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथस्य च० प्र० श्री मत्स्य० खरतर न० श्री जिन रंग नृरीश्वर  
साखा० प्र० यं० यु० प्र० श्रीजिन नन्दी वर्द्धनसूरि वर्त्तमान वा० श्री विनय विजयजि तत्  
शि० मुनि कीर्त्युदयोपदेशात् वावु महताय चन्द्रस्य सचिती गोत्रीयो तत्पत्नी विरांजी  
वीवी प्र० का० शुभ मस्तु वैजार गिरे ।

सं० १९११ व । शाले १७७६ प्र० । शुद्धिः सुदि । तिथी श्रीनेमनाथपादनुयासो कारा०  
प्र० प्र० श्रीजिन सहेन्द्र सूरिभिः का । ले० । गो । श्री लक्ष्मणचन्द्राय पर्या महाकुन्दा—तन्मया  
श्रेयोर्थं भवतुः ॥



## कुण्डलपुर ।

आज कल यह स्थान वडगांव नामसे प्रसिद्ध है परन्तु शास्त्र में इसका गुब्बर नाम है । यहां श्री महावीर स्वामीजीके प्रथम गणधर श्री गोतमस्वामी ( इन्द्रभूति ) का जन्म स्थान है । वीहोंके समयमें निकटमें नालंदा नामका प्रसिद्ध विश्वविद्यालय और छात्रावास था । चारों तर्फ प्राचीन कीर्तियोंके चिन्ह विद्यमान हैं । गवर्णके तर्फसे इस वर्ष यहां खुदाई आरम्भ हुई है आशा है कि प्राचीन इतिहासके उपर्युक्त साधने यहां मिलेगी ।

## पाषाणपर ।

( 269 )

॥ ५ ॥ संवत् १९७७ वर्षे ज्यैष्ठ्य वदि ६ शुक्रे श्री आदिनाथ ऋषभ विंशं का० ।

( 270 )

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतियाण वंशे काणा गोत्रे स० कउरसी प० म० श्रीपण कारित श्री महावीर विंशं प्रसिष्टितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरि निदेशेन वाचकाधार्य सुभ शील गणिभिः ।

( 271 )

सं० १६८६ वर्षे वैशाख सुदि १५ दिने मंत्रिदल वंशे चोपरा गोत्रे ठा० विमलदास तत ठा० तुलसीदास तत्पुत्र ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठा० नीहालो तत्पुत्र प्रोर्वा ठा० रेटी देहुरा गोतमस्वामीका चरण गुब्बर ग्राम -- कारा पिता वृहत्खरतर गच्छे प० श्री श्री जिनराज सूरि विद्यमाने उ० अन्नय धर्मेन प्रतिष्ठा कृता ॥

संवत् १६८६ वर्षे शाके १५५१ प्रवर्त्तमाने----- मासि शुक्ल पक्षे सप्तमी गुरु वासरे  
 बृहत् श्री परतरगच्छे युग प्रधान श्री जिन चन्द्रसूरि पादुका ठाकुर देवा तत्पारमजमांदन  
 तस्य ज्ञार्यान्हालो श्राविका पुण्य प्रसाधिका तस्या पुत्र दुडि चन्द्रेण प्रतिमा कारावित्ता  
 श्री माहतीयाल (महतियाण) श्रावकेन गुरु भक्ति दुडिचन्द्र प्रतिष्ठा क० श्री उपाध्याय श्री  
 रत्नातिलक गणि पादुके प्रतिष्ठितं वा० लब्धिसेन गणि प्रतिष्ठा० ।

### पटना ( पाटलिपुत्र )

मगधके राजाओं की राजधानी राजगृहीसे राजा श्रेणिकके पुत्र कौणिक चंपा नगरी  
 को राजधानी बनाया । उनके पुत्र उदाई राजा वहांसे यह पाटलिपुत्र नवीन नगर बना  
 कर राजधानी कायम किया । पश्चात् यहां पर नवनन्द मौर्य वंशी चन्द्रगुप्त अशोक  
 आदि बड़े २ राजा राज्य कर गये । पं० चाणक्य, आचार्य उमास्वति, मद्रवाहू-जार्ज  
 महागिरि, सुहस्त्रिय, वज्र स्वामि महान् लोग वहां रह गये हैं । आचार्य श्री स्वूल मद्रजी  
 और सेठ सुदर्शन जी का भी यहीं स्थान है । दादा जी की छत्री भी यहां प्राचीन है  
 सहरका मंदिर जीर्ण होगया है—आज फल बिहार उद्दोसाके शासन कर्त्ता यहां रहनेके  
 कारण और प्रधान विचारालय स्थापित होनेसे यह स्थान उन्नति पर है ।

### सहर मन्दिर—पाषाण पर ।

संवत् १८५२ वर्षे पोष शुक्ल ५ भृगुवात्सरे श्री पडोलीपुर वास्तव्य । श्री चक्रवर्त्त संघ समु-  
 दायेन श्री विशाल स्वामी । श्री पार्श्वनाथ स्वामी प्रासादस्य जीर्णोद्धारं कारावित्तं ।  
 कार्य्यस्याग्रेसवरी तपा गच्छोय धार्त्तः । कुहाड श्राज्ञानचन्द्रजी प्रतिष्ठितं च श्री चक्रव-  
 सूरिसिः शुभं ज्ञयात् ।

## धातुओं के मूर्तिपर ।

( 274 )

सं० १४८६ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री श्रीदूगड गोत्रे ला० अर्जुनपुत्रेण सा० उदय  
सिंहेन भार्या जयताही पु० सा० मूला सा० नगराज सा० श्रीपालादियुतेन आत्मश्रेयसे  
श्रीचंद्र प्रभं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीय श्री मुनीश्वर सूरि पदं प्रभं सूरिभिः ॥

( 275 )

सं० १४९२ वर्षे श्री आदिनाथ विंवं प्रति० श्रीखरसर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः  
कारितं कांकरिया सा० सोहड़ भार्या हीरादेवी श्री--कया ।

( 276 )

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ९ बुधौ वासरे घौरपट श्री देवां कीर्ति भटकी घोरिय मुल संघे  
सहिजै पतिभर्जपिः भ्यमिरि पुत्र उदय-पिम्बराजामन । शुभं ॥

( 277 )

सं० १५०८ वर्षे वैशाख सु० ५ चन्द्रे उप० सा० पेता भा० पेतलदे पुत्र घाचा श्रीलहा-  
देपा पेतलकेन डूंगर निमित्त श्री घर्मनाथ बि० का० प्र० चैत्र गच्छे भ० श्री मुनि तिलक  
सूरिभिः ॥

( 278 )

सं० १५०९ माह सुदि १० के० सा० ला गो० दो० सालहा भा० मालही पु० जदा भा०  
जमादे पु० राणा थिरदे कुंपा पांचा स० जदाकेन पीकातमि० ( ? ) श्रीवासुपुज्य विंवं  
का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शार्त सूरिभिः ॥

( ७३ )

( २७९ )

सं० १५१४ जलवाह ग्राम यासि जोसवाल सा० लीला मा० जमरी पुत्र ना० नापू  
नाम्ना मा० चनू पुत्र हूंगशादि युतेन ज्ञात उगम श्रेयसे श्री मुनि सुप्रत विंशं का० प्र०  
श्री तपा गच्छेश श्री रत्नशेपर सूरि पुरंदरैः ॥

( २६० )

सं० १५१७ वर्षे फा० शु० ११ लीणुरा यासि मा० वा० मांडे (?) ज्ञात चाकुंतुत सम-  
घरेण मा० राजू पुत्र वानर पर्वतादि युतेन स्व श्रेयसे श्री कुंतु विंशं का० प्र० तपागच्छे  
श्री रत्नशेपर सूरिपदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः आचंद्रार्कं जपतत् ॥ श्री ॥

( २६१ )

सं० १५१९ वर्षे आपाड़ यदि १ श्री मंत्रि द० श्री काणा गोत्रे ना० लाय भार्या धर्मिणि  
पुत्र सं० अचल दासेन पुत्र उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन युद्धिसेन देवपाठ महिराजादि युतेन  
स्वश्रेयोर्थं श्री पाश्र्वनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन सुन्दर सूरिपदे  
श्री जिन हर्ष सूरिभिः ।

( २६२ )

सं० १५२३ वर्षे फा० व० ८ लाय गोत्रे उकेश स० सान्हा मा० कण्ठ पुत्र सं० नरसिंह  
मा० नामलदे पुत्र सं० साधूकेन श्री यमना ज्ञात साहसमथर प्रमद कुटुम्ब युतेन स्व  
श्रेयसे श्री धर्मनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री - रिभिः : ॥ देप । तप - या ॥

( २६३ )

सं० १५२४ वै० शु० १३ प्राग्वाट सं० ज्ञात० मा० रात सुत ना० जाम्ना मा० सीदी  
पुत्र हासादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासु पृथर विंशं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री लक्ष्मी  
सागर सूरिभिः ॥ जाणांधारा (?) वास्तव्य यासियाः ॥

सं० १५३१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय चैवरीया गोत्रे सा० केरहणमा०  
 ऋणी पुत्र साहसू जगपतिकेन मा० साभू पुत्र सहसू युतेन श्री विमल नाथ विंवं कारि०  
 प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० सोमे लीवडी वास्तव्य सं० खेमा मा० गोरी श्राविकया  
 पुत्र घेडसीम हितया निज श्रेयसे श्री अंचल गच्छे श्री कुंथ केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री  
 कुंधनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

सं० १५३५ श्री मूलसंघ श्री विद्यानंदि गुरु रोहिणी व्रतोद्यापन वासु पूज्य स्वामी  
 प्रतिष्ठितं सदा प्रणमंति गुरवः ।

सं० १५३६ फा० सु० ८ ओसवाल ज्ञा० सा० देरहाणघा सुः सरठवणेन (?) सु० सरवण ८  
 श्री शांतिनाथ विंवं का० ॥ प्र० ॥ उके । - कव ।

सं० १५३८ वर्षे आषाढ वदि ५ सु -- र मूलसंघ श्री मानिक चंद ल -- श्री ॥

सं० १५६३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्रीमाल ज्ञातीय मांडिया गोत्रीय सा० अजिता  
 पुत्री सा० लापा भार्या आढी सुश्राविकया श्री चन्द्र प्रभविंवं कारितं स्व पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं

श्री खरतर गच्छे श्री जिन समुद्र सूरि पहालकार श्री जिन हंस सूरिभिः कथयाम् भूयान्  
माह सुदि १ ॥ दिने ॥

( २९० )

सं० १५६६ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल नवम्यां श्रीमाल वंशे महता गोत्रे सा० हाण्डा तस्य पुत्र  
सा० तकतनेनेदं पार्वनाथ विवं कारितं खरतर गच्छे श्री जिनदत्त (?) सूरि अनुक्रमे श्री  
जिनराज सूरिपहे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

( २९१ )

सं० १५६६ वर्षे माघ व० ५ गुरी लघु शाखायां सा० वीरम भा० फटापुत्र सा० आसा  
भा० कुंजरि नाम्न्या मुनि सुत्रत विवं का० स्वधेयसे प्र० रुपागच्छे श्री हेम विमलसूरिभिः  
॥ नलकच्छे ॥ (?) ॥

( २९२ )

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ३ शुक्ले श्री श्री (?) वंशे । सा० माला भा० खाकू नाम्ना  
सुण्यो (?) जावड़ शी० अदा समस्त कुटुम्ब युतया श्री अंचलगच्छे श्री भावसागर नूरीणा-  
मुपदेशेन श्री आदिनाथ विवं कारितं श्री संघेन ॥ श्रयोऽयं ॥

( २९३ )

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे पं० अन्नयसार गणि पुण्यवाय विप्याः पं० अन्नय  
मंदिर गणि अन्नय रत्न मुनि युताभ्यां श्री शान्तिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं तिस्र तथा  
पहे श्री सौभाग्य सागर सूरिभिः ।

( २९४ )

सं० १५७६ वर्षे माह सुदि ५ दिने उत्तवाल ज्ञातीय नवलपा गोत्रे साहयान भा०-  
जसिरि पु० पदमा-णापदमा-पांचा हेमादि युतेन सा० पहनाकेन पूर्वज पूण्यार्थं श्रीः

( ७६ )

शिवलनाथ विंश कारितं प्र० नागोरी तपागच्छे प्र० श्री राजरत्न सूरिभिः वधपोर वास्त  
व्यः श्री ॥

( 295 )

सं० १७०१ व० मार्गशिर व० ११ दिने आगरा वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय वृद्धशास्त्रीय  
सा० नानजी भा० गुजर--पुत्र स० हीरानन्द भा० यमिन रंगदे नाम्ना स्व च पुत्र--  
एवं प्रमुख कुटुम्ब श्रेयोर्थे श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे  
श्री ५ श्री विजयदेव सूरिपट्टे श्री विजयसिंह सूरिभिः पं० लाल कुशल लिः ॥ श्री ॥

( 296 )

सं० १८५६ वर्षे वैशाख सुदि ३ बुधे वीवी मैनाजी श्री आदिनाथ विंश कारितं प्रतिष्ठितं  
सर्व समुदायेन ।

( 297 )

सं० १७१० वर्षे मार्गशिर -----श्री शान्तिनाथ विंश कारितं ।

( 298 )

सं० १७६३ वै० सु० २ ---- पार्श्व--

( 299 )

सं० १७६३ व० फा० व० ११ प्र० तत्र श्री पार्श्वनाथ ---- ।

( 300 )

सं० १७७१ वर्षे शके १६३६ वर्षे मगसिर सुदि १ शुके माझपूर वास्तव्य वीराणी  
गोत्रीय सा० वेणीदास तत्पुत्र सा० श्रीमसी तत्पुत्र सा० मयाचंद वासी हाजीपुर पटना

( ०७ )

कातेन शांतिविंशं गृहीतं श्री मेदिनी पूरे प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे ज्ञ० विजयरत्न नृसिंहाय  
प० जय विजय गणित्तिः ॥ श्री ॥

( 301 )

सं० १७८६ वर्षे माघ सुदि १५ दिने चोडरिया गोत्रे सा० जीवण रामजी ज्ञायां मन  
सुपदेजीः । सुत जगतसिंघजी विंशं कारापितं ।

( 302 )

सं० १८२० वर्षे मिः मि-सु० ३ श्री भ० श्री जिन छात्र सूरि - - - -

( 303 )

सं० १८२० वर्षे मिः मा० सु० ५ श्री ज्ञ० जिन छात्र सूरि प्र० धीर गोत्रे छे० मोतीचंद्र  
कारी - - - - जिनः - - ।

( 304 )

सं० १८२० मि० फा० कृ० २ शुभ दूगढ़ महताय कुयर का० प्र० सागर - - - - श्री ज्ञान  
चन्द्र सूरि राज्ये

( 305 )

२४ जिन माता पट्टपर ।

संवत् १८४८ मिति ज्ञाद्र सुदि ११ तिथी ॥ श्री पाटलिपुत्रे मालू गोत्रे सा० हुकुमच-  
न्दजी पुत्र गुलाबचन्द ज्ञायां फुलडो वीवी कया हृष्ट सिध्ययं श्री ज्ञानविंशति जिन मात  
स्थापना कारिता प्रतिष्ठिता च श्री जिनजक्ति सूरि प्रशिष्य श्री ज्ञानूठ घनं धामनाचार्यः  
श्री रस्तु ।



सं० १६०० मिः आषाढ सिः ६ गुरौ श्री महावीर जिन विंशं प्रति० खरतर महारक गच्छे महारक श्री जिन हर्ष सूरिपट्टे दिनकर भ० श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः कारितं तेन ओसवंशे भूगड़ गोत्रे भोलानाथ पुत्र दौलतरामेन स्वश्रेय सोर्यम् ।

### पाषाण के मूर्तियों और चरणों पर ।

( 307 )

( चन्द्रप्रभ विंशपर )

सम्बत १६७१ श्री आगरा वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाणी वंसे सं० ऋपभदास भार्या सुः रेप श्री तत्पुत्र संघराज सं० रूपचन्द चतुर्भुज सं० घनपालादि युते श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि तत् पट्टे पूज्य श्रीकल्याण सागर सूरीणा मुपदेशेन विद्यमान श्री विसाल जिन विंश प्रति —

( 308 )

संवत् १६७१ वर्षे ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाणी वंसे साह क्रुरं पाल सं० सोनपाल प्रति० अंचल गच्छे श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन वासु पूज्य विंशं प्रतिष्ठापितं ॥

( 309 )

॥ श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ आगरा वास्तव्योसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंसे संघपति ऋपभ दास भा० रेप श्री पुत्र सं० क्रुरपाल सं० सोनपाल प्रवरौ स्वपितृ ऋप दास पुन्यार्थं श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणा-मुपदेशेन श्री पदम प्रभु जिन विंशं प्रतिष्ठापितं सं० चागाकृतं ।

( 310 )

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री आगरा वास्तव्य उपकेस ज्ञातीय लोढा गोत्रे सा० प्रेमन भार्या शक्तादे पुत्र सा० पेतसी लघुभ्राता सा० नेतसा

युतेन श्री मदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्री वास पूज्य  
विंश प्रतिष्ठापितं सं० क्रूरपाल सं० सोनपाल प्रतिष्ठितं ।

( 311 )

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी श्री जागरा नगरे जोसयाळ हाती  
छोढा गोत्रे — गा वंसे सा० पेमन जार्या श्री सक्तादे पुत्र सा० पेतसी ज्ञा० जक्तादे  
पुत्र सा० — सांग — श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन  
श्री विमलनाथ विंश प्रतिष्ठितं सा० क्रूरपाल — ।

( 312 )

( सं० १६७१ ) ॥ संघपति श्री क्रूरपाल सं० सोनपालैः स्वमातृ पुण्यायं श्री अंपटगणेशे  
पूज्य श्री ५ श्री धर्ममूर्ति सूरि पट्टाम्बुजहंस श्री ५ श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन  
श्री पार्श्वनाथ विंश प्रतिष्ठापित पुज्यमानं चिरं नंदतु ।

( 313 )

॥ सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शु० ६ सा वैष्णोदास पुत्र श्रीमतेन पुत्र मयाचन्द्र प्रतिष्ठा  
करापितं धीराणी गोत्रे पाटली पुरे ।

( 314 )

सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शु० ६ सा० वैष्णोदास पुत्र श्रीमतेन पुत्र मयाचन्द्र धीराणी  
गोत्रे — — प्रतिष्ठा करापितं पाटली पुरवरे ।

( 315 )

॥ सं० १७६२ व० का० शु० ६ सा० वैष्णोदास पुत्र श्रीमतेन पुत्र मयाचन्द्र प्र०  
धीराणी गोत्र पटना नगर श्री नेमनाथ ॥ श्री शान्तिनाथ ॥

( ८० )

( 316 )

॥ सं० १७८६ वर्षे आसोज सुदि ८ श्रीपासचन्द्र गच्छे ॥ श्री उपाध्याय चेमचन्द्र जीमा पादुका ॥

( 317 )

॥ संवत् १८१६ वर्षे श्री संभवनाथ जिनचरण कमल स्थापिते साह माणिक चंदेन जीर्णोद्धार करापितं ॥

( 318 )

सं० १८२५ वर्षे माघ शु० ३ गुरी गोवर्द्धन सुत सरूपचंदेन प्रति महि -- नाथ विंध्यं कारापितं ।

( 319 )

॥ संवत् १८२६ श्री ५ पं० लालचन्द्रजी पादुकं ॥ मनसारामेन स्थापितं ॥ संवत् १८२६ श्री ५ पं० रूपचन्द्रजी पादुका ॥ संवत् १८२६ श्री ५ श्री वा० भारमल्लजी ॥

( 320 )

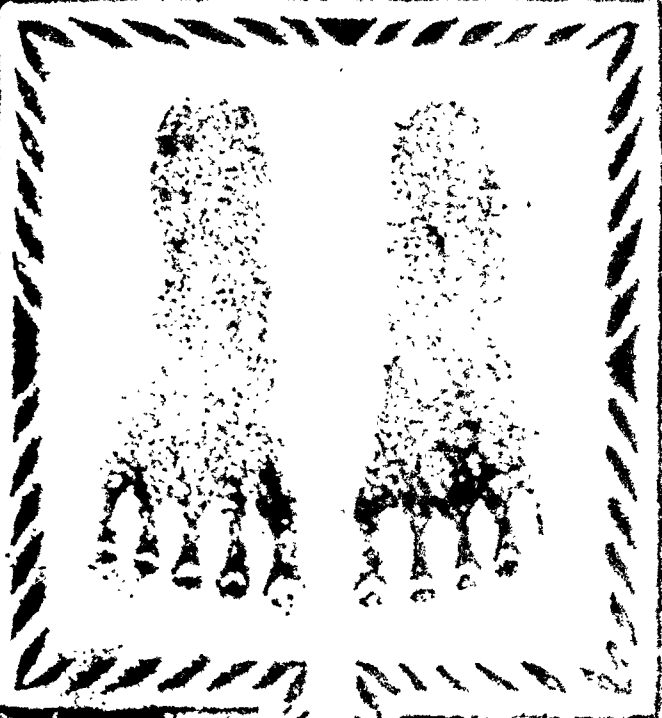
॥ शुभ संवत् १८७७ वर्षे ॥ वैशाख शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्री जिन कुशल सूरेश्वर सद्गुरुणा चरण पादुका प्रतिष्ठिता श्री मद्रवृहत्खरतर गच्छे महारक श्री जिन अजय सूरि पहाळं कृत श्री जिनचन्द्र सूरिभिः श्री मत्पाटलिपुरं वास्तव्य । समस्त श्री संघैः प्रतिष्ठा कारापिता । पं । गणि श्री कीर्त्युदयोपदेशात् ॥ श्री रस्तु ।

( 321 )

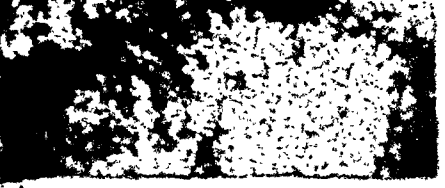
॥ संवत् ॥ १८७७ ॥ वर्षे वैशाख शुक्ल पंचम्यां चन्द्रवासरे श्री जिन कुशल सूरेश्वर सद्गुरुणा चरण पादुका प्रतिष्ठिता महारक श्री जिन अजय सूरि पहाळं कृत श्री जिन

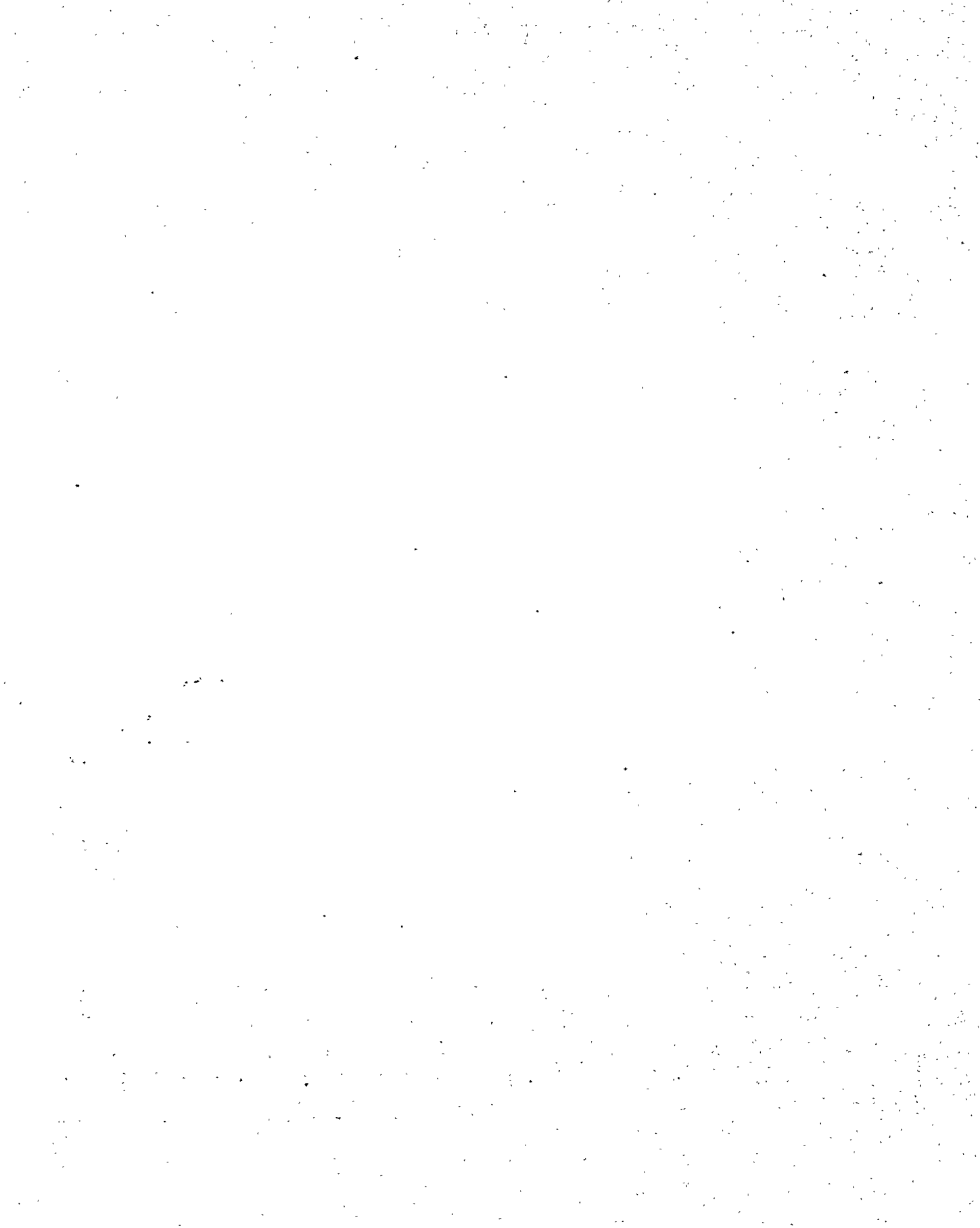
॥ श्रीसंबन्धु ७७ बंधु वि सायुज्ये च पत्र्या विज्वासा श्री  
जिह्व जरावसरी श्वसुजुसाधयाम ७ काप्रनिधि

तच्छीम  
रतयुद्धि  
श्रीहित  
श्रियुक्त  
नवधस्ता  
त्याष्टविभु  
सम्बन्धु  
शक्तस  
शिष्टीका  
देशान्



हृदत्ववत  
नदारक  
अक्षयस  
दंतेश्रीनि  
रतिःश्रीध  
रबास्तवा  
सर्वेश्वरि  
प्रितापप  
सुदयोप  
॥ श्रीरत्ना





( ८१ )

चन्द्र सूरिभिः मनेर वास्तव्य श्रीमालान्वये--वदलिया गोत्रे सुधायक श्री कल्याणचन्द्र  
तत्पुत्र श्री भग्गुलाळ की र्त्तचन्द्र तत्पीत्र किसनप्रसाद ज्ञानय पंड्रादि सपरिवारेण स्वर्ग-  
योऽयं प्रतिष्ठा कारापिता पं । ग । कीर्त्युदयोपदेशान् ।

( ३२२ )

श्री ज्जागरा नगर वास्तव्य सं० पति श्री श्री चन्द्रपाडेन प्रतिष्ठा कारिता ।

( ३२३ )

॥ संवत् २१६ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्री मुळसंचे प्रहारक जी श्री जिन चन्द्रदेव साह  
जीयराज पापढीवाल नित्य प्रणमति सर मम श्री राजाजी स संघे--

( ३२४ )

संवत् १५१८ वर्षे वैशाख सुदि ३ मुळसंचे प्रहारक श्री जिन चन्द्र सा० जियराज  
पापढीवाल सहैरज-सा श्री राजसी संघ रायल ॥

( ३२५ )

॥ संवत् १६०१ ज्येष्ठ वदि ३ सोमवारे क्रुखंरो महाराजधिराजजी श्री मत्त दयालजा  
राज्य प्र० ॥ चंद्रकीर्तिजी तत्पदे प्र० श्री देवेन्द्र कीर्तिजी सदांम्नाये नरकवती गण  
वलात्कारगण कुंदाचार्यानवये शुभां ।

( ३२६ )

संवत् १७३२ वर्षे मार्गशिर्ष वदि पंचमो गुरी हाकामध्ये --- कात्रा संघ साध्व  
गच्छे पुष्कळ गण लोहाचार्या न्वये दिगम्बर धर्म प्रहारक ज्यचन्द्र प्रतिष्ठितं ज्ञानवाक  
गांगलु गोत्रे सा० गुलाळ दास सा० मुलादे पुत्र० । सावष्टसिंपयी प्रसरनिपयी वेग्ल  
सिंह वि---प्रतिष्ठा कारापितानि सेरपुरेन्तिके --- हाजायां प्रतिष्ठा । ---  
पादुकानां ॥ श्रेयोस्तुः ॥ पादुका लादिनाथकी । गुरुपादुका ॥

### नेमनाथजीके विंवपर ।

॥ सं० १९१० माघ शु० १४ शनौ काष्ठासं ( घ ) मायुर गच्छ पुष्कर गण लोहाचार्य  
याम्नाय ज० देवेन्द्र कीर्तिदेव तत्पद्वे ज० जगत् कीर्तिदेव तत्पदे ज० ललित कीर्तिदेव  
तत्पदे ज० राजेन्द्र कीर्तिदेव हदाम्नाय अग्रोत् कान्धय वासिल गोत्रे सा० श्री सीपीलाल  
तत्पुत्र बाबु मुनिसुब्रत दासेन श्री जिनालय पूर्वक श्री जिन विंव प्रतिष्ठा कारापिता  
आरामपुर वास्तव्य --- स्य रामसरा मध्ये श्रीरस्तु ॥ श्री ३ ॥

॥ श्री संवत् १९१० शाके ॥ १७७५ साल मित्ती वैशाख शुक्ल पंचम्यां गुरी पाटलीपुर  
सर जिनालय पूर्वक श्री श्री नेमनाथ मंदिरजी जेसवाल माणकचन्द तत्पुत्र मटरु मल  
तत्पुत्र सीवनलाल प्रतिष्ठो कारापितं श्रीरस्तु ।

### श्री स्थूलभद्रजी का मंदिर ।

॥ संवत् १८४८ वर्षे मार्गशिर वदि ५ सोमवासरे श्री पाटली वास्तव्य श्री सकल संघ  
समुदायेन श्री स्थूलभद्र स्वामीजी प्रसादस्य कारापितं कार्य्य स्याग्नेस्वरी श्री तपा  
गच्छीय श्राद्धः श्री लोढा श्री गुलाबचन्दजी प्रतिष्ठि तंसकल सूरिभिः ।

### चरण पर ।

सं० १८४८ ॥ भाद्र सुदि ११ श्री संघेन । श्रुत केवलि श्रीस्थूल भद्राचार्याणां देवगृहं  
कारयित्वा तत्र तेषां चरण न्यासः कारितः प्रतिष्ठितं श्री अमृतधर्मवाचनाचार्यैः ॥

( ८३ )

## सेठ सुदर्शनजी का मन्दिर ।

( १०१ )

चरण पर ।

अध्ययपदाप्तस्य श्री श्रेष्ठिसुदर्शनस्य ह्यमे पादुके संप्रतिष्ठिते सद्यः संशेन गृह्य नमः ॥

दादा बाड़ी ।

( १०२ )

संवत् १६८२ मार्गशिर्ष शुद्ध ५ सा० कटार मठ तत्पारमज ना० कल्याण मठ पुत्र  
चिंतामणि श्रीजिन कुशल सूरि० ज । वेगमपुर वास्तव्य ।

( १०३ )

संवत् १६८६ वर्षे पूर्व देशे पाहलिपुर नगरे वेगमपुर --

( १०४ )

तपागच्छे ज० श्री ५ श्रीहीर विजय सूरि जगत पादुकेभ्यो नमः प० चंद्र कुशल शक्ति  
नित्यं प्रणमतिश्च । सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शुद्ध ६ सा० वेणीदास पुत्र श्रीमसेन पुत्र  
मयाचन्द्र वीराणी नीत्रे प्रतिष्ठितं- वीराणी मयाचन्द्र प्र० क० पाहलीपुरे ।

( १०५ )

साध्वीजी के चरण पर ।

सं० १८१४ वर्षे शके १७०६ प्रवर्तमाने मिति नाथ नाने गृह्य पद सुविधायां  
साध्वी महेश्वरा सुजान विजयाजी तन् शिष्यणी दीप विजयाजी तन् शिष्यणी कर्म  
वासिनी पान विजया कारापितं वाराणसी ननका रामेन प्रतिष्ठा कारापितं सुहमदा ॥



## श्री समेत शिखर तीर्थ ।

यह प्रसिद्ध जैन तीर्थ पूर्व देश जिला हजारीबागमें है । १ । १२ । २३ । २४ यह ४ तीर्थंकरोंके सिवाय और २० तीर्थंकरोंका निर्वाण कल्याणक यहां हुवे हैं । यह पवित्र पहाड़के २० टोंकमेंसे १९ टोंक पर छत्रिमें चरण पादुका विराजमान हैं और श्री पार्श्वनाथ स्वामीके टोंक पर मंदिर है । तलहटी मधुवनमें मंदिर और धर्मशाला बने हुवे हैं । यहांसे ४ कोस पर ऋजुवालुका नदी बहती है जिसके समीपमें श्री वीर भगवानका केवल ज्ञान प्रया था । यहां पर चरण पादुका है । यहांका और मधुवनका लेख जैन तीर्थ गाइड से लिया गया है ।

### ऋजुवालुका नदीके किनारे छत्रिमें

चरण पर ।

( ३३६ )

ऋजुवालुका नदी तटे श्यामाक कुटुम्बी क्षेत्रे वैशाख शुक्ल १० तृतीय प्रहरे केवल ज्ञान कल्याणिक समवसरणमभूत् मुर्शिदाबाद वास्तव्य प्रतापसिंह तद्वार्या मेहताव कुवर तत्पुत्र लक्ष्मीपतसिंह बहादुर तत्कनिष्ठ आता धनपतसिंह बहादुरेण सं० १९३० वर्षे जीर्णोधारं कारापितं ।

### मधुवनके मन्दिरके मूर्तियों पर ।

( ३३७ )

संवत् १८५४ माघ कृष्ण पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्व जिन विंशं प्रतिष्ठितं -- ।

( ३३८ )

संवत् १८५५ फाल्गुण शुक्ल तृतीयायां रवी श्रीपार्श्वनाथस्य शून्य स्वामी गणधर विंशं प्रतिष्ठितं जिन हर्ष सूरिभिः कारितं च वालुचर वास्तव्य श्रीसंचेन ।

( ८५ )

( ३३० )

संवत् १८७७ -- धीपार्व्यं विंशं प्रतिष्ठितं धी जिन हर्षं नृरिणा कारितं -- गांशत  
सिंहज पदार्यं मल्लेन -- ।

( ३३१ )

संवत् १८७७ वैशाख शुक्ल १५ धीपार्व्यंविंशं प्रतिष्ठितं धीजिनहर्षं नृरिणा गांशत  
महतावी -- मूलचन्द्र घर्मघन्त्रेण कारितं ।

( ३३२ )

संवत् १८८७ वर्षे फाल्गुन शुक्ल १३ धीपार्व्यंनाथ जिन विंशं दुग्दु ज्येष्ठमास्ये श्राव्यं  
फत्ती नाम्न्या वाचक चारिप्रनंदि गणि उपदेशात् कारितं प्रतिष्ठितं च ।

( ३३३ )

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां सोमवास्तरे धी शितलनाथ विंशं कारितं लोमशय  
दुग्दु गोत्र प्रतापसिंहेन प्रतिष्ठितं च धी जिन चंद्र सूरिभिः ।

( ३३४ )

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां चंद्रवास्तरे धीचंद्रप्रज्ञ जिनविंशं कारितं लोमशय  
नवलखा गोत्रे मेढामल पुत्र जस्वरूपेन प्रतिष्ठितं च वृहद् महारकवरकर नष्ट धी जिन-  
क्षयसूरी चक्षरीक धीजिनचंद्र सूरिभिः ।

( ३३५ )

सं० १८८७ वर्षे --- धी प्रपन्न जिनविंशं कारितं प्रतिष्ठितं --- ।

( ८६ )

( 345 )

सागरांकवसुचंद्र वर्षे (१८९७) नेत्रपण गणधरायुते शके (१७६२) फाल्गुनांतिमदले  
सुनागके ( ५ ) भार्गवे सितपटीघपालके वाणारस्यां श्रीमद्रुद्रगवत्सहस्रफणालंकृत श्री  
पार्श्वनाथ जिनमूर्तिः कारापितं श्री० उदय चंद्र धर्म पती महाकुवराख्यया मूल चंद्र सुत  
युतया बृहत्खरतर गणेश श्री जिन हर्ष गणि पदालंकृत श्री जिन महेंद्र सूरिणा प्रतिष्ठिता ।

( 346 )

सं० १९०० वर्षे -- श्री गोडी पार्श्वनाथ विंवां का० --- ।

( 347 )

सं० १९१० शके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री पार्श्वविंवां प्रतिष्ठितं बृहत्खरतर गच्छे --- ।

टोंकपरके चरणों पर ।

( 348 )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चन्देन श्री  
अजितनाथ पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे ।

( 349 )

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० चंद्रे । श्री अजितनाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका  
जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारापिता । मलधार पूर्णिमा श्री मद्रिजय गच्छे । महारक ।  
श्री जिन शांतिसागर सूरिभि प्रतिष्ठितं च ॥

( 350 )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसालचंदेन श्री संभव  
पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे ॥

( ८७ )

( ३५१ )

संवत् १८३० । माघे । शु० १० । चंद्रे । श्री संज्ञय जिनेंद्रस्य परम पादुका श्री संघेन  
कारापिता । मलघार पूर्णिमा ॥ विजय गच्छे । श्री महारकीसम श्री पृथ्वी श्री जिन  
शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

( ३५२ )

॥ सं० १८३३ का जेष्ठ शुक्ले द्वादश्यां शनिवासरे श्री अजितनन्दन जिनेंद्रस्य परम  
पादुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारिता मलघार पूनमीया विजय गच्छे श्री जिन  
चंद्र सागर सूरि पद्मोदय प्रभाकर महारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठिता ।  
स्थापिताश्च । शुभं श्रेयसे भवतु ।

( ३५३ )

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरी विरानी गोप्रीय सा० गुसाठ पट्टेण श्री सुमति  
नाथ पादुका कारापिता च । सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

( ३५४ )

॥ सं । १८३१ । माघे । शु । १० श्री सुमतिनाथ जिनेंद्रस्य परम । पादुका । जीर्णो-  
द्धार रूपा । गुज्जर देशे श्री संघेन स्थापिता । कारापिता । विजय गच्छे । ॥ श्री जिन  
शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

( ३५५ )

॥ सं १८४६ माघ सु० १० सुक्रवा । श्री उनेत भीट पर्वते श्री परम गुरु जिन परम  
स्थापितं प्रति । म । श्री विजय राज सूरि तपा गच्छे ।

( ६८ )

( ३५६ )

॥ संवत् १८२५ मह सुदि ३ गुरी विरानी गोश्रीय साह खुसाल चंदेन श्री सुपार्श्व-  
पादुका कारापिता प्र० ।

( ३५७ )

संवत् १८३१ । माघे । शु । १० । सुपार्श्वनाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार  
रूपा । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन त्या स्यापना कारापित पूर्णिमा विजय गच्छे ।  
भहारक । श्री जिन शांति सुरिभिः । प्रतिष्ठितं च ।

( ३५८ )

॥ संवत् १८४६ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ बुध्वारे । श्री चंद्र प्रभु जिनस्य  
चरण न्यासः श्री संघाग्रहेण । श्री वृहत् खरतर गच्छीय । जंगम । युग प्रधान भहारक ।  
श्री जिन चंद्र सूरिभिः । प्रतिष्ठितः ॥ श्री ॥

( ३५९ )

॥ संवत् १८३१ वा वर्षे । माघ सुदि १० तिथौ श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका ।  
अहमदाबाद वास्तव्य सेठ उमा भाई हठी सिंहेन कारापिता । मलघार पूर्णिमा । विजय  
गच्छे । भहारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

( ३६० )

॥ संवत् १८३१ । माघे । शु । १० तिथौ । चंद्रे । श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका  
जीर्णोद्धार रूपा । अहमदाबाद वास्तव्य । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्यापिता कारापित  
च । मलघार पूर्णिमा । श्री मद्विजय गच्छे । श्री भहारकीत्तम । श्री श्री जिन शांति  
सागर सूरिभिः ॥ प्रतिष्ठितं । स्यापितं च शुभ श्रेय ।

( ८६ )

( ८७ )

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरे विरानी गोत्रीय सा० श्री गुणाड चंद्रे । श्री शीतल जिन पादुका कारापिता श्री तपा गच्छे ॥

( ८८ )

॥ संवत् १८३१ वर्षे माघे । शु । १० । चंद्रे श्री सीतल नाथ जिनेंद्राय चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा गुजराती श्री संघे कारापिता ॥ मळभार पूर्णिमा विजय गच्छे । प्रह्लाद-रक्ष । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ।

( ८९ )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरी विरानी गोत्रीय सा० गुणाड चंद्रे श्री श्यांभु प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ।

( ९० )

॥ संवत् १८३१ माघे शु । १० तिथी । श्री श्यांभु नाथ जिनेंद्राय चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तथा स्थापना कारापितं पूर्णिमा श्रीमद्विजय गच्छे । प्र । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्र ।

( ९१ )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरी विरानी गोत्रीय सा० गुणाडचंद्रे श्री विमल नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री ॥

( ९२ )

॥ संवत् १८३१ माघ शुद्धे १० चंद्रो श्री विमलनाथ जिनेंद्राय पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरात का श्री संघेन । तथा स्थापना कारापिता । मळभार श्री विजय गच्छे । श्री प्रह्लाद । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरि प्रतिष्ठितं च ।

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोश्रीय साह खुसाल चंदेन श्री अनंत प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च सर्व्व सूरिभिः श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री रस्तुः ॥

॥ संवत् १८३१ वर्षे माघ शु० १० चंद्रे श्री अनंत नाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मलघार पूर्णिमा श्री मन्विजय गच्छे महारक । श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । स्थापितं ।

॥ सं १८१२ वर्षे शाके १७७७ मिते माघोत्तम माघे मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षीनवमी तिथौ सोमवासरे विजय योगे कुंभ लग्ने श्री सम्मैत शैले श्री धर्मनाथ चरण पादुका प्रतिष्ठिता वृहत् स्वरतर महारकोत्तम महारक श्री जिन हर्ष सूरीणां । पद प्रभाकर श्री जिन महेंद्र सूरिभिः स साधुभिः कारिताश्च वाराणसीस्य श्री संघेन कालिपुरस्य संघेनया ।

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० तिथौ श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । मम्बई वास्तव्य । सेठ नरसिंह भाई । केसवजी केन स्थापना कारापिता । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । यु । प्र । महारक जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापितं च । शुभं भवतु ॥

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोश्रीय साह खुसाल चंदेन श्री शांति नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठितं च सर्व्व सूरिभिः श्री मत्तपा गच्छे ॥

( ६१ )

( १७० )

॥ संवत् १६३१ । मार्घे । शु । १० । चंद्रे । श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रव्य । परम पादुका  
जीर्णोद्धार रूपा । अहमंदायाद् वास्तव्य । सेठ जगु भाट्ट पंचेन स्थापना कारा-  
पिता । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । युग प्रधान । ज । श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर  
सूरिभिः प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

( ७७ )

॥ संवत् १६२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरो विरानी गोत्रीय सा० गुस्ताफ चंदेन श्री कुंभनाथ  
पादुका कारापिता प्रती० श्री तपा गच्छे ।

( १७३ )

॥ संवत् १६३१ माघ शुक्ले १० चंद्रो श्री कुंभु जिनेन्द्रव्य । परम पादुका - - जीर्णोद्धार  
रूपा मम्बड वास्तव्य सेठ केसवजी नायकेन स्थापना कारिता - - पूर्णिमा । श्री विजय  
गच्छे । श्री जिनचंद्र सागर सूरि पट्टोदय प्रताकर - - महारक श्री जिन शांति सागर  
सूरिभिः । प्रतिष्ठिता स्थापिता च ।

( १७४ )

॥ सं० १६२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरो विरानी गोत्रीय सा० गुस्ताफ चंदेन श्री अरनाथ  
पादुका कारापिता प्र० श्री तपा गच्छे ।

( १७५ )

॥ संवत् १६३१ । मार्घे । शु । १० । चंद्रे । श्री अरनाथ जिनेन्द्रव्य । परम पादुका  
जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री चंचेन तया स्थापना कारापिता नवः । पूर्णिमा विजय  
गच्छे । जं । यु । प्र । ज । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ।



( ६९ )

( 377 )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ३ गुरौ विरानि गोत्रीय साह खुसाल चंदेन ।  
श्री मल्ली नाथ पादुका कारापिता म० श्री तपा गच्छे ।

( 378 )

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० चंद्रे । श्री मल्लि नाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका  
जीर्णोद्धार रूपा अहमंदाबाद वास्तव्य । सेठ भगु भाई पेम चंद स्थापना कारापिता  
मलघार पूर्णिमा । श्री मद्विजय गच्छे । महारक । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभि  
प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ॥

( 379 )

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंद्रेण श्री सुब्रत  
जिन पादुका कारिता श्रीमत्तप्रा गच्छे ॥

( 380 )

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० । श्री मुनि सुब्रत जिनेंद्रस्य । चरण पादुका । जीर्णोद्धार  
रूपा । गुजरातका । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मल । पूर्णिमा । श्री मद्विजय  
गच्छे श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापितं च ॥

( 381 )

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री नमि-  
नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

( १३ )

( ३९ )

॥ संवत् १८३१ माघ शुक्ले दशम्यां चंद्रवाचरे श्री नमिताय जिनद्रव्य पादुका ।  
जीर्णाहार रूपा । अहमंदायाद् वास्तव्य । सेठ उमा भाई हरी जितिन स्यापना वारा-  
पिता । पूर्णिमा विजय गच्छे महारक । श्री जिन शानि नागर सूरिसि । प्रतिष्ठित ।

तेजपूर ( आसाम )

राय मेघराजजीका मंदिर ।

( ३९ )

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख शुद्धि ७ शनी श्रीश्रीमातृ ज्ञानीय श्री० नानंद स्वामी जीम्  
सुत पूनसीकेन मातृपितृ श्रेयोर्वं श्रीशीतलनाय विप्रं कान्ति प्रतिष्ठितं श्री सूरिसि ।

( ३९ )

सं० १८४३ का मिति वैशाख शुक्ल चतुर्थ्यां ----

( ३९ )

सं० १८५७ वर्षे ज्ये० शु० १२ तियो शुक्लवाचरे ॥ श्री जिन जीर्ण सूरि प्रतिष्ठितं श्री  
जिनदत्त सूरि नाम पादुका का० ।

कलकत्ता

श्री कुमारसिंह हठ - नं० २६ इंडियन मिरर स्ट्रीट ।

घातुयोके मूर्ति पर ।

( ३९ )

श्रीपारवनाथ जिप ।

ब्रह्मण सत्य संयकः क्षियाये सुतः सुपुण्यक श्री दूः । १ । सौकमल सूरि ज्ञानम् । १  
द्रफुले कारयामास संवत् १०३२

( ६४ )

( ३८७ )

सं० ११५० ज्येष्ठ सुदि १० श्री महेशराचार्य श्रावक पूना सुताभ्यां पालहण रालहणाभ्यां  
स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिता ॥

( ३८८ )

ॐ श्री मूलसंघे गुणभद्र सूरः संडिल्ल ( खडिल्ल = खंडेल ? ) बालान्वय सारभूतः ।  
यो विस्तु ( श्रु ) तोसो सिवदेवि पुत्रः सच्छ्रावकोऽभून्मुनिचंद्र नामा ॥ १  
तस्माच्छीतेति विरठयाता ज्ञार्या शील विभूषणा ।  
कारिता कर्मनाशाय चतुर्विंशतिका शुभा ॥ २ संवतु १२३६ फा सु० २ गुरी ॥

( ३८९ )

संवत १४८५ वर्षे जेठ सुदि १३ चंद्रवारे उपकेश गच्छे कक्क० उ०केश ज्ञातीय व्यापणा०  
सा० छाहउ त्रजीदा ( ? ) भा० जईतलदे पु० साचा माय — सिवराजकेन मातृपितृ  
श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारा० प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ।

बडावजार-पंचायति मंदिर ।

( ३९० )

रीपभनाथ वीतनाग पत्नीलं मुलसत्क ॥ सं० १०८३ वै० सु० १५

[ पृ० २२ के लेख नं० ( ८८ ) का संशोधित पाठ ]

संवतु ११५४ माघ सुदि १४ पद्मप्रज सुत स्थिरदेव पत्न्या देवसिया श्रेयो नूहेन ॥  
करिता ।

यति पन्नालालजी मोहनलालजीका घर देनासर ।

( ३०१ )

॥ संवत् १५०६ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दोन्ही दूंगर भायां म्यापुरि सुत पुत्राकेन भायां सोही सुत थीका युतेन आरमश्रेयसे श्री सुविधिनाथादि कृतुधिंघति पद्द कारितः । आगम गच्छे श्री छमरसिंह सूरि पद्द श्री हेमरत्न सूरि गुणपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गंधार वास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

( ३०२ )

सं० १५१६ वर्षे फा० शु० ८ प्राग्वाट सा० जोगा भा० मरगदे सुत सा० तद्वाकेन भा० करमी पु० पालहादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ त्रिंघं फा० प्रतिष्ठितं तथागणेशं श्री सोमसुंदर सूरि पद्द श्री रत्नशेपर सूरितिः ।

( ३०३ )

सं० १७७१ वै० यदि ५ गुरी प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्धशापायां सा० प्रेमचंद्र शामीयाग स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ प्रतिष्ठितं श्री विजय ऋद्धि सूरितिः ।

कलकत्ता अजायव घर ( म्युजियम ) के पापाणके मूर्तियों पर ।

( ३०४ )

--संवत् १-८१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ गुरी धीयोनाही ज्ञातीय उदहरा सु० वैभव सुत सं० मंहिलक सुत० सं० चांपा भायां चापलदे सुत सं० ---- भायां श्री मांगी सुत - मेघाकेन भायां राजु पुत्र सा० नाकर सा० मागादि तथा ( ? ) पुत्री श्रीमती प्रभु रामसु ( ? ) कुटुम्ब युतेन निज धीयोऽद्याप्याय श्री धीयांलनाथ त्रिंघं कारितं । पद्द तथागणेश नायक भ० श्री रत्नसिंह सूरि पद्दालंकरण भ० श्री उदय प्रणव सूरिति श्री ज्ञान सागर सूरि युती प्रतिष्ठितं ।

संवत् १६०८ वर्षे माघ वदि ६ गुरी प्राग्वाट ज्ञाती सा० राघव भा० रतना सा० नर-  
सीमा भा० सुजलदे सा० रणमल भा० वेनीदे सुत लाला सीमल श्री संतनाथ विंवं  
प्रतिष्ठितं ।

म्युनिक ( जर्मनि ) के जादुघरके धातुकी मूर्ति पर ।

सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ४ शुक्रे उ० गोष्टिक आल्हा भा० शृंगारदे सुत सुढाकेन  
भा० सुहवदे स० आत्मश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारि० प्र० जरापल्लिय श्री शालिभद्र  
सूरि पहे श्री उदय चन्द्र सूरिभिः शुभं भवतु ।

डाः कुमार स्वामिके पास 'समवसरण' के चित्र पर ।

संवत् १६२० वर्षे भाद्रव शुदि २ श्री महुत्तराघ गच्छे आचार्य श्री कृष्ण चंद विद्यमाने  
लिः ऋषि ताराचंद शुभं भूयात् कल्याणमस्तु ॥ छ ॥

मेः लुवार्ड के मध्य भारतसे प्राप्त धातुकी मूर्तियों पर ।

सं० १५२७ पीप वदि ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय श्री० सहिजक तत्पुत्र श्री० डंगर भा०  
आ० सुदि सपरिवार भा० सहिजलदे घरमसि करमण आदि पुत्रादि युतेन पुण्यार्थं श्री  
कुंयुनाथ विंवं का० तपगच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( १८ )

( १९ )

सं० १५३३ वै० शु० १२ गुरी प्राग्वाट ज्ञा० सा० ताग्या ज्ञा० सा० विमवाट  
तत् सा० रत्न रुद्र भ्राता सा० कियालघ भैव आदि तपस्वियोग श्री कृष्णनाथ विप्र ॥  
प्रति० श्री तपगच्छाचार्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिसिः श्री वसंतनगर ।

### जैपुरके वेपारियोंके पासकी मूर्तियों पर ।

( १९ )

सं० १४०५ वैशाख सु० ३ श्री उण्ड गच्छ ताग्या गौर प्र० सा०-उज सा० प्रतापदे मही  
पुत्र संघ० सा० घाडूकेन सकुटुंबेन श्री रिपज विप्र सा० प्र० श्री कृष्णदा चार्ण नवाने श्री कृष्ण  
सूरिसिः ॥

( १९ )

सं० १५१२ वर्षे वै० शु० ५ लोखवाट गौर सा० माया सा० मायादे नृत सा० मीया  
केन सा० नूलेसरि प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री आदिनाथ विप्र सा० श्री कृष्ण सूरिसिः ॥

अजमेर राजपुताना न्युजिउसके धारण नांसे प्राप्त पत्थर पर । ०

( १९ )

---दिरय भगवत ( त ) --- य --- चतुस्रानि विप्र ( न ) --- ( सा ) में सांख्य-  
विनि -- रनि विठमाक्तिसिके ---

\* प्रथम श्री महाश्रीर स्वामिनाथ नाम श्रीर २५ वर्षीय स्वामीय स्वामीय नाम श्री विमोहो । स्वामीय नाम श्रीर २५ वर्षीय  
श्री श्रीर मह सं: १ । ४ पूर्वस्वामीय स्वामीय स्वामीय श्रीर २५ वर्षीय स्वामीय नाम श्रीर २५ वर्षीय स्वामीय नाम श्रीर २५ वर्षीय

## ❀ बनारस ❀

काशीदेशका यह वाराणसी वा बनारस सहर जैनियोंका बहुत पवित्र स्थान है । हिन्दुओंका भी प्रसिद्ध तीर्थ है । यहां प्रतिष्ठ राजा और पृथ्वी राणीके पुत्र ७ मां तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथजी का च्यवन और जेठ सुदि १२ जन्म, जेठ सुदि १३ दीक्षा, फागुन वदि ६ केवल ज्ञान और अश्वसेन राजा वामा राणी के पुत्र २३ मां तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी का भी च्यवन, पौष वदि १० जन्म, पौष वदि ११ दीक्षा और चैत वदि ४ केवल ज्ञान यह ८ कल्याणक भये हैं । महल्ले जेलुपुरा और भद्रेनीमें मंदिर बने हुए हैं सहरमें कई एक मंदिर हैं । यहां से ४ कोस पर सिंहपूरी है यहां ११ मां तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथजी का च्यवन, फागुन वदि १२ जन्म, फागुन वदि १३ दीक्षा और माघ-वदि ३ केवल ज्ञान भया है । निकटमें वौट्टोंका सारनाथनामक प्राचीन स्थान है ।

### सुत टोलेका मंदिर ।

पंच तीर्थों पर ।

( 403 )

सं० १५१५ वर्षे माह शुक्ल १३ दिने श्री ओसवाल ज्ञातीय श्रे० मूंघा भार्या माघलदे सु० धनदत्तेन पितृ श्रेयोर्थे श्री शितलनाथ विंवं पूर्णिमा पक्षे भ० श्री सागर तिलक सूरि पद्वे श्री महितिलक सूरि कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

( 404 )

सं० १५५६ वर्षे आपाढ़ सुदि ८ दिने चंपकनर वासि श्रे० जावड़ भार्या पूरी सुत घर-पाकेन भार्या हर्पाई सुत नाकर प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्रीशांतिनाथ विंवं श्री निगमागमा भार्या कारितं प्रतिष्ठितं श्री निगमा विभावक श्री इन्द्रनंदि सूरिभिः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥

( २६ )

## वदहर्जिका मन्दिर ।

( ३७ )

सं० १५१९ वैशाख शु० ५ प्रातःवाट सा० त्रिचा जा० कादां सु० साह दीपशिखेन सा० संजत्री प्रमुख सुरत श्री-जिनायति का० प्र० तपा रत्न मोहर नृसिंहः ॥

## पटर्नी टोलेका मन्दिर ।

( ३८ )

सं० १४८५ वर्षे जा० सुदि १० रवी मालहू -- ज० शा० साह प्रीजल सु० साह हन्यात जा० हेमादे पुत्र साह साडाकेन श्रीपार्वनाथ विंघं राजावर्गक रत्नमणं सुपरिष्कृतं सा० प्रतिष्ठितं श्रीमल धारि गच्छे श्रीविद्यावागर नृसिंहः ।

( ३९ )

सं १५२६ वर्षे वैशाख सुदि ३ ज्ञोमे श्री धीमाळ शाहीय परी० नरसिंह साहपुत्रेण पनपा भार्या हीरुपुत्र कुरपाटेन श्री धी आदिनाथ विंघं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुपरिष्ठितं सुरिंहः ॥

## चुन्निजी यतिका मन्दिर गणेशवाट ।

( ४० )

संवत् १२५७ ज्येष्ठ सु० १० नरसिंहराज्ये --- रत्नमातृ श्रीमा दीपेण सुपरिष्कृतं कारिताः ॥



## रामचन्द्रजी का मंदिर ।

( 409 )

सं० १४०६ वर्षे फागुन सु० ११ गुरौ सूरणा गोत्रे सा० जतरा शु० सा० जगद भार्या  
जयत श्री पु० नरपाल रणमीरभ्यां मातृ श्री० महावीर वि० का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे  
श्री ज्ञान चंद्र सूरि शिष्ये श्री सागरचंद्र सूरिभिः ॥

( 410 )

सं० १४५६ ज्येष्ठ वदि १२ शनौ सूरणा गो० सा० जमर भा० अद्दहव दे सुत सा० ताला  
सालहा श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ वि० का० प्र० श्रीधर्म घोष ग० ज० श्रीमलय चन्द्र सूरिभिः ॥

( 411 )

सं० १४८१ वर्षे वैशाख वदि ८ शुक्रे श्री उकेश वंशे मणी सा० पासड भार्या पालहण  
देवी सुत सा० सिवाकेन सा० सिधा मुख्य ४ जिनोनुजैः सहितेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ  
विंवं श्री अंचल गच्छेश श्री जय कीर्त्ति सूरिन्द्राणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठतं श्री संघेन ॥  
शुभं भवतु सर्वदा सर्वकुटुम्ब ॥ श्रीः ॥

( 412 )

सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि २ शुक्रे श्रीमाल ज्ञातीय गोवलिया गोत्रे सा० हेमा ---  
पु० --वालहा उपा ---- उपदेशेन विमलनाथ विंवं का० प्रति० पवीर्य गच्छे श्री यशोदेव  
सूरिभिः ॥

( 413 )

सं० १५४६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ घेवरिया गोत्रे श्री माल बीलीज देवी गोवेद पु० पीमा  
पु० सा० सिंघण सुमेरु आरम पुण्यार्थं कुंयुनाथ विंवं श्रीमल धार गच्छे ज० गुण कीर्त्ति  
सूरि प्रतिष्ठितं वा० हर्ष सुन्दर शिष्य उपदेशेन ।

( १०६ )

( ११६ )

सं १५६२ वर्षे वैशाख सु० १० रवी श्रीनाथ मठदीया गोत्रे सा० परमहंस सा०  
पहराज पुत्र सा० द्वंसरेण भा० तिलक पु० त्रिपुर दास सुनेन पादपंथाय विंशं मन्त्रमुपाय  
कारितं । प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन विलक सूरिप० श्री जिनराज सूरि पदं श्री जिनः ॥

श्रीकुशलार्जी का मन्दिर—रामवाट ।

( ११७ )

सं० १३७६ ज्येष्ठ वदि ७ शुभ दिने श्रीपंडेरकीय गच्छे श्रीपादक जायं श्रीस पु० परम  
---मयणलल---णिग भायां केरुण संहितेन विंशं कारितं प्र० श्री सुमति सूरिणिः ॥

( ११८ )

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० गुरी उके० व० सा० रेवा भायां रण श्री पुत्र पद कावा  
जीतकेन श्री अंचल गच्छेश श्री जय केसरि सूरिणानुपदेशेन श्री संज्ञप्रताप विंशं सा०  
प्रतिष्ठितं च ॥ श्री ॥

( ११९ )

सं० १५०६ वै० वदि० ११ शुक्ले श्री फोरंट गच्छे श्री नरनाथाय संतामि उपायुग धर्म  
तागलिक गोत्रे साह घना पु० सं० पासधीर भायां संप्रदे नान्ध्या निज संज्ञाय श्रीकृष्णाय  
विंशं कारापितं प्र० श्रीकृष्ण सूरिपदं सद् गुरु पदप्रसिं महाराज श्री सायदेय सूरिणिः ॥

( १२० )

सं० १५१६ वर्षे सायदेय वदि १ मंत्रिदकीय जाजा गोत्रे ठ० नाम राज सु० पद भायां  
धर्मिणि सु० सं० श्री वेवल दास भायां वीर सिंधि पु० सु० सुपदेन भायां श्री कृष्णाय  
विंशं कारितं० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागर सूरिपदं श्री जिन सुन्दर सूरि पदं श्री  
जिन हर्ष सूरिणिः ॥

( १०२ )

( 419 )

सं० १५१९ आषाढ वदि-मंत्रिदलीय श्री काणा गोत्रे ठा० लाघू भा० घर्मिणि पु० स०  
अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री आदि विंवं का० प्र०  
श्रीजिन अद्र सूरि पद श्रीजिन चंद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ॥ श्रीः ॥

( 420 )

सं० १५३६ वर्षे वै० वदि ११ ओसवंशे साह शिवराजभा० माणिकि सुत देवदत्त भा०  
रूपार्ह सुत साह कर्म सिहन भार्या हंसाई स्वकुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं  
का० प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीउदय सागर सूरिभिः श्री मंहुपे ।

( 421 )

सं० १५७० वर्षे माह सुदि ११ रवौ उपकेश वंशे छजलाणी गोत्रे साह श्री पाल भार्या  
सुहवदे पु० सा० ऊधा सा० जोधा ऊधा भार्या उमादे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन श्री चंद्रप्रभ  
स्वामि विंवं कारितं नागुहरी तपागच्छे श्री सोम रत्न सूरि प्रतिष्ठितं तिजारा नगरे ॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर ।

( 422 )

सं० १५२० वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मंडलिक  
सुत कामा भार्या कामीदे सुत ज्ञाक्तण नगराज रत्ना सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्री नमिनाथ  
विंवं का० प्र० श्रीशील गुण सूरिभिः पाटरी वास्तव्यः ।

( 423 )

सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० वीरम सु० वेला मातर  
भार्या सोही सु० महिराज जिणदास माहपाति लहूआ कुटुम्ब युतेन आत्म श्रेयोर्थं श्री  
श्रेयांस विंवं आगम गच्छे श्रीसोम रत्न सूरि गुरुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना  
घांटू वास्तव्यः ॥

( १०३ )

### सिंहपुरा ।

( १०१ )

सं० १५११ वर्षे मार्ग शुद्धि १० शुनी मास्यात् ज्ञानीय साः राजा ज्ञानो ज्ञाने पुरा साः  
असपति साः असक देवी माई सुत गुणराज नसादि कुटुम्ब सुतेर श्रीमान् सुतेर तेषु  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत्पात्रे श्री उदयनानर नृसिंहः ।

( १०० )

### पारण पर ।

सं० १२५७ मिति वैशख नामे कृष्ण पक्षे सप्तम्यां कर्मयोगे पुरा साः श्रीमान् सुतेर तेषु  
सूरि विजयराउरे श्रीसिंहपुर ग्रामे तेषां कैवल्योदपति स्थाने मूर्ति मीमांसा मयात्तु प्रसूत  
उमस्त श्रीसंवेन श्रीश्रेयांसाद्या नामकादज्ञानां श्रीर नागराणां पादनासाः प्रसूतः अत्र  
श्रीजिन एतत् सूरिणां शिष्यैः उपाध्याय श्रीश्रीरघुनां मूर्तिभिः सनकर मयात्तु ।

### सिजापुर ।

### पद्मावती मन्दिर ।

( १०२ )

### श्रीपार्ष्णनाथ विंश पर ।

सं० १३७६ वर्षे एतन्नज्ञानीय माये ज्ञानीये देवान्मज साः श्रीमान् सुतेर तेषु  
सुत साः— जूनेन पितृ धेयसे साः प्रतिः श्री पद्मावतीमन्दिरे श्री प्रसादः अत्र नृसिंहः ।

( १०३ )

सं० ११२० वर्षे वीशाष शुद्धि १० सुते मीमांसा मास्यात् ज्ञानीय साः श्रीमान् सुतेर तेषु  
धेयसे सुत जोलायेन श्री पार्ष्णनाथ विंश कारितं प्रतिष्ठितं सिद्धपीया श्रीसिंहपुरा  
संताने श्रीपार्ष्णनाथ नृसिंहः ।

सं० १४८२ व० वैशाख वदि १ प्र० जूलर गोत्र सा० लाहड भा० वाहिणदेपु० महिराज  
जिनपितृव्य सोमसिंह जात्म श्रे० श्री वासुपूज्य विवं कारितं प्र० श्री धर्मवीर गच्छे श्री  
मलयचन्द्र सूरिपह्ने श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ॥ छः । श्री ॥

सं० १४९० व० वैशाख वदि ९ कंठउतिया गोत्रे सा० कमसिंह पुत्र डालण तस्सुताभ्यां  
स्वपूर्वज पूण्यार्थं श्रीकुंथु विवं कारितं प्रति० श्रीहेम हंस सूरिभिः ॥

सं० १४९१ वर्षे फागुण सुदि २ सोमे श्री श्री माल ज्ञा० श्रे० देवस सुतवाछा भा० जस-  
मादे सुत रागा भीमा पीमाभिः आत्पेता तथा पित्रोः श्रेयसे श्रीवासुपूज्य विवं का० प्र०  
श्री पीपलगच्छे श्री सोमचन्द्र सूरिपह्ने श्री उदयदेव सूरिभिः ।

सं० १५१६ वर्षे माघ सु० ४ रवी उपकेश ज्ञा० व्यव० गोष्ट सा० माडण भा० मोहणि  
पु० कालहा भा० मालूरूपी सहितेन ॥ पित्रो श्रेयसे श्री नेमिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं  
पूर्णमापक्षे जयचन्द्र सूरिपह्ने श्रीजयचन्द्र सूरिभिः ॥ : ॥

सं० १५२६ वर्षे माह व० ६ रवी उप० ज्ञातीय कठउड गोत्रे सा० यरसा भा० मालही  
पु० रामा भाडा राजा चांदा भा० मरधू पु० जीवा समस्त कुटुंबेन पितृ श्रेयर्थं श्रीचन्द्र-  
प्रज्ञस्वामि विवं कारा० प्रति० श्री चैत्रावाल गच्छे ज्ञ० श्री सोमकीर्ति सूरिभिः सद्रंछ-  
लिया नगरे ।

( १०५ )

( ४० )

श्री मत्स्यवत १६७१ वर्षे धैर्याय सुदि ३ गती श्री आनरा प्रान्तपयोमवात ज्ञानीय  
लोढा गोत्रे गाय-ज्या सं० ऋषभदास जायां रेपयो तत्पुत्र श्री कुर्यात शानपात संवायिने  
स्थानुवर दुनाचंद्रस्य पुणयाय उपकाराय श्री अचलमण्डे पूज्य श्री ५ नरपान सागर  
सूरिणामुपदेशेन श्री आदिनाय विवं प्रतिष्ठापितं ॥

( ४१ )

सं० १८७७ मि० फा० शु० १३ श्री कुंभुनाथ जिन विवं दू० विमलचंद्रेन कारितं प्रति-  
ष्ठितं श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥

( ४२ )

सं० १८८७ फा० शु० ५ श्रीपाश्र्वनाथ वि० प्र० श्री पाश्र्वनाथ वि० प्र० श्री जिनमहेन्द्र  
सूरिणमुपदेशेन कारिता । सेठ उदयचन्द्र धर्म पत्नी महाकुमारिनिदया । साधनायाय श्री  
पारिघ्न नन्दन गणिजिर्देश---

( ४३ )

सं० १८८७ फा० शु० ५ श्री आदिनाथ विवं प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिणा फा० साधना  
नाथूराम पत्नी साहयां नान्पात्म क्षेत्रे पानक पारिघ्न नन्दन गणमुपदेशतः ॥

सेठधनमुखदासजी का मंदिर ।

( ४४ )

सं० १९६३ वर्षे माह अदि १ पुष्ये श्री श्रीमात ज्ञानीय १५५ नरपान जायां नरपानि  
सुत देवासेन श्रीपद्मप्रज्ञ विवं कारितं प्रतिष्ठितं । -- मण्डे श्रीगुरुदेवसूरिभिः ॥

सं० १५३३ वर्षे माह सुदि १३ सोमदिने वघेरवाल ज्ञाती राय भंडारी गोत्रे सा०  
सीहा जा० पूरी पुत्र ठाकुरसी जा० महू पुत्र आका आत्मपूजार्थे श्री आदिनाथ विंभं  
करापितं श्रीसर्व सूरिभिः शुभं भवतु ॥

सं० १८७७ वै० सु० १५ श्रीपाश्र्वविंभं प्र० जिन हर्ष सूरिना कारितं । छजलानी  
चतुर्भुज पुत्र्या दीपो नाम्न्या चीरडिया मनुलाल वधू - -

सं० १८९७ का० सु० ५ श्रीपाश्र्वविंभं प्र० श्रीजिन महेन्द्रसूरिणा का० । सकल श्रीसंघै ।

### देहलि वा दिल्ली सहर ।

यह भारतवर्षका एक प्राचीन स्थान है । कुरु पांडवके समयमें यही 'इंद्रप्रस्थ' था ।  
हिन्दुराजा पृथ्वीराजकी राजधानी थी । मुसलमानोंके समयमें बहुत काल तक यह राज-  
धानी रही । कुछ दिनसे अपने सरकार वहादुरने भी दिल्लीमें भारतकी राजधानी  
स्थापनकी है और आज कल उन्नतिपर है, यहां से ४ कोस पर आचार्य महाराज  
श्रीजिन कुशल सूरिजीका स्थान है जिस्को छोटे दादाजी कहते हैं और ७ कोसपर  
प्रसिद्ध कुतुब मिनारके पास बड़े दादाजीका स्थान है वहां कोई लेख नहीं है ।

### चेलपुरी का मंदिर ।

धातुयोंके मूर्त्तिपर

सं० ११६३ मार्गशिर सुदि १ आं गागसादेव घम्मोयम् - - ( आगे अक्षर अस्पष्ट पदा  
नहीं जाता )

( १०७ )

( १०८ )

सं० १५११ वर्षे जे० व० ११ शुक्ले सोमसर यासि उज्जैन सा० मेहा भा० माण्डविके पुत्र  
सधाकेन भा० जलही प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री कृष्णनाथ त्रिंश कारितं प्रतिष्ठितं - - श्री शंकर  
सूरिभिः ॥ सचितीर्गात्रे ॥

( १०९ )

सं० १५२१ वर्षे माघ सुदि १२ बुधे छोट्टा नोत्रे सा० हरिधर्यत् नोत्रा नोत्रा मंकारे  
साधु आचपाल पुत्रेण सं० तेजपालेन पुत्र परशत सांडादि युतेन भा० पुनपात पुनपाते  
श्रीपारश्वनाथ त्रिंश कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री हेमदेव सूरिपट्टे भा० । श्री शंकर सूर्य  
सूरिभिः ॥

( ११० )

संवत् १५२१ व० माघ सु० १३ प्राग्वाट श्रे० कटाग भा० रांड सुत पुता भा० इमड  
सुत चांपाकेन भा० धर्मिणि नामाणिकादि कुटुम्बयुतेन इन्द्रदेवोर्ध्व मेनिनाथ त्रिंश कारितं  
प्रति० तपागच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सोमदेव सूरिभिः लक्ष्मणादादि ।

( १११ )

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० दिने उज्जैन यशो साधुगान्ध्यायां सा० चांपाकेन माण्डविके  
णदे तोरही सा० देवा भा० जयती पुत्र सा० पैताकेन तोरही पुत्र भांडविके साधुना सदा  
चांपा घरमा युतेन सा० पोपा पुण्याशे श्री मुनि सुव्रत भा० प्र० लक्ष्मण गरी श्री शंकर  
शंकर सूरिभिः ।

( ११२ )

सं० १५३६ माघ सुदि ५ दिने प्राग्वाट सासि सा० जयती भा० साधु पुत्र भा० साधु  
केन भा० नार्थ प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री लक्ष्मण त्रिंश कारितं प्रतिष्ठितं । श्री लक्ष्मणादे श्री  
लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।



( १०८ )

( 447 )

संवत् १५६० वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने श्रीमाल वंशे सिंधुड गोत्रे व० अभय राज भार्या  
आमलदे पुत्र चउ० ठकुरसीहेन भा० ठकुरादे पुत्र व० भारमल्ल प्रमुख पखितेन श्री  
आदि जिन विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखतर गच्छे श्री पूज्य श्री जिनहंस सूरिभिः ।

( 448 )

सं० १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे ब्रह्मणीया गच्छे बहुरा हीरा भा० हीरादे पु०  
जीदा सोमा रूपा पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ विंव का० प्रतिष्ठितं श्री गुणसुन्दर सूरिभिः  
अहिटाणी ।

( 449 )

॥ श्री पार्श्वनाथ सं० १६०५ फागुन सुदी दसमी चरवडिया गोत्रे गामपत्नी त्वर-  
मिनी पुत्र पेतु लघु मनमल गुरु श्री जिन भद्र सूरि रुद्रपला गच्छे ज० श्री भावांतलक  
सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री समेत सिपर ।

( 450 )

सं० १६१२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ शनौ उकेशवंसे----- ।

( 451 )

सं० १६६० वर्षे फागुण वदि ५ गुरुवासरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिंध  
जी राजे श्री मूलसंधे आन्नाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यन्वये ज० श्री  
विई कीर्ति स्तदाग्नाय पंडेलवालान्वये पोस ॥ सं श्री होला भा० कोसिगदे पु० ज० श्री  
कचराज भा० उमदे कोउमदे गुजरि पु० २ यातु दानु सं० श्रीरायत भा० रयणदे---पु०  
हरदास ---भा० सहिमादे लाइमदे -- ।

( १०८ )

( १०९ )

सं० १६७७ मार्ग शु०-२थी श्रीमाल ज्ञातीय जा० वैजयी नाम्ना दीप्याः वि० शा०  
प्र० तपा गच्छे श्री विजयदेव नृरिभिः ॥

( ११० )

सं० १६८१ व० फा० शु० १० ज० चंद्रकीर्तिं प्र० तपा गच्छे ज्ञाती गीयः शीतं सा०  
नीमा भा० सखपादे ।

( १११ )

### नवपदजी पर ।

सं० १८५१ वर्षे कार्तिके मासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा तिथी शुभवासरे - शुभवासरे  
पुन्य प्रज्ञाचक्र देव गुणभक्ति कारक कवेरपद ज्ञाती विद्यासे सखपादे शीतं सा०  
श्रीमाल ज्ञाती ।

### नवचरेखा मन्दिर ।

शुभवासरे श्रीसुमतिनाथजीके विजय पर ।

( ११२ )

संवत् १९८७ वर्षे शीत शुभ १२ सुदी वैशाख मास शुभवासरे शुभवासरे - शुभवासरे  
राज जा० सोत्तारदे प्र० म० श्रीसुमते श्रीसुमतिनाथ विजय पर० प्र० तपा गच्छे प्र० म०  
विजयदेव नृरिभिः ज्ञापयं श्री विजयदेव नृरि परिश्रुतिः ।

( ११० )

## सर्व धातुयोंके मूर्तियों पर ।

( 456 )

सां । संवत् ११ ६७ वैशाख सुदि ५ श्री चंद्रप्रज्ञाचार्य गच्छे सतु श्री वि --- ।

( 457 )

संवत् १२८० वर्षे ---सांढा प्रणमंति ।

( 458 )

सं० १३३१ अ० व० २ हल --- ।

( 459 )

सं० १४३३ आपाढ शु० -- प्रा० लघु व्य० आसा ज्ञा० ललतदे--श्री पार्श्वनाथ वि०  
का० श्री गुणभद्र सूरिणामुपदेशेन ।

( 460 )

सं० १४४५ पीप शुदि १२ बुधे ज० श्रे० जोला ज्ञा० हीरी पुत्र लालाकेन श्री शांतिनाथ  
विंवं कारापितं प्र० ज० गच्छे श्री सिद्ध सूरिजिः ।

( 461 )

सं० १४५४ वर्षे झोढा गोत्रे उ० ज्ञा० सा० पोपा ज्ञा० पापी पुत्र लापाकेन स्वपुत्र  
वीसल श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंवं का० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छे सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रीदेव  
सुन्दर सूरिजिः ।

( १११ )

( ११० )

सं० १२६३ वै० शु० १०-सा---

( १०९ )

सं० १२७१ माघ शुद्धि १० रथी प्राग्वाट ज्ञानीय साः रामा साः--दास्य विष्णु  
श्रेयोर्थ श्री आदि नाथ उद्दमी --- ।

( १०८ )

सं० १२७२ वर्षे फागुण शु० ८ शुद्धे ज० ज्ञा० साः हिंदुणा साः विद्वानां गणेश पु० साः  
ज्ञा० केवहु पु० हापा ज्ञा० तेजू पु० करमाकेन पित्रु--श्री पद्मव्रत वि० साः प्र० श्री  
संडेर गच्छे श्री श्री यशोव्रत सूरि सं० श्री सांति सूरिभिः ॥

( १०७ )

सं० १२७८ वर्षे माघ शु० ४ दिने साः अरणा पु० सहाय समसादिः ॥ अरणा श्री  
महाशेर विंशं पुण्यायं कारिने प्रतिष्ठितं श्री नरनर गच्छे श्री विनयद्र सूरिभिः ॥

( १०६ )

सं० १२८२ वर्षे माघ शुद्धि ५ सोमि नाथ गीर्षे साः साया पु० अयता शायी साः  
पुत्र पोपाकेन पित्रो श्रेयोर्थ श्री पारयनाथ वि० साः प्र० श्री धर्म पोषणः श्री धर्म शाय  
ज्ञा० श्री मलयचन्द्र सूरि पद्वे श्री--देव सूरिभिः ।

( १०५ )

सं० १२८७ वर्षे माघ शु० ५ सोमि ज० साः पातरीया गीर्षे साः साया पु० अयता शायी श्री साये  
पु० लगण्ड मल ज्ञाः सतिनेन पित्रो रवदीयः श्री सासुपुत्र वि० साः प्र० श्री सुविद्य  
सूरिभिः श्री सायचन्द्र सूरि सहितेन ॥

( ११२ )

( 468 )

सं० १४८३ फा० व० ११ ऊ० ज्ञा० टपगोत्रे द्यव० रूपा मा० रूपाई पु० कालू  
पाचाभ्यां आ० अदा मा० आल्हणदेविः श्री पद्मप्रभ इव० का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री  
शांति सूरिभिः ॥

( 469 )

सं० १४८६ वै० शु०-प्राग्वाट सा० साजण मा० लापू पुत्र केल्हाकेन मा० लहमा  
भ्रातृ भीम पदमदि कु० यु० श्री धर्मनाथ विं० कारितं प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर  
सूरिभिः श्री-५ ।

( 470 )

सं० १४८६ वर्षे जेष्ठ सु० १३ सोमे श्री दूगड़ गोत्रे सं० सिवराजभार्या सीधरही पुत्र  
सा० मोहिल घण राजाभ्यां पितुः श्रेयसे श्रीअजितनाथ वि० का० प्र० वृहडा० श्रीमुनि-  
श्वर सूरि पद्वे श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ।

( 471 )

सं० १४९९ व० फा० व० २ उपकेश ज्ञाती आदित्य नाग गोत्रे सा० देसल मा० देसलदे  
पु० धमी मा० सुहगदे युतेन स्व श्रे० श्री आदिनाथ विं० का० उपकेश ग० ककुदाचार्य  
सं० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

( 472 )

सं० १५०४ वर्षे आ० सु० ६ श्री मूलसंवे भ० श्री जिनचंद्र देवाः जैसवालान्वये सा० लर  
भार्या रैनसिरि तट्टुत्र सोनिग भार्या पेमा प्रणमति ।

( ११६ )

( ११७ )

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ शु० २ दिने उज्जैन शरीर नाशनाशने साः जयका शरीर नाशनाशने  
मत्पुत्र सा० संगरेण पुत्र सद्यया अजादि परिवार पुत्रेन श्री सुमतिनाथ वि० का० प्र०  
श्री जिन भद्र सूरिभिः स्वरत्तर गच्छे ।

( ११८ )

सं० १५०७ वर्षे माघ शु० १३ शुक्रे श्यामाशरीर उवा शरीर नाशनाशने साः जयका शरीर  
पुत्राय श्री वासुपूज्य वि० का० प्र० श्री धर्मदास गच्छे श्री पदमणि सूरिभिः ।

( ११९ )

सं० १५०७ वर्षे वै० श० ५ दिने उज्जैन शरीर नाशनाशने साः श्यामा शरीर नाशनाशने साः सुमति  
केन सा० वापू शु० सांठ्यादि कुटुम्बपुत्रेन श्री पादवनाथ वि० का० प्र० जयका शरीर नाशनाशने श्री  
जयचन्द्र सूरि गिर्य श्री उदयभद्रि सूरिभिः । जयका शरीर ।

( १२० )

सं० १५०७ वर्षे वैशाख अदि ६ सुरी श्री शीलाशरीर नाशनाशने श्री शीला शरीर नाशनाशने  
तयोः सुताः श्री श्यामा शरीर नाशनाशने सांठा पुत्रेण नाशनाशने श्री शीला शरीर नाशनाशने  
श्री शीले श्री सुनिपुत्रत स्वामि वि० का० प्र० प्रतिष्ठित श्री जयका शरीर नाशनाशने श्री शीलाशरीर  
सूरिभिः श्री शीला वास्तव्यः ।

( १२१ )

सं० १५०७ वर्षे सा० शु० - सं० १५०७ वर्षे सांठ्यादि कुटुम्बपुत्रेण श्री सुमतिनाथ वि० का० प्र०  
जयका शरीर नाशनाशने श्री शीला शरीर नाशनाशने श्री शीला शरीर नाशनाशने श्री शीलाशरीर  
सूरिभिः ।

( ११४ )

( 478 )

संवत् १५१२ वर्षे फा० शु० १२ दिने लोढा गोत्रे स० पासदत्त भार्या अपूदे तत्पुत्र  
सा० कमलाकेन पुत्र जावा गौरादि परियुतेन श्रेयसे पुण्यार्थं श्री अग्निनन्दन कारितं  
श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पढे श्री जिनमद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 479 )

सं० १५१३ वर्षे फा० षदि १२ ऊ० झा० सोधिल गो० रणसी पु० गहणा पु० वीरहा मा०  
जसमी पु० सादाकेन मा० चांदा सहितेन पितृपुण्यार्थं श्री कुंधुनाथ वि० का० प्र० श्री संडे-  
गच्छे श्री यशोमद्रसूरि संताने श्री श्री ५ शांति सूरीणां पढे श्री ईश्वर सूरिभिः शुभं भूयाः ॥

( 480 )

सं० १५१५ वर्षे माघ सु० १४ दिने ऊ० वं० जांगडा गोत्रे सा० कालहा भार्या ऋवकू  
सुत सा० रूपाकेन सपरिवारेण श्री सम्भवनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री प० ग० श्री  
जिन सागर सूरि पढे श्री जिन सुन्दर सूरिभिः ॥

( 481 )

सं० १५१५ व० मा० सु० १ शुके श्री श्रीमाल झा० श्रे० गूंगा भार्या लालू पुत्र जीवण  
केन पितृ मातृ निमित्तं आत्मश्रेष्ठ्यर्थं श्री धर्मनाथ विं० प्र० श्री नागेन्द्र गच्छे श्री विनय  
प्रज्ञ सूरिभिः कारुवास्तव्य ।

( 482 )

सं० १५१६ वर्षे वैशा० शु० १३ हस्तार्क दिने महतिजाण सा० सुरपति मा० त्रिलोकादे  
पुत्र्या सा० ग्यान अगिन्या सा० चाचिंग भार्या नारंगदेव्या श्री अजित विं० का० प्र०  
श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागरसूरिपढे श्री जिनसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( ११५ )

( ११६ )

सं० १५१७ वै० शु० ८ प्रा० सा० देपाल सु० हडसी करणा प्रा० चन्द्राभा धर्मा वरमा  
हासा काला आतृ हीराकेन प्रा० हीरादे सुत अदा वरा राजादि कुटुंबपुत्रेन श्री शक्ति-  
नाथ विंघं का० प्र० तथा श्रीसोमदेव सूरि शिष्य श्री रत्न शेषर सूरि शिष्य श्री शक्ति-  
सागर सूरिभिः ॥ कमल मेरु ।

( ११७ )

सं० १५२५ वर्षे मा० शु० ६ तीथुरा वासि प्रा० सा० राजा प्रा० स्वा पुरि प० लीपा-  
केन प्रा० रानू पुत्र सधारण हीरायुतेन श्री पद्म प्रत्त विंघं स्वधैपते का० प्र० तथा श्री नोन  
सुन्दर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

( ११८ )

सं० १५३० फा० शु० २ गोस्वरु गोत्रे सा० पाचवीर प्रा० कुटी नान्वा पुत्र सागर  
पुत्र देवा सध-युन श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंघं का० प्र० तथा गण्डनामज श्री शक्ति-  
सागर सूरिभिः ॥ बहादुर पुरे ॥

( ११९ )

सं० १५३१ वैशाख सुदि ५ गुरी --- चिंकी पुत्र काला तिरिपुत्र -

( १२० )

सं० १५३५ श्री मूलरुंधे प्रा० श्री सुवन हीरि का० प्रा० श्री शान मूलरु सुवदेवादि  
स० पेतसी प्रा० जगद्वः ।



( ११६ )

( 488 )

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ दिने उक्लेश वंशे श्रेष्ठि गोत्रे श्री कीहट ज्ञार्या लपीपुत्र  
देवण मांडण धर्मा आवकैः श्री० देवण ज्ञार्या दाडिमदे सुत समरादि परिवार युतैः श्री  
धर्मनाथ विंवं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्रसूरि पट्टालंकार श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

( 489 )

सं० १५३७ वर्षे वै० शु० १० सोमे उमापुरवासि उ० व्य० महिराज ज्ञा० माणिकदेसु०  
श्रीपाल सहिजाभ्यां ज्ञा० सुहवदे । जदादि कुटुंबयुताभ्यां श्री वासुपूज्य विं० का० प्र०  
श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

( 490 )

सं० १५४५ वर्षे वैशाख वदि ६ जडिया गोत्रे स० नारुण पु० स० पिमधर नोकापोमा  
पागा पहिराज आदू लालला लेपसी पितरनिमित्तं श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं प्रति-  
ष्ठितं तपानच्छे महारक श्री सोमरतन सूरिभिः ॥

( 491 )

सं० १५४८ ज्ये० वदि ६ बुधे ज्ञ० श्री हेमचन्द्राम्नाये स० नगराज पु० दामू ज्ञा० स०  
हंसराज हापु --- ।

( 492 )

संवत् १५५१ वर्षे वै० सुदि ६ रवी उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० लापा ज्ञार्या  
सोहिणी पु० चांपा ज्ञाय पीत्र पुत्र पीतादि सहितेन आत्मपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ विंवं  
का० श्री धर्मनाथ विंवं का० श्री धर्मवोप गच्छे प्र० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः ।

संवत् १५५३ वर्षे चित्रनाग्राम वास्तव्य श्रीमातृ ज्ञातीय यावत्ता गोत्रे साः जयस्य  
 कर्ण सुत सा० जिणदत्त पुत्र सा० सोनपाल सुवायकेय साः गडराई सुतु भाग्यु भाग्या  
 पृथ्वीसल्ल सखी केण श्री गातिनाथ विंश कारितं प्रतिदितं सांस्तरन गोत्रे साः जिन  
 चंद्र सूरि पद्वी श्री जिन समुद्र सूरिभिः ॥

सं० १५५३ व० आ० सु० २ रवी श्री श्रीमातृ ज्ञातीय साः नीधर साः सोही सुत  
 सा० जूटा सा० संधा सा० न-ड सा० पावाकै सा० जाचर चरनेन श्रीपाशुनाथ विंश  
 का० प्र० मलधार गच्छे श्रीनूरिभिः। सर्वेषां पूजनाय ॥

सं० १५५६ वैशाखवदि १३ श्रीमूलसर्वे पंडितशाठ सा० देवा पुत्र पदव्य निरय प्रव-  
 मति गोधा गोत्रे ।

सं० १५५६ व० पौष वदि १ दिने गुरी प्राग्वाट ज्ञातीय साः राजा सा० राजा  
 पु० पोला सा० जमकू सु० श्रेयोधे श्री वासुपुत्रय विंश का० प्र० महादेवीय गोत्रे प्रतिदितं  
 श्रीनति सुन्दर सूरिभिः दधालीया वास्तव्यः ।

सं० १५६२ व० वै० सु० १० रवी श्री उदेश ज्ञातीय साः जगद्विजयान गोत्रे श्रीमद्विद्या  
 शापायां व० हालण पु० रत्नपालेन सु० शोभत व० पदुसल्ल सुतेन साः विंश गो० श्री  
 संजयनाथ वि० का० प्र० श्री उदेश गच्छे उपद्रापायः श्री देव सुमसूरिभिः ॥

( ११८ )

( 498 )

सं० १५६२ वर्षे वैशाख शु० १३ बुधे श्री श्री मालीजातीय सा० पूजा मात्र मूजा भा०  
विनलाई श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं कारापितं-श्री साधुसुन्दर सूरि प्रतिष्ठितं ॥ श्री  
लपराज श्री अन्नयराज ॥

( 499 )

सं० १५६८ वर्षे माह सुदि ४ दिने उकेशवंशे नाहटा गोत्रे सा० राजा भा० अपू पु०  
सा० पीम भार्या रत्तू पु० श्रीपाल नाथूभ्यां मातृ पुण्यार्थं श्री चंद्रप्रज्ञ विंवं का० प्र० श्री  
खरतर गच्छे श्री जिन हंस सूरिभिः ॥

( 500 )

सं० १५७४ वर्षे माह सु० १३ शनौ उ४ वं० पमार गोत्रे स० वक्राज्ञा० बुलदे पु० सा०  
पताला श्री अंचल गच्छेश भाव सागर सूरीणामुपदेशेन ।

( 501 )

सं० १५९९ वर्षे वै० सु० ५ गुरी श्री रुद्र पल्लीय गच्छे ज्ञ० श्री गुण सुन्दर सूरि शिष्य  
उ० श्री गुणप्रज्ञ -- श्री आदि नाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं ।

( 502 )

सं० १६०८ वर्षे वैशाख सु० ३ सोम श्री मूलसंधे सरस्वती गच्छे ज्ञ० श्री ज्ञान भूषण  
देवा स्तत्पदे ज्ञ० श्री विजय कीर्ति देवास्तत्पदे महारक श्री शुभचंद्रोपदेशात् हूँवड  
जातीय गंगागोत्रे । सं । धारा । भार्या सं ॥ धारु सुत सं० डाईआ भार्या सिरिक्षमणि ।  
सुतसा० श्री पाल श्री शान्तिनाथ विंवं कारापितं नित्यं प्रणमति ॥

( ११८ )

( ११९ )

सं० १६१८ सिंघुह सा० गोपी नाराय विमला नुत घणराजेन कारितं ।

( १२० )

सं० १६२३ वर्षे फाल्गुन सु० ११ गुरु प्रा० ज्ञा० ने विषोना नारायं चार्हं वृषभं नुत  
देवचन्द्र नारायं चार्हं हासी नुत रायचन्द्रनीमा श्री रीतलनाथ विंघं कारितं प्रविष्टि  
वृहत्तपा गच्छे श्री विजयदान सूरितत्पट्टे श्री हीर विजय नूरि लाचार्यं श्री विजयनेन वृि  
श्री पत्तन वास्तव्यः ।

( १२१ )

सं० १७०० फा० सु० १२ श्री मूल स० स्वर० गच्छे व० ग० श्री कुंदकुंदाचार्यन्वये न०  
सांखल । साकार-साहमल ज-जा । गा--- ।

( १२२ )

सं० १७०१ व० मार्ग व० ११ दिने धीमाल ज्ञाती चार्हं नूजरदे नुत स० हीगण्डे प्रा०  
सथरंगदे श्री पद्मप्रभ विः का० प्रति० तपागच्छे श्री विजयनिह नूरिभिः जागरा वा०

श्रीरेखानेका मन्दिर ।

( १२३ )

सं० १७०८ वर्षे पीरुयदि १० गुरी श्री हुंघट्ट ज्ञातीय छे० उद्वपसीह नारायं चार्हं गज नकी  
पुत्र तथा दीहीदा नुत दीगा--पली वरं समक नाम्ना आरम विपरी कारितनाथ -  
विंघं कारापितं श्रीवृहत्तपा पले श्रीरत्न तिह-- ।

( १२० )

( 508 )

सं० ११६२ वैशाख सुदि २--ओसवाल ज्ञातिय भूरि गोत्रे -- श्रीश्रेयांस विवं का०  
प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री श्री महेन्द्र सूरि प्र० -- ।

( 509 )

सं० १५०६ माघ सुदि ५ श्री ऊकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे सा० ठाकुरसी सुत सा० कालू  
केन पुत्र मेघा माला नालहा पौत्र सुरजन प्र० परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री विमल विवंका०  
श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( 510 )

सम्बत् १५१७ वर्षे फाल्गुण सुदि ६ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय मंत्रि पोपा भार्या  
पालहणदे सुत मणयाकेन भार्या सोहासिणि सुत उधरण प्रमुख कुटुंब सहितेन मातृ  
पितृ श्रेयोर्थं आत्म श्रेयोर्थं च श्री संज्ञव नाथ चतुर्विंशति पट्ट जीवत स्वामी नागेन्द्र  
गच्छे श्री गुण समुद्र सूररूपदेशेन आचार्य श्री गुणदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं च चिमणीया  
वास्तव्यः । श्री ।

( 511 )

सं० १५-५ फा० वदि ६ सोमे प्रा० ज्ञा० -- सा० घेरा भा० पूजी पुत्र पूना प्रा० लडतु  
पुत्र तोला पु० कर्मसिंह श्री संज्ञव नाथ विवं कारितं प्र० श्रीसर्व सूरिभिः ॥

( 512 )

सं० १६०५ फागुण सुदि दशमि समेत सिखरे प्रतिष्ठितं मागपत्नी त्वरमिनी पुत्र पत्रू  
लघु प्रनमल गुरु श्रीजिन भद्र सूरि --

( १२१ )

( १२० )

सं० १६६३ वर्षे ज्ये० च० ८ श्री-धर्मनाथ त्रिवे प्रसि० - ।

( ११९ )

सं० १७०३ वर्षे ज्ये० च० ७ गुरु० श्री ज्ञानघाट नान्धा श्री पाण्डे वि० का० प्र० सप०  
म० श्री विजय देव नृसिंभिः ।

( ११८ )

सं० १७२५ वर्षे मार्गसिंर सुदि ५ रवी श्री माण्डवान प्राणा -- पाण्डे वि० का० सप० ।

( ११७ )

सं० १८५२ पौष सु० ४ दिने बृहस्पति घामरे श्री सि० च० ये० मिष्टं प्र० माण्डवान  
गणिना कारितं जैनगर वास्तव्य श्री माण्डवानचंद्र दीक्षरभण्डेन क्षेत्री ।

लाला हजारीमलजी का घर देगानर ।

( ११६ )

सं० १२१४ ज्येष्ठ सुदि २ श्री देवकीन सं० सु० रामचन्द्र प्राणा मन्त्रा - ।

( ११५ )

सं० १३०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ रवी -- सुहृद भा० -- - ।

( १२२ )

( 519 )

ॐ संवत् १३५० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ श्रीपंडेरगच्छे श्री यशोमद्रसूरिसंताने । श्र० जगधर  
भार्या जमति पुत्र क्लृप्तण अरि सिंह लघुभ्राता अरिसिंहेन ज्येष्ठ भ्रातृ क्लृप्तण श्रेयसं  
श्री अजितनाथ विवं कारितं । प्र० श्री सुमति सूरिभिः ॥

( 520 )

सं० १४६६ माघ सु० ६ सागरदास भार्या नालू -- ।

( 521 )

संवत् १४८३ वर्षे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय बहरा घडला भार्या ललता देवि सावित्रीदास  
हीराकेन भार्या हीरा देवि स० संघ श्रेयसे श्री शांतिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं । नागेंद्र  
गच्छे श्री रत्नप्रभ सूरि पट्टे श्री सह दत्त सूरिभिः शुभं भवतु ।

( 522 )

सं० १४८६ वर्षे माघ वदि ११ चुबं श्री देवीसिंग संघवी श्रे० काया भार्या विजी-  
परनागड प्रणर्मात ।

( 523 )

सं १६६१ व० चै० वदि ११ शु० सा० वदी या कारितं श्रीपाश्र्वं विवं प्रतिष्ठितं श्री  
खरतर गच्छे । श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

( 524 )

संवत् १५६६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ श्री माल ज्ञातीय सिंधुड गोत्रे सा० घोहरण पु० सा  
छेयतन श्री श्रेयांसनाथ विवं कारितं प्र० श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

सं० १९३५ वर्षे साय कृष्ण पंचमी शुक्ली अहमदाबाद वास्तव्य श्रीमदाय श्रीमते  
श्रीमद् शापायां ना० हठी संघ-केवरी संघ सायां बाहे मन्मिनि स्वधेयोपे श्री श्रीमिताय  
भविष्य कारावित महारथ श्रीशान्ति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं सागर गच्छे तया श्रीमते ।

### छोटे दादार्जी का मन्दिर ।

संवत् १८७१ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे तिथी ८ पुष्ये महारथ श्रीजिन प्रभात सूरि भादुका  
कारिता श्री स्वाहजानावाद् नगर वास्तव्य श्री संघेन प्रतिष्ठितं श्रीमद्दादार्जी सागर  
गच्छीय श्रीजिनचंद्र सूरिभिः स्वधेयोपे श्री मन्दादस्याह अक्षर स्वाह विजय साधेभूय  
भूयात् ॥ संवत् १९०८ मितो वैश्र शुद्धि १२ सूर्य्यप्रारं श्रीजिन मन्दि यद्दुर्ग सूरिभिः विजय  
सधर्म राज्य श्री दिण्डि नगर वास्तव्य सकल श्रीसंघेन जीर्णोधार पुत्रक कारावित पुत्रका  
राधकानां मङ्गलमाहा चहिनरां यायात् ॥ श्रीमान्माणिक्य सूरि सायायां पादक मन्दि  
कुमार तच्छिष्य हपे चंद्रोपदेयात् ॥

॥ संवत् १९२८ वर्षे वैशाख मास शुक्ल पक्षे ३ श्रीमाय शापीय श्रीमते श्रीमते सायाय  
सत्सिद्धस्य साया महारा श्रीमि श्रीशांतिनाथ वि० म० कारावित प्रतिष्ठितं सागर गच्छे  
गच्छे श्रीजिन सायासायात् ॥



( १२१ )

( ५२९ )

श्री सं० १६७२ मिः माघ शुक्ल ६ शनिवासरे रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र०  
ज्ञ० श्रीजिन कल्याण सूरि चरण पादुका कारापितं । इंद्रप्रस्थ नगर वास्तव्य समस्त श्री-  
संघेन प्रतिष्ठितं जं यु० प्र० वृ० ज्ञ० रंग विजय खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरि पदा-  
श्रिते ज्ञ० श्रीजिनरत्न सूरिभिः पूज्याराधकानां मंगल भासा वृद्धितरां यायात् श्री संघस्य  
शुभं भूवात् ॥ श्री ॥

अजमेर ।

यह भी प्राचीन नगर है । मुसलमानोंके पूर्वमें यहां श्री खरतर गच्छनायक महा-  
प्रभाविक श्री जिनदत्त सूरि संवत् १२११ आषाढ़ ११ देवलोक हुऐ ।

श्री गौडी पार्श्वनाथका मंदिर ।

पंचलीर्थीयों पर ।

( ५३० )

संवत् १२१२ आषाढ़ वदि—गुरौ श्री यश सूरि गच्छे श्री० नागड सुत आसिग तत्पुत्र-  
राल्हण थिरदेव मानू सुहपादि पुत्रैः आसग श्रेयोर्थं पार्श्वनाथ विंशं कारापिता ।

( ५३१ )

संवत् १२६५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ उप० ज्ञातीय तातहड़ गोत्रे सा० बीरम ज्ञा० देवल  
दे पुत्र रेडा ज्ञा० हीमादे पुत्र सुहड़ा ज्ञा० सुहड़ादे पु० ससारचंद्र । सामंत सोजा स० श्री  
सुमतिनाथ विं० श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य स० श्री सिंह सूरिभिः ।

( १२५ )

( १२६ )

सं० १५०७ वर्षे वैशाख वदि ३ सुदी श्री श्री मातृ ज्ञानीय श्री सांवाभा साधनादेवता  
सुना श्री० व्यवाधीवा विरा भाषां योवा पुता भक्तिः सरपु पुत्रां साधे पुत्रादेव साधना  
पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विषं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुनिभः जन्तार साधनादेव ।

( १२७ )

सं० १५१३ वै० सु० २ सोम उतवाट ज्ञानीय साधनादेव साधनादेव पु० साधना  
भा० कपूरी पुत्र - हारदण भा० साधनादेव माता साधनादेव साधनादेव श्री साधनादेव साधना  
प्र० श्री पल्लि गच्छे श्री यश सुरि ।

( १२८ )

सं० १५१५ वर्षे फागुन सु० ८ रवौ ल० साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव पुत्र  
दसूरकेन आत्मधेयसे चित्तदनाथ वि० सा०—प्रति० श्री कपू सुनिभः ॥

( १२९ )

सं० १५२१ वर्षे ज्ये० सु० ७ प्रातः सा० जयभाट सा० साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव पुत्र  
हीरादे पुत्र सा० साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव  
श्री साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव

( १३० )

सं० १५२२ वर्षे ज्ये० सु० १३ सुदी श्री साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव  
साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव  
साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव साधनादेव

( १२३ )

( 537 )

संवत् १५२५ वर्ष चैत्र वदि ६ शनी प्राग्वाट ज्ञानीय श्र० सोमा भा० सृहृला सुन  
सिवा भार्या सोमगिणि सुन् मद्रा भार्या महती श्री सुविधिनाथ विं वं का० सहगुरु  
देशेन विधिना प्र० विं वं --- छ ॥

( 538 )

सं० १५२७ वर्ष पोष वदि १ श्री० प्राग्वाट ज्ञा० म० हिमादे सु० धईजा स्वसाकला  
जाम्बया श्री नेमिनाथ विं वं कारितं प्र० वृद्ध तपापक्षे ज० श्री जिन रत्न सूरिभिः ।

( 539 )

सं० १५२८ माह व० ५ वुधे श्री ओस वंशे धनेरीया गोत्रे साह भाहड पुत्र वीका  
भार्या वीरहणदे पुत्रैः साह कोहा केल्हा मोकलारुयैः स्वश्रयसे श्री धर्मनाथ विं वं का०  
श्री पल्लिवाल गच्छे श्री नन्न सूरिभिः प्र० ।

( 540 )

सं० १५७० वर्षे माघ वदि १३ वुधे श्री पत्तन वास्तव्य मोढ ज्ञातीय ठ० भोजा भार्या  
वाली सुत० ठ० रत्नाकेन भार्या रूपाई सुत ठ० जसायुतेन श्री आदिनाथ विं वं कारितं स्व  
श्रयोय श्री वृद्धतपा पक्षे श्री रत्न सूरि संताने श्री उदय सूरिः ॥ श्री लक्ष्मी सागर सूरिणां  
पहे प्रतिष्ठितं श्री धन रत्न सूरिभिः श्री रस्तु ।

( 541 )

सं० १६०३ वर्षे आषाढे वदि १ गुरी निन्नमाल वास्तव्य म० देवसी भा० दाडिमदे  
पुत्र मानसिंघ भा० पेतसी युतेन स्वश्रयसे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० तपगच्छे ज०  
श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः ।

१९२६

१९२७

सं० १६८३ वर्षे आषाढ वदि १ नुः उचवाट लातीव घेठ गहवा गीरी मः प्रथम  
भा० भरमादे पुत्र मे० सुरताणाम्येन श्री सुविथिनाथ विं० का० प्र० तथा गहरी मः  
श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

१९२८

संवत् १६८७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरी मेठना नागर धारतव इनाम गीरी मः प्रथम  
भार्या जसदे पुत्र की० दीपा धनाकेन श्रीपाश्र्व वि० का० प्र० तथा गहरी मः श्री विजय  
देव सूरिभिः स्वपद स्थापित श्री विजयधर्म-नृ-- ।

### श्री संभवनाथजी का मन्दिर ।

१९२९

सं० १२६० माह सुदि १० श्री० धवल सुन जेसठ हीपां--कारितः ।

१९३०

सं० १३७६ वर्षे वै० वदि ११ गुरी प्राग्वाट लातीव नर कथा भार्या-- पुत्र गहरी  
श्री शान्तिनाथ वि० का० प्र० श्री सर्वेद्र सूरिभिः ।

१९३१

सं० १४८१ माघ सु० १० प्राग्वाट -- नर मेठने एठवाट विं० का० श्री श्री  
सुंदर सूरिभिः ।

( १३८ )

( 547 )

सं० ११८१ वर्षे वैशाख सु० ३ रवौ रहुराठी (१) गोत्रे सा० बीजल भार्या विजय श्री  
पु० रावा-----श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ वि० प्र० श्री घम-----श्रीपद्म शेषर सूरिभिः ।

( 548 )

सं० ११८५ वर्षे माघ सुदि ११ बुधे लिगा गोत्रे सा० माला सागू युतेन सा० जीलहा  
केन निज पित्रोः श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री हेम  
हंस सूरिभिः ।

( 549 )

॥ॐ॥ सं० ११८६ वर्षे माघ सु० ११ शनौ श्री पंडेरकीय गच्छे उपकेश ज्ञा० गूगलीया  
गोत्रे सा० महूण पु० पोना पु० नेमा पु० नूनाकेन ज्ञा० लपी पु० करमा नालहा सहितेन  
स्वश्रेयसे श्रीमुनि सुव्रत विंवं का० प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः शुभं भूयात् ॥श्री॥

( 550 )

सं० ११८८ वर्षे पोष सु० ३ शनौ उकेश ज्ञातौ तीवट गोत्रे वेसटान्वये चा० दाटू  
ज्ञा० अणुपदे पु० सचवीर ज्ञा० सेत पु० देवा श्री वंताभ्यां पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ  
विंवं का० प्र० श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने श्री सिद्ध सूरिभिः ।

( 551 )

सं० ११९० वै० सु० शनौ श्री मूलसंधे नंदिसंधे वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री  
कुंद कुंदाचार्यान्वये महारक श्री पद्मनंदि देवाः तत्पद्मे श्री सकल कीर्ति देवाः । उत्तरे

( १२६ )

श्रुथोभि (१) हं० ज्ञातीय व० आचपाल भा० जाणी सु० आजाकेन भा० मनुमृत विरजा  
भातृ बीजा भा० यान् सुत समधरादि कुटुंब युतेन श्रीपद्म प्रत्न चतुर्विंशति पदः कारितः  
तंच सदा प्रणमति सुकुटुंबः ।

( १३३ )

सं० ११६२ वर्षे मार्गशिर वदी १ गुरुवारं श्री उपदेश वंशे एतद गोत्रे सा० देव  
राज भार्या हेमश्रिया पुत्र सा० वाहडेन आत्मा कुटुंब श्रेयोर्थं ध्या विमलनाथ विंश  
कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीधर्म घोष गच्छेत्त० श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ।

( १३३ )

सं० ११६६ माघ सु० ५ प्राग्वाट द्व्य० धीरा धीरलदे पुत्र्या द्व्य० श्रीना भावले दे  
सुतव्य० वेला पत्न्या वीरणि नाम्न्या श्रीसंजय विंश का० प्र० तपा श्री नाम सूर  
सूरिभिः ॥श्री॥

( १३४ )

सं० १५१६ वर्षे वैशाख वदि १२ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ न० रामा मातृ  
शाणी श्रेयोर्थं सुत सागाकेन श्रीश्री अन्ननंदन नाथ विंश कारितं श्री पूर्णिमा पदं श्री  
साधुरत्न सूरिणासुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना श्री संघेन गौरहंया वारकद्वय ॥

( १३५ )

॥ १५१६ आषाढ सु० ५ अष्टौ गोत्रे तीया भार्या कृपा पु० तीपदा देजा ---  
पद्मावति प्रणमति ।

( १३० )

( 556 )

सं० १५१७ वर्षे फागुन सुदि २ उकेश वंशे ब्रुहरा गोत्रे सा० सोढा भा० शाणी पु०  
नगाकेन भा० नायक दे पुत्र नापा गोपा प्र० परिवार सहितेन स्वपितृ सा० सोढा  
पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पद्वे श्री जिनचंद्र  
सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( 557 )

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० डउढा भा० हरपू सु० श्रे० नागा भा०  
आजी सुत श्रे० जिनदासेन स्व श्रेयसे श्रीधर्मनाथ विवं आगम मच्छे श्रीदेवरत्न सूरि  
गुरुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं ।

( 558 )

सं० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे उएस गच्छे  
सा० सोभा भा० घनाई पु० साधू सुहागदे सुत ईसा सहितेन स्वश्रेयसे श्री सुमति  
नाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीकृष्ण सूरिभिः ॥ सीणोरा वास्तव्यः ॥

( 559 )

सं १५२० वर्षे वै० शुदि ५ ज्ञोमे श्री ज्ञातीय श्री परहयउ गोत्रे सा० श्रीयात्मज सा०  
रुहा तत्पुत्र सा० सांगा---प्रभृतिभिः स्वपितृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विवं कारितं ।  
हृद्गच्छे श्रीरत्नप्रभ सूरि पद्वे प्रतिष्ठितं श्री महेंद्र सूरिभिः ।

( १२१ )

( ५० )

सं० १५२४ आषाढ शु० १० शुक्रे उक्तेष्वंशे -- भा० नपूय पु० जेनादेन भा० परि-  
णि पु० माह्व्या पोत्र इसा वीचालादि कुटुंब युतेन पु० माह्व्या शेषने श्री नमि विंश वा०  
प्र० तपा श्रीसीमसुंदर सूरि संतान श्रीलक्ष्मी सागर नूरिभिः ।

( ५१ )

सं० १५३२ वर्षे चैत्र वदि २ गुरी श्री श्रीमाल ज्ञा० नं० जीगा भा० जीवाणि न० गो-  
ला भा० कर्मा पु० नरवदेन श्री श्रेयांसनाथ विंश कारितं श्री पूर्णिमा पक्षाय श्री सा-  
सुंदर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना बलहरा ।

( ५२ )

सं० १५३५ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री उक्तेष्वंशे भा० गोत्रे भा० नीवा ज्ञार्वा पूर्णा  
सा० पूना श्रावणेण ज्ञानृ सजेहण भा० अंवा परिवार युतेन श्री नंभयनाथ विंश कारितं  
प्रतिष्ठित श्री खरतर गच्छे श्रीजिन भद्र नूरि पद्मे श्री जिनचंद्र नूरिभिः ॥

( ५३ )

संवत् १५४७ वर्षे मा० वदि ८ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय द्य० कषा भा० देप् पु० जेगा  
भा० हीरु श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य विंश प्रतिष्ठितं श्री नूरिभिः ।



( १३२ )

( 564 )

॥ संवत् १५५७ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने मंगलवासरे उ० ज्ञातीय वेंछाच गोत्र मा०  
पीमा पु० जालू नारिगदे अगस---श्रेयोर्थे श्रीशांतिनाथ विंवं का० प्र० श्रीसंढेरग  
गच्छे श्रीशांति सूरिभिः तत्प-श्रीर-सूरिभिः ।

( 565 )

सं० १५५६ (?) वर्षे आषाढ सु० १० सूराणा गोत्रे स० शिवराज भा० सीतादे पुत्र स०  
हेमराज भार्या हेमसिरी पु० प्जा काजा नरदेव श्री पार्वनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीधर्म  
घोष गच्छे ज्ञ० श्रीपद्मानंद सूरि पद्मे नंदिवर्द्धन सूरिभिः ।

( 566 )

सं० १५५६ वर्षे आषाढ सुदि १० आईचणाग गोत्रे तेजाणी शापायां सा० सुरजन  
भा० सूहवदे पु० सहस मल्लेन भा० शीतादे पु० पाढा ठाकुर भा० द्रोपदी पी० कसा पीघा  
श्रोवंत युतेनात्मपुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीउपकेशगच्छे ज्ञ० श्रीदेव-  
गुप्त सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

( 567 )

सं० १५६७ वर्षे श्री माह सुदि ५ वृधे गोठि गोत्रे सा० - - - तत्पु० पहराज तत्पुत्र  
राठा- - - त्यादि परिवार युतेन सुविधि नाथ विंवं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजन-  
चन्द्र सूरिभिः ।

( १३३ )

( १३४ )

संवत् १५७६ वर्षे आषाढ सुदि १३ दिने रात्रिघारे श्री कनका गोत्रे सं० नारायण पुत्र  
रत्न सं० माणिक नार्या माणिकदे पुत्र मूलाकेन पुत्रपीत्रादि परिकृतेन श्री पार्ष्णीनाथ  
त्रिंशं कारितं प्र० श्रीस्वरतरगच्छे श्रीजिनहंस सूरिभिः श्रीपत्तन महानगरे ।

( १३५ )

सं० १६०४ वर्षे पीप मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमायां तिथी श्रीजजमेर पूर्या श्री पत्तुविर्भात  
जिनमातृका पट्ट लुनिया गोत्रेन सा० पृथिराजेन का० प्र० श्रीवृद्धन् स्वरतरगच्छाधीश्वर  
जंगमयुगप्रधान ज० श्रीजिन सीभाग्य सूरिभिः त्रिजयराजे ।

श्रीदादाजीके छतरिके पास मन्दिरमें ।

( १३६ )

सं० १५३५ वर्षे आषाढ सुदि ६ शुक्ले बड़नगर वास्तव्य उकेमहान्तीय सा० नारायण  
नार्या तारु पुत्र सा० लपाकेन नार्या लीलादे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशामिनाथ  
त्रिंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनाथक श्री लक्ष्मीनागर सूरिभिः ॥ सं० पृथ्वीनाथ  
गणीनामुपदेशेन ।

( १३३ )

## जयपूर ।

यति श्यामलालजी के पासकी मूर्तियों पर

( 571 )

सं० १३ -- वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्रीकाष्ठासंघ श्रीलाड बागढ (?) गण श्रीमन् --  
मुरूपदेसेन हुंवउ ज्ञातीय व्य० बाहड भार्या लाछि सुत पीमा भार्या राजलदेधि श्रेयोर्थं  
सुत दिवा भार्या संभव देव नित्यं प्रणमति ।

( 572 )

सं० १३३६ वर्षे पौष ६ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमा० -- -- मायलदे पु० सामलेन  
श्रीशांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवुद्धिसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 573 )

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे । ओसवाल ज्ञातीय वच्छस गोत्रे सा०  
धीना भार्या फाई पु० देवा पट्टा मना वाला हरपाल धर्मसी आरमपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ  
विंवं कारितं श्रीम० तपागच्छे -- -- -- ।

( 574 )

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ रषसण यासि श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्री० धर्मां जा०  
धर्मादे सुत प्रोजाकेन जा० जली प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ चतुर्विंशति  
पहः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सुविहत सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

( १३५ )

यति किसनचन्द्रजी के पासकी मूर्तियों पर ।

( ५७० )

सं० १३१८ फागुन--- मेहलडा गोत्रे यददेव पुत्र यिसल पुत्र उपमयेन नाम श्री श्री श्रेयोर्थ श्री पाश्र्वनाथ विंवं कारितं प्र० श्री सावदेव सूरिसिः ।

( ५७१ )

सं० १५०५ वर्षे माह वदि ६ घनी श्री--- गच्छे --- जलहर गोत्रं सा० लुणा सा० लुणादे पुत्र पयिन पालहा सानाति पितृमातृ श्रेयोर्थ श्री संज्ञयनाथ विंवं कारिः प्र० --- ।

( ५७२ )

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्रीमाल ज्ञाती सांहायत गोत्रे सा० भोजा सायां नाम पुत्र नेना सायां फुला श्री धर्मनाथ विंवं कारितं श्री पण्डित गच्छे ---- ।

( ५७३ )

संवत् १५०९ वर्षे जएस वंहे सा० हजदा सायां आठूणादे पुत्र केन्द्राजेन श्री अथर गच्छेश श्री जय केशरि सूरिणां उपदेशेन पितृ श्रेयोर्थ श्री सादिनाथ विंवं कारितं ।

( ५७४ )

सं० १५३२ वर्षे ज्ये० व० ३ रवी वणागीला गोत्रे सा० यादी प्र० पोनाइ सु० विठल श्रेयोर्थ सा० सावठन धोवंत साजण प्र० कुटुंब सुतेन श्री पद्मप्रसन्न विंवं कारितं रोहृपतिपुत्र गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरि पहे प्रतिष्ठितं श्री गुण सुंदर सूरिसिः ।

( ३३१ )

( 580 )

संवत् १५५६ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय सा० हासा पुत्र हरिचंदेन  
भा० हीरादे पुत्र पुना धूर्नाद कुटुंब युतेन गहिलदा गोत्रे श्री सुविधिनाथ विंशं का० प्र०  
तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः नागपुरे ।

( 581 )

संवत् १६७१ वर्षे माघ वदि २ दिने गुरु पुण्ययोगे ओसवाल ज्ञातीय चौरदिया गोत्रे  
स० सिधा भार्या नवलादे तत्पुत्र स० भैरवदास भार्या जर्मादे नाम्न्या श्री नमिनाथ विंशं  
कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे महारक श्री विजयदेव सूरिभिः ।

( 582 )

सं० १६८८ व० माघ व० १ गुरौ ----हस गोत्रिय सा० वंजाकेन --- सुविधिनाथ  
विं० गृहीत व० ट० श्रोतपा गच्छे श्री विजयदेव आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रति० ।

## जोधपुर ।

यह मारवाड़की राजधानी एक प्रसिद्ध स्थान है ।

श्रीमहावीर स्वामीका मन्दिर ( जुनी मंडि )

घातुओंके मूर्तिपर ।

( 583 )

सं० १७५६ वर्षे माह सुदि ११ स० हाप-सीह पुत्री सपदे-केन पुत्र पूजा काजा युतेन  
पितृ श्री योर्थे श्री आदिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः ।

( ३३७ )

( ३३८ )

सं० १४६० वर्षे वैशाख सु० ३ श्राध्रगोत्रे सा० सोमहा पुत्रेण सा० सांघटेन इन्द्रपुत्रेण  
भार्या मिरिधादे श्री चसे श्री आदिनाथ विंघं कारितं प्र० श्री प्रियानागर सूरिभिः ॥ ॥

( ३३९ )

सं० १५०१ प्रा० ज्ञा० डोहा ज्ञा० राणी सुत सुपाकेन भा० खरसू पुत्र साजपादि मुनेन  
श्री अजितनाथ विंघं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

( ३४० )

सं० १५०३ ज्ञापा० सु० ६ शु० राउ म्वावरही गोत्रे सा० महिभजता सोमहा पु० पीठ  
प्रा० लोली पु० कीडा देताभ्यां मुतेन श्री धर्मनाथ विंघं कारापित श्री - - विं गयेन  
श्री जयसिंह सूरि पट्टे श्रीजय शेपर सूरिभिः तथा पक्ष ।

( ३४१ )

सं० १५०३ वर्षे मार्ग वदि २ खुचती मंडारी गोत्रे सा० सोमहाभा० सोमहा पु० पुत्र हीमा  
केन जात्म० श्री श्रीयांस विंघं का० प्र० श्री धर्म चौप गवडे श्री पट्टे योगे सूरि पट्टे श्री  
विजय नरेन्द्र सूरिभिः ॥

( ३४२ )

सं० १५१७ वर्षे चैत्र सु० १३ सुरी उप० ज्ञा० म० तृपा ज्ञा० साविहदे पु० सोमहा ज्ञा०  
वाल्हणदे पुत्र पेतसि दास० प्रा० मा० ध्र० श्री सुमतिनाथ विंघं का० प्र० प्रकाशोपा सा  
श्री उदय प्रसन्न सूरिभिः ।

( ३३८ )

( ५८९ )

सं० १५२२ वर्षे वैशाख सु० ३ नना ज्ञा०श्रे० जहता मा० परि पुत्र गेला मा० वाली  
नाम्या पुत्र अमरसी मा० तिलू सजन कवेला मातृदूसी ज्येष्ठमाला प्रमुख कुटुंब युतया  
स्व श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ विंवं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( ५९० )

सं० १५२४ वै० शु० ३ श्री मूलसंचे सरस्वती गच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्य म० पद्मनंदि  
सत्प० ज० श्रीसकल कीर्त्ति सत्प० ज० श्री विमल कीर्त्या श्री शांतिनाथ विंवं प्रतिष्ठितं ।  
श्री जे संग मा० मरगादे सु० तेजा टमकू सु० सिवदाय ।

( ५९१ )

सं० १५२७ वर्षे माह सु० ६ बुधे श्री - - - गोत्रे सा० भादा मा० सावलदे पु० मेलाकेन  
मा० मालूणदे पुत्र कीर्त्ता कान्हा रूपादि युतेन स्व श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं  
प्रतिष्ठितं जिनदेव सूरि पद्वे श्रीमत् श्री भावदेव सूरिः ।

( ५९२ )

सं० १५३२ वर्षे वैशाख वदि ५ रवौ उप० ज्ञा० गो० उरजण मा० राउं सु० मीदा मा०  
सावलदे सु० गारगा वरजा युतेन आत्म० श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० श्री जीरापलीय  
गच्छे श्री उदयचन्द्र सूरि पद्वे श्रीसागर नांद सूरिभिः शुभं भवतु

( ५९३ )

सं० १५३५ श्री मूलसंचे ज० श्री भुवन कीर्त्ति स्व० ज० श्री ज्ञान भूषण गुरुपदेशे--

( १३८ )

( ३३५ )

सं० १५५४ वर्षे फागुण मासे शुक्रपक्षे ३ वृष धानरे साह चांषा ज्ञार्या भेषू पुंगु  
भार्या चांदू पु० डाहा ज्ञा० मालू श्री नमिनाय विंघं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमा वारिक  
छोली वाळ गच्छे महारिक श्री विजय राज नूरिभिः ॥ धी ॥

( ३३६ )

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि १५ गुरी प्रग्वाट ज्ञा० सा० कया ज्ञा० जमणादे पु० मढी  
--- पु० घना --- सहितेन आत्म पुण्यार्थे श्रीसुमति विंघं का० प्र० पूर्णिमा ज्ञा०  
---सागर सूरि--- ।

( ३३७ )

सं० १५६५ वर्षे चैत्र सु० १५ गुरी उप० जंहारी गोत्रे सा० नरा ज्ञा० नारिगदे पु०  
तोली ज्ञा० ठाछलदे पु० चिजा रूपा कृणा विजा ज्ञा० वीकलदे पु० नामना ज्ञा०  
द्वि० ज्ञा० घालादे पु० खेतती जीवा स्वकुटुंबेन पितृ निमित्तं श्री सुमतिनाय विंघं कारितं  
प्र० श्री सुंदर गच्छे ज्ञा० श्री शांति नूरिभिः ।

( ३३८ )

सं० १५६५ वर्षे माह सुदि ८ रवी श्री उपकेश वंघे वि० सांरा ज्ञार्या भमसाहं सु० धीना  
सूरा ज्ञार्या लाठी द्वि० ज्ञार्या ज्वरघाहं घन्नं होवते श्री शीतलनाय विंघं प्रतिष्ठितं निर्वाणी  
गच्छे श्रीदेव सुंदर नूरिभिः प्र० ।

( ३३९ )

॥ सं० संवत् १५६५ वर्षे वैशाख वदि १३ रवी द्वितीया ज्ञार्या श्री उपकेशे प्र० श्रीना  
ज्ञार्या धरणू पुत्र सं० तोला सुआवकेण ज्ञा० नीतू पुत्र सा० राजा सा० लक्ष्मण भगव



( ११० )

सा० आसा प्रमुख कुटुंब सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री जंचल गच्छेश श्री भावसागर सूरीणा  
मुपदेशेन श्री अजितनाथ मूलनायके चतुर्विंशति जिन पद कारितः प्रतिष्ठितः श्रीसंघेन ।

( 599 )

सं० १५५० वर्षे आ० सु० ३ सोमे ओसवाल ज्ञातीय चंडलिआ गोत्रे सा० चारिग  
पुत्र कालू भा० हामी पु० हासा देवा गणाया भार्या दमाई पु० साह विमलदास सा०  
हरवलदास सा० विमलदास भा० सोनाई पु० सुन्दर वच्छ रिपजदास भार्या अमरादे सुत  
अमरदत्त पूर्वत भु० श्री सुविधिनाथ विंशं कारितं प्र० श्रीमलधार गच्छे प्र० श्री गुण  
सागर सुरिपद्वे श्री लक्ष्मीसागर सुरि प्रतिष्ठितः ॥

( 600 )

सं० १८२१ मि० वै० सुदी ३ श्री पार्श्वजिन-प्र० श्री जिन लाभ सू० यति हीरानंद  
करांपतं ।

## देविजीके मूर्तिपर ।

( १ मूजा + सर्प छत्र )

( 601 )

सं० ११७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ सोमे बीजापूर वास्तव्य नागर ज्ञातीय ठा० प्रयासुत  
घरणाकेन कुटुंब सम-- श्रेयोर्थं देवी वेह्रुठा० रूपं प्रतिष्ठापितं ।

( 602 )

सं० १५५१ माह सुदि ५ दिने उ० ज्ञातीय मंडोवरा गोत्रे सा० पासवोर पु० सा० सुरा  
भा० सूहवदे पु० सा० श्रीकरण सा० शिवकरण सा० विजपाल आ० सूहवदे आत्मपुण्यार्थं  
श्री शान्तिनाथ विंशं का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे प्र० श्रीपुण्यवर्द्धन सुरिभिः ।

( १११ )

( ७७ )

संवत् १५७६ वर्षे वैशाख सुदि ७ शुभे उशवाळ ज्ञातीय मृदुमापीय पोसादिता सोमं  
सा० पीमा मा० अथी-पु० सा० श्रीयंत मा० सोनाहं पु० सकळ चुलेन ह्यदिपने हीपा-  
खंवाथ विवं का० श्री कीरट गच्छे श्री कृष्ण सूरिभिः ॥ श्री ॥

( ७८ )

स्वस्ति श्रीः ॥ सं० १५६८ वर्षात्पीप यद्वि ११ सोमे उदेश्ये द्य० परवत मा० कदपु  
तत्पुत्र द्य० जयता मा० अहियदे पु० द्य० श्री ५ सपरिवारेण सोक्तं विहान वनां निज  
- - - परिवार क्षीयोर्थं आदिनाथ विवं कारितं प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्रीमपक्षीय ३६  
श्री मुनिचन्द्र सूरिपते श्री विनयचंद्र सूरिणामुपदेशेनेति प्रदं ।

( ७९ )

ॐ संवत् १६३८ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री रत्न तीर्थं यान्तव्य मोनी मनजी भायं  
मोहणदे सुत सोनी मंगलदास नाम्ना श्री श्री माण ज्ञातीय श्री अजितनाथ विवं कारि  
पितं तपागच्छे श्री हीर विजय सूरेश्वरै प्रतिष्ठितं ।

श्री केसरियानाथजी का मंदिर—मोती चक ।

( ८० )

ॐ ॥ संवत् १२३६ द्विः वैशाख सुदि ६ शुभे पक्षपट्ट यान्तव्य मो ति-ति नश्ये ३६  
श्री देवाचार्य सरक श्री नवतसार सुत-हे-गुण रामजी कलकत्यायाः श्री सोमं ही पापयंताय  
प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री सुदि सागराचार्यैः ॥

( १४२ )

( 607 )

सं० १४५८ वर्षे माह सुदि ५ लोढा गोत्रे सा० देवसींह ज्ञार्या देलूणदे पुत्र रेडा ज्ञार्या  
रूपादे पुत्र सा० सालू सायराभ्यां पितृ मातृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंवा का० प्रति०  
श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ।

( 608 )

सं० १५१३ वर्षे पोष वदि ४ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० श्रे० संग ज्ञा० श्रेयादे सु० महिराजेन  
पितृ मातृ भ्रातृ समधर सारंगा ज्ञी मान मित्रं स्वात्म श्रेयसे श्रीश्री सुमतिनाथ विंवा  
पंचतीर्थी कारापिता प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे ज्ञ० श्री गुण रत्न सूरिभिः गंधारवास्तव्य ॥

( 609 )

सं० १५२४ चैत्रवदि ५ -- ङ माणिक ज्ञा० वारूदे-श्री विमलकीर्ति -- धर्मनाथ विंवा  
प्र० वार्ड तपदे जा० कालहा -- ।

( 610 )

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ दिने सोमे उकेश वंश कुकट शाखायां व्वै० तोला ज्ञा०  
पेतलदे पुत्र सदस मल्लेन तीरुहादि पुत्र पौत्रादि युतेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंवा  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री खस्तर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

( 611 )

सं० १५७२ वर्षे फागुण सु० ९ मं० जंडारी गोत्रे सा० तोला ज्ञा० पलाछदे पुत्र सा०  
विद्रा सा० परूपा सा० कृपा ज्ञा० करमादे पु० माता - पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंवा  
कारितं प्रतिष्ठितं श्री संदेर गच्छे ज्ञ० श्री शांति सूरिभिः ।

( १२३ )

( ८१२ )

सं० १८८३ ना मा । सु० १० वृ० । श्री जोधपूर वास्तव्य श्री जौसवाट शाहीप रूढ़  
शाखायां संघ माणक चंद्र तेड स्वश्रेयायं श्री चतुर्विंशति जिन विवरय जरापोर ।

( ८१३ )

सिद्ध चक्रके पट्ट पर ।

श्री सिद्धचक्रो लिखती मया वै । महारकीयेन सुयंप्रराजः ॥ श्री सुन्दराणां किय  
शिष्यकेन । स्वरूपचंद्रेण सदृश्यं सिद्धेषः ॥ १ ॥ श्री मन्नागपुरे रम्ये चंद्रचंडाग्र भूमिने ।  
अब्दे वैशाखमासस्य तृतीयायां तिते दले ॥ २ ॥

श्री मुनिमुवतस्वामीजी का मन्दिर ।

( ८१४ )

सं० १९२३ वर्षे फागुन शु० १ श्री धो० ज्ञा० द्य० काटा जा० काणहण्डे सु० - - मद्र  
प्रभु वि० श्री पू० श्री उदयाणंद सू० प्र० ।

( ८१५ )

सं० १९११ वर्षे वैशाख वदि १२ दिने नाहर जंगलकारेण सा० पडसिहा पूर्णक थाप  
सा० सलकेन सरवणादि युतेन श्री पादपंताघ विंश कारिल प्रतिदित्तं सा जिनराज मुनिजि  
श्री खरतर गच्छेशः ॥

( १११ )

( 616 )

सं० ११६६ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्री तावहार गच्छे पांढरा गोत्रे जेसा भा० जस-  
मादे पु० तोजा भा० वापू पुठीयलमेदा सह० श्री शांतिनाथ वि० प्र० का० श्री कीर्त्तिका  
चार्य सं० श्री वीर सूरिभिः ।

( 617 )

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ रवौ उके० पदे दोसी गोत्रे० सा० सीरंग -- पुत्र सा०  
डूडकेन भा० दाडिमदे पुत्र कीता तेजादि परिवारयुक्त श्री धर्मनाथ विंशं कारितं श्रेयसे  
प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनमद्र सूरि पद्वे श्री जिनचन्द्रसूरि श्री जिन समुद्र सूरिभिः  
श्री पद्म प्रभ विंशं ।

( 618 )

सं० १५८२ वर्षे जे० सुदि १० शुक्रे वहतप श्री वन रतन सूरि --- )

श्री धर्मनाथजी का मन्दिर ।

( 619 )

सं० ११६३ जेठ वदि ३ मंगले उप० ज्ञा० पावेचा गोत्रे सा० कीरा भा० वीरहणदे पुत्र  
कुंभाकेन भा० कामलदे युतेन स्वश्रे० विमल विंशं का० प्र० वृहत गच्छे देवाचार्यान्वये  
श्री हेमचन्द्र सूरिभिः ॥ छ ॥

( 620 )

सं० १५०३ वर्षे दोसो-धर्माकस्य पुण्यायें दो० वृष्ठा पुत्र संग्राम श्रावकेण कारितः  
श्री श्रेयांस विंशं प्रतिष्ठितं श्री जिनमद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ।

( १२५ )

( ६०१ )

सं० १५०४ वर्षे वै० शु० ३ प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० मंहारी जाणी मुत्त सं० पीमणी सा०  
पाभ्यां ज्ञा० मदीखतजता मालादि कुटुंबयुताभ्यां स्वत्रे यत्ने श्री मुनि सुप्रसन्नानि विप्र  
का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री जयचंद्र सूरिभिः पार प्राग्वाट, मुत्त प्राग्वाट

( ६०२ )

सं० १५०७ वर्षे मार्गसिख वदि २ गुरी उपकेज यंगे जारंडहा गोत्रे ना० विमयापामना  
सा० गिरराज पुत्र सहदेवो ज्ञ० लोका समदा सहितेन मान् गवादे पूजायं श्री नमि विप्र  
का० प्र० तपा महारफ श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

( ६०३ )

सं० १५१२ वर्षे फागुन सु० १२ जाहतणा ( झाईचणा ? ) गोत्रे ना० यना ज्ञा० यत्ने  
पु० मोकल ज्ञा० माहणदे पु० हासादि पुतेन स्वनाजल वीयने श्री संज्ञयनाय विप्र  
उकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्र० ज्ञ० श्री कृष्ण सूरिभिः ।

( ६०४ )

सं० १५२५ वर्षे दिवसा वत्से श्रीमाल ज्ञातीय सा० द्वायरा ज्ञा० नार्मिणी मुत्त सा०  
केन ज्ञा० साना भातृसाळ ज्ञा० सोदी कुटुंबयुतेन स्वत्रे यत्ने श्री गार्दिनाय विप्र  
प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः तहुरीया नाप्रः ॥

( ६०५ )

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ चंद्रे उरयेत ज्ञाती झादिश्वरान गोत्रे ना० मीना  
पु० जासी-भा० जयतिरि पु० सायर ज्ञा० मेदिनि नाभ्या १२ मुत्ता पूजा, तपा गार्दिनाय

( १४६ )

स्वपुण्याय श्री संजवनाय विं का० प्र० उपकेश ग० कुक्कदाचार्य स० श्री देव गुप्त  
सूरिभिः ।

( 626 )

सं० १५६३ वर्षे माघ सु० १५ गुरौ उ० विदाणा गोत्रे सा० रतना भा० रतनादे पु०  
रामा० रूपा स० पि० श्री कुंघनाय विं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः  
श्रेयात् ॥

## दिनाजपूर ।

श्रीमूलनायकजीके विं पर ।

( 627 )

--- सु० १ श्रीचन्द्र प्रभ जिन विं संघेन कारितं प्रतिष्ठितं च ॥ श्रीजिनचन्द्र  
सूरिभिः ॥ श्री विक्रमपुरे ।

## धातुके मूर्तियों पर ।

( 628 )

संवत् १११७ वर्षे फागुण सुदि ६ सोमे श्री अंबल गच्छे श्रीमेरुतुंग सूरिणामुपदेशेन  
शानापति ज्ञातीय मारू ठ० हरिपाल पति सूहव सुत मा० देपाठेन श्री महावीर विं  
कारितं । प्रतिष्ठितं च श्री सूरिभिः ॥

( 629 )

सं० १५१५ वर्षे फागुण वदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखायां श्री० अर्जन भा०  
मंदोजरि पितृ मातृ श्रेयसे सुत गोईदेन भा० मारू पुत्र मेहाजल सहितेन श्री कुंघनाय

( १२७ )

विंशं कारितं पूर्णिमा पक्षे श्रीमपल्लवीय महारक्ष श्रीजयचंद्र श्रीश्रीकामुपदेशेन प्रतिष्ठित  
॥ श्रीः ॥ छ ॥

( १२८ )

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ८ सोमि श्री श्रीमातृ ज्ञातीय वं० सरमा भार्या सरमादे  
पुत्र आसा भार्या वडंरामति नाम्ना स्वभक्त पण्णायं सात्म वं० सो० श्री श्रीरिज  
स्यामि श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री धर्मनागर सुरिणिः ।

( १२९ )

सं० १६२७ वर्षे वैशाख वदि १० श्री मूढसंचे ज० श्री सुमति जीशिं सुपरदेगात् पा०  
जो देवसुत को० सिंघा सु० धर्मदास करिदास अनंतनाथ निम्ब प्रणमति ।

( १३० )

सं० १८२४ रा मित्ती जपात् सुदी १३ श्री नेमनाथजी वि० ॥ छ ॥

दादाजी के चरण पर ।

( १३१ )

सं० १८२८ मिति ज्येष्ठ कृष्ण ८ तिथी बुधवार । स० श्रीजिनचंद्र सुरिणि मर्मिदि १  
ज । श्री जिनकृष्ण सुरिजो पाटुका ॥ स० श्री जिनचंद्र सुरिजीमः पाटुका ।



( ११८ )

## श्री केसरियानाथजी ( मेवाड़ )

यह स्थान जो मेवाड़की राजधानी उदयपुरसे २० कोस पर है रसजदेओ नामसे भी प्रसिद्ध है। मूलनायक श्री ऋषभदेवकी मूर्ति स्वामवर्ण बहुत प्राचीन और इनका अतिशय बहुत विलक्षण हैं। मन्दिरके बाहर महाराणा साहबोंके अघाट बहुतसे हैं।

पंचतीर्थों पर ।

( 635 )

सं० १५१६ वर्षे माघ सु० १३ दिने उप० ज्ञा० श्री० पोमा भा० पोमी सु० जात्रलकेन भा० गोलादे सु० जसा धना वना मना ठाकुर परवतादि कुटुंबयुतेन स्वपितृ श्रेयसे श्री धर्मनाथ त्रिवंका० प्र० तपा गच्छे श्री सोम सुंदर सूरि संताने श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः।

पाषाण पर ।

( 636 )

श्री कायासवास वासीता केवलापदाग नमो क्षमाग्रत (१) आदिनाथ प्रणमामि--  
विक्रमादित्य संवत् ११३१ वर्षे वैशाख सुदि अक्षय तिथी बुध दिने चादी नाधुराल---

( 637 )

श्री आदिनाथ प्रणमामि नित्यं विक्रमादित्य संवत् १५७२ वैशाख सुदि ५ वार सोम-  
वार श्री जशकराज श्री कला भार्या सोवनवाड़ चीजीराज यहां घुलेवा ग्राम श्री ऋषभ-  
नाथ प्रणम्य कहीजा फीहंजा भार्या भरमी तस्या पवेहं सा० भार्या हासलदे तस्य पग-  
कारादेव रारगाय मात वेणीदास भार्या लास्टी चाचा भार्या लीसा सकलनाथ नरपाल  
श्री काष्ठा संघ ---- श्री ऋषभनाथजी श्री नान्निराज कुप श्री तां-री कुल --- ।

( १२८ )

( १२९ )

संवत् १९२३ वै० शु० १५ पूर्णिमा तिथी रविवासरु पक्षमासतः मन्दिरे श्रीजित भक्ति  
सूरि पहलंकार महारक श्री १०५ श्री जिनवाज नृसिंहः । -- श्री राम विजयाश्री प्रभु  
सहूक -- आदेशात् सनीपुर - श्री अक्षयदेवजी - - ।

सरस्वतीजी महादेवजी के चरण चौकी पर ।

( १३० )

संवत् १६७६ वर्षे मा० शुद्ध० १३ -- ।

मरुदेवी माताजीके हाथिन पर ।

( १३१ )

संवत् १७११ वर्षे वैशाख शुद्धि ३ सोमि श्री मूलतंत्रे सरस्वती मन्दिरे प्रजापतिमन्दिरे  
श्री कुं -- ।

( १३२ )

संवत् १७३२ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे - तिथी अशुभवासरु श्री मूलतंत्रे प्रजापतिमन्दिरे महारक  
श्री रामसेनीन्द्रये तद्वान्नाये तः श्री विश्व भूषण श्री महा आदिने श्री श्री विश्वेश्वर  
कीर्ति -- ।

( १३३ )

संवत् १७९६ वर्षे फाल्गुण शु० ५ सोमि श्री मूलतंत्रे सरस्वती मन्दिरे प्रजापतिमन्दिरे श्री  
श्री बुंदकुदाशार्येन्द्रये महारक श्री सुधात कीर्ति महारक महारक श्री शारदाकीर्ति - - ।

( १५० )

( 643 )

संवत् १७६५ वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ सोमवासरे महारक श्री विजय  
रत्न केशवर तपागच्छे काष्ठासंघे श्रा० पु० दे० वृ० शा० मुहता गोत्रे मुहताजी श्रीरामचंद्र  
जी तस्यनार्या वाईं सूर्यदेवि तस्यात्मज मुहताजी श्री सोनाग चंद्रजी मुहताजी श्री सातु  
जी भाईं मुहताजी श्री हरजीजी श्रीपार्श्वनाथ जिन विंवं स्थापितं ।

श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ प्रशस्ति ।

( 644 )

॥ ॐ ॥ प्रणम्य परया भक्त्या पद्मावस्थाः पदाम्बुजं । प्रशस्तिरुल्लिख्यते पुण्या कवि-  
केशर कीर्तिना ॥ १ ॥ श्रीअश्वसेनकुल पुष्पक रथञ्च ज्ञानुः । यामांग मानस विकासन  
राजहंसः ॥ श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोत्तम एव भाति । घुलेव मंडनकरा करुणा समुद्रः ॥ २ ॥  
श्री मज्जगत्सिंह महीश राजये । प्राज्यो गुणैर्जात ईहालयोयं ॥ आपुष्पदत्त स्थिर-  
तामुपैतु । संपश्यतां सर्वं सुख प्रदाता ॥ ३ ॥

दोहा । सुर मन्दिर कारक सुखद सुमतिचंद्र महा साधः । तपे गच्छमें तप जप तणो  
उयत उद्धी अगाधः ॥ ४ ॥ पुन्यथाने श्रीपार्श्वनो पुहवी परगट कीधः । खेमतणो मन पा  
तिसु लाहो भवनी लीध ॥ ५ ॥ राजमान मुहता रतन घातुर लपमी चंद्र । उच्छ्रय क्रिधा  
अति घणा आणिमन जानन्द ॥ ६ ॥ दिउ सुध गोकल दासरे कीध प्रतिष्ठा पान । सारे ही  
प्रगटपी सही जगतिमें जसवास ॥ ७ ॥ सकल संघ हरपित हूओ निरमल रविजिन नाम  
रापो मुनि महंत सरस करता पुण्य सकाम ॥ ८ ॥

कवित्त । सांतिदास सचितसंत दायढा लपमी चंद्रहः । संघ मनुष्य सिरदार सहस  
किरण सुपके कंदहः ॥ बल्लभ दोसी वीर घोर जिन धर्म धुरंधरः । मुलचंद्र गुण मूलहार  
वांया उरगुणहरः ॥ सकलसंघ सानिधकरः सुमतिचंद्र महासाधः । पास सदन कियो प्रगट

निश्चल रत्नो निरवाचः ॥ ८ ॥

श्लोक ॥ तद्वारेक पूज्यकृद् कृपारुयो देवेरप्रचिद्वरन विनिवः पूजायोग्ये प्रतिप  
छितावे संघेन मत्सोम्य गुणान्वितेन ॥ १० ॥ गजधर सकल नुज्ञान पराहरी शीतो  
गुणहेर । रच्योत्रिंश जिनराजको करुणा वंश कुबेरः ॥ ११ ॥ आर्यो । शशीव सुक राजा परे ।  
माधव मासे बलक्ष पक्षे च । पंचम्यां भृगुधारे हि कृता प्रतिष्ठा जिनेगत्प ॥ १२ ॥ महा  
गिरि महा सूर्य्य शशिशेष शिवाद्यः । जगद्वल्लभ पार्श्वेभ्य ताप्रतिष्ठतु विपश्च ॥ १३ ॥

श्रीसंवत् १८०१ शके १६६६ प्रमिति वैशाख सुदि ५ शुक्र वामने श्री जगन्नाथ  
पार्श्वनाथ विवं प्रतिष्ठितं बृहत्तया गच्छीष सुमतिघन्ट्रगणिना कामपित ६ योग्यम् ०  
गुप्तं जयतु ॥

पगर्लायाजी पर ।

स्वस्ति श्री संवत् १८७३ वर्षे शके १७३९ वत्समाने मासांजम नामे शुक्रवारी उदये  
मासे शुभे शुक्रपक्षे चतुर्दशि तिथी गुरुवाकरे उपकेत शशीय दृष्टिमासायां श्रीश्रीमान  
गोत्रे सुश्रावक पुण्य प्रज्ञावक श्री देव नुरु जन्तिवारक श्रीजिनाडा प्रतिपावक साह  
श्री शंभुदास तत्पुत्र कुलोद्धारक कुल द्रोपक सिधवाक श्रीवाविदास वरपुत्र शोच्यमान  
ऋषभदास श्री उद्वेपूर वास्तव्य श्री तपागच्छे सज्जन हृद्द रण गिनेमाने श्रावक श्री श्री  
विजय जिनेन्द्र सूरिभिः उपदेशान् पंच मोहन विजयेन श्री शुभेमानगरे ० अकारे दृष्टिषु  
आगुंछं ॥

दादाजी के चरण पर ।

संवत् १८१२ का मिति कानुन वदि ७ तिथी शुक्र वामने श्री श्रीश्रीमाने श्री श्री  
कीर्त्ति शारयाद्भव महोपाध्याय श्री राम विजयजीर्त्ति गिरण महापाध्याय गिरधर

( १५२ )

गणि शिष्य-----चंद्र मुनिना शिष्य मोहनचन्द्र युतेन श्री सरगुरुचरण कमलानि कारि-  
तानि महोत्सवं कृत्वा प्रतिष्ठापितानि स्यापितानि च वर्त्तमान श्री वृहत्स्वरतर गच्छ भहा-  
रकाज्ञयाच श्री अन्नयदेव सूरि जिनदत्तसूरिजिनचंद्र सूरि जिनकुशल सूरिणां चरणन्यासः ।

## पालिताना ।

श्वेताम्बरियोंका विख्यात तीर्थ श्री शत्रुंजय (सिद्धाचल) पहाड़के नीचे यह काठिया-  
वाड़का एक प्रसिद्ध स्थान अवस्थित है ।

## मोती सुखियाजीका मन्दिर ।

( 647 )

संवत् १५०३ वर्षे ज्येष्ठ शु० १० प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आमा ज्ञा० सेगू सुत परवतेन  
ज्ञा० मांडं कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री श्रेयांस नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री जय-  
चंद्र सूरिभिः ॥ गणवाडा वास्तव्यः ।

( 648 )

संवत् १५५८ वर्षे फागुण शुदि १२ शुक्रे श्री उकेश वंशे गांधी गोत्रे अंजिका प्रक्त ।  
ज्ञा० छाजू सुत सेंचा पुत्र नूरा ज्ञा० मेथार्ड सु० साऊंया ज्ञा० मकू नाम्न्या स्व श्रेयोर्थं  
श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं मलधार गच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

( 649 )

संवत् १५७१ वर्षे माघ वदि १ सोमे बीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे०  
चहिता ज्ञा० छाडी पु० द्य० नारद ज्ञार्या नारिग पु० जयवंतकेन ज्ञार्या इर्पमदे प्रमुञ्च

( १५३ )

परिवार युतेन स्वश्रेयोर्थं । श्री नमिनाय अनुविंशति पदः कारितः प्रसिद्धिस्तथापरात्  
श्रीसुमतिताभु नूरि पदो परम गुरुगरुड नायक श्रीहेम विमल नृगितिः ॥ १ ॥

सिद्धचक्र पद पर ।

( १५४ )

संवत् १५५६ वर्षे आश्विन सुदि ८ बुधे श्रीस्वतंत्र तीर्थ कारकप्र प्राग्वाट ज्ञानीय मं  
वछाकेन श्री सिद्ध चक्र यंत्र कारितः ।

सेठ नरसी केशवजीका मन्दिर ।

( १५५ )

संवत् १६१४ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे प्राग्वाट ज्ञानीय दीर्घा देवा भायां देवर्षि गुरु  
दी० वना भायां वनादे सु० दी० कुधजी नाम्ना पितृ शेषमे श्रीवाधर्षनाथ पितृ कारक-  
पितं तपागच्छाधिराज महारक श्री विजयसेन नूरि विष्णु प० धर्मप्रियत मन्त्रिणा प्रसिद्ध-  
प्रितमिदं मंगलं भूयात् ॥

( १५६ )

संवत् १८२१ वर्षे शाके १८८६ प्रवर्त्तमाने माघ सुदि ८ विधी नृजानने श्रीमद्विष्णु  
गच्छे पूज महारक श्री रतन नागर नूरिविष्णुनाम्पदेनात् श्री वाधर्षिने कीर्त्या मन्त्रे  
जीशवर्षे लघुशापायां गांधिमीती गोत्रे सा० नायकमणजी ना० नायकमणजी तस भायां  
हीरपाडुं तत्सुत सेठ केशवजी तस भायां पायां वाहं । तत्पुत्र नरसी इति भायां मन्त्रे  
पंचतीर्थी जिनदिने प्ररापितं । अजत गच्छाका कारापितं । अजत गच्छाका कारापितं ।

( १५१ )

## सेठ नरसीनाथाका मन्दिर ।

( 653 )

सं० १५३० वर्षे वैशाख शुद्धि १० सोमे श्री गंधारवास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय ठय० साहता भा० वाल्ही ठ० सालिग भा० आसी ठ० श्रीराज भा० हंसाई । ठय० सहिसा सुत धनदत्त भा० हर्पाई पतै सास्म श्रेयोर्थे आदिनाथ त्रिवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा पक्षे श्री विजयरत्न सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 654 )

सं० १६२१ वर्षे माघ सुदि ७ गुरी श्रीमदंचलगच्छे पूज महारक श्री रत्न सागर सूरी श्वराणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलितपुर वास्तव्य । ओश वंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सेठ होरजी नरसी तद्धार्या पूरवाईना पुण्यार्थे श्री पार्श्वनाथ त्रिवं कारितं सकल सधेन प्रतिष्ठितं ।

( 655 )

सं० १६२१ वर्षेमाघ सुदि ७ गुरी श्री मदंचल गच्छे पूज महारक श्री रत्न सागर सूरीणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलितपुर वास्तव्य । ओशवंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सा० श्री राघव लपमण तद्धार्या देमतवाई तदुपुत्र सा० ज्ञयचंदेन पुन्यार्थे शांतिनाथ त्रिवं कारितं सकल सधेन प्रतिष्ठितं ॥

## सेठ कस्तुरचन्दजी का मन्दिर

( 656 )

संवत् १६६३ वर्षे वईशाप सुदि ६ गिरी वास्तव्य श्रीपत्तन नगरे ओसवाल ज्ञातीय वृह शापायां सोनी तेजपाल सुत सोनी विद्याधर सुत सोनी रामजी भायां वाई अजाई

( १५७ )

सुत सोनी यमलदास सोनी धर्मदास सोनी रुपचन्द्र पुत्री जाई गौलि क्षेत्र श्री  
विजयनाथस्य विंशं कारापितं श्रीतपगरष्टापिराज श्री विजयदेव सूरि नाथे प्रोक्तं  
आचार्य श्री विजयसिंह सूरिसिः ।

श्री गौडी पाठवनाथजी का मन्दिर ।

( १५८ )

सं० ११८३ विसाख वदि ७ सोमे पण्डितवाल पदम सा० श्रीमहेश देवि धर्मपते सुत  
कीकमेन श्री महावीर विंशं कारित प्रति०

( १५९ )

सं० ११८६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ नाहर गोत्रे नं । आसी सुनेन देशरेण प्रकृतं  
सहजा हरिचन्द्र पति पतिता - धर्मो निमित्तं श्री विमलनाथ विंशं कारापित म० सा हेम  
हंस सूरिसिः ।

( १६० )

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रथी उकेच धर्मो मीठहोला सा० साहंला साया विरी-  
आदे पुत्र सा० मोला सा सुश्रायकेण साया कन्हारं कपु भात सा० मीहाराज हामाज पद  
राज भ्रातृध्व सा० सिरिपति प्रमूह समस्त कुटुंब सहितेन श्री विमलनाथ विंशं कारापित श्री  
जयकेशर सूरिणापमुद्देशेन त्व धर्मोयं श्री सुविमलनाथ विंशं प्रतिष्ठित श्री मदीत । श्री  
चन्द्रार्क विजयतां ॥

( १६१ )

सं० १५१५ वर्षे माघ सुदि ५ शनी प्रारजात सा० म० साहंला सा० साहंला विंशं  
हांसदे सु० मूल सा० करपू सु० मीजा हाता राजा सा० मूल सु० हीमामासि हामाज



युतेन स्वपूर्विज पितृ श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं आगमगण्डे श्री  
श्री पाद प्रभ सूरिभिः सहयाला वास्तव्यः ।

( 601 )

सं० १५१६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ६ शनी प्रा० सा० काला मा० मालहणदे पुत्र स० अर्जुनेन  
प्रा० देऊ भ्रातृ सं० भीम प्रा० देमति सुति हरपाल प्रा० टमकू युतेन स्व श्रेयसे श्री वासु  
पूज्य विंशं का० प्र० श्री रत्नसिंह सूरिपते श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ।

( 602 )

संवत् १५२६ वर्षे वेशाप वदि ११ रवौ श्री उकेश वंशे सा० चाचा प्रा० मायारि सुत  
राजाकेन भार्या वरजू सहितेन श्री सुविधिनाथ विंशं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनद्वय  
सूरिभिः ।

( 603 )

सं० १५२६ वर्षे फा० वदि ३ सोमे स० वाछा प्रा० राजू सु० महीपालेन प्रा० अहवदे  
पुत्र वसुपालादि युतेन प्रा० सपूरो श्रेयोर्थं श्रीमुनि सुव्रतनाथ विंशं कारितं प्र० तपा  
गण्डेश श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( 604 )

संवत् १५३० वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीश्री वंशे श्री० देवा प्रा० पात्रू पु० श्री० हापा  
प्रा० पुहती पु० श्री० महिगज सुभ्रावकेण प्रा० मातर सहितेन पितृ श्रेयसे श्री जंबल  
गण्डेश जय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ विंशं कारितं प्र० श्री सुधेन ।

( १५५ )

( १५६ )

सं० १५३१ वर्षे माघ सुदि ३ नीमे श्री अंबल गणेशे श्री जय जेष्ठ नृसिंहामुपदेशेन  
उपशयशे सं० जहता भायां जहतादे पूष माहंवा सुवाचशेन राजां भायां सुनेन कर्तव्य  
से श्री अजितनाथ विंयं कारितं प्रतिष्ठितं सु--- ।

( १५७ )

संवत् १५३८ वर्षे वैशाख सुदि १० गुरी श्री श्री शंभो ॥ श्री० सुनीया भायां मेष्ट पूष  
जमरा सुवाचकेन भायां जमरादे ज्ञातृ रया सहितेन पितुः पृषपायं श्री अंबल गणेशे  
श्रीजय केसरि नृसिंहामुपदेशेन वासु पृषय विंयं का० प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

( १५८ )

सं० १५६६ वर्षे माह चदि ६ दिने प्राग्वाट ६ ज्ञानीय पार विवाहंवा ज्ञा० देवादे सु  
देवदास ज्ञा० देवलदे सहितेन श्री चंद्रमल रयानि विंयं कारितं प्रतिष्ठितं द्विपदनीय  
गच्छे ज्ञा० श्री तिद्धि नृसीणां पट्टे श्री श्री कृष्णसुनिभिः जातू - र यामे ॥

( १५९ )

सं० १५८३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने उत्तरवाल ज्ञाति सं० जानर ज्ञा० श्री पू० म० माह  
सं० ज्ञाजो म० ना० ज्ञा० हपादे पू० पपु यनु ज्ञाजा भायां जयलादे पूष पूषेन सहितेन  
स्वश्रीयोषं सुविधिनाथ विं० कारितं प्रति० विपदनीय सं० ज्ञा० देव सुत नृसिंहा  
भारता यामे ।

( १६० )

सं० १६८२ वर्षे माघ सुदि ६ गुरी देवक चकत ज्ञानेन उ० ज्ञा० कृष्ण सा० ज्ञानेन  
सुत ना० राजपाणिन ज्ञा० ज्ञा० पूषादे प्रसन्न कृष्ण सुनेन श्री सुनीयनाथ विंयं कारितं  
सप गच्छे ज्ञा० श्री विजयदेव नृसिंहा ।

( १५८ )

( 670 )

सं० १६६४ व० माघ सुदि १ गुरी देवक पत्तन वास्तव्य उकेश ज्ञातीय युद्ध शायायां  
सा० राजपाल तद्वार्या या० पृरार्द्ध सुतसा० वीरपाल नाम्न्या श्री संभव विवं प्र० तथा  
गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ।

याति कर्मचन्द हेमचन्द्रजी का मन्दिर ।

( 671 )

संवत् १५५८ वर्षे चैत्र यदि १३ सोमे उपकेश ज्ञा० वर्द्धन गोत्रे श्रे० वना प्रार्या वनादे  
सुत श्रे० जिणदास केन प्रार्या आलणदे पुत्र राजा सांढादि कुटुंब युतेन श्री शितलनाथ  
विवं का० प्र० पल्लीवाल गच्छे श्रीनन्न सूरिपट्टे श्री उजोयण सूरिभिः ।

( 672 )

संवत् १५५९ वर्षे वैशाख यदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञाती पीहरेचा गोत्रे सा-गोवळ पु०  
सा--भा० धारुपु० साह नर्वदेन भा० सी प्रादे पु० जावड । भा० चड --- पितुः श्रे०  
श्री मुनि सुत्रत वि० का० प्र० श्री उपकेश-श्री कृक सूरिभिः ॥ श्री कुक्कुदाचार्य संताने ॥

गांव मन्दिर बडा ।

( 673 )

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि १३ शुक्रे श्री श्रीमाल वंशे व्य० जीदा १ पुत्र व्य० जेता-  
णंद २ पु० व्य० आसपाल ३ पु० व्य० अन्नयपाल ४ पु० व्य० वांका ५ पु० व्य० श्री वाउडि ६  
पु० व्य० अणंत ७ पु० व्य० सरजा ८ पु० व्य० घीघा ९ पु० व्य० राजा १० पु० व्य० देपाल ११

( १७८ )

पु० वसुनाना १२ पु० दय० राम १३ पुत्र दय० श्रीना ज्ञायं मां हू पुत्र असाह्य स्वनाथ  
सुश्रावकेण ज्ञा० गउरी पु० ज्ञानय पीत्र ठारण वरदे ज्ञातु समपरीक्षापर भातु अशमना  
करणसी- सारंग वीका प्रमुख सूर्य कुटुंब महिनेन श्री ज्ञानय गच्छे श्री गच्छे श्री ज्ञानय  
केसरि सूरिणामुपदेशात् स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंध्य कारितं प्रतिष्ठितं श्री गच्छेन वा  
भवतु ॥

( १७९ )

सं० १५३१ वर्षे श्री ज्ञानय गच्छेन श्री ज्ञानय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री श्री गच्छे ज्ञान-  
तीय दी० मोटा ज्ञा० रत्तु पु० धीरा ज्ञा० धानू पु० लया सुश्रावकेन ज्ञानिनी अमरु महिनेन  
श्री शांतिनाथ विंध्य स्वश्रेयोयं कारितं श्री ज्ञानय प्रतिष्ठितं ॥

( १८० )

सं० १५३८ वर्षे कार्तिक सुदि ११ गुरी श्री श्रीमान् ज्ञानीय ज्ञानी मोक्ष ज्ञा० असाह्य  
सु० याया ज्ञा० पोमी सु० गणपति स्वश्रेयोयं श्री ज्ञानय स्वामि वि० ज्ञा० प्र० असाह्य  
श्री सोमदेव सूरि प्रतिष्ठितं ।

( १८१ )

सं० १५३८ वर्षे धी० सु० १० सु० श्री उ० ज्ञा० पीठदेवा मोक्ष नाथ ज्ञानय ज्ञा० असाह्य  
स्वात्मश्रेयोयं श्री जीवित स्वामी श्री सुविधिनाथ विंध्य कारितं प्रतिष्ठितं श्री ज्ञानय  
गच्छे श्री कङ्क सूरि पठे श्री देव सुत सूरिभिः ॥

( १८२ )

संवत् १५७२ वर्षे वैशाख सुदि १२ सोमे श्री श्री श्रीमान् ज्ञानीय ज्ञानी असाह्य स्व  
दी० अरणा ज्ञायं कृपति सुत देवो वा ज्ञायं असाह्य देव स्वामि विंध्यकारितं प्रतिष्ठितं श्री

( ११० )

संज्ञयनायस्य चतुर्विंशति पट्टः कारापितः श्री नागेन्द्र गच्छे ज्ञ० श्रीगुणरत्न सूरि पट्टे  
आचार्य श्री गुण वर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री जीर्ण दूर्ग वास्तव्य ॥

( 678 )

सं० १६०३ वर्षे चैत्रवदि १३ रवौ उ० टप गोत्रे --- क सा० नरपाल ज्ञा० रंगार्ड पु०  
महिराज सोहराज धनराज श्री महिराज भार्या घनादे पु० घनासुतेन स्वपुण्यार्थं श्री  
पार्श्वनाथ विंशं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री संढेर गच्छे ज्ञ० श्री यशोमद्र सूरि संताने श्री  
शांति सूरिभिः ।

( 679 )

सं० १८२१ व० माह सु० ७ गुरुवासरे श्री जिनविंशं प्र० सा० जीवा जषाजो --- ।

दिगम्बरी पंचायती मन्दिर ।

( 680 )

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख सुदि तेरस गुरौ श्रीमूलसंघे सरस्वति गच्छे बलारकार गण  
महारक श्रीविद्यानंदि गुरुपदेयात् ब्रह्मपदमाकर कारापिता ।

श्री शत्रुञ्जय तीर्थपर टोकौमें पञ्चतीर्थीयों पर ।

साकरचंद प्रेमचन्द टोंक ।

( 681 )

सं० १५०८ वर्षे मार्गशोर्ष वदि २ बुधे श्री दूताड गोत्रे सा० भूना भार्या मोरही  
एतयोः पुत्रेण ज्ञा० नाजिग नान्याः पित्रो पु० श्रीचंद्रप्रत्न विंशं का० प्र० श्री बृहद्र गच्छे  
श्री रत्नप्रत्न सूरि पट्टे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥

( १५१ )

### प्रेमा भाई हेमा भाई टोंक ।

( १५२ )

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ यदि १३ शुभे खानापद ला (१) श्री श्री माव शर्मदाय मा० मेवा  
सुत सा० कर्मण जाया कर्मदादे पुत्र द्य० नमधर जाया पहेंड पुत्र द्य० सहिता द्य०  
सहिता द्य० सिंहदत्त द्य० श्री पति खान्म खेपने मा० सहिसाभेन जाया लमरादे - -  
युतेन श्रीजादिनाथ त्रियं कारितं प्रतिष्ठितरथ पुहुनवा पकी या ही पश्य खान  
सूरिभिः ॥ श्री ॥

### प्रेमचन्द्र मोदी टोंक ।

( १५३ )

सं० १३६८ वर्षे श० जगधर जाया दसठ पुत्र श्रीवनेन जाया सहजद सहदेव - - श्री  
श्रीशांतिनाथ त्रियं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीगुनचद्र नूरि गिष्ये या श्रीमदेव नूरिभिः ।

( १५४ )

सं० १३७८ प्राग्वाट खानीय द० बयजददेव सुदिनाया भादृष्ट - - महापारि श्री  
पद्मदेव नूरि - - श्री सिद्ध नूरिभिः ।

( १५५ )

सं० १८८१ वर्षे शीत्र सुदि ६ पार रति दिने श्री दृष्ट्यासय गपते - - श्री मागी भद्र मा०  
जाया मा० भाणदपद कुपरला - जाया जाई दाहीदिन श्रीगुनकिनाथानी शिष्य लमरादे  
श्री खानद खान नूरिभिः प्रतिष्ठितं सुख ही पश्यु ।

( १६२ )

( 686 )

सं० १३१४ वै० सु० ३ --- विंशं का० श्री चन्द्र सूरिभिः ।

( 687 )

सं० १३७३ ज्ये० सु० १२ श्री० राणिग मा० लाढी पु० महष सीहेनपिता माता श्री योयं  
श्री महावीर विंशं का० प्र० --- श्री सालिभद्र (?) सूरि श्री मणिभद्र सूरिभिः ।

( 688 )

सं० १३८७ --- श्री आदिनाथ विं० का० प्र० श्री महातिलक सूरिभिः ।

( 689 )

सं० १४४६ वर्षे वै० व० ३ सोमि प्रा० ज्ञा० पितृ घणसीह मातृ हांसलदे श्री यसे सुत  
सादाकेन श्री अजितनाथ विंशं पंचतीर्थी का० प्र० श्री नागेन्द्र गच्छे श्री रत्नप्रभ  
सूरिभिः ॥ छ ॥

( 690 )

सं० १४६३ फा० सु० ९ -- श्रीमाल -- श्री तेजपाल मा० - - - श्री यसे सुत सादाकेन श्री  
आदिनाथ विं० प्र० श्री जयप्रभ सूरिणामुपदेशेन ।

( 691 )

सं० १४८६ वर्षे -- श्रीमाल -- आदिनाथ विंशं प्र० श्री नरसिंह सूरिणामुपदेशेन ।

( १६३ )

( १६४ )

सं० १५११ य० ज्येष्ठ य० ८ तृती उमवाउ ज्ञा० म० पूना ज्ञा० मिनाटे सु० श्रीमन्महा  
हाही तयो श्रेयोमे ज्ञातु जानुदत्त हीराभ्यां श्री धिमलनाथ विंशं का० पुर्विमागले श्रीम  
पल्लीय जहा० श्री जयचंद्र नृरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥

( १६५ )

सं० १५१८ य० फा० या० १ गुरु श्रीमाठी ज्ञा० म० गोधा ज्ञा० साठ सु० सुवर्ण  
पितृमातृ श्रेयोर्धं श्रीधर्मनाथ विंशं का० प्र० श्रीमन्महागणेश श्री मूर्ति शं० श्री  
श्री धीर नूरिभिः ॥ बलहारि वास्तव्यः ॥ श्री ।

( १६६ )

सं० १६८५ य० वै० सु० १५ दिने ज्ञात्रि रा० पुजा का० --- श्री मन्मिताथ विंशं श्री  
विजयदेव नूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

( १६७ )

सं० १७७८ य० --- श्रीनुमतिनाथ विं० का० प्र० वि० श्रीधर्मनाथ नूरिभिः  
पिप्पलमण्डे ।

सेठ बालदा साई टोंक ।

( १६८ )

सं० १७२५ य० फा० सु० १५ दिने श्रीनुमतिनाथ विं० का० प्र० वि० श्रीधर्मनाथ नूरिभिः  
पिप्पलमण्डे ।



( १११ )

म० श्री विमलेंद्र कीर्ति गुरुपदेशात् श्री शान्तिनाथ हूँवड़ ज्ञातीय सा० नाडू भा० ऊँमल  
सु० सा० काहा भा० रामति सु० लपराज भा० अजो भ्रा० जेसंग भा० जसमादे भ्रा०  
गांगेज भा० पदमा सु० श्री राजसचवीर नित्य प्रणमंति श्रीः ।

( 697 )

संवत् १६२८ वर्षे वै० यु० १० युधे श्रीमालज्ञातीय महपेता भा० हासी सुत मूलजी  
भा० अहिबदे केन श्री वासपूज्य विंवं कारापितं श्री तपा श्री होर विजय सुरिभिः प्रति-  
ष्ठितं शुभं भवतु ॥ छ ॥

मोती साह टोंक ।

( 698 )

सं० १५०३ ज्येष्ठ शु० ६ प्राग्वाट स० कापा भार्या हासलदे पुत्र क्ताक्तणेन भार्या  
नागलदे पुत्र मुकुंद नारद भ्रातृ घना श्रेयसे जीयादि कुटुम्ब युतेन निज पितृ श्रेयसे  
श्री नमिनाथ विंवं क० प्र० तपा गच्छे श्री जयचन्द्र सूरि गुरुभिः ।

मूल टोंक ।\*

( 699 )

सं० १६६३ ना मित्ती ज्येष्ठ वदी १२ गुरुवासरे श्रीमकसुदायाद् वास्तव्य ओसवाल  
जातीय वृद्ध शापायां नाहार गोप्रीय सा० खडग सिंहजी तत् पुत्र सा उत्तम अंदजी तत्  
भार्या बीबी मया कुंवर श्री सिद्धाचलीपरि श्री ऋपभदेवजी परी प्राशाद् मध्ये

\* श्री आदिशंकर भगवाणके मूल मंदिरके ऊपर संग्रह कर्ताकी वृद्ध पितामहो साहिबाकी प्रतिष्ठित यह आलेख का लेख है ।  
इस महाम तीर्थके और लेख प्रशस्ति आदि पन्नात प्रकाशित होगा ।



नस्य । विषम तमाङ्ग सारंगपुर नागपुर गागरण नराणका अजयमेरु मंडोर मंडलकर  
 युं दी खाटू खाट सुजानादि नानादुर्ग लीलामात्र ग्रहण प्रमाणित जित काशिरवाभि-  
 मानस्य । निज भुजोर्जित समुपार्जितानेक प्रद्व गजेन्द्रस्य । म्लेच्छ महीपाल व्याल  
 चक्रवाल विदलन विहंगमेन्द्रस्य । प्रचंड दोर्दंड खंडिताग्निनिवेश नाना देश नरेश  
 प्राल माला लालित पादारावन्दस्य । अस्खलित ललित लक्ष्मी विभास गोविन्दस्य ।  
 कुनय गहन दहन दधानलायमान प्रताप व्याप पलायमान सकल बलूस प्रतिकूल  
 दमाप श्वापद वृन्दस्य । प्रबल पराक्रमाकांत दिल्लीमंडल गूर्जरप्रा सुरप्राण दत्तातपसु  
 प्रथित हिन्दु सुरप्राण विरुदस्य सुवर्ण सत्रागारस्य पददर्शन धर्माधारस्य चतुरंगवाहिनी  
 वाहिनी पारावारस्य कीर्त्तिधर्म प्रजापालन सत्रादि गुण क्रियमान श्रीराम युधिष्ठिरादि  
 नरेश्वरानुकारस्य राणा श्री कुंभकर्ण सर्वार्थीपतिसार्वभौमस्य ११ विजयमान राज्ये  
 तस्य प्रासद पात्रेण विनय विवेक धैर्योदार्य शुभ कर्म निर्मल शीलान्यद्रुत गुणमणिमया  
 भरणप्रासुर गात्रेण श्री मदहम्मद सुरप्राण दत्त फुरमाण साधु श्रीगुणराज संघ पति  
 साहस्य कृताश्चर्यकारि देवालयाडंबर पुरःसर श्री शत्रुंजयादि तीर्थ यात्रेण । अजा  
 हरी पिंढर घाटक सालेरादि बहुस्यान नवीन जैनविहार जीर्णोद्धार पद स्थापना  
 विषम समय सत्रागार नाना प्रकार परोपकार श्री संघ सत्काराद्य गण्य पुण्य महायं  
 क्रयाणक पूर्यमाण भ्रवार्णव तारण क्षम मनुष्य जन्म यान पात्रेण प्राग्वाट वंशावतंस  
 सं० सागर ( मांगण ) सुत सं० कुरपाल ज्ञा० कामलदे पुत्र परमार्हत धरणाकेन उषेष्ट  
 ध्रातृ सं० रत्ना ज्ञा० रत्नादे पुत्र सं० लापा म(स)जा सोना सालिग स्व ज्ञा० सं० धारल  
 दे पुत्र जज्ञा जावडानि प्रबर्द्धमान संतान युतेन राणपुर नगरे राणा श्री कुंभकर्ण  
 नरेन्द्रेण स्वनाम्ना निवेशिते तदीय सुप्रसादादेशतस्त्रै लोक्वदीपकाग्निधानः श्री  
 चतुर्मुख युगादीश्वर विहार कारितः प्रतिष्ठितः श्रीवृहत्तपा गच्छे श्रीजगन्नाथ सूरि  
 श्रीदेवेन्द्रसूरि संताने श्रीमत् श्रीदेवसुन्दर सूरि पट्ट प्रभाकर परम गुरु मुनिहित पुरंदर  
 गच्छाधिराज श्रीसोमसुन्दर सूरिभिः ॥ कृतमिदं च सूत्रधार देवाकरस्य अयं च श्रीचतुर्मुख  
 विहारः जार्धद्राके नदाताद् ॥ शुभं भवतु ॥

( १६७ )

## पापाण और धातुओंके मूर्त्ति पर।

( 701 )

सं० ११८५ चैत्र सुदि १३ श्री ब्रह्माण गच्छे श्री यशोभद्र सूरिनिः—ल शयनि देव  
सरण सुत श्रीशके—श्री गुह - - कारिता ।

( 702 )

संवत् १२९० वर्षे माघ सुदि ५ सुक्रे श्री० बटपाठ श्री० जगदेवाम्बां श्रीशैल्ये पुत्र  
सामदेवेन ज्ञातृ पून सिंह समेतेन चतुर्विंशति पद कारितः प्रतिपठतं श्राद्धगर्वादीनिः  
श्री शान्ति प्रज्ञ सूरिनिः ।

( 703 )

संवत् १४९९ वर्षे सा० साजण ज्ञार्या सिरिजादे पुत्र चांपाजेन ज्ञार्या चापठ  
देव्यादि फुटुम्ब युतेन जनागत चतुर्विंशत्यां श्री समाधि विंश का० प्र० तथा श्री सोम  
सुन्दर सूरिनिः ।

( 704 )

संवत् १५०१ ज्ये० सुदि १० प्रारघाट व्य० करणा सुत रामाजेन ज्ञार्या श्रीशक्ति सुतेन  
श्री क सुमतिनाथ विंश कारितं प्र० तथा श्री सोमसुन्दर शिष्य श्री सुनि सुन्दर सूरिनिः ।

( १६८ )

( 705 )

## शत्रुजयके नवसैके निचे ।

॥ ॐ ॥ सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १० ऊकेश वंशे स० भीला भा० देवल सुत सं० घमा  
सं० केरुहा भा० हेमादे पुत्र स० तोरुहा पांगां मोरुहा कोरुहा जारुहा सारुहादिभिः  
सकुटुंबैः स्वश्रेयसे श्री राणपुर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधान श्री युगादि देव  
प्रासादे --- घन्त -- महातीर्थ शत्रुजय श्री गिरनार तीर्थ द्वय पट्टिका कारिता प्रति-  
ष्ठिता श्री सूरि पुरंदरैः ॥ तीर्थनामुत्तमतीर्थ नागानामुत्तमा नगः । क्षेत्राणामुत्तमं  
क्षेत्रं सिद्धादिः श्री जिं --- मं ॥ १ श्री रुसुपूजकस्य --- ।

( 106 )

संवत् १५३५ वर्षे फाल्गुन सुदि— दिने श्री उसवशे मंहोरा गोत्रे सा० लाघा पुत्र  
सा० गीरपाल भा० नेमलादे पुत्र सा० गयणाकेन भा० मोतादे प्रमुख युतेन माता  
विमलादे पुण्याय श्रीचतुर्मुख देव कुलिका कारिता ॥

( 707 )

॥ ॐ ॥ सं० १५५१ वर्षे माघ यदि २ सोमे श्री मंडपावल वास्तव्य श्री उग्र वंश  
शंगार सा० धर्मसुत सा० नरसिंग भा० मनकू कुक्षि संभूत सा० नरदेव भायां सोनाइ  
पुत्ररत्न सा० संग्रामेन कायोत्सर्गस्य श्री आदिनाथ त्रिंशं कारित । प्र० वृ० तपा श्री  
उदयसागर सूरिभिः स्थापित श्री चतुर्मुख प्रासादे परम विहारे ॥ श्री ॥

( १६६ )

## सहस्रकूट पर ।

( ७०६ )

सं० १५५१ व० वैशाख यदि ११ सोमे से० जावि भा० जिसमादे पु० गुणराज भा०  
सुगणादे पु० जगमाल भा० श्री चच्छ करावित ( उत्तर तर्फ ) वा० मांगदि नागरदास वा०  
खाडापति श्री मूजा कारापिता धा० नीत्तवि० रामा० भा० कम --- ।

( ७०७ )

संवत् १५५२ व० मिगशर सुदि ८ गुरु दिने श्री पाटण वास्तव्य श्री उम वन भा० गणपति  
व० धणपति भा० चांपाई जाई मं० हरपा भा० कीकी पु० मं० गुणराज मं० मिहपाई ॥  
करायत ॥

( ७१० )

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्वभक्ततीर्थ वास्तव्य श्री उम वन भा० गणपति  
भा० गंगादे सु० सा० हराज भा० धरमादे सु० सा० रत्नसीयेन भा० कपूरा प्रमु० पदुप  
युतेन राणपुर मंहन श्री चतुर्मुख प्रासादे देव कुलिका का --- श्री उमपाट गणपति श्री  
देव नाथ सूरिजिः ।

( ७११ )

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्वभक्ततीर्थ वास्तव्य श्री उम वन भा० गणपति  
भा० गंगादे सु० सा० हराज भा० धरमादे सु० सा० रत्नसीयेन भा० कपूरा प्रमु० पदुप  
युतेन राणपुर मंहन श्री चतुर्मुख प्रासादे देव कुलिका का --- श्री उमपाट गणपति श्री  
देव नाथ सूरिजिः ।

स्वश्रेयसे श्री राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासाद देव कुलिका कारिता श्री चतुर्मुख  
प्रासादे श्री उदय सागर सूरि श्री — प्ति सागर सूरिणामुपदेशेन ।

( 712 )

संवत् १५८— वर्षे माघ सुदि १० उक्तेषु वंशे छाजहड़ गोत्रे सा० साध पुत्र सा०  
उमला मातृ पुण्याय श्री धम्मनाथ का० प्र० श्री जिन सा --- सूरिभिः ।

पूर्व सभामण्डपके स्वभे पर ।

( 713 )

॥ॐ॥सं १६११ वर्षे वैशाख शुदि १३ दिने पात साह श्री अक्षर प्रदत्त जगद्गुरु  
विरुद धारक परम गुरु तथा गच्छाधिराज प्रदरक श्री ६ हीर विजय सूरिणामुपदेशेन  
श्री राणपुर नगरे चतुर्मुख श्री धरण विहार श्री महम्मदावाद नगर निकट वर्यु समापुर  
वास्तव्य प्राग्याट ज्ञातीय सा० रायमल भार्या वरजू भार्या सुरूपदे तत्पुत्र स्वता सा०  
नायकाभ्यां भावरघादि कुटुंब युताभ्यां पूर्व दिग् प्रतोल्या मेघनादाभिधो मंडपः  
कारितः स्व श्रेयोर्षे ॥ सूत्रधार समल मंडप रिचनाद विरचितः ॥

दूसरे आंगनमें ।

( 714 )

॥ ॐ ॥ संवत् १६२७ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्रपक्षा पंचम्यां त्रिती गुरुवासरे श्री तथा  
गरछाधिराज पातसाह श्री अक्षरप्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक प्रदरक श्री श्री श्री ५  
हीर विजय सूरिणामुपदेशेन चतुर्मुख श्री धरण विहारे प्राग्याट ज्ञातीय सुश्रावक सा०

( १७१ )

स्वेता नायकेन वट्टा पुत्र यशवंतादि कुटुम्बयुतेन अष्टाक्षरप्रारिणत् ( १८ ) प्रमाणानि  
सुयर्ण नाणकानि मुक्तानि पूर्व दिक्कसस्क प्रतीली निमित्तमिति धी अहमदादाद पार्या  
उसमा पुरतः ॥ श्रीरस्तु ॥

( १७२ )

नमः सिद्ध धी गणेशाय प्रसादात् । संवत् १७२८ वर्षे भाद्रे १७२७ वर्षे नामे जेठ  
सुदि ११ सोम जावर नगरे काठुड गोत्रे दीवी श्री नूजा प्रार्या कथनादे सुत गोप्यदास  
प्रार्या गम्भीरदे अमोलिकादे सुत रणछोड हरीदास प्रतिष्ठित धी नंदेरगण्टे जहारक  
श्री देवसुंदर सूरि प्रतिष्ठित उपाध्याय श्री—न सुंदरजी घेला रतनधी

( १७३ )

सं० १७२८ मा० संहैरगच्छे उ० धी जनसुंदर सूरि घेला रतन राजकपूर नशानगर  
श्रीलोक्य दीपकाग्निधाने --- ।

( १७४ )

संवत् १८०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरी दिने पूज्य परमपूज्य जहारक धी श्री कहु  
सूरिभिः गण २१ सहिता यात्रा सफली कृता धी कवट गच्छे छिः धं० गिजसुंदर  
मुनिना ॥ धी रस्तु ॥

( १७५ )

संवत् १८०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ धी जिनैश्वर्यायां परमन् । धं० गिजसुंदरः  
समागतः ।



( 189 )

## सादडि ।

यह ग्राम रैनपुरसे ३ कोस पर है ।

( 719 )

स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जया मंगलाभ्युदय श्री- अथ श्रीतृ-—विक्रमादित्य समयात्-  
१६७८ वर्ष वैशाख मासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां तिस्रो लामदासार गंगाजल निर्मलायां श्री  
उसवाल ज्ञाती कावेदिया गोत्रे साह श्री जारमल गृहे भार्या बहू श्री मेवाडी --- तत्पुत्र  
साह श्री तारा चंदजी स्वर्गाकृष्टी जातः तत्र बहू श्री तारादे १ बहू श्री अजितवणदे २ बहू  
श्री असदबदे ३ बहू श्री सोजागदे ४ सहगत ---।

## नाकोडा ।

मारवाड़ के मालानी-परगने के नगरके पास पहाड़ोंके बीच यह एक प्राचीन स्थान है ।

( 720 )

संवत् १६२१ --- पार्श्वनाथ जिन चैत्ये चतुष्टिका कारापित श्रावक संघेन ।

( 721 )

-- संवत् १६३८ आशाढ़ सुदि २ गुरुवार --- ।

( 722 )

संवत् १६७२ जादृपद सुदि १२ सोमवार --- राठल श्री मेघराजजी विजय राज्ये ---।

( १५३ )

( १५४ )

संवत् १६६६ आश्विन शुक्र पक्ष त्रिंशत् द्वितीया दिने शुक्रवाकरे वीरमपुर श्री शक्ति-  
नाथ मासाद् भूमि गृहे श्री खरतरगच्छे श्री जिन चंद्र सूरि विजयाधिराज सायाय श्री  
सिंह सुरि राज्ये श्री संवेन लिखितं ।

( १५५ )

### उपाध्याय श्री ५ देवशेखर विजय राज्ये ॥

॥ ॐ ॥ सं० १६ जन्माद् आदि ६७ वर्षे आश्विन शुक्र पक्षे श्री नवमि दिने शुक्रवाकरे  
श्री वीरमपुरवरे श्री पार्श्वनाथ श्री महावीर स्वामी श्री पत्नीमातृ गच्छे अष्टाशित श्री  
यशोदेव सूरि विजय राज्ये राउल श्री तेजसोजी विजय राज्ये कारित श्री संवेन लिखित  
श्री सुनति शेखरेण लिपीकृतं सुत्रधार दामा तत्पुत्र मना भना परजनिन कृतं ॥ अथपुत्र  
सामा मेधा कला पुत्र कल्याण ॥ ज्ञानेज नाक्षण श्री पार्श्वनाथ श्री महावीर सायाय  
शुभं भवतु ---

( १५६ )

संवत् १६६८ वर्षे द्वितीय आश्विन शुक्र ६ शुक्रवाकरे उत्तरा कान्तसुती नक्षत्रे श्री  
तेजसिंहजी राज्ये श्रीतपागच्छे महारक श्री विजय तेन सूरि विजय राज्ये सायाय  
श्री विजयदेव सूरि विजय राज्ये ।

( १५७ )

रवस्ति श्री तथा संमलम्भसुदयवच । संवत् १६७० वर्षे आदि १४४४ वर्षात्पुत्र  
द्वितीय आश्विन शुदि २ दिने रविपारे राज्ये श्री जगन्नाथजी विजय राज्ये श्री पार्श्वनाथ

( १७१ )

गच्छे महारक श्री यशोदेव सूरिजी विजयमाने श्री महावीर चैत्ये श्री संघेन चतुष्पिका  
कारिता श्री नाकोटा पार्वनाथ प्रसादाद् शुभं भवतु । उपाध्याय श्री कनक शंकर  
शिष्य पं० सुमति शंकरेण लिखित श्री छाजइ दीव सेखाजी संघेन कारापिता सूत्र  
धारः ऊजल जातृ क्रांता घडिता भवन कचरा- - ।

छत्रीमें ।

( ७२७ )

॥ ॐ ॥ श्रीमत् श्री जिन मद्र सूरि भृत्याणां युजाप्तोदया । घन्याचार्यपदावदात-  
वदिताः श्री कीर्तिरत्नाद्वया ॥ नम्रा नम्र सरोज रस्मणि विभा प्रीच्छासितां हि द्रुमा ।  
राजा नन्द करा जयंतु विलसत् श्री शंखशालान्वया ॥ - - - - -

वालोतरा ।

श्री शीतलनाथजी का मंदिर  
धातु मूर्तियों पर ।

( ७२८ )

सं० १२३१ ज्येष्ठ सुदि ११ सा० जणदेव आर्या जेउत पुत्र वीरा देवेन मात वाइइ  
वीरदे श्री गार्धमकारि प्र० देव सूरिभिः ।

( १७५ )

( ७२० )

सं० १४०१ वैशाख ४ श्री आदित्य नाग गोत्रे सच० कुलिवारनजा सा० काम पुत्र  
स -- पुत्र श्रेयसे श्री शांति विंश कारितं प्रति० श्री ककु नूरिभिः ।

( ७३७ )

सं० १५०१ वर्षे माघ यदि ६ बुधे उपवेश ज्ञाती आदिपान गोत्रे सा० काम पुत्र  
वीरला नार्या देवा आत्म श्रेयसे श्री श्रेयांस विंश कारितं श्री उवेश गण्डे ककुनामः  
संताने प्रतिष्ठितं श्री कुंकुम सूरिभिः ।

( ७३१ )

सं० १५०४ वैशाख सु० ७ दिने श्री उवेश वंशे सा० लोहा पुत्र सा० नाथ --  
सहितेन स्वपुण्यायं श्री पार्श्व जिन विंश का प्र० श्री खरतर गण्डे श्री जिन भद्र सूरिभिः

( ७३० )

सं० १५०६ वर्षे कार्तिक सु० १३ गुरी उपवेश वंशे बहरा गोत्रे सा० -- -- पुत्र  
हरिपाल नार्या राजलदे पुत्र सा० धरमा नार्या भनाई पुत्र सा० महाशक्तिन स्वपिण  
पुण्यायं श्री वासुपूज्य विंश कारितं । श्री खरतर गण्डे श्री जिनराज सूरि पदं श्री जिन  
भद्र सूरि युगे प्रधान गुरुभिः प्रतिष्ठितः ।

( ७३३ )

सं० १५०६ वर्षे -- उपवेश वंशे बहरा गोत्रे सा० -- -- श्री सुमतिनाथ विंश  
कारिता श्री खरतर गण्डे श्री जिनराज सूरि पदं श्री जिन भद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः ।

( 734 )

( 734 )

सं० १५२५ वर्षे मागं शीर्षं यदि ६ शुक्ले श्री उपकेश ज्ञातीय श्री दूगड गोत्रे मं०  
पनरपास पु० बछराज भा० कम्मी पुत्र सारंग सुदय वरुणाभ्यां पितु पुण्याय श्री कुंघु-  
नाथ विंयं कारिता प्र० श्री रुद्र पहलीय गच्छे श्री देवसुंदर सूरि पट्टे मं० श्री साम  
सुंदर सूरिभिः ।

( 735 )

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने श्री उपकेश वंशे व - रा गोत्रे अन्नयसिंह संताने  
सा० कुता भार्या लपमादे सा० ढाहत्य श्रावकेण भा० पूराई पुत्र मरा जीवा देवादिपुत्रेन  
श्री घर्मनाथ विंयं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे  
श्री जिन समुद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

भावहर्ष गच्छके उपासेरमें केशरिधानाथजी का देरासर ।

( 736 )

॥ ॐ ॥ सं० १०९—वैशाख यदि ५ - - - - प्रतिमा कारितेति ।

( 737 )

सं० १५३३ श्री माल फीफठिया गोत्रे सा० बूहड़ भा० नापाई पुत्र युदाकेन भा० - -  
कुदु येन पुत्रेन श्रीविमलनाथ विंयं का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे श्री पद्मानन्द सूरि श्री - ।

( 738 )

सं० १०१८ सा० रामजा सुत तेजसी श्री आदिनाथ विंयं का० प्र० श्री विजय गच्छे  
वापणा सुमति सागर सूरिभिः आचार्य श्री - - - ।

( १३७ )

वाङ्मैत्र ।

गोपांका उपासना ।

धातुके मूर्तिर्वा पर ।

( १३७ )

सं० १५२७ य० माह शु० १३ उ० सा० सागहा जा० होचलदे पुत्र सा० गुण दर्शन सा०  
गेलमदे पु० तिहणा गोपादि कु० युतेन श्रीसुमतिनाथ विंशं का० प्र० नपागणते श्री मीर  
सुन्दर सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( १३८ )

सं० १५८० वर्षे वैशाख सुदि १३ शुक्ले श्री श्री माण्ड झा० म० होरा सा० गणो सु० म०  
हेमा जा० हमीरदे म० जचाकेन भा० दमी सु० लमरा युतेन स्रष्टेयने श्री सुगिरिनाथ  
विंशे श्री पू० श्री पुण्य रज सूरि पदे श्री सुमति रत्न सूरिणामुपदेशेन कारित प्रतिष्ठित  
विधिना ॥ श्री ॥

यति इंद्रचन्द्रर्जाका उपासना ।

( १३९ )

सं० १५१२ वर्षे वैशाख सुदि ५ श्री श्रीमाण्ड झा० श्री सागहा जा० श्रीजी पुत्र विम-  
दास महाजल युतेन स्रष्टेयसे श्री कुंभुनाथ विंशं का० जागम गणते श्री विम स्रष्टेय  
मुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥

( १४० )

सं० १५१४ मा-शु० - प्राग्वाट झा० सगहाकेन सा० यज्ञ सु० सा० होरा सागिह

( १७८ )

बछादि कुटुंब युतेन पितृभ्य सा० चांपा श्रेयोयं सुमति नाथ विभं कारितं प्र० तथा श्री  
सोम सुन्दर सूरि श्री मुनि सुन्दर सूरि पट्टे श्री रत्न शोखर सूरिभिः ।

बडा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजीका ।

सप्ता मण्डप ।

( 743 )

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥ संवत् १८५६ वर्षे माह सुदि ५ शुक्र पक्ष  
प्रतिपदा त्रितीये सोम वासरे राठउड़ वंशे राउत श्री उदयसिंह श्री वाक् पत्राका  
नगर - - - राज्ये कुपा - श्री त्रां - कीय सहिभिः ॥ श्री विधि पक्ष मुख्याभिधान युग  
प्रधान श्री पता श्री धर्म मूर्ति सूरि जंचल गण्डीय समस्त श्री संघमें शांति श्रेयोयं  
श्री पार्श्वनाथ प्रासाद कारितः ।

पञ्च तीर्थियों पर ।

( 744 )

सं० १८०३ माह यदि ५ शुक्रे श्री उदयपुर नगर वास्तव्य श्री सहस्र कणा पार्श्व-  
नाथजीकी घरिसातांता संघ समस्त श्रीणक बाई श्री शांतिनाथ पञ्च तीर्थ कारापितं  
तथा गण्ठे पं० रूप विजय गण्ठिभिः प्रतिष्ठितं च ।

दुसरा मंदिर ।

( 775 )

संवत् १५२० वर्षे जेष्ठ सुदि १० सोमे श्री श्री माल ज्ञातीय पितामह रा० बस्ता  
पितामही कीरुहणदे सुत पितृ स० पत्रा मातृ राजश्रेयोयं सुत सं० सहसा सागा सहदे

( १७६ )

घरणा एते श्रीजादिनाय सुमयश्चतुर्थिंशति पदः कारितः पुनिस पदं मासु रम्य  
सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठित गंहदि वास्तव्यः ।

( १७७ )

सं० १५२० श्री मूढ संघेन प्रहारक श्री विजय कीर्ति श्री०

सभा मंडप ।

( १७८ )

॥ ॐ ॥ संवत् १६७६ वर्षे माघ शुद्धि १५ रवि आसरे मरुतर गण्ड प्रहारक श्री विजय  
रत्न - - पुष्य नक्षत्रः राजत श्री उद्यसिंहजी विजय विजय राते प्रारभते ॥ श्री  
सुमतिनाथ रत नवयु कीड श्री संघ करायड सूत्रधार पीना पुत्र नदा नवयु श्रीड ।  
सूत्रधार नारयण नट संघ धन ।

( १७९ )

सं० १६२८ वर्षे मद्रपद कृष्णापक्ष ७ बुध - - मरुतर गण्ड प्रहारक श्रीमंगल  
सुर रायतजी श्री याकोदासजा - - । सुहारनिंग विजय राते श्री सुमतिनाथजी-  
शिवगार कीर्धी - - ।

( १८० )

॥ ॐ ॥ संवत् १३५२ वैशाख शुद्धि २ श्री आरक्षसेरी महागण्ड बुध श्री विजय विजय  
देव करमाण विजय राते नन्दिनूत श्री करण श्री श्रीरामेश देवराज १५० विजय प्रहार  
श्रीधर कक्षराजि प्रयत्नति यथा । श्री जादिनाथ राते कविद्वयान श्री विजयसर्वन



क्षेत्रपाल श्रीचण्ड राज देवयो उन्नय मार्गीय समायात सायं उष्ट्र १० वृष २० उन्नया-  
दपि उष्ट्रं सायं प्रति द्वयो देवयोः पाङ्कजा पदे प्रियदश विशोप का. अष्टौर्द्विन यज्ञोत्त-  
व्याः । असौ उगो महाजनेन सामतः ॥ यथोक्तं बहुभिर्बसुधा तुक्ता राजभिः सगरा-  
दिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदाफलं ॥ १ ॥ छ ॥

## मेडता

यह भी मारवाडका एक प्राचीन नगर है ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर—डानियोंका सुहल्ला ।

संवत् १६७७ वर्ष ॥ वैशाख मासे शुक्र पक्षे तृतीयाया तिथी शनि रोहिणी योगे  
श्री मेडता नगर वास्तव्य श्री माल ज्ञातीय पाताणी गोत्रीय सं भोजा भायां प्रोजलदे  
पुत्रेण संघपति पेतसोकेन स्व० ज्ञा० चतुरंगदे पुत्र हुंगसी प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्री य  
से स्वकारित रंगदुत्तंग शिखर बट्ट श्री ऋषभदेव विहार मंडन सचरिकर श्री आदिनाथ  
वियं कारितं प्रतिष्ठापितं च प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च तपागच्छे श्रीमदकटवर सुरभ्राण  
प्रदत्त - - - क श्री शत्रुंजयादि कर मोचक जहारक श्री हीर विजय सूरि राज पद्मोदय  
पद्यंत सहस्र किरण यमान युग प्रधान जहारक श्री विजयसेन सूरिखर पट्ट प्रभाकर श्री  
श्री मद्रु जाङ्गगीर साहि प्रदत्त श्री महात्तपा विरुद्धारक श्री महावीर तीर्थकर प्रतिष्ठित  
श्री सुधम्म स्वामि पट्टधर - - सुविहित सूरि सप्ता शंगार जहारक श्री विजय देव  
सूरिभिः ।

( १५१ )

## सर्व धानुकी मूर्तियों पर ।

( १५१ )

सं० १५३१ वर्षे आपाड़ सुदि २ गुरी जंढारी गोत्रे सा० धानुका संताने स० मायरा  
भार्या सुहदे पुत्र स० अस्का भार्या छपमादे ज्ञातु सांपाचने श्री कृष्णनाथ विष्णु काशिक  
श्रियसे प्रति० सुंदरग मच्छे श्रीहरि नूरि पहे श्री शांति नूरिलिः ।

## तपगच्छका उपासना ।

( १५२ )

सं० १६५३ वर्षे श्री० सु० १ श्री कृष्णनाथ विष्णु नांदि गोत्रे श्री -- स० सुभाषण भाग  
सवीरदे पुत्र सादूल --- श्री तपगच्छे श्री विजयमेन नूरि --- श्री विष्णु सुंदर मूर्ति  
प्रतिष्ठितं ।

## श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

( १५३ )

सं० १५२५ वर्षे का० चदि १३ श्री माछी श्री० सुभया ज्ञा० जर्मिलि पु० श्री० सु० भाग  
प्र० काका ज्ञा० फाटं पुत्री लापू नाम्ना पु० सांगा ज्ञा० भार्या श्री सुदरग सुभया श्री  
शांति विष्णु का० तप श्री होम सुन्दर नूरि --- ।

( १५४ )

सं० १६७७ वर्षे जलप कर्त्तव्या दिने शक्ति शक्तिणी श्रीने संदलः नगर नगरनगर श्री

( १८२ )

छाया मा० सरूपदे नाम्ना श्री मुनि सुत्रत विंश कारितं प्रतिष्ठितं महारक श्री विजय-  
सेन मुरीश्वर पट्ट प्रभाकर जिहांगीर महातपा विरुद्द विसयात युग प्रधान समान  
सकल सुविहित सूरि सभा शृंगार महारक श्री ५ श्री विजय देव सूरि राजेंद्रैः ।

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर ।

( ७५५ )

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ अदि १३ बुध प्राग्व्याट झा० श्री० आसधर भार्या गामी सुत  
मदन दमा जिनदास गीया पुत्र पीत्रादि सहितेन जात्म श्रीयार्थ श्री श्री शांतिनाथ  
विंश कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा गच्छे श्री जिनरत्न सूरिभिः ।

( ७५६ )

सं० १६८७ व० ज्येष्ठ सुदि १३ गुरी स० जसवंत मा० जसवंत दे पु० अश्लदास  
केन श्री विजय चिन्तामणि पार्श्वनाथ विंश का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

श्री धर्मनाथजी का मंदिर ।

( ७५७ )

सं० १७५० वर्षे फाल्गुन सुदि १० बुधे उ० गुमालिया गोत्रे सा० श्रीरा प० सोडाकेन  
श्री आदिनाथ विंश स्व श्रेयसार्थे संदर गच्छे प्रतिष्ठा श्री शांति सूरिभिः ।

( ७५८ )

सं० १७६८ वर्षे माघ सुदि ६ रवी उद्वेश झा० टप गोत्रे सा० ललना मा० ललनादे  
पुत्र लयमा भार्या लालनदे पुत्र दीलदा भार्या श्रीलक्ष्मणदे पुत्र घडसी सकुटुम्बेन श्री

( १८३ )

वासपूज्य विंशं कारापितं श्री संहर गच्छे श्री यशोवद्र नूरि नैतानि प्र० श्री मन्मथि  
सूरिभिः ।

( १८४ )

सं० १५१५ वर्षे ज्ञाप्याद् यदि १ दिने श्री उमेश प्रभो पण्ड गोत्रे सा० मातुं  
जाया सुहृदादे पुत्र सं० पासा श्रावकेण भार्या रूपादे पुत्र पुत्रा प्रमथा शरिषार पुत्र  
श्रीशांतिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अरतर नन्दे श्री जिन मद्र नूरिभिः ।

( १८५ )

सं० १५१७ वर्षे माह सुदि १० सोमि सोनी गोत्रे सा० प्रमथा पुत्र सा० हिमवात  
पुत्राभ्यां सा० देवराज गिरमराजाभ्यां स्वपितृ पुण्याय श्री शोभाय विंशं कारितं प्रति-  
ष्ठित तपागच्छ महारक श्री हेम हंस पदे श्री हेम नन्द नूरिभिः ।

( १८६ )

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० १३ रवी शोनाल दी० गिषा जामां हीरी सुत दी० भांडीया  
केन सा० सलपू सु० दी० दासा नंना कण्ठी गांगा पीठ कमल मीक भार्या दासा दासा  
प्र० कुटुंबयुतेन श्री शिखर विंशं कारितं श्री मपूकरा अरतर - - - ।

( १८७ )

सं० १५५६ वर्षे वैश सु० ७ सोम प्राग्जात द्वातीय सा० सां १५ दस जामां सलपू  
पुत्र छोला सा० सोमा भा० प्रतलदे - - - सलपू नन्दयुतेन जामा पु० श्री सद्रमर श्यायिन  
विंशं सा० जाल नन्दे श्री विद्याय सागर नूरि विद्यायानि सा० जाल पदेन श्रीसा-  
मुपदेशेन प्रतिष्ठित शिखरेन - - - ।

( १८२ )

( ७६३ )

सं० १५६८ वर्षे माघ सुदि ५ दिन श्री माल वंशे भांडिया गोत्रे सा० साहा पुत्र सा०  
भरहा सुत सा० नरपाल भा० नामल द्वै स्वपुण्यार्थे श्री श्री श्री श्रेयांस विंश कारित  
प्रतिष्ठितं श्री जिन हंस सुरभिः स्वरत्तर गच्छे ।

( ७६४ )

सं० १५७२ वर्षे वैशाख सु० २ सोमवारे पट थड गोत्रे सा० सा - र - - - श्री वसे  
श्री आदिनाथ विंश कारापितं श्री प्रभाकर गच्छे ऋट० पुण्यकीर्ति सुरि पट्टे ऋहा० श्री  
लक्ष्मीसागर सुरि प्रतिष्ठितं ।

( ७६५ )

सं० १५८१ वर्षे श्री विक्रम नगरे उकेश वंशे वादि-रा गोत्रे सा० तेमंजउ सा० जीवाव  
श्रावकेण भार्या नीवदे पुत्र जेवा काजी तालहण पंथायण भारमल सांदा नरसिंह संहितेन  
श्री श्रेयांस विंश कारित - - ।

( ७६६ )

सं० १८८३ माघ व सु० ५ - - पार्श्वनाथ विंश श्री विजय जिनैन्द्र सुरि - - ।

श्री आदिश्वरजी का नवा मंदिर ।

( ७६७ )

सं० १५०७ वर्षे फा० व० ३ बुधे । ओश वंशे वहरा हीरा भा० हीरादे पु० व० चेता

( १५७ )

भा० पैतलदे पु० व० द्वियति पितृ श्रेयोने श्री गंगिनाथ विजे कारिण श्री मन्मथ मन्मथ  
श्री जिनभद्र सूरि श्री जिन सागर नूरिभिः प्रतिष्ठिता ॥

( १५८ )

सं० १५२७ वर्षे वैशाख अदि ३ शुक्र श्री माळ ज्ञातीय पितामहयोग पितामही योगेश  
सुत पितृ दाहा मातृ जानू श्रेयोने सुत राजा प्रोज ठापुर ना एते दो विमलनाथ  
मुख्य चतुर्विंशति प्रहः कारितः श्री पूणिमा पक्षे श्री सापूरक सूरि पदो श्री सागर सुंदर  
सूरीणामुपदेशेन प्रति० विधिना श्री संवेन जांधरणि वास्तव्यः ।

( १५९ )

संवत् १५७६ वर्षे माघ सुदि १३ दिने बुध वानरे स्तमन सोपे धामी उज्जैन प्राचीय  
सा० पातल भा० पातलदे पुत्र सा जहता भार्या कते पुत्र सा० सीता सतिजा भा० सुदी १०  
पुत्र सा० पढलिक भा० कमला पुत्र सा० जीराकेन भा० पुनी पितामह सा० सोना पाप  
विजा कुटुंब सुतेन पितृ वचनान् स्वसंतान श्रेयोने श्री सुनीगिनाथ विजे कारिण प्रति  
तपागच्छे श्री नाम सुन्दर सूरि संताने श्री सुमति सापू सु० पदो श्री देव विमल  
सूरिभिः महोपाध्याय श्री अनंत हेस गणि प्रः परिवार परिपूर्णा ।

( १६० )

संवत् १६११ वर्षे शुक्ल अक्षर मघे श्री जिन नार्णवसूरि विजय भादे श्री मन्मथ  
ज्ञातीय पापल गोत्रे ठापुर रावण तसुत्र उज्जैनमल वृद्धागे मयली ठापुर श्रीगणेशेन  
श्री पाशर्वनाथ परिव्रह कारापिते - - धर्म सुंदर गणिना प्रतिष्ठित सुत जयसु ।

सं० ११७७ ज्येष्ठ वदि ५ गुरी ओसवाल ज्ञातीय गणधर चोपडा गोत्रीय सं० नामा  
 भार्या नयणादे पुत्र संग्राम भार्या तोली पु० माला भार्या मालहणदे पु० देका प्रा० देबलदे  
 पु० कचरा भार्या कउडमदे चतुरंगदे पुत्र अमरसी भार्या अमरादे पुत्र रत्नसेन श्री  
 अयुंदाचल श्री विमलाचलादि प्रधान तीर्थ यात्रादि सदुर्म कर्म करण सम्प्राप्त  
 संघपति तिलकेन श्री आस करणेन पितृव्य चांपसी भ्रातृ अमीपाल कपूरचंद स्वपुत्र  
 अप्पदास सूरदास भ्रातृव्य गरीबदास प्रमुख सस्त्रीक परिवारेण संकरुप जी कारित  
 शत्रुजवाष्टमोद्धारमध्य स्वयं कारित नगर विहार शृंगार हार श्री आदिश्वर विंश  
 कारित पितामह यचनेन प्रपितामह पुत्र मेघा कोक्ता रताना समुख पूर्वज नाम्ना  
 प्रतिष्ठित श्री बृहत्स्वरतर गच्छाधीश्वर साधूपद्रवधारक प्रतियोधित साहि श्रीमदक-  
 थर प्रदत्त युगप्रधान पद धारक श्रीजिन चन्द्र सूरि जहांगीर साहि प्रदत्त युगप्रधान  
 पदधारक श्री जिन सिद्ध सूरि पट्ट पूर्याचल सहस्र करावतार प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजया-  
 ष्टमोद्धार श्री ज्ञानघट नगर श्री शांतिनाथादि विंश प्रतिष्ठा समयनि—रत्सुधार श्री  
 पार्श्व प्रतिहार सकल प्रहारक चक्रवर्ति श्री जिनराज सूरि शिरः शृंगार सार मुकुटो-  
 पमान प्रधानैः ।

सं० १७०० य० द्वि० चै० सित ८ गुरी गोलकुंडा वा० सा० मेघा प्रा० मीहणदे सुत  
 सा० नानजी नाम्ना श्री मुनि सुव्रत विंश का० प्रतिष्ठित तपाधिपति परम गुरु प्रहारक  
 श्री विजय सेन सूरि पट्टालद्वार पतिस्याहि श्री जहांगीर प्रदत्त महातप विरुध धारि श्री  
 विजयदेव सूरिभिः ।

( १८७ )

## चिंतामणि पार्व्यनाथजीका मंदिर ।

( १७३ )

सं० १६६८ वर्ष माघ सुदि ५ शुक्रवारे महाराजा पिराज महाराज श्री गुरु सिंह महाराज राज्ये श्री उपकेशि ज्ञातीय एंडा नोत्रे सं० दादा तत्पुत्र सं० राम मण्डल भायां संतडे तत्पुत्र सं० लापाकेन भायां लाडिमदे पुत्र ॥ वस्तुपाठ गहिनेन श्री पार्व्यनाथजीक ज्ञातिय प्रतिष्ठित श्रीमत श्रीगृहस्वरत्तर गण्डे श्री ज्ञातियक्षीप श्री जिन सिंह गुरु महाराजायादि मातंड श्री जिन चंद्र सूरिसिः ॥ शुभंभवतु ॥

## पंचतीर्थियों पर ।

( १७४ )

सं० १९७१ वर्षे माघ सु० १२ बुध दिने ज्येश्ठ पंचमे वापसा गीर्ण वा० नोत्रे सं० दाद भा० - - ण पितृ - - निमित्तं श्री गतिनाथ विंधं वा० प्र० तपुमण्डले श्री देव गुरु सूरिसिः ।

( १७५ )

सं० १५१० ज्येष्ठ सु० ३ दिने प्राग्वाट पोपठिया पानिया श्रीरा भा० श्रीरा भा० भा० लुंगर आतु सा० लोचि महारा नमरदे पारवती भायां लाडिम मण्डल भायां भायां बुधुन्ध पुतेन श्री सुनि सुमत ५ विंधं वा० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर गुरु श्री सुनिपुत्र गुरु सूरि पडे श्री रामदेवर सूरिसिः ।



( १८८ )

( १७० )

सं० १५२६ वर्षे माघ यदि ५ रवी ऊकेश ज्ञातीय श्री दणवट गोत्रे सा० श्रीम भा०  
प्ररमादे पु० - - - दि कुटुम्ब युतेन श्री कुंघुनाथ विंशं का० प्र० श्री धर्मघोष गण्डे श्री  
प्रज्ञ शेखर सूरि पद्वे श्री पद्मानन्द सूरिभिः ।

( १७७ )

सं० १५३२ ज्येष्ठ सुदि १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० मही श्री भा० राणी सुत होर  
भा० प्ररमी नाम्न्या स्व श्रेयार्थं श्री सुविधिनाथ विंशं का० प्र० तथा श्री रत्न शिखर  
सूरि पट्टालकरण श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

( १७८ )

सं० १५२७ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे श्री काण्टा - - - प्र० श्री सोम कीर्ति आ०  
श्री विमलसेन नारसिंह ज्ञातीय श्रीरटेच गोत्रे सा० पेट्टेया भा० खेड पुत्र सा० श्रीमा  
जा० प्रदी श्री आदि - - कारापितं नित्यं प्रणमति ।

( १७९ )

सं० १५५२ वर्षे माघ सु० ५ प्रा० ज्ञा० सा० पुंजा ज्ञायो रमक पुत्र - सोमकेन भा०  
गौरी पुत्र सा० इषादि कुटुम्ब युतेन श्री आदिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं तथा गण्डे  
श्री सोमसुन्दर सूरिभिः श्री इन्द्रनन्दि सूरि श्री कमल कलस सूरिभिः ।

( १८० )

सं० १६५६ वर्षे वैशाख मासे सित ३ दिने रविवारे ऊकेश यगे लोदा गोत्र संघवी  
टाहा ज्ञायो तेजलदे पुत्र सा० रायमल्ल ज्ञायो रंगदे पुत्र सं० जयवन्त श्रीमराज तयो

( १८० )

श्रीगिनी सुश्रायिका घोरा नाम्ना स्वध्वेयमे श्री अजित नाथ विष्णु कारिण प्रतिष्ठित  
श्री चतुर्विंशति जिन विष्णु प्रतिष्ठित श्री वृद्धरत्नरत्न मण्डे श्री जिन देव सुरि तत्पुत्र  
श्री जिनहंस सुरि तरपट्टाल्लार विजयमान श्रीजिनचंद्र सुरिमि मन्त्र देवत पुत्रमान  
आचन्द्रार्कं नन्दताव शुभं प्रयतु ॥

### कडलार्जी का मंदिर ।

( १८१ )

संवत् १६८२ वर्षे माघ शुद्धि १० सोमे तय हरपा ज्ञा० श्रीरा दे तत् पु० संघर्षी जम-  
घंत ज्ञा० जसवंत दे तत्पुत्र सं० अचलदानसं० ग्रामकरण कारित प्रतिष्ठित तत्पुत्र  
महारिक श्री विजय चंद्र सुरिमिः ।

### महावीरजी का मंदिर ।

( १८२ )

सं० १६५३ वर्षे वै० शु० १ पुष्ये श्री मांतिनाथ विष्णु माद्रीजा मोरे सं० सुभाष  
ज्ञा० हर्षमदे पु० न० हांसा ज्ञा० लालमदे पु० पद्मसो कारिण प्रतिष्ठित श्री मयागवदे  
श्री हीर विजय सुरि पहे श्री विजयसेन सुरिमिः ॥ सं० विजय सुन्दर मणिः प्रणमोत्तु ॥  
श्री रत्नु ॥

( १८३ )

॥ ॐ ॥ संवत् १६८६ वर्षे वैशाख शु० ८ महावत सं० राजमिह विजयमान राज  
श्री मेरुता नगर वास्तव्य श्रीकथाए तारीय सुराया मोरे माई पुत्र नाम्ना पु० शुभ-

( १६० )

मंणादि सपरिवार - श्री सुमतिनाय विंशं कारित प्रतिष्ठित तथा गण्ठाधिराज महारक  
श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिताचार्य श्री श्री श्री श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख  
परिकर परिकृतैः ॥

( 784 )

संवत् १६७७ वर्षे वैशाख मासे अक्षय तृतीया दिवसे श्री मेहता वास्तव्य उ० ज्ञा०  
समदडिआ गोत्रीय सा० माना प्रा० महिमादे पुत्र सा० रामाकेन भ्रातृ राय संगण्ठात  
प्रा० केशरटे पुत्र जहंतसी उपमीदास प्रमुख कुटुंब युतेन श्री मुनि सुव्रत विंशं का०  
प्र० तथा गच्छे महारक श्री पं श्री विजय सेन सूरि पहाडद्वार प्र० श्री विजय देव  
सूरि सिंहैः ।

( 715 )

सं० १६७७ ज्येष्ठ अदि ५ गुरी श्री ओसलवाठ ज्ञातीय गणधर श्रीपद्मा गोत्रीय स०  
कक्षरा भार्या कडडिमदे चतुरंगदे पुत्र स० जमरसी प्रा० जमराटे पुत्ररत्न स० अमी-  
पालेन पितृव्य चांपसी वृद्ध भ्रातृ स० आसकरण लघु भ्रातृ कपूरचन्द स्वभार्या अपूर  
वदे पु० गरीयदासादि परिवारेण श्री अजितनाय वि० का० प्र० वृ० खरतर गण्ठा-  
धीश्वर श्री जिनराज सूरि सूरिचक्रवर्ति ॥

( 786 )

पट्ट प्रजाकरै श्री अकबर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद प्रवरै प्रति वर्षांपाद्रीया  
प्टाहिकादि धामोसिका अमारि प्रवर्तकैः श्री-तं तीर्थोदधि मीनादि जीव रत्नकैः श्री  
शत्रुंजयादि तीर्थंकर मोक्षकैः । सर्वत्र गोरक्षा कारकैः पंचनदी पीर साधकैः युग प्रधान  
श्री जिन चन्द्र सूरिभिः आचार्य श्री जिन सिंह सूरि श्री समय राजोपाध्याय ॥ या०  
हंस प्रमोद वा० समय सुन्दर वा० पुण्य प्रधानादि साधु युतैः ।

संभत १६७५ ज्येष्ठ यदि ५ गुरुवार पातसाहि श्री जिहांगीर जिलय मध्ये साहित्यशा  
साहिजहां राज्ये जांशयाल ज्ञातीय गणधरचोपहा गोपीय स० नामा नामो मयसादे  
पुत्र संग्राम ज्ञा० तोली पु० माछा ज्ञा० माछणदे पु० देका ज्ञा० देवदे पु० ज्ञा० ज्ञा०  
कडदिमदे पु० अमरसी--ज्ञा० अमरादे पुत्ररत्न संग्राम या अर्धुदाणत विमसाणा  
संघपति तिलक कारित युग प्रधान श्री जिन सिंह सूरि पट्ट मंडि महोदय विविध  
धर्म कर्तव्य विधायक स० ज्ञास करणेन पितृव्य पांपती ज्ञात् असीवात कपुरखंड  
खभाया अजाडयदे पु० ऋषभदास सूर दात आतृय मदीयदासादि मार परिवारेत  
श्रीयोर्थं स्वयं कारित मर्माणीमय विहार शृंगारक श्री शांतिनाथ विरि कारित प्रति-  
ष्ठित श्री महायोरेव - - - परंपरायत श्री बृहत्नगरतर गणेशविष श्रीजिन मंड सूरि  
संतानीय प्रतिशोधित साहि श्री मदकधर प्रदत्त युग प्रधान पदवीधर श्री जिन मंड  
सूरि विहित कवित कारमीर विहार द्वार सिंदूर गजजंजा विविध देगान्नादि प्रभाषक  
जहांगीर साहि प्रदत्त युग प्रधान पट्ट साधक श्रीजिनसिंह सूरि पराजं म पदवी श्री  
अन्धिका दर प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजयाष्टमोद्वार प्रदक्षित ज्ञात प्रहमलय प्रतिष्ठित श्री  
पाश्र्व प्रतिमा पीयूष वर्षण प्रजाप योहित्य वंशमपहन धर्मसी पाश्र्वदे मन्दर इत्यादि  
चक्रवर्ति श्री राजनराज सूरि दिन करे ॥ आचार्य श्री जिन नामर सूरि प्रभूति वीर  
राजै ॥ सुप्रधार नुजा । प्रतिष्ठित अहारक प्रभु श्री जिन राज सूरि पुत्रदे । या मंदरा  
नगर मध्ये ।

## ओसियां ।

ओसियां एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है, विशेषकर ओसवालोंके लिये यह तीर्थ रूप है । यहां पर बहुतसे प्राचीन कीर्ति चिन्ह विद्यमान है । शासन नायक श्री महा-श्री रामजीके मन्दिरका कुछ दिनसे जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है । सचिवालय देवी का मन्दिर भी बहुत जीर्ण हो गया है और श्री बहुतसे प्राचीन मंदिर इधर उधर टूटे फूटे पड़े हैं और समीपमें एक छोटी झूंगरी पर मुनियोंके अनगनके स्थान पर चरण प्रतिष्ठित है ।

## मंदिर प्रशस्ति ।

( १६६ )

॥ ॐ ॥ जयति जनन मृत्यु व्याधि सम्बन्ध शून्यः परम पुरुष संज्ञः सर्वशिरसव  
दर्शी । ससुर मनुज राजामीश्वरीनीश्वरोपि, प्रणिहित मतिभिर्यः स्मर्यन्ते  
योगियर्ष्यैः ॥ १ ॥ मिथ्या ज्ञान घनान्धकार निकरावष्टव्य सद्वीच दृग्दृष्ट्वा विष्टप-  
मुद्गवद् घनघृणः प्राणभृतां सर्वदा कृत्या नीति मरीचिभिः कृत युगस्यादौ सहस्रां  
शुद्धप्रातः प्रास्ततमास्तनोतु भवतां भद्रं स नात्रैः सुतः ॥ २ ॥ यो गोश्राण सर्वं भिद  
भिहितां शक्ति मश्रुघा नः क्रूरः क्रीडा चिकीर्ष्या कृत - - - - - कृत - - - - - मृत्या  
यस्याहो सी मृति मित इयता नामरत्नं यतो भूस्पुण्यैः सरपुण्य गृहिं वितरतु भगवा-  
न्वस्स सिद्धार्यं सूनुः ॥ ३ ॥ स्वामिन्किं स्वन्निशासालय घन समयोस्माक माह - - - -  
नस्यावसाने - - - - - उत महती काचिदन्याय देवा इत्युद्भ्रान्तरात्मा हरि मति भवतः  
सस्व जेगस्य नीधैर्यंत्पादांगुटकोशाकनक नगपती प्रीरते र्यांसवीरः ॥ ४ ॥ श्री  
मानामोत्प्रभुरिह भुवि - - - - - येक वीर स्प्रेलोवयेयं प्रकट महिमा राम नामासुयेन चक्रे

शोकं दृष्टंतरसुरी निर्दुःखान्निदनेषु स्वप्नेयस्या दशमुख वधान्यादिय रकारण  
 वृत्तिः ॥ ५ ॥ तस्या कापत्किल प्रेम्णाउदमणः प्रतिहारताम् ततोऽप्यन् प्रतीहार यशो-  
 राम समुद्रयः ॥ ६ ॥ तद्वंशे सवशी वशी कृत रिपुः श्री वरुन राजोऽप्यन्वशीर्यस्य  
 तुपार हार विमला ज्योत्स्नास्तिरस्कारिणी नस्मिन्मामि सुयत विरथ विधरे मर्येव  
 तस्माद्वह्निर्नगन्तुं दिगिजेन्द्र दन्त मुचल वधाजाद् काप्योन्मनुः ॥ ७ ॥ समुद्रा समुद्रायेन  
 महता चमूः पुरा पराजिता येन --- समदा ॥ ८ ॥ --- समदारण तेनायनोशेन कृता शिरसोः  
 सद्ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रैः । समेतमेतत्प्रथितं पृथिव्या मूकेशनामानित पुरं मरीचः ॥ ९ ॥  
 --- सक्रान्तं परैः --- मित्र श्री मरुपालितं यन्महोभुजा । तस्यान्तस्तथनेश्वर  
 स्य जयनं शिञ्जुशं शुभ्रतामन्नस्पृम्दृगराज कुंजर युतं सद्रौजयन्ती छतम् किं पृष्टं  
 हिम --- सृत रति --- ॥ १० ॥ तद् फास्यं तार्यं यत्रसा संसार --- या ॥ ११ ॥  
 क्वचित् --- स्वद्वयोधिक्रम धोयते साधवः कश्चित्पटुपटीयसो प्रकटयन्ति धर्म  
 स्थितिम् । क्वचिन्तु जगद्यत्स्तुतिं परिपठयन्ति यस्या जिरै ---  
 ध्वनिमदेव गान्तीर्यत ॥ १२ ॥ दीक्षणे क्षणदां स्वस्य वरगण्डमो शिपशिखताम् । इति-  
 र्भवत्यवशास्ते यत्र पश्यन्त्यदः सदा ॥ १३ ॥ जापार्यादेव्यपन यन --- निग ---  
 मुच्चैः सव्राव --- पदार्यः प्रतिध्वान दण्डम् उत्तयं मन्ये यदु दित शिरोमायादीक-  
 मन्तारलोये भूयः प्रकट महिमा मण्डपः कारितोत्र ॥ १४ ॥ --- किं ज्ञानम् ---  
 यिकार त्रैव --- वधः । तारापितं येन सुद्रेष साजा कद्रान्त मर्यादित  
 मार्गणेन ॥ १५ ॥ पुत्रस्तस्या भवत्सोन्वो यणिरिजन्दक सङ्घिणः । उन्मृष्टकारिण ---  
 लयः ॥ १६ ॥ --- चदुक्षरा --- ह्यपा प्रसाद् युक्ता स्वयमीगिरामा । सदानुसर्वा न्ययन्ति सदा  
 शार्गणावात् --- तरगा ॥ १७ ॥ तस्मात्तस्यामजुदुर्मा शिष्ये ---  
 --- ॥ १८ ॥ यन्नाकारि चित्तेतरच्छत्रि --- तस्या दितं नापिने तदो  
 न्नात्थिं जनरपि प्रतिगतं यद्गोदमभ्यतिथितं । किं चान्यद्गुणैर्दुरीर मरुति शर्य  
 नीर नीर दत्तित ..... ॥ १९ ॥ जिनेन्द्र धर्मं प्रति युक्तं ..... पीरयो

नाये कुमतेर्मनागवि । मि । वंसतोपिहि मण्डपेयान सम्मवीनां  
भवतीहकाचता ॥२०॥ यदि यादि संज्ञिता

जाकलावपि ॥ २१ ॥ तत्र ब्रह्म वी स्वर्गा सम्प्राप्ते तन्महिलाया । दुर्गया प्रतिमा कारि स  
प्रधामनि ॥ २२ ॥ जाम्बकात्सर्वदे वयातु यत देवदत्त

मियागमे ॥ प्रति दिनमिति  
॥ कार्यं प्रति विद्यते यद्वदधिकं ॥ सर्वैर्गवन्तो पिये त्यन्तं प्रीत्यः परलोकतः । प्रोगि

हिको च दूरगाः ॥ ति मला  
तत्स सिः पुनर्यं जूमण्डनो मण्डपः । पूर्वस्यां ककुभि प्रिमारा

प्रकटः सन्गोष्ठिकानु जिन्दक मतदु उप  
तोय नेन जिनदेव घाम तत्कारितं पुनरमुष्य ज्ञषणं । मत्स दृग्दृश्यते

जयत्री ज्ञजयन्त ॥ संवत्सर दशशत्यामधिकार्यां वत्सरे स्त्रयो दशभिः  
तद्गुण शुक्र तृतीया प्राद्र पदाजा सं० १०१३

पाम ॥ पूजाप्रत्यं द्यदपि मना गक्षमालो पयोमी शंखं चक्रं स्फुटमपित्र  
रीत्रः पाया ज्ञुवन गुरुन्नति ॥ भावद्रगौर्गुं वन्दिर्गुं स

र विन मन्मूर्त्तिर्द्वाप्यंते घोषावन्मेरुर्मरुत्तिर्निं ति युते ।  
धिसमुखण्डेद श्री मद् दशा पूष नित्यमस्तु ॥ जयतु

गर्वासताय कीर्त्तिर्निं रीति यपुः सदा ॥ यस्मादस्मिन्निजम्भन्ववरि पति  
ति श्री समा प्रकट सुतारज्ञो सूत्रधारस्य

यति दित मिदं ।

( १८५ )

तीरण पर ।

( 769 )

सं० १०३५ आषाढ सुदि १० आदित्य वारे स्वाति नक्षत्रे श्री तीरणं प्रतिश्रायिमिति

स्तम्भ पर ।

( 780 )

सं० १२३१ मार्ग सुदि ५ वांघळ पुत्र यशोधर घोडिव्य मूला देवि - - - ।

२४ माताके पट्ट पर ।

( 791 )

सं० १२५६ कार्तिक सु० १२ सुचेत मुत्री चहदिग पूत्रेः शम्भु दरटो सुमयी सत्य लक्ष्मी  
प्रसादे चतुर्विंशति जिनः मातृ पट्टिका निज मातृ जन्हव श्रीयोधे कारिता श्री कृष्ण  
सूरिभिः प्रतिष्ठिता ।

मूर्तियों पर ।

( 792 )

सं० १०८८ फाल्गुन यदि ४ श्री नामेन्द्र गच्छे श्री धामदेव नृसिंख नानेतिहव  
श्री यार्थे राखदोय कारिता ।

( 793 )

सं० १२३४ वैशाख सुदि १४ मंगल । नामदेव वर्षा शामपट्ट धनाय शोध । सामा  
यशोदेव्या धामर्षे पोथे पदे ।



( १८१ )

( ७९४ )

सं० १२३१ वैशाख शुक्र ११ मंगलवार सायं देव सुत नागदेव तस्मिन्नेन पारो पारि  
जिन सुप्रित सादेय मणि कुतेन ।

( ७९५ )

सं० १२३८ वर्षे आपाठ सुदि ६ शुक्रे मोठ वास्तव्य सा० डा-भायां यसमारदे भायां  
सूमलदे सुत साहूण सामल पितृ मातृ श्रेयायं ठ० महिपालेन श्री पारवंनाथ त्रिंशं कारितं  
आगम गच्छे श्री जय तिलक सूरि उपदेशेन ।

( ७९६ )

सं० १२८२ वर्षे वैशाख वदि ५ श्री कोरंटकीय गच्छे सा० ३० शंघ बालेना गोत्रे सा०  
वास बाल भायां लक्ष्मीदे पुत्र ३ प्रता मिहा सूरयाज्ञी पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ त्रिंशं  
कारितं पुताकेन का० प्र० श्री सायदेव सूरिभिः ।

( ७९७ )

सं० १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि ८ शनि श्री उसन्न से० भायां माणिकदे सुत रणाय  
भायायां १० पिथा भायां सां सुतयो याते जूखण श्री कुंघुनाथ त्रिंशं कारितं प्रतिष्ठित  
श्री वृद्ध तपापंकज श्री विजय तिलक सूरि पठे श्री विजय धम्म सारे श्री भूयात् ॥

( ७९८ )

सं० १५३१ वर्षे माघ सुदि ५ दिने सोढ ज्ञातीय मंत्रि देव वरु सुत मंत्रि सह साह-  
नाभ्यां श्री धम्म नाथ त्रिंशं पित्री श्रेयसे प्रतिष्ठित श्री विद्याधर गच्छे श्री हेम प्रस  
सूरि नंदलिराभ्यां कृतः ।

( १०७ )

( १०९ )

सं० १५४६ वर्षे माघ सु० ५ गुरी गंधार वान्तव्य श्री श्री माण्ड जातीय सा० शिवा-  
भार्या माणिक्यदे नाम्नी तयो सुत सा० लोजकेन सा० जम्मादे धर्मादे नाम्नी पुत्रेन  
स्वमात्री श्रीयसे श्री विमल नाय विंश कारित प्रतिष्ठा श्री वृहन् तपा पत्रे श्री उद्य  
सागर सूरिभिः ।

( १०९ )

सं० १६१२ वैशाख सुदि ५ दिने श्री ठालूणं करापितं ।

( १०९ )

सं० १६२३ ज्येष्ठ सु० ३ कहुया मति गच्छे ज्ञादेवा पुत्री राजघाटं केन श्री सम्भ्र  
विंश सा० तेजपालेन प्र० ।

( १०९ )

संवत् १७५८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ । रविवार शुभ दिने श्री वृहन् न्यन्तर गण्ड  
भहारक श्री जिन राज सूरि । गणे शिष्य - - - ।

नीवमें प्राप्त मूर्तिके दूटे चरण शैकि पर ।

( १०९ )

ॐ संवत् ११०० मार्गशिर सुदि ६ - - - - - शालीन्द्र - - - - - द्वय जने  
श्रीयोर्थ कारित जितेत्रिकम् - - - ।

( १९८ )

## श्री सचियाय माताका मंदिर ।

( ८०४ )

सं० १२३१ कार्तिक सुदि १ बुधवारे अयोह श्री केशव देव महाराज राज्ये तस्युत्र  
श्री कुंभर सिंहे सिंह विक्रमे श्री माहव्य पुराधिपती - - - दामिकान्त्रीय कीर्ति पाल  
राज्य वाहके तदुक्ती श्री उपकेशीय श्री सञ्चिका देवि देव गृहे श्री राजसेवक गुण्डल गो  
क्रय विषयी धारा वर्षेण श्री क सञ्चिका देवि जक्ति परेण श्री सञ्चिका देवि गोष्ठि-  
कान् जणित्वा तस्समस्त तद्वयं व्यवस्था लिखापिता । यथा । श्री सञ्चिका देवि द्वारं  
भोजकैः प्रहरमेकं यावदुद्गाद्य द्वार स्थितम् स्यात्तव्यं । भोजक पुरुष प्रमाणं द्वादश  
वर्षीयोत्परः । तथा गोष्ठिकैः श्री सञ्चिका देवि कोष्ठागारात् मुग मा ।०॥ घृत कर्ष १  
भोजकैम्पो दिनं प्रति दातव्यः ॥

( ८०५ )

संवत् १२३२ चैत्र सुदि १० गुरी घोर बडांशु गोत्रे साधु बहुदा सुत साधु  
जाणहण तस्य भार्या सृष्टयं तयोः सुतेन साधु मारुदा दोडिनेन साधु गयपालेन--  
सारिषको देवि प्रासाद कर्मणि चट्टिका शीतला श्री सञ्चिका देवि क्षेम करो श्री क्षत्र  
पाल प्रतिमाज्ञिः सहितं जंघा धरं आरम श्रेयायं कारितं ।

( ८०६ )

संवत् १२३५ फाल्गुन सुदि ५ अयोह श्री महावीर रघुगाला निमित्तं पालिहिया धीय  
देव अष्ट सधु यशोधर भार्या सम्पूर्णं श्राविकया आरम श्रेयायं आरमोय स्वजन वर्गा  
समन्तेन स्वगृह दत्तं ।

( १६६ )

( ६३७ )

सं० १२१५ फाल्गुन सुदि ५ ज्येष्ठ श्री महाथीर रघुशाला निमित्त - - - - -  
पालिहया धीत देव चंड बधू यशभर भार्या सम्पूर्ण धाविकया आत्म वीर्या सम्पन्न  
गोष्ठि प्रत्यहं च आत्मीया स्वजन वर्गं समतेन आत्मीय गृहं दत्तं ।

हंगरीके चरण पर ।

( ६३८ )

सं० १२४६ माघ वदि १५ शनिवार दिने श्री मज्जिनजट्टोपाध्याय शिष्यैः श्री कानक  
प्रभ महत्तर मिश्र कायोत्सर्गः कृतः ।

पाली ।

यह भी मारवाड़का एक प्राचीन खान है । यहांके छैल पण्डित रामानन्दजीके  
संग्रह किया है ।

नौलखा मंदिर ।

( ६३९ )

संवत् ११४४ वैशाख वदि ७ पल्लिका धैर्ये दीर ।

( ६४० )

संवत् ११४४ ज्येष्ठ वदि ४ शीघरेल - - - ।

( २०० )

( ८११ )

संवत् ११२२ माघ सु० ११ और उल्लदेव कुलिकायां पुस्तं भाजिताभ्यां सांख्याय  
कृतः श्री ग्राह्मी गण्डां प्रदेवाचार्येण प्रतिष्ठितः ।

( ८१२ )

संवत् ११५१ आसाढ सुदि ८ गुरी --- ।

( ८१३ )

॥ ॐ ॥ संवत् ११७८ फाल्गुन सुदि ११ शनी श्री पल्लिका श्री वीरनाथ महा चैत्ये  
श्री मद्दुद्योतनाचार्यं महेश्वराचार्यामनाय देवाचार्यं गच्छे साहार सुत धार अध्वज देवी  
तयोर्मस्य धनदेव सुत देवचन्द्र पारस सुत हरिचन्द्राभ्यां देव चन्द्र भायां वसुन्धरिस्तरपा  
निमित्तं श्री ऋषभ नाथ प्रथम तीर्थंकर शिष्यं कारितं गोत्रार्थं च संगलं महावीरः ।

( ८१४ )

ॐ । संवत् १२०१ ज्येष्ठ अदि ६ रवी श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामान्य  
श्री ज्ञानन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वीपालेनात्मश्रीयोगं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री अनन्त  
नाथ देवस्य ।

( ८१५ )

ॐ । संवत् १२०१ ज्येष्ठ अदि ६ रवी श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामान्य  
श्री ज्ञानन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वी पालेनात्मश्रीयोगं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री विमल  
नाथ देवस्य ।

( १०१ )

( ११० )

सं० १५ - - - सुदि ३ सा - - - - का० सा० मशा - - - - स्व शंभुसे श्री शंभुनाथ  
विवं का० प्र० श्री भिन्नमाल गच्छे ।

( ११७ )

संवत् १५०६ वर्षे भाद्र सुदि ५ रवौ - - - ।

( ११९ )

सं० १५१३ माघ सुदि ३ दिने उकेत सा० मदा भा० बालहदे पुत्र सा० जेमार्जेन भा०  
सेलखू जातृ हेमा कान्हर मल प्रमुख कुटुंब युतेन श्री अजित नाथ विवं भा० प्र० तथा  
श्री रत्न शेखर सूरिभिः ।

( ११९ )

सं० १५२६ वर्षे माघ सु० ५ रवौ ज० जोगर गो० ना० राणा भा० रत्नादे पु० पारद  
भा० रङ्गे पु० खरहय खादा खात खना धितृ श्री नैमिनाथ विवं कारि० श्री नैमिनाथ  
गच्छे प्रतिष्ठित श्री सोम रत्न सूरिभिः ।

( १२१ )

संवत् १५३२ वर्षे चैत्र सुदि ३ गुरु ज० गुगलिया गोत्र ना० नीमा पुत्र भावा भा०  
रत्नादे पु० धरसा नरसा यादा जार्वा पुत्र सहितेन स्व शंभुसे श्री शंभु गच्छे श्री  
जिशो भद्र सूरि संताने श्री चंद्र प्रभ स्वामि विवं कारिते प्रतिष्ठित श्री सावि नृ - - ।

( १२३ )

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्री लक्ष्मण वंशे नारायण गोत्रे भा० पारद भा०  
उल्लमादे पुत्र सा० भोजा सुश्रावकेण श्रातृ सा० पदा तरपुत्र सा० जोगरा प्रमुख परिचार

( २०२ )

सहितेन स पुण्याय श्री संभवनाथ विंशकारित प्रतिष्ठित श्री खरतर गच्छे श्री जिन  
मद्र सूरि पद श्री जिन चन्द्र सूरिभिः ॥

( ६२२ )

सं० १५३२ वर्षे फागुन शु० २ गुरी ऊ० चूडालिया गोत्रे सा० सा० त्रिवा भा०  
सहागदे पुत्र सा० देवाकेन प्रायां दाडिमदे पुत्र आसा प्रायां ऊमादे दुस्यादि कुटुंब  
युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विंशका० प्रति० श्री सूरिभिः श्री वीरमपुरे ।

( ६२३ )

संवत् १५३६ वर्षे फागुन सुदि ३ रवी फीफलिया गोत्रे सा० मूला पुत्र देवदत्त  
प्रायां साह पुत्र सा० वरु श्रावकेण प्रायां नामल दे परिवार युतेन श्री आदिनाथ विंश  
श्रेयसे कारित श्री खरतर गच्छे श्री जिन मद्र सूरि पद श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिन  
समुद्र सूरि प्रतिष्ठित ।

( ६२४ )

संवत् १५५५ वर्षे जेष्ठ वदि १ गुरी उकेस न्यातीय काकरिया गोत्रे साह जारमल  
पुः ऊदा चांभा ऊदा प्रा० रूपी पु० बाला संतावाला प्रा० बहरदूदे सकुटुंब श्री० उदा  
पूर्व पु० श्री चंद्र प्रज मूलनायक चतुर्विंशति जिनानां विंशकारित प्रतिष्ठित श्री  
संहर गच्छे श्री जसी मद्र सूरि सन्ताने श्री शांति सूरिभिः ।

( ६२५ )

संवत् १६५६ वर्षे वैशाख सुदि ८ शनी महाराजाधिराज महाराज श्री गज सिंह  
विजय मान राठवे सुयराज कुमार श्री अमर सिंह राजिते तत्प्रसाद पात्र चाहमान  
वरायतनस श्री जसवन्त सुत श्री जगन्नाथ शासने श्री पाली नगर वास्तव्य श्री श्री श्री

माल ज्ञातीय सा० मोदिल ज्ञा० सोनारगढ़े पुत्र रत्न सा० हुंगर ज्ञागर नाम भात  
 दूधेन सा० हुंगर ज्ञा० नाथदे पुत्र सा० रुपा रायसिंह रत्न सा० पीठ सा० लोदा सा०  
 ज्ञाखर ज्ञा० ज्ञाथलदे पुत्र हंसर अरोल प्रमुख कुटुंब सुतेन स्व द्रव्य कारिक नगरपालिका  
 प्रसादीयारि श्री पार्श्वनाथ विंयं सपरिकरा स्व श्रेयसे कारितं प्रतिष्ठापितं स्व प्रति  
 ष्ठायां प्रतिष्ठितं च श्रीमदकबर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद भारक तथा नगरपालिका  
 राज महारक श्री हीर विजय सूरि पह प्रभाकर महारक श्री विजयसेन सूरि महालंकार  
 महारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिनाचार्य श्री विजय सिंह प्रमुख परिवार  
 परिकरितेः श्री श्री पल्लीकीये द्योतनाचार्य गच्छे ब्रह्मी भादा मादा श्री लयोः लीया  
 लखमण सुत देशलेन रिखभनाथ प्रतिमा श्री धीरनाथ महाभित्ते देवदुष्टिनामा कारिक

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्र पक्षे अति पुण्य योगे अष्टमी दिवसे श्री  
 मेड़ता नगर वास्तव्य सूत्र धार कुधरण पुत्र सूत्र० हंसर हदाह सा नामनि पुत्र तथा  
 लोखा सुरताण ददा पुत्र नारायण हंसा पुत्र केधवादि परिवार परिवृत्तेः स्वभित्ते ए  
 महावीर विंयं कारित प्रतिष्ठापितं च श्री पाली वास्तव्य सा० हुंगर ज्ञागर कारिक  
 प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च महारक श्री विजय सेन सूरि महालंकार महारक श्री श्री  
 विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरिभिः ।

सं० १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्र पक्षे पुण्य योगे अष्टमी दिवसे महाराजाधिराज  
 महाराज श्री राजसिंह विजयमान राज्ये तत्सुत सुवराज कुमार सा जगत् सिंह राजा  
 तत्प्रसाद पात्रं चाहमान वंशावतंस श्री जगन्नाथ नामिक श्री पाठि नगर राज्ये पुर्वीक  
 लन्नगर वास्तव्य श्री श्री श्री माल ज्ञातीय सा० मोदिल ज्ञा० सोनारगढ़े पुत्र रत्न सा०  
 ज्ञाखर नाम्ना सा० ज्ञाथलदे पुत्र स० हंसर अरोल प्रमुख परिवार सुतेन स्व भित्ते श्री



सुपाश्वयं त्रिंशं कारितं प्रतिष्ठापितं स्त्र प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं पातशाह श्री मदकवर  
शाह प्रदत्त जगद्गुरु विरुद्धारक तप गण्डाधिपति प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सेन  
सूरि ।

सं० १७०० वर्षे माघ सित द्वादश्यां शुभे श्री श्री योधपुर वास्तव्य उत्सवात् ज्ञातीय  
मुहूर्त्तौ गोत्रे जयराज भार्या मनोरथ दे पुत्र सुजा पु० ताराचन्द्र भाज राजादि  
पुत्रेन श्री शीतल पार्श्व वीर नेमी मूर्त्ति स्फूर्तिं मस्कोशं विंशन्ति जिन त्रिंश विराजित  
दृष्ट दशकं अतुविंशति जिन कमल कारितं प्रतिष्ठितं तपा गण्डे महारक श्री विजय  
देव सूरि आचार्य श्री विजय सिंह निदेशात् उ० सप्तमे चंद्र गणितः ।

श्री गौडी पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

मूलनावकजी पर ।

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ८ राजाधिराज महाराज श्री गजसिंह विजय मान  
राज्ये मेड़ता नगर वास्तव्य - - - हा यंशे कुहाड़ गोत्रे मा० हरपा भार्या मिरादे  
पुत्र सा० असुरत केन स्व श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ त्रिंशं कारितं स्थापितं च । महाराणा  
श्रीजगतसिंह विजय राज्ये श्री गौड़वाड़ देशे श्री विजयदेशे श्रीश्रीश्रीपदेगतः श्रीधरता ।  
वास्तव्य समस्त रुचनेन । शिवारिराया उपरि निर्मापितेन त्रिंशेन श्री श्री प्रतिष्ठितं च  
तप गण्डाधिराज महारक श्री मदकवर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद्धारक प्र० हर  
विजय श्रीश्रीश्री पद्म प्रताकर महारक श्री विजय सेन श्रीश्रीश्री पद्मलकार महारक  
श्री विजय देव सूरिसिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिकर  
परिकरितः ।

( २०५ )

## ढौदारो वासका मंदिर ।

( १३७ )

ॐ ह्रीं श्रीं नमः ॥ श्री पातिसाह पुष साहजी विजय राज्ये । संवत् १९०१ वर्षे  
वैशाख सिताष्टमी शनिवासरे महाराजाधिराज महाराजा श्री राजसिंह जी विजय  
राज्ये श्री पालिका नगरे सोनिगरा श्री लगनाथ जी राज्ये उपसेवक ज्ञानीय श्री श्री  
माल चंडालेबा गोत्रे सा० गोदिल भार्या सौजागदे पुत्र सा० दुंगर ज्ञान सा-भापर - -  
नामभ्यां - दुंगर ज्ञार्या नाथलदे पुत्र रूपसी राई त्वघर भना भापर भार्या सापलदे  
पु० इंसर जायेल रूपा - पु० टीला युतेन स्व वीयसे श्री शांतिनाथ विष कारापित  
प्रतिष्ठित ॥ श्री चैत्र गच्छे शार्दूल शाखायां राज गच्छान्वये प्र० श्री मानचन्द्र सूरी  
सत्पहो श्री रत्नचन्द्र सूरी वा० हिलक चंद्र मु० पति रूपचंद्र युतेन प्रतिष्ठा कृता एव  
श्रेयोर्थे श्री पालिका नगरे श्री नवलपा० प्रानादे जोर्णाहार कारापित मूल नाथक श्री  
पार्श्वनाथ प्रमुख चतुर्विंशति जिनायां विंश० प्रतिष्ठापितानि सुवर्णमय कालश एते काल  
सहस्र ५ द्रव्य दयय कृते नाथ धनु पुन्य उपाजितं अन्य प्रतिष्ठा सुखर देगी कृपा श्री  
पार्श्व गुरु गोत्र देवी श्री अम्बिका प्रसादान् सर्व कुटुम्ब कृष्टि भूयात् ॥

## श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

( १३८ )

संवत् १९१५ आषाढ सुदी ९ - - - - ।

## श्री सोमनाथका मंदिर ।

( १३९ )

संवत् १९०९ द्वि० ज्येष्ठ यदि १ अक्षय्ये वा पालिकायां रामे अर्पिते पादकारिण्ये

अमरस राजाथलो त्रिराजित परम प्रहारक महाराजाधिराज परमेस्वर उमापति हर  
लक्ष्य - - - - - निज विक्रमे रणोगन विनिर्जित शाक भरी सुशर श्री मन्मथमार  
पाल देव कल्याण विजय राज्ये - - - - - ।

## नाडोल ।

मारवाड़के देसूरी जिलेके समीप यह स्थान श्री बहुत प्राचीन है ।

### श्री आदिनाथजी का मंदिर ।

( १३३ )

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० श्रीमे वीसाढा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय  
सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः  
श्री नेमिनाथ त्रिवं कारितं ॥ बृहद्गण्डीय श्री मद्देव सूरि शिष्येन पं० पट्टमचन्द्र गणिना  
प्रतिष्ठितं ॥

( १३४ )

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० श्रीमे वीसाढा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय  
सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः  
श्री गान्तिनाथ त्रिवं कारितं ॥ प्रतिष्ठितं बृहद्गण्डीय श्री मन्मुनिचन्द्र सूरि शिष्य श्री  
मद्देव सूरि विनेयेन पाणिनीय पं० पट्टमचन्द्र गणिना । यावद्द्विचन्द्र स्त्रीस्थानां  
धर्मोजिन प्रणीतोस्ति । तावज्जाया देव जिन युगल वीर जिन भुवने ।

( २०६ )

( २०७ )

संवत् १७३२ वर्षे पोह सुदि-वधन जैता जार्यां कइ पत्र नामगी जार्यां जमाने पितृव्य निमित्तं श्री शांति नाथ विंयं कारापित्तं प्रतिष्ठितं श्री नांयदेश सूरिनिः ।

( २०८ )

सं० १७८५ वै० शु० ३ बुधे प्राग्घाट श्री० समरसौ सुत दी० धारा ज्ञा० सुदवडे सुत दी० महिपाल ज्ञा० माण्हणदे सुत दी० मूडाकेन पितृव्य दी० धर्मा भातू दी० माहंजारायां च दी० महिपा श्रेयसे श्री सुविधि विंयं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपामण्डेश श्री सांन सुदम सूरिनिः ।

( २०९ )

श्री चन्द्रा प्रभु विंयं । सं० १६८३ प्रथमापाट यदि ५ सुके राजाधिराज श्री नरसिंह प्रदत्त सकल राज्य व्यापाराधिकारेण सं० जैसा सुत जयमण्ड श्री नाथना श्री चन्द्र प्रभु विंयं कारितं प्रतिष्ठापितं स्वप्रतिष्ठायां श्री जालोर नगरे प्रतिष्ठितं श्री तपामण्डेश-धिराज ज्ञा० । श्री हरि विजय सेन सूरि पहालंकार ज्ञा० श्री विजय सेन सूरि पहालंकार घातशाहि जहांगीर प्रदत्त महातपा विरुद्ध धारक ज्ञा० श्री ५ श्री विजयदेव सूरिनिः । सं० पद प्रतिष्ठापार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिचार परिकरिती राजा श्री जयसिंह राज्ये नाहुल नगर राय विहारे ज्ञा पदम प्रज्ञ विंयं न्यापित ॥

( २१० )

संवत् १६८६ वर्षे प्रथमापाट व० ५ सुके राजाधिराज नरसिंह श्री राज्ये गैयसूर नगर वास्तव्य मणोत्र जैसा सुतेन । जयमण्ड जी जैन श्री शांतिनाथ विंयं कारित

प्रतिष्ठापित स्व प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं च श्री तथा गच्छेत् श्री ५ श्री विजय देव गुरिमिः  
स्व पहाडंकार आचार्य श्री ५ श्री विजय सिंह मूरि प्रमुखः च परिवारः ॥

### ताम्र शासन ।\*

( १३७ )

ओं ॥ ओं नमः सर्वज्ञाय । विसतु जिन कनिष्ठः कर्म बंध ह्यपिष्ठः परिहृत मद भार  
कोष लोभादि धारः । दुरित शिखरि सम्प्रः स्त्री वशीयं च सम्प्र रिप्रभुवन कृतसेवा श्री  
महावीर देवः ॥१॥ अस्ति परम आजल निधि जगति तले चाहुमाण यंशोहि तत्रासान  
नदुले भूपः श्री लक्ष्मणादी ॥२॥ तस्मान् वभूव पुत्रो राजा श्री सोहिया स्तदनु सुनुः । श्री  
शक्ति राजो राजा विग्रह पालोन् चपितृदयं ॥३॥ तस्यास्तनुजो भूपालः श्री महेंद्र देवारुषः ।  
तउजः श्री अणहिलो नृपति वरो भूत पृथुल तेजः ॥४॥ तत्सुनुः श्री बाल प्रसाद इत्यजनी  
पायिष्य श्रेष्ठः । तद्भ्राताऽभूत् क्षितिपः सुभटः श्री जैद्र राजारुषः ॥५॥ श्री पृथिवी  
पालोऽभूत् तत्पुत्राः सीयं वृत्ति शोचाक्षयः । तस्मादभ्रवत्प्राता श्री जीजलठोरणरसाटना ॥६॥  
तदेव राजो भूच्छ्रीमान् आशा राजः प्रताप वर निलयः । तत्पुत्राः क्षाणिपः श्री अलहण देव  
नामाभूत् ॥७॥ यस्य प्रताप प्शाले सकुल दिक् चक्र पृथुल विस्तारं । सिंचति मुदिताहित  
गण ललना नयन सलिलौघैः ॥८॥ सीय महा क्षितिगः सारामिदं युद्धिमान् चिन्तयत ।  
इह संसार जहार मर्ष्यं जन्मादि जन्तूनां ॥९॥ यतः । गतं खि कुन्तिः मध्ये पल रुधिर  
बला मेदसा बटु पिण्डी मातु प्राणांतकारी प्रसयन समये प्राणनां स्यान्तु जन्मा  
धर्मादानामवेना भ्रत्रनिहि नियतम् बाल प्राय स्ततः स्यात् तारुण्यम् स्वल्प माय  
स्वजन परिश्रय स्यान्ता गृह प्रायः ॥१०॥ स्वयोतोयोत तुलयः क्षयः मिह सुभटाः सम्पदा  
दुष्ट नष्टः प्रापिष्यं चंचलं स्यात्कलमपरि यथा तोर विन्दुर्न लिन्वाः ज्ञातव्यं स्व

पित्रो स्पृहयनमस्ताम् चेहिकम् धर्मं कोर्ति देशान्तो राज पुत्रान् जत पद मन्वान्  
 षोडशस्येव वास्तु ॥११॥ सं० १२१८ धर्मं व्यापण मुदि १४ रजो क्षमिन्नीन महा  
 शतुर्दशी पदव्रणी । स्नात्वा धीन पदे निघेरव दहने दृष्ट्याहुतीन् पुण्य कृत्वा मार्गोन्मत्त  
 तमः प्रपादन पटोः सम्पूर्य चावज्जलिं । त्रेलाहस्य प्रभुं परावर गुणं मन्मथ  
 पञ्चामृतैः हंशानं कनकान्न वस्त्र नदनैः सम्पूज्य विप्रां गुणं ॥१२॥ अतुलित कृपाह-  
 तोदकः प्रगुर्षा भूता पस्यकः पाणिः शासनमेतमयच्छत पायन् पंचाङ्ग भूषणं ॥१३॥  
 श्री नहु ल महास्थाने श्री संहैरक गच्छे श्री महाशर देषाय श्री नददुल तत्र पद गुण  
 मंदपिकायां मासानुमासं धूप घेलायं शासनेन द्र० ५ पंच प्रादान् अस्य देवस्वयन  
 भुंजानस्य अस्मद्वंशे जयिजंवि ज्ञोक्तिन्निरपरेशच परिपंधाना न कार्या । यतः सामा-  
 न्योयं धर्मं सेतु नृपाणां काले काले पालनीयो जयद्रुभिः सत्तान् पुत्र प्राप्तेनः  
 पार्थिवेन्द्र भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ॥१४॥ तस्मात् । अस्मद्वज्रयजा भूषा भार्गी  
 भूपतयश्च ये । तेषामहं करे लग्नः पालनोयं हृद् सदा ॥१५॥ अस्मद्वंशे पर्याप्तो नः  
 कश्चिन् नृपति भवेत् तस्याहं करे लग्नोऽस्मि शासनं न व्यनिक्रमिद् ॥१६॥ कर्तव्यं-  
 सुधा भुक्ता राजकैः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा यदा यदा  
 पष्टि वपं सहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति दानदः आच्छेत्ता धानुमंजा च तान्मेव सफलम्  
 वशेत् ॥१७॥ स्व दत्तं पर दत्तं वा देव दायं हरेत यः स विष्टायां कृमिभुंक्त्वा विष्टिभिः  
 सह मज्जति ॥१८॥ शून्याटयो व्यतोपासु शुष्क कोटर शान्तिनः । कृपणा हर्षाभिः दायं  
 देव दायम् हरति ये ॥२०॥ महल्लं महा धोः । प्राग्पाद यं परियिग्न नान्तः सुधी महा  
 मात्ववरः सुकर्मा वज्रूव दृताः प्रतिज्ञा निवासी लक्ष्मीधरः श्री करे निषोर्षो दानः  
 आसीत् स्वच्छ मला मनोरथ डान प्राग् नैगमानां कृते शास्त्र ज्ञान नृपाण्य दक्षिण  
 विष्टिजो जयन वासलः । पुत्रस्वरय वभूव लोक वसतिः ता श्री धर्म श्री धर्म  
 नृपास्ति स्वयांचकार लिखिते पेट महा शासनं ॥२२॥ स्व हरीय महाशर श्री  
 अहम देवस्य ।

## तामापल ( महाजनों के पास )

( २१० )

ॐ स्वस्ति ॥ अथै भवन्तु वो देवा ब्रह्म श्रीधर शंकराः । सदा विरागयन्तो ये  
 जिना जगति विश्रुताः ॥१॥ शार्ङ्गसरो नाम पुरे पुरासी स्त्री साहमानान्धय लक्ष  
 जन्मा । राजा महाराज नतांहि युग्मः स्यातो वनी यावपति राज नामा ॥२॥ नड्डुल  
 सनाज्जदोय तनयः श्री लक्ष्मणा भूपति स्तस्मात्सर्व गुणान्वितोः न पत्ररः श्री शोभि-  
 ताम्यः सुतः । तस्मा स्त्री यलिराज नाम नृपतिः परचात् तदोयो मही स्यातो विश्रु-  
 पाळ इत्यभिधया राज्ये पितृव्योऽ भवत् ॥३॥ तस्मिन्तीत्र यहा प्रताप तरणिः पुत्री महेंद्रो  
 भवत्तज्जा स्त्री अणहिल्ल देव नृपतेः श्री जेंद्रराजः सुतः । तस्माद्दुद्धर शैरि कुंजर यथ  
 प्रोत्ताळ सिंहीपमः सत्कीर्त्या धवलाठी कृतास्त्रिलजग स्त्री आशराजो नृपः ॥४॥  
 तस्पुत्री निज थिकमार्जित महाराज्य प्रतापोदयो यो जग्राह जयश्रिय रण भरे दवापाद्य  
 श्रीराष्ट्रकान् । श्रीचाचार विश्वार दानव सति नड्डुल नायो महा संख्योरपादित वीर  
 वृत्तिरमलः श्री अलहणी भूपतिः ॥५॥ अनेन राजा जन विश्रुतेन । राष्ट्रीड वंश जय  
 रा सहुलस्य पुत्री अन्नल्ल देवीरिति शील विवेक युक्ता । रामेण ये जनकजेव विधा-  
 हिता सी ॥६॥ आभ्यां जाताः सुपुत्रा जगाधयो रूप सीदयं युक्ताः । शस्त्रैः शस्त्रैः  
 प्रगल्भाः प्रवर गुणः गणास्त्यागयन्तः सुशोभाः ज्येष्ठ श्री केल्हणारुप स्तदनु च राज  
 सिंह स्तथा कीर्ति पाळी । यदुन्नेप्राणि शंभो स्त्रि पुरुष वदयामीजनं वंदनीयाः ॥७॥  
 मध्यादमीसां परिवारानयो ज्येष्ठोमंजः लोणि तले प्रसिद्धः । कृतः कुमारी निज  
 राज्य धारी श्री केल्हणः सर्व गुणोरुपेतः ॥८॥ आभ्यां राज कुल श्री आलहण देव  
 कुमार श्री केल्हण देवाभ्यां राजपुत्र श्री कीर्तिपालस्य प्रसादे दश नड्डुल प्रतिबु  
 द्वाद्य ग्राम ततीराज पुत्र श्री कांतिपालः । संवत् १२१८ आश्विन वदि ५ सोमे । अथै  
 श्री नड्डुल स्नाय्या भीमघाममी अरिधाय तिलाक्षत कुश मणयिनं दक्षिण करं द्रव्य

देवानुदकेन संतर्प्य । यहलतम तिमिर पटल पाटन पटीयनी निःशेष पाण्डु पद प्रका-  
 लनस्य दिवाकरस्य पूजां विधाय । चराचर गुरुं महेश्वरं नमस्कृत्य । इत भूमि होम  
 द्रव्याहुती दृष्ट्या नलिनी दल गत जल उद्य तरलं जीवितस्यमाजयत्य । ऐतद्विचारिणः  
 च फलमंगीकृत्य स्य पुण्य यशोभि वृद्धये शासनं प्रयच्छति यथा ॥ श्री महाबाहू शशि  
 श्री महावीर जिनाय नदूलाहं द्वादश ग्रामेषु ग्रामं प्रति द्वौ द्रुमी स्तपन विदेवत शीघ्र  
 धूपोपज्ञोगार्थं । शासने वर्षं प्रति त्राद्रपद मासे चंद्राहं क्षिति फाले चायम् प्रदूनी त  
 नदूलाहं ग्राम । सूजेर । हरिजी कविलाहं । चोनाणं । मोरकरा । हार्येन माहाट । वाण  
 सुवं । देवसूरो । नाहाह मउयडो । एवं ग्रामाः एतेषु द्वादश ग्रामेषु मार्यदाप्यन्मामि-  
 शासने दत्ती । एभिर्ग्रामैरधुना संवत्सरं उगिरथा सव्यंदापि वर्षं प्रति त्राद्र पदं दाह्यती ।  
 अत ऊर्ध्वं केनापि परिपंथना न कर्तव्या । त्वस्मद्वंशे ध्वनिक्रान्ति योज्य कोपि प्रियव्रति  
 तस्याहं करे लग्नी न लोप्य मम शासनं । पट्टि वर्षं सहस्राणि स्वर्गां विद्वति दापय ।  
 आच्छेत्ता चानुमंता च तान्येय नरके यसेत् ॥ यहुन्नियंतुथा भूत्ता राजभिः मगमादिभिः ।  
 यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं ॥ स्व हस्तोप महाराज पुत्र श्री श्रीवि  
 पालस्य ॥ नेगमान्वय फावस्थ सादनप्रा गुप्त करः दामोदर सुतो ऐगि शासन प्रथमं  
 शासनं ॥ मंगलं महा धीः ॥

संवत् १२१३ वर्षे मार्ग वदि १० शुक्ले ॥ श्रीमद्वज्रिण्ड पाटके समस्त राजा कर्णा  
 समलंकृत परम महारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति पर लक्ष्म प्रसाद श्रीद  
 प्रताप निज भुज विक्रम रण गण विनिर्जित शाकंजरी भूपाट श्री कुमार पाट देव  
 कल्याण विजय राज्ये । तत्पाद् पद्मोपजीविति महामात्य श्री महद देव श्री श्री  
 करणाद्री सकल मुद्रा व्यापारान्परि पंचयति यथा । अस्मिन् कार्ये प्रथमंमनि श्रीविद्य  
 श्रीवाणान्वये महाराजः श्री योगराज स्वदे ठदीव सुत राजा महामंडलेशः श्री यश



राजस्तदस्य सुत संजात इनेक गुण गणालंकृत महा मंडलीकः श्री मता प्रताप सिंह  
शासनं पयस्वति यथा । अत्र नदूत डागिकायां देव श्री महायोर शेरये । तथाऽरस्त-  
नेमि शेरये गोल बंदूडा ग्रामे श्री अजित स्वामि देव शेरये एतं देव त्रवाणां स्त्रीय धर्मा-  
र्गे वदयं मंडपिका मध्यात् समस्त महाजन जहारक ब्राह्मणादय प्रमुख प्रदत्त त्रिहाडको  
रूपक १ एकं दिनं प्रति प्रदातव्यमदं । यः कोपि लोपियति सो ब्रह्महरवा गो हरवा  
सहस्रेण लिप्यते । यस्य यस्य वदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं । बहुति.यमुथा भुक्ता  
राजभिः । यः कोपि शालयति तस्याहं पाद लग्न स्तिष्टामीति । गौडान्त्रये कापरय  
पण्डितः महीपालेन शासनमिदं लिखितं ।

## नाडलाई ।

यहंमानमें मायाडके देसूरी जिडेके नाडोठके पास एक छोटासा गांव है परन्तु  
प्राचीन कालमें यह एक बड़ा आबादी नगर था और वही स्थान है कि-

संघत दश दाहीतरे यदिया चौरासी थाट ।

खेद नगर था लायिया, नारलाहं प्रामाड ॥१॥

यहां पर बहुतसे प्राचीन जैन मंदिर वर्त्तमान हैं ।

## श्री आदिनाथजी का मंदिर ।

अथ ११८७ फाल्गुन सुदि १२ बुधवार श्री पंढरकान्त्रय देगी शैत्य देव श्री महाश्री  
दत्तः । मोरकरा ग्रामे चाणक नील थल मध्यात् अतुयं भाग आहुमाण पनरा सुत  
विकराकेन कटमी दत्त ॥ रा० वापउदय समे ३ । सास्त्रिय भण्डो नाग विउ । अतिवरा

धीद्वुरा पौसरि । लक्ष्मणु । बहुजिह्वं सुधा जुक्ता राजितिः सागरादिभिः । तस्य लक्ष्म  
यदा जूमि । तस्य तस्य तदा फलं ॥१॥

ॐ ॥ संवत् ११८६ माघ सुदि पंचम्यां शो चाहमानाम्भय श्री महाराजाधिराज  
रायपाल । देव तस्य पुत्री रुद्रवाल जन्मत पाली । तस्यां माता श्री राजा रामाय देवी  
तया नदूल डामिकायां ॥ सतां परजनीनां राजकुल पट मध्यात् धारिता द्वय । सागर  
प्रति धर्माय प्रदत्त सं० नामनिव प्रमुख जन्मत ग्रामीणक । रा० तिमटा शि० शिरीषा  
यणिक पौसरि । लक्ष्मण एते सासिं कृत्वा दत्तं । लोपकृत्य यदु पापं गो हत्या गण-  
श्रेण । ब्रह्म हत्या सतेन च । तेन पापेन लिप्यते सः ॥ धी ॥

ॐ ॥ संवत् १२०० ज्येष्ठ सुदि ५ गुरी श्री महाराजाधिराज श्री राय पाल देव रावरे  
- - - हास - - समाए रयवात्रायां आनतेन । रा० राजदेवेन । ज्ञानेन । साहसा मध्यात्  
सर्वं साउत पुत्र विंशोपको दत्तः ॥ आत्मीय घाणक तैल बल मध्यात् । माता निर्मला  
पलिका द्वयं । पत्नी २ दत्तः ॥ महाजन ग्रामीण । जन पद् जन्मलाप - धर्माय निर्मला  
विंशोपको पत्निका द्वयं दत्तं ॥ गो हत्याना सहस्रेण श्राप हत्या सतेन च । गो हत्या  
श्रू ण हत्या च जतु पापं तेन पापेन लिप्यते सः ॥१॥

संवत् १२०० कार्तिक वदि १ रवी महाराजाधिराज श्री राय पाल देव रावरे । श्री  
नदूल डामिकायां रा० राजदेव कृत्वायां । श्री नदूला द्वय महाराजेन सर्वे निर्मलायां श्री  
महावीर शैषे । दानं दत्तं । पद् तैल पीरह मति पित्त प्राहय प्रति । लक्ष्मण पाल

( २१४ )

नमपि तद्गोणं प्रति मा० १ कपास लोह गुडर पाड हींगु माजीठा तीरुये घडो प्रति । पु० १  
पूगहरी तकि प्रमुख गणितैः । सहस्रं प्रति । पुगु १ एततु महाजनेन क्षेत्रेण धर्माय  
पूदत्तं लोपकस्य जतु पापं । गो हत्या सहस्रेण ब्रह्महत्या शतेन च तेन पापेन लिप्यते सः ॥

( 846 )

ॐ ॥ संवत् १२०२ आसोज अदि ५ शुके । श्री महाराजाधिरान श्री रायपाल देव  
राज्ये प्रवर्त्तमाने । श्री नदूल डागिकायां । रा० राजदेव ठकुरेण प्रवर्त्तमानेन । श्री महा-  
वीर चैत्ये साधुतपोधन निष्ठार्थे । श्री अभिनव पुरीय वदायर्था । अत्रेषु समस्त वणजार  
केषु । देसी मिलित्वा वृषज प्ररित । जतु पाइलाल गमाने । ततु थीसं प्रति । रुआ २  
किराड उआ । गाडं प्रति रु० १ वणजारकै धर्माय पूदत्तं ॥ लोपकस्य जतु पापं गो हत्या  
सहस्रेण ॥ ब्रह्म हत्या शतेन । पापेन । लिप्यते सः ।

( 847 )

संवत् १४८६ वर्षे अषाढ अदि ६ नाइलाई रीमाउहीत को-विसति को तेल सेर० ॥  
दीधे छूटि सुपासना श्री संघ मतं दिना १ पूत देस ।

( 848 )

१५६८ वीरम ग्राम वास्तव्य श्री संघेन पक्षे

( 849 )

सं० १५६९ वर्षे । कुतयपुरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि गुरुपदेशात्  
मुंजिगपुर श्री संघेन कारिता देव कुलिका धिरनन्दतात् ॥

( 850 )

सं० १५७१ वष कुतयपुरा तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि शिष्य श्री प्रमोद  
सुन्दर सूरराज गुरुपदेशात् चम्पकं दुर्ग श्री संघेन करापिता देव कुलिका धिरं नन्दतात् ॥

सं० १५७१ वर्षे कुनयपुरा पत्ने तपागच्छाधिराज श्री हन्ट नदि नृदि गिरि प्रसन्न  
कुन्दर सूरि गुरुणामुपदेशान् पत्तनोय श्री संवेन कारिता देव कुलिका पिरि जीमान्

श्री यशोभद्र सूरि गुरुपादुकाभ्यां नमः । संवत् १५८७ वर्षे येमान नामे सुख पदं  
पठ्यां तिर्यो शुक्र वासरे पुनवसु ऋतु प्राप्ते चंद्र योगे श्री संदेर गणते णिकान  
गीतमावतारः समस्त भविक जन मनोवृज विज्ञोपनेक दिन फलः मन्त्र मन्त्रि  
विश्रामः युग प्रधानः जितानेक वादीश्वर वृद्धः प्रणतानेक नर नायक सुभद्र कोटि  
पृष्ट पादारविंदः श्री सूर्य इव महा प्रसादः धनुः पण्डितसुरेन्द्र संगीयमान गाण्णाट ।  
श्री पंडेरकीय गण बुधावतंसः सुभद्रा कुलि सरीयर राजहंसः यथाधीर सायु कृष्णोय  
नमो मणिः सकल चारित्रि चक्रवर्ति वक्तु चूडामणिः प्र० प्रहू श्री यशोभद्र सूरि  
तरपहे श्री चाहुमान वंश श्रृङ्गारः लब्ध समस्त निरवय विद्या जलधि पाद श्री  
वदरा देवी दत्त गुरु पद प्रसादः स्व विमल कृष्ण प्रयोपनेक प्राप्ते परम योगी सात  
प्र० श्री शाळि सूरि स्त० श्री सुमति सूरिः त० श्री शांति सूरिः त० श्री श्रुतय सूरिः ।  
एवं यथा क्रममनेक गुण मणि गण रोहण गिरीणां महा नृमानां प्रमे पुनः श्री शांति  
सूरिः त० श्री सुमति सूरिः तत्पहालकार द्वार प्र० श्री शांति सूरि करणां सज्जिकराणां  
विजय राजये ॥ लखेह श्री मदेपाट देगे । श्री सूर्य यशोय महाराजाधिराज श्री गिरि  
दिस्य वंशे श्री गुहिदत्त राउल श्री वप्पाक श्री सुभाणाटि महाराजाज्यसे राजा हुमर  
श्री पेत सिंह श्री लखन सिंह पुत्र श्री मोकल मगांक यशोदीनकार प्रसाद भासांदा  
यतारः ला सनुद्र मही मंडला खंडलः जलुल महायल राजा श्री कृष्णवर्मा पुत्र राजा  
श्री राय मल्ल विजय मान प्राउय राजये तत्पुत्र महाबुमार श्री पुण्यो राजानुमानमान ।  
श्री उकेश वंशे राय जहारो गोत्रे राउल श्री लखन पुत्र सं० इंदरवर्मा सं० मन्त्र सुत सं०  
सादूल स्तत्पुत्राभ्यां सं० लोहा समदाभ्यां सदाशिव सं० कामेश्या राजायाटि सुभद्रा

( २१६ )

युताभ्यां श्री नंदकुलवर्यां पुर्यां सं० ९६४ श्री यशोभद्र सूरि मंत्र शक्ति समानीतायां त०  
सायर कारित देव कुलिकाद्युद्धारितः सायर नाम श्री जिन वर्यां श्री आदीश्वरस्य  
स्थापना कारिता कृता श्री शांति सूरि पद्मे देव सुंदर इत्यपर शिष्य नामभिः आ०  
श्री ईश्वर सूरिभिः । इति लघु प्रशस्तिरियं लि० आवाच्य श्री ईश्वर सूरिणा उत्कीर्ण  
सूत्रधार सोमाकेन शुभं ॥

( ८५३ )

संवत् १६७४ वर्षे माघ यदि १ दिने गुरु पुष्य योगे उसयाल ज्ञाती भण्डारी गोत्रे०  
सायर तुत्र साहळ तत पु० समदा लपा धर्मा कर्मा सोहा लखमदा पु० पहराज प्रद मान  
गम भार्या तत् पु० । श्रीमा मं पहराज पुत्र कला मं० नगा पुत्र काजा मं० पदमा पुत्र  
जईचन्द्र मं श्रीमा पुत्र राजसी मं वाठा पुत्र संकर उसयालः जैचन्द्र पुत्र जस चंद  
जादव । मं० सिधा पुत्र पूजा जेठा संयुतेन श्री अदिनाथ विवं कारित प्रतिष्ठितं तपा  
गच्छाधिराज भटा० श्री हीर विजय सूरि ततपटालंकार श्री विजयसेन सूरि ततपटा-  
लंकार भटारक श्री विजय देव सूरिभिः ।

( ८५४ )

महाराजाधिराज श्री अन्नय राज राज्ये संवत् १७२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ रवौ श्री  
नहुलाई नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातोय वृ० सा । जीवा भार्या जसमादे सुत सा ।  
नाथाकेन श्री मुनि सुत्रत विवं कारापितं प्रतिष्ठितं च । भटारक श्री हीर विजय  
सूरिभिः ।

( ८५५ )

संवत् १७६९ वर्षे वैशाख सुदि २ दिने ऊकेश ज्ञात १ बोहरा काग गोत्र साह टाकुर  
सी पुत्र लाळा हेत सुवर्णमये कलस करापितं श्री आदिनाथजी सेतरनेद पूजा गुहिलेन  
संप्रति प्रतप (प्रतिष्ठितं) माणिक्य त्रिजं शि० जित विजय शिष्य ॥ कुश विजय उपदेशात्  
शुभे भूयात् ।

संवत् १६६६ वर्षे वैशाख मासे शुक्र पक्षे शनि पुष्य योगे अष्टमी तिथिने महाराजा श्री जगत सिंह जी विजय राठवे जहांगीरी महा तपा विरुद्ध धारक अहारक श्री विजय देव सूरीश्वरोपदेश कारित प्राक प्रगस्ति पट्टिका ज्ञात राज श्री संप्रति निर्मापित श्री जू पल पर्वतस्य जोर्ण प्रासादीद्वारेण श्री नहुडाई वास्तव्य समस्त संनिभ स्वार्थे धर्म श्री श्री आदिनाथ विंधं कारित प्रतिष्ठितं च पातशाह श्री मद्राक्षर गाह प्रदत्त जनाद्गुरु विरुद्धधारक तपागच्छापिराज अहारक श्री श्री श्री श्री श्री विजय सुग्रीवर पह प्रभाकर भ० श्री विजय सेन सुरीश्वर पहालकार प्रभु श्री विजयदेव सुग्रीरि मत्र पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिश्रमीः श्री नहुडाई महल श्री जूखल पर्वतस्य प्रासाद मूलनायक श्री आदिनाथ विंधं ॥ श्री ॥

### श्री नेमिनाथजी का मंदिर ।

ओं नमः सर्वज्ञाय ॥ संवत् ११८५ आनउज वदि १५ पुजे ॥ अर्थात् श्री मद्राक्षरि-  
 कायां महाराजाधिराज श्री राघपाल देव । विजयराजं कृतं तस्यै तस्मिन् काले वा  
 मद्रुजितं तीर्थः श्री नेमिनाथ देवस्य दीप धूप नैवेद्य पुष्प पुजायां सुविधानतः ।  
 राठत उधरण सूनना प्रोक्तारि १ ठ० राजदेवेवन रुद्र पुष्पार्थे स्वर्गोपादान मन्त्रात् भार्गव  
 गच्छता नामा गतार्ता कृपज्ञानां शोकेषु यदा भाव्यं तथानि तस्मिन्वात् विमलितयो भावः  
 चंद्रार्कं यावत् देवस्य प्रदत्तः ॥ अस्मद्वृथीयेतान्येन वा केनापि परिपन्नता न कर्षणीया ॥  
 अस्मदत्तं न केनापि लोपनीयं ॥ स्वहस्ते पर हस्ते वा या कोपं लोपणीयावति । स्वहस्ते  
 करे लग्नी न लोप्य मम शासनमिदं ॥ दिः पालितेन ॥ नय हस्तेन पालितेन ॥ पुण्ड्र  
 राठ० राज देवेन मद्रु दत्त ॥ अत्राहं साक्षिण उपनिषित इह पशुपति सुमिता ॥ मया  
 पला० पाला पूर्णिया १ नांगुला ॥ देवता । रापला ॥ संवत् ११८५ ॥

( २१८ )

( 858 )

ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम समयातीत सं० १९९३ वर्षे कार्तिक वदि १९ शुके श्री नहुलार्द्ध नगरे चाहुमानान्वय महाराजाधिराज श्री वणवीर देव सुत राज श्री रणवीर देव विजय राज्ये अत्रस्थ स्वच्छ श्री मदवृद्धगच्छ नजस्तल दिनकरोपम श्री मानतुंग सूरिवंशोद्भव श्री घर्मचन्द्र सूरि पट्ट लक्ष्मी श्रवणो उत्पलाय मानैः श्री विनय चंद्र सूरि मिररूप गुण मार्णिक्य रत्नाकारस्य यदुवंश शृंगार हारस्य श्री नेमीश्वरस्य निराकृत जगद विपादः प्रसाद समुद्धे आचंद्रार्क नन्दतात् ॥ श्री ॥

## कोट सोलंकी ।

( 859 )

ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम कालातीत संवत् १३६९ वर्षे चैत्र सुदि १३ शुके श्री आसल पुरे महाराजाधिराज श्री वणवीर देव राज्ये राउत मालहणान्वये राउत सोम पुत्र राउत वांवी प्रार्था जाखल देवि पुत्रेण राउत मूल राजेन श्री पार्श्वनाथ देवस्य ध्वजारोपण समये राउत बाला राउत हाथा कुमर लुभा नीया समक्ष मातृ पित्रोः पुण्यार्थं टिकुय उवाढी सहितः प्रदत्तः आचंद्रार्क यावदियं व्यवस्था प्रमाण ॥ बहुभिर्व सुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

## धानेराव ।

( 860 )

संवत् १२१३ भाद्रपद सुदि ९ मंगल दिने श्री दंडनायक वैजल्ल देन राज्ये श्री वंस

गत्तीय राउत महण सिंह भुक्ति वंसह उवाट मध्यात श्री महावीर देव वर्षे प्रणि जाम  
४ खाज सृणी दत्ताः जस्य भूमिः तस्य तदांजत्य । सेठ रायपाल सुत राय राजमदक  
महाजन रक्ष पाठ विनाणि यस्स दिवहिं ।

## वेलार ।

मारवाह के देसूरी जिलेके घानेराय नामक स्थानके समीप यह ग्राम है ।

## श्री आदिनाथ जी का मंदिर ।

( २१९ )

ओं संवत् १२३५ वर्षे श्री० साधिम भायां सालही तत्पूजा लायवीर भट्टाल लायवीर  
लायवीर पुत्र सालहण गुण देवादि समन्वित आत्म धं यने एनिकां कारितवान् ।

( २२० )

ओं संवत् १२३५ वर्षे फाल्गुन वदि ७ सुदी प्रीट प्रभाप श्री महांपल देव कालकाय  
विजय राज्ये वापल दे चैत्ये श्री नाणकीय गण्डे श्री सांति नूरि नरडापिये शासन ।  
आसीद् घर्कट वंश मुख्य उन्नतः घाहः पुरा शुद्धीस्तद्रगोत्रस्य विभूषणां समन्वित  
धोष्टि सपादयोन्निधः । पुत्री तस्य धनून्नुः जितित्तये विदवान् कीर्तिं नृप पुंसुद् प्रथमा  
बभूव सगुणी रामान्निधश्चापरः ॥ तथान्यः ॥ श्री सभंज पदाकर्तुं इत्त मर्तिद्वये दयालु  
म्मुहु राशादेव इति जितौ समन्वित पुत्रोत्तय चांपानिधः । तत्पुत्री पति संमतिः अति  
दिनं गोसाक नामा सुधीः शिष्टाचार विद्याय्दी जित नृपांदासोदकी गोसाजि उद



( २२० )

कदाचिदन्यदा चित्ते विचिन्त्य चपलं धनं । गोप्ट्याच राम गोसाभ्यां कारितो रंग  
मंडपः ॥३॥ अद्रं प्रवतु ।

( 863 )

संवत् १२३८ पीप वदि १० वला नागू पुत्र श्री० उदुरण भार्यया श्री० देवणाग  
पुत्रिकया उत्तम परम आधिकया स्व श्रीचोर्यं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं  
कारितः ।

( 864 )

अ ॥ संवत् १२३८ पीप वदि १० श्री० आंब कुमार पुत्र श्री० धवल भार्यया वला०  
नागू पुत्रिकया संतोस परम आधिकया स्व श्रीचार्यं श्री पा ।

( 865 )

ॐ सं० १२६५ वर्षे थांथां भार्या तिण देवि तत्पुत्रिका पउसिणि पुत्र गोसा भार्या  
लक्षा श्री पालहाया - - - मालहा - - - भार्या श्री ति - - - - भार्या - - - न भार्या  
पूरां श्री गोसाकेन सकल बंधु सहितेन सीहि ।

( 866 )

ॐ गच्छे श्री नाणकान्तिरुये सुधम्मं सुत बलहणः । अनुच्चारित्र संयुक्तो बाल भद्रो  
मुनिः पुरा ॥१॥ तच्छिष्यो हरिचंद्राह्वी मुनिचन्द्र - - परः । तदन्यये धनदे - - पार्श्व दे ।  
घोस सोमकौ ॥ २ ॥ पार्श्व देवः स्वशिष्येन वीर चंद्रेण संयुतः । लगिकां कारयामास  
गुरु कंद विवर्द्धये ॥ ३ ॥

( 867 )

ओं संवत् १२६५ वर्षे धक्कट वंशे भार्या जिन देवि तत्पुत्रा पंचगोसा० सदैव भार्या  
सुखमति तत्सुत थांथां कालहा रालह घोर सीह पालहण प्रमुख गोसा पुत आम

( २२१ )

वीर आम जाल कालहा पुत्र लक्ष्मीधर महीधर राखण पुत्र जाले भूय घोरहर्षी पुत्र  
देव जस पाल्हण पुत्र घण चंडा रथ चंडादि स्वकृत्प्र समन्विताः मय संजाते मय  
लगामिमं कारापयामासुः ।

( २२२ )

ओं संवत् १२६५ वर्षे उत्तम गोत्रे श्रेष्ठि पारस्यं ज्ञायां दृष्टोत्रि लक्ष्मण मतायै  
ज्ञार्या राजमति राखू तस्याः पुत्राश्चत्वारो लक्ष्मीधर अजय कुमार भेद कुमार शक्ति  
कुमार लक्ष्मीधर पुत्र वीर देव अजय दे पुत्र सर्वदेवादिषु फुल कुटुंब सहितेन सर्वजन  
माकारितेदमिति - - - ।

( २२३ )

ओं संवत् १२६५ वर्षे श्री नाणकीय मच्छे धवकंड गोत्रे आनंदेय तस्तुत जाले ज्ञार्या  
धिर मति तस्तुत गाहहस्तस्य ज्ञार्या सातु नरपुत्र आजमटादिः सर्वजाता मयै लक्ष्मण  
कारयदात्म ध्येयसे ॥८॥

## फलोदी ।

यह स्यान् मारघाडके मेहता नगरके पान ही ।

बड़े जैन मंदिरके देहलीके पत्थरों पर ।

( २२४ )

संवत् १२२१ मागसिर सुदि ६ श्री कलकट्टिगामं देवादिदेव श्री पारस्यं मयै मयै  
श्री मारघाट वंशीय रोपि सुदि नः द्वाहाग्या आनन सं मयै श्री विष्णुदेवीय शिवय  
सहितं चन्द्रको प्रदत्तः शुभं जयम् ॥

( २२२ )

( ८७१ )

चैत्यो नरवरे येन श्री सल्लहमट कारिते । पंडपो मंडनं लह्या कारितः सच  
प्रास्वता ॥ १ ॥ अजयमेरु श्री वीर चैत्ये येन विधापिता श्री देवा बालकाः स्याताश्च-  
तुर्विंशति शिखराणि ॥२॥ श्रेष्ठी श्री मुनि चंद्राख्यः श्री फलवर्दिका पुरे उत्तान पट्ट  
श्री पार्श्व चैत्येऽचीकरदद् भूतं ॥३॥

## कोकिन्द ।

यह प्राचीन स्थान भी मारवाड़के मेड़ता जिलेमें है

## श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

( ८७२ )

ॐ ॥ संवत् १२३० आषाढ सुदि ६ श्री किष्कंधर दिवा प्रमुख वाला मलण दास  
ददिव्रा रावधी विधि चैत्ये मूल नायकः श्री आनन्द सूरि देशनया श्रे ॥१॥

( ८७३ )

ॐ ॥ संवत् १२३० आषाढ सुदि ६ किष्कंध विधि चैत्य मूल नायकः श्री आनन्द  
सूरि देशनया श्रे० घाघल श्रे० वाला लण दास ददिव्रा पीवर दिवा प्रमुख श्राक - - ।

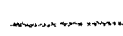
( ८७४ )

ॐ ॥ नमो धीतरागाय ॥ श्री सिद्धिर्भवतु ॥ स्वाति श्रियामास्पदमापसिद्धिर्ज-  
गत्प्रये यस्य भवत् प्रसिद्धि । सोऽस्तु श्रिये स्फुज्जंदनं व रिद्धिरादीश्वरः शारद प्रास्य  
दिद्धि ॥१॥ यमार्हता शैव मताऽवलंबा । हिन्दु प्रकाराय वन प्रकाराः । सर्वेऽप्यमी

मोद भूतो भजंते । युगादि देवो दुरितं जहंतु ॥२॥ दुग्धो प्रमारः सुधु प्रमारः । कर्षो  
 प्रमारो व्रतति प्रमारः । इमे समे क्रोदितमैर्गोपनागोऽपरव प्रमारश्च न यतिः प्रम ॥३॥  
 गोठ्याण सालो नहि काष्ठ भावान् । तथा पशुग्रान्तहि कामधेनुः । दुग्धं निजाम-  
 न्नहि काम कुंभश्चिंतामणिर्नैथ च कर्तुरेवान् ॥३॥ दुग्धो न तापाकुपता कर्मदाह ।  
 सुधाकरोनैथ कर्तकवन् रथान् ॥ सुधुं शीतो न फलोर भावान् । नाभ्येवतर्जिन पुष्पा-  
 मुषेति ॥५॥ दुग्धो दधो संस्थित तोय विद्वान् । पशुपशुग्रान्तद्वन कामन रथान् ।  
 करोत्करान् शारदः षण्ड सत्कान् । कश्चिन्निर्मातेन गुणान् युगादेः ॥६॥ यथायुः प्रमायां  
 प्रभवति यियाः । सुपंखलोकादिव काम गद्यः । दूग्धोर्गधि योऽपिपिण दात यथा ।  
 पुष्पातु पुष्पानि स नास्ति नृनुः ॥७॥ यतोत्तराया स्वर्गितं प्रवेशः । सुगाँपराया दिव  
 मार्गाः पूगाः । यद्वा मयूरादि बहं लिहानाः । स मान देवो भवताह पिङ्गवो ॥८॥ सतीर  
 वंश व्रतति प्रताना नीकोपसो नीक निकाय नेता । राजाविराडा जति मया देव ।  
 स्तिरस्कृतारि प्रति मण्ड देवः ॥ ९ ॥ तस्मीरचरुम अनिष्ट बलिष्ठ पाहुः प्रयचित्त  
 पनकदर्पन पद्य राहुः । श्री मण्डदेव नृप पटु सारथ शक्तिः । श्री मानकुन्दय मिह  
 नृपः सरश्मिः ॥१०॥ कम धज कुल दीपः कांति कुण्डा नदीप । इतनु शिख मणु दीपः  
 सौम्यता कीमुदीपः । नृपतिरुद्य सिंहा रथ प्रतापान्त मिहः मिहरेड मणुकुन्दः सतीर  
 निरया मुकुन्दः ॥११॥ राजां समेषामय मेव पृथो । धावपकट म्पेय पटु राजः ।  
 यस्तेति शाहिर्विरुद्धं स्मदथा । द्रुक्प्ररो वपरेर जेय इतः ॥१२॥ तत्रपटु तेमन कप  
 पटु शोभा । मशीनरत्नप्रति नूर सिंहः । श्री माप पेष द्विजतः पिपेय । विमोय काय  
 कपितात्तितातिः ॥१३॥ राज्य विद्यां लाजत मिहू धामा । प्रताप मदी इत पटु धामा ।  
 संपन्न नामाप्रलि ताव सिंहः पृथिवी पती राजति नूर सिंहः ॥१४॥ प्रतापती विजयन्त  
 रथ सुर्यः । सिंही गती व्योम जनं च मीती । अन्वपती नाम प्रताप मयरी । विदे विज-  
 मय्यं जन प्रसिद्धे ॥१५॥ यद्योय तेनोऽपिपिण मजामिः । मदीमसोमी विमशोपि तावः ।  
 परी द्या इत मिपेण मन्थे । रतातुं प्रयेवं कुन्दे विजय ॥१६॥ अन्वपती मदीपत

शुद्ध वंशो । धारं चक्रं तस्मिं युतो विशेषात् । स्वयं हताराति वसुधरा स्त्री परिग्रहात्  
 द्रुहता करस्सः ॥१७॥ तथापि राज्ञः परितोष भाजः । स्तुवंति विज्ञा विविधैः कथित्वैः ।  
 बहन्ति भक्तिं स्व कुटुंबलोका । अहो यशो भाग्य वशोपलभ्यं ॥१८॥ द्वाभ्यां युग्मं ।  
 सुरैष यद्वन्मघवा विजाति । यथैव तेजस्विपु चंद्र रोषिः । न्यायानुयापि प्विव राम-  
 चन्द्र । स्तयाघुना हिन्दुषु भूधशोयं ॥१९॥ द्रव्यं जिनाचोचित कुंकमादि दीपायं मा  
 जाद्यभमारि घोषं । आशामतोम्लादि तपो विशेषं विशेषतः कारयते स्वदेशे ॥२०॥ ना  
 पुत्र वित्ताहरणं न धीरी नन्या समीपो न च मद्य पानं । नाखेटको नान्य वशा निषेधे ।  
 स्यादि स्थितिः शासति राज्यमस्मिन् ॥२१॥ अभूद्दधानो युवराज मुद्रां तस्मात्कुमारो  
 गजसिंह नामा । गत्या गजोऽतीव चलन सिंहस्ते नैव लेभे गजसिंह नाम ॥२२॥ श्री  
 ओसथालान्वय वाट्टिचन्द्रः । प्रशस्त कार्येषु विमुक्त संद्रः । विज्ञ प्रगेयो चितवाल  
 गोत्रः पणेष्वपिस्वेष्व चलत्व गोत्रः ॥२३॥ आसीन्नियसो नगरांतरेव । प्रायः प्रमत्तैर्द्र-  
 विणैरुपेतः जगन्निधानो जगदीश सेवा । हेवान्निरामो व्यवहारि मुख्यः ॥२४॥ द्वाभ्यां  
 युग्मं । विद्यापुरः सूरि सवाचकानां । करे पुरे योधपुरान्निधाने । दंत प्रमाणाद्भवया  
 जगत्स्यः सएष तुयं व्रतमुच्चचार ॥२५॥ तदंगजन्मा जनित प्रमेदः पुण्यात्मनां पुण्य  
 सहाय भावात् । विशिष्ट दानादि गुणैः सनाथो । नाया निधो नाथ समाप्त  
 मानः ॥२६॥ तस्योज्ज्वलस्फार विशाल शोला । भाग्या भवद् गूजर दे सुनामा । रुपेण  
 यथा गृह भार धुर्या । श्री देव गुर्वोः परिचर्य यार्या ॥२७॥ असूत सा पृथ्व दिगेव स्यं ।  
 मुक्ता मणिं वंश विशेष यष्टिः । वजांकुरं रोहण भूमि केव । नापाभिधानं सुत राज  
 रसनं ॥२८॥ गुणैरनेकैः सुकृते रनेकैः । लेभे प्रसिद्धि भुवि तेन विषयक । तदर्थिनोभ्येपि  
 समज्जयंतु । गुणान्मपुण्यान्यधुवद्विशुद्धान ॥२९॥ तस्यासीन्नयलादे । धनिता धनितार  
 सार रूप गुणा । शीलालंकृत रम्या गम्या नापाह्वये नैव ॥३०॥ आसा निधानोहासुता-  
 निधश्च । सुधर्म स्थिहोप्युदया निधोपि । साद्रूल नामेति च सति पंच । तयोस्तनूजा  
 इय पांडु कुत्याः ॥३१॥ आसा निधानस्य धनूव भार्या सकृप देवाति तयोः सुतो द्वौ ।

शयोरभूदादिम वीर दासो । लघुशिवरजोविल जीव राज ॥१२॥ इदं सप्तशतक  
 संहितस्य । मृगे यणाऽमालक देविभयता । सुता यत्तुलामनयोऽप्यम ह्री कर्मोपकारो  
 पर यदुमानः ॥१३॥ सदा मुद्दे भारल दे विभयता । सुवर्गमे मिहस्य मयोऽप्योपि  
 कुटुंघिनी साउछ रंगदीया । प्रिया यत्तुलामन संहितस्य ॥१४॥ इति पंचशतक  
 इत्योऽजयंत शत्रुंजये प्यकृत यात्रा । निमि मर नरपति ॥१५॥ मीमं । अर्थ इति  
 पारुषः ॥१६॥ अर्जुंद् गिरि राण पुरे नारदपुमां च मिषपुमा देते । यामो यम पद  
 पद । कला १६१४ मितेदे चकार पुनः ॥१६॥ शोचिममाहुंइत् नृपे पदत् । पद ॥१७॥  
 गते फालगुन शुक्र पत्ने । ती दुपनी रयी कुरुतः रामस्य । प्रन सुतोया इति मय शमे  
 दानं च शालं च लयोपकार । सत्रयात्मकीयं गुरु योग वामने । नाराभिभय  
 मुक्ते । यथाहिलोके गुरु पुष्य पूर्णा ॥१८॥ सुजाविजंशया निज शर मयते । मया  
 जितायाः कलमिष्टमिच्छता । यानाशरद् शीतगु १६१५ रोरप शायने । विभयि  
 स्तेनहि मूल संतपः ॥१९॥ यत्तुषिके देवपि पाशंयो द्रुमी । नोय विभयनेन विभयि  
 हमे । पित्रोर्वशः कीर्ति करे इय ह्ययोः । कर्सा द्रुयं मोक्ष मूल पारण १६१६ विभय  
 यादि सतं गज केसरी । कपट पंजर हंग हूते करी । सत्र ययोपि मयुभयने हरे । अय  
 धेयं हरेव्रकनेदरी ॥२०॥ अन्तम ज्ञानय पयदप्यमानरः । मय मूल संहित मयक मानर ।  
 विजय सेन मूल स्तप मयदु राद । विजयते जय मेज उदाहयः १६१७ द्रुययो पुमं । मय  
 द्वाइवि रययो विजयते विजय सुयोगः । मय संहितया मयमानर मय  
 अन्तुवाताः ॥२१॥ नेपां मिद्वीते गदे विभय हरे । सुता मयमानर मय मीमं  
 जिनालयेय प्रविता मयपुरे । प्रवितादेवा मयक मयि मयमानर मय मीमं  
 प्रजायः श्रा विजय मयदु विभय करालंयो विभयोऽपि मय मयमानर मय मीमं  
 रनामि ॥२२॥ मय मयज मानर सुमी विभय जय मानर मयमानर मय मीमं  
 लिमदुहलीपां पर मय मयमानर १६१८ ॥



## सेवाड़ी ।

मारवाड़के गोड़वाड़ इलाक़ेके वाली जिलेके समीप यह प्राचीन स्थान है ।

### श्री महावीर जी का मंदिर ।

( 875 )

ॐ ॥ सं० ११६७ चेत्र सु० ६ महाराजाधिराज श्री अश्वराज राज्ये । श्री कटुक राज युवराज्ये । समी पाठीय चैत्ये जगती श्री धर्मनाथ देवसां नित्य पूजार्थं । महा साहणिय पूजवि - - - पीत्रेण ऊत्तम राज पुत्रेण उप्पल राकेन । मां गढ आंबल ॥ वि० सल खण जोगरादि कुटुंब समं । पट्टांडा ग्रामे तथा मेद्रांचा ग्रामे तथा छेछडिया मद्दडी ग्रामे ॥ अरहटं अरहटं प्रति दत्तः जय हारकः ॥ एक यः कोपि लोपयिष्यति ते स्मदोय धर्मं ज्ञाग्याः सदा ज्ञविष्यन्ति । इति मत्वा प्रतिपालनीयं । यस्य यस्य यदा ज्ञमिस्तस्य तस्य तदाफलं । बहुभिर्वसुधा भुक्त्वा राजभिः सगरादिभिः ॥१॥॥॥

( 876 )

ॐ ॥ स्वजन्मनि जनताया जाता परतोपकारिणी शांतिः । विभुध पति विनुत चरणः स शांति नामा जिनेा जयति ॥१॥ आसीदुग्र प्रतापाद्यः श्री मदन इल भूपतिः । येन प्रचंड देहं प्रराक्रम जिता मही ॥२॥ तत्पुत्रः आहमाना नामन्वये नीति सद्गुहः । जिन्द राजाभिधो राजा सत्यस शौर्य समाश्रयः ॥३॥ तत् नूजस्ततो जातः प्रतापा क्रांत भूतलः । अश्वराजः श्रियाधारो भूपतिर्भूतां वरः ॥४॥ ततः कटुकराजेति तत्पुत्रो धरणी तले । जज्ञे स त्याग सौभाग्य विख्यातः पुन्य विस्मितः ॥५॥ तद्भुक्ती पत्तनं रम्यं गमी पाटी ति नामकं । तत्रास्ति वीर नाथस्य चैत्यं स्वर्गं समोपमं ॥६॥ इतरासीद् विशुद्धात्मां

यशोदेवो बलाधिपः । राज्ञां महाजनस्यापि सत्तायामग्रणी स्थितः ॥६॥ श्री चरैरुक्  
 सग्दच्छे वंधूनां सुहृदां सतां । नित्योपकुर्वता येन न श्रान्तं समचेतसा ॥७॥ मत्सुतां  
 याहृडी जातो नराधिप जन प्रियः । विश्व कर्मैव सर्वत्र प्रसिद्धो विदुषां मतः  
 ॥८॥ तत्पुत्रः प्रथितो लोके जैन धर्म परायणः । उत्पन्नः यल्लको राज्ञः प्रसाद गुण  
 मंदिर ॥ १० ॥ दया दाक्षिण्य गांभार्यं वृद्धिचिद्दधान संयुतः । श्री मत्कटुक राजेन मत्स्य  
 दानं कृतं शुभं ॥ ११ ॥ माद्यैत्रयंक संप्राप्तो वित्तीर्णं प्रति यपकः । द्रममाष्टकं प्रमाणेन  
 यल्लकाय प्रमीदतः ॥१२॥ पूजाद्यं शान्ति नाथस्य यशोदेवस्य स्वत्तके । प्रवर्हयतु पंद्राऊं  
 यावदादनमुज्वलं ॥ १३ ॥ पितामहेन तस्येदं समीपाद्यां जिनालये । स्मारितं शान्ति  
 नाथस्य विंशं जन मनोहरं ॥१४॥ धर्मैण लिप्यते राजा पृथिवीं हुनक्ति यो यदा ।  
 ब्रह्महत्या सहस्रेण पातकेन विलोपयन् ॥१५॥ संवत् ११७२ ॥

ॐ ॥ संवत् ११६८ असीज यदि १३ रवी अरिष्ट नेमि पूर्व दिशायां अथश्रिका  
 अग्रे भित्ति द्वार पत्रे चतुर्लभाते कर्तुं मम च गोप्या मिलित्वा निषेधः कृतः ॥ लिखितं  
 पं० अश्वदेवेन ।

सं० १२४४ आसाह यदि ६ रवी श्री संभव देव फागुण सुदि ८ अथण - - - ६१ - -  
 पधर - - - ॥ - - - सुदि १४ जंती - - - हेकर जिस देव ॥ - - - सुदि १५ अथण  
 - - - हेतु श्री बहेव ॥ - - - कार्तिक यदि ५ माणु - - - देव पाठ देव ॥ - - - सुदि  
 ५ रवी - - - ण शंभव ॥

ॐ ॥ सं० १२५१ कार्तिक यदि १ रवी अथ यासता नादिकेर अथजा नादिके भूषणं



( २२८ )

निज गुरु श्री शालि भद्र सूरि मूर्ति पूजा हेतो श्री सुमति सूरिभिः । प्रदत्तात् बलाः  
५ मास पाटकेने चके व्ययनीयाः ॥४॥

( २६० )

॥ ॐ ॥ संवत् १२६७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ गुरौ आसहड़ वास्तव्य जजाजल गोत्रे श्रेष्ठि  
बांदा सुत नाना - - - देव सधीरण सुत आस पाल गुण पाल सेहड़ सुत पूस देव  
सायूदेव पूसदेव सुत घण देव सहड़ भार्या शीत पुत्रिका साजणि जालह सती रण  
भार्या राहीअर्ह - - - सेहड़ भार्या अहहव सूमदेव भार्या मदावति सायदेव भार्या  
प्रहल सिरि कुटुंब समुदायेन सेहड़नेन भार्या समन्वितेन देव कुलिका कारापिता ॥ मैत्र  
पुत्रिका देह साहुसा उसभ दासेन सुभं भवत् ॥

## सांडेराव ।

यह भी मारवाड़के घाली जिलेमें है ।

## श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

( २६१ )

श्री पंडेरक चैत्ये पंडित । जिन चन्द्रेण गोष्ठियुतेन धीमता देव नाग गुरौ मूर्ति  
कारिता धिरपाल मुक्ति बांछतां सं० ११४६ वैशाख वदि-- ।

( २६२ )

सं० १२ - - वर्षे फागुण सुदि १२ गुरौ अयोह श्री पंडेरक निवासी श्रेष्ठि गुणपाल  
पुत्रीकाया गो - - - ला - - सुखमिणि नामिकाया । श्री महावीर देव चैत्ये चतुष्टिका  
कारापिता ।

( २२६ )

( ३९३ )

ॐ ॥ संवत् १२२१ माघ अदि २ शुक्र ज्येष्ठ श्री केन्दुप देव विजय राज्ये । तत्र  
मातृ राज्ञी श्री जानतन देव्या श्री पंडेरकीय मूलनायक श्री महावीर देवाय क्षेत्र अदि  
१३ कल्याणिक निमित्तं राजकीय भोग मध्यात् । युगंधर्याः हाण्ड एकः प्रदत्तः । तथा  
राष्ट्रकूट पातू केल्हण तद्भातृज उत्तमसोह सूद्रग कालहण आहड आचल जयतिगा-  
दिभिः तला राज्ञायथस १ गटसरकात् । अस्मिन्नेव कल्याण केद्र १ प्रदत्तः ॥१॥ तथा  
श्री पंडेरक वास्तव्य रथकार धणपाल सूरपाल जोपाल सिगडा अमियपाल जिगहट-  
देल्हणादिभिः क्षेत्र सुदि १३ कल्याणके युगंधर्याः हाण्ड एक १ प्र - - -

( ४६४ )

सम्भत् १२३६ कार्तिक अदि २ बुधे ज्येष्ठ श्री नडले महाराजाधिराज श्री केन्दुप  
देव कल्याण विजय राज्ये प्रवर्तमाने राज्ञी श्री जालहण देवि भुकी श्री पंडेरक देव श्री  
पार्श्वनाथ प्रतापतः थांया सुत राहहाकेन मा भ्रातृ पालहा पुत्र सोडा सुनकर रामदेव  
धरणि यथोहीप वर्तमान लक्ष्मीधर सहजिग सहदेव सहियगछा १ रासा धीरण हरिचन्द्र  
वर देवार्दिभिः युतेन म - - - परम श्रेयोर्थ विदित निज गृहं प्रदत्तः ॥ राहहाग सत्त  
मानुषै यसद्भिः वर्षं प्रति द्रा० एला १ प्रदेया । शेष जनानां यसतां साधुभिः गोष्ठिके  
सारा कार्या ॥ संवत् १२६६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शनी सोर्य मातृ धारमति पुनः रत्नसो  
उधृत । थांया सुत राहहा पालहाभ्यां मातृ पद श्री निमित्ते स्तंभकी प्रदत्तः ।

## नाना

आर्याङ्के वाली जिलेमें यह ग्राम है ।

( ३९५ )

संवत् १२०३ वैशाख सुदि १२ सोल दिने श्री महंत श्रीमिनि. प्रमिष्ठिन. वसन्तः ॥

( २३० )

( ८६६ )

संवत् १२२६ माह शदि ७ चंद्रे श्री विशाधर गच्छे मोठ झा० ठ० रत्न ठ० अजुंन  
ठ० तिहणा पुत्र मोद देव श्रीयसे जातु टाहाकेन श्री पार्व पंचतीर्था का० प्र० श्री उद०  
देव सूरिभिः ।

( ८८७ )

सं० १५०५ वर्षे माह शदि ६ शनौ श्री ज्ञावकीय गच्छे महाधीर विंशं प्र० श्री शांति  
सूरिभिः - - - - पन्न ण जिन - - - - भवतं

( ८८८ )

सं० १५०६ वर्षे माघ शदि ११ सा० दूदा वीर मं महिया - - - - लहराज - - -

( ८८९ )

सं १५०६ वर्षे माघ शदि १० गुरौ गोत्र वेल्हस ऊ० ज्ञातीय सा० रत्न ज्ञार्या रत्ना  
दे पुत्र दूदा वीरम माह पादे पलूणा देव राजादि कुटुम्ब युतेन श्रीवीर परिकरः कारित  
प्रतिष्ठितः श्री शांति सूरिभिः ।

( ८९० )

॥ ॐ ॥ अथ संवत्सरे नृप विक्रमादित्त समयात् संवत् १६५६ भाद्रपद मासा शुक्ल  
पक्षे ७ सातमी तिथौ शनिवारे । श्री वैद्य गोत्रे । श्री सखिया क्षिणोत्रजा । मंत्रीश्वर  
त्रिभुवन तत्पुत्र पूना० तत्पुत्र मुहता चांदा तत्पुत्र मु० पेतसी तत्पुत्र मुहता नीसल १  
चाइमल २ वीसन पुत्र मुहता श्री उरजन तत्पुत्र मुहता पतागढ़ सिवाणे साकी करी  
मूउ । पिता पुत्र मुहता श्री नाराइण १ सादूल २ सूजा ३ सिघा ४ सहसा ५ मुहता  
श्री नारायण नुराणा श्री अमर सिंघ जी मया करेने गांव नापो दीयो मुहता नाराइण  
अरइट १ साइमल देव श्री महावीर नु सतर भेद पूजा सारु केसर दीयेल सारु दीये

हीदूनां शरोस । उरथापे तियेनुं गाईरो--सुंस । तुरक उरथापे तियेनुं सुगररी सुंस  
 वले - - - - को उथाप जो - - - गांव नागारी अदियो गांव वीयलाणै - - वी-मि-पु  
 इ जाएन - गांव - दम १ चेटियो - - - - तकी उथाप जो । वीजोको उथापमी विपत  
 गदहउ गाव मुहता श्री नारायण प्रार्था नवरंगदे तत्पुत्र मु० श्री राज - - जणवत - -  
 दा पुत्री जपमी - - - - नाराहण विजी प्रार्था नवलदे पुत्र जसवंत १ सहित वी - -  
 गच्छै चहारक श्री सिद्ध सूरि विदमाने - - - । ० श्री - - - - चंद शिष्य पांसा लिपित  
 ए - - - - जको - - - - तिणु - - - - ।

## लालराई ।

मारवाड़के वाली जिलेके समीप इस ग्रामके एक प्राचीन खंडर जैन मंदिरमें  
 यह लेख है ।

संवत् १२३३ वैशाख सुदि ३ संनाणक प्रोक्ता राज पुत्र छाम्बण पाळ राज पुत्र छाम्बण  
 पाळ तस्मिन् राज्ये वर्त्तमाने चा० श्रीवदा पड़ि देह यसी नू० आसधर समस्त सीर  
 सहिते खाड़ि सीर जब मध्यात् जवा से ४ गूजरी जात्रा निमित्त श्री गांति नाथ देवरय  
 दत्ता पूण्याय यः कोपि लुप्यते स पापो न छियतेमंगल भवतू ॥ तथा प्रदिगा उल्ल  
 अरहहे आसधर सीरोइय समस्त सीरण जवा हरोयु १ गूजर त्रयात्रहि श्रीगुरुय  
 पुण्याय ॥ १ ॥

ॐ ॥ संवत् १२३३ ज्येष्ठ यदि १३ गुरी अयोहं वी नहूले महाराजापिराज श्री  
 केहहण देव राज्ये वर्त्तमानः श्री कीर्ति पाळ देव पुत्रे सिनाणक प्रोक्ता राज पुत्र छाम्बण

पालह राज पुत्र अन्नय पाल राज्ञी श्री महिषल देवि सहितैः श्री शांतिनाथ देव यात्रा  
निमित्तं भद्रिया उत्र अरघट उरहारि मध्यात् गूजर तृहार १ जवा ग्राम पंच कुल  
समक्ष एतत् - - - दानं कृतं पुण्याय साक्षि अत्र वास्त - - - दूगण --- सो० देवउपे०  
समीपाटीय - - - पाजून आम्र - - - समक्ष आदान - - - मितस्य २ त - - - हट्या  
पातकेन लि - - - ११ ।

## हटुंदी ।

मारवाड़ के गोड़वाड़ इलाके के बीजापुर के पास यह प्राचीन स्थान है ।

## श्री महावीरजी का मंदिर ।

ॐ ॥ सं० १२६६ वर्षे चैत्र सुदि ११ शुके श्री रत्न प्रज्ञोपाध्याय शिष्येः श्री पूर्ण  
चन्द्रोपाध्याये रालक द्वय शिखराणि च कारितानि सर्वानि ।

ॐ सं० १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमे ऽद्यह समीपाटी । मंडपिकायां भां पाहट  
उभां वां । पथरा महं सजन उ महं० धीणा उधण सीह उ० व० देव सिंह प्रभृति पंच  
कुलेन श्री रात्ताभिधान श्री महावीर देवस्य नेशाप्रचयं ? वर्षे स्थितिके कृत द्र० २१ अथ  
विंशति । द्रुम्माः वर्षं वर्षं प्रति समी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः पालनीयश्च  
यहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य - - - यदा भूमि तस्य तस्य  
तदा फलं शुभं भवतु ॥

( २३३ )

( ४३५ )

सं० १३३६ वर्षे श्रेष्ठिको नाग श्र । श्रे - - अर सोहेन सय पत्नी दत्त द० उभय द् ३६  
समीपाटी मंडपिकाश्रां व्याष्टपृथ माण पंच कुलेन वर्षे वर्षे प्रति आचंद्रार्क - - याचत  
दातव्याः । शुभमस्तु ॥

( ४३६ )

ओं नमो वीतरागाय संवत् १३४६ वर्षे श्रावण वदि ३ शुक्र दिने स्वहेः ग्रामे  
महादपाल लभारावा कर्म सीहपा - - - ।

माताजके मंदिरके स्तम्भ पर ।

( ४३७ )

॥ ॐ ॥ नमो वीतरागाय ॥ संवत् १३४५ वर्षे प्रथमाश्राद्धा वदि ६ शुक्र दिने स्वहेः  
श्री नडूल मंडले महाराज कुल श्री सम्पत सिंह देव राजपेश तन्नियुक्त श्री ॥ श्री कर्म  
महं ललनादि पंच कुल प्रच्छति भूमि अक्षराणि पञ्चा ॥ समो तल पद्विन्य मंत्रपिकाश्रां  
साधु० हेमाकेन जाद्वि हाथीउडी ग्रामे श्री महावीर देव नेवार्ये वर्षे प्रति उशां - - व द्  
२४ चत्वारिंशि द्रमा० प्रदत्ता शुभं भवतु ॥ बहुभिर्बनुधा भुक्ता राजति नगरादिषु ।  
जस्य जस्य जदा भूमौ तस्य तस्य वदा फलं ॥ कपूर विजय लिपतं ॥

खण्डहर में मिला हुआ पाषाण पर ।

( ४३८ )

- - - ॥ विरके - पजे रक्षा सख्या जवस्तवः । परिधानतु ना - - पराणं नपापना  
जिनाः ॥१॥ ते वः पांतु जिना जिनास समये यत्पाद् पद्मान्मस्य देवा नान्य मय्य

शीखर नख श्रेणीषु विम्बोदयात् । प्रायेऽकादशभिर्गुणं दशयती शक्रस्य शुष्मदृशां कस्य  
 स्योद्गुण कारको न यदि वा स्वच्छात्मनां सङ्गमः ॥२॥ -- क -- नासत्करोतीप  
 शोभितः । सुशेखर -- ली मूर्द्धि रुद्रो महीभृतां ॥३॥ अग्नि विभ्रद्रुषिं कातां सायित्रीं  
 चतुराननः हरिवर्मा वभूवात्र भूविभ्रुवनाधिकः ॥४॥ सकल लोक विलोचन पंकज  
 स्फुरदनं युद्ध बाल दिवाकरः । रिपु बध्वदनेन्दु हत द्युतिः समुद्रपादि विदग्ध नृप-  
 स्ततः ॥५॥ स्वाचार्यैर्यो रुचिर यचनेर्वासुदेवाभिधाने र्थाधं नीतो दिनकर करैर्नोर  
 जन्मा करो व । पूर्व जैनं निजमिव यशो कारयदृस्तिक्वण्णां रम्यं हर्म्यं गुरु हिम  
 गिरेः शृङ्ग शृङ्गार हरि ॥६॥ दानेन तुलित बलिना तुलादि दानस्य येन देवाय । प्रागद्वयं  
 व्यतीर्यत प्रागश्चाचार्य वर्याय ॥७॥ तस्माद्भूच्छुद्धु सख्यो मंमटाख्यो महीपतिः ।  
 समुद्र विजयी शलाघ्य तरवारिः सद्रूमिकः ॥८॥ तस्माद् समः समजनि समस्त जन  
 जनित लोचनानन्दः । घबलो यसुधा द्यापी चंद्रादिव चन्द्रिका निकरः ॥९॥ भ्रंक्वाघाटं  
 घटाग्निः प्रकटमिव मर्द मेदपाठे जटानां जन्ये राजन्य जन्ये जनयति जनताजं रणं मुंज  
 राजे । श्रीमाणे प्रणष्टे हरिण द्वय भिया गूर्जरेशे विनष्टे तत्सैन्यानां शरण्यो हरिरिव  
 शरण्यः सुरणां अभूव ॥१०॥ श्री मटुर्लत राज भूभुजि भ्रजैर्भ्रजत्य भ्रंगां भुवं दंडैर्भण्डन  
 शीङ्ग चंड सुभटै स्तस्याभिभूतं विभुः । यो दैत्यैरव तारक प्रभृतिभिः श्री मान्महेद्रं  
 परा सेनानोरिव नीति पौरुष परी नैषोत्परां निवृत्तिं ॥११॥ यं मूलादुद् मूलयद्गुरु  
 बलः श्री मूल राजी नृपो दूर्पाधो घरणां बराह नृपति यद्दूर्वापः पादपं । आयातं  
 भुविकां दिशो कमजिको यस्तं शरण्यो दृघो दंष्ट्रायानिव रुद्र मूद्र महिमा कीलो मही  
 मण्डलं ॥१२॥ इत्यं पृथ्वी भ्रतृभिर्नाथ मानैः सा -- सुस्थितैरास्थितोयः । पायो  
 नायो वा विपत्तास्त्वपक्षं रक्षा कांक्षे रक्षणे बटु कक्षः ॥१३॥ दिवाकरस्येव करैः कठोरैः  
 करालिता भूर कदम्बकस्य । अग्नि श्रियं ताप हतोरुताप यमुन्नतं पादप यज  
 नीचा ॥ १४ ॥ धनुर्धर शिरोमणे रमल घम्मंभ्यस्यतो जगाम जलधेर्गुणो गुहरमुष्य  
 पारंपरं । समीयुराप सन्मुखाः सुमुख मार्गणानां गणाः सतां चरितमद्भुतं सकलमेश

लोकोत्तरं ॥१५॥ यात्रास्तु यस्य वयदीर्घं विपुर्विशेषान् यस्मिन्नुत्तमं सुखान् मनी-  
 रजांसि । तेजोभिरुज्जितं मनेन विनिज्जितं त्वाद्वास्वान्विलज्जितं ह्यथातत्तरं तिस्रो-  
 भूत् ॥१६॥ न कामनां मनो धीमान् घ - लतां दृशो । जनन्योद्धार्य नरजायं त्वात् भूयो-  
 तोपि यः ॥१७॥ यस्तेजोभिरहस्करः करुणया शीघ्रीदनिः शुद्धया । शीघ्रं वपनं धीमतेन  
 वचसा धर्मेण धर्मात्मजः । प्राणेन प्रलाय निलो यत्प्रियो मंत्रेण मंत्री परो मयेन  
 प्रमदा प्रियेण मदनी दानेन कर्णोभवत् ॥१८॥ सुनय तनयं राज्ये बाल प्रसादं मतिश्रिय  
 त्परिणतवया निःसंगो यो बभूव सुधीः स्वयं । कृत युग कृतं कृत्वा कृत्यं कृतारम चमत्क-  
 ती रकृत सुकृतीनो कालुष्यं करोति कलिः सतां ॥१९॥ काले कलायपि किलामलमेतद्व्ययं  
 लोका विलोक्य कलनातिगतं गुणौघं । पायादि पायिंघ गुणान् गणयन्तु कृत्यानेकं यथा-  
 द्गुणनिधिं यमितीव वेधाः ॥२०॥ गोचर्यन्ति न वाचो यच्चरितं चंद्रं चद्रिका नधिर ।  
 वाचस्पते वर्धस्वही लो वान्यो वर्णयेत्पूर्णां ॥२१॥ राजधानी भुयो मर्तुं कृतव्यान्ते यन्ति  
 कुण्डिका अलका धनदस्येव धनाद्वय जन सेविता ॥२२॥ नीहार हार हरहास विमांशु तारि  
 फात्कार वारि भुयि राज विनिज्जराणां । वास्तव्य भव्य जन धित्त समं समनापनेनाप  
 संपद पहार परं परेपां ॥२३॥ धीत कल धीत कलशाभिरामरामास्तना ह्यन यदयां । नय  
 परेभ्यपहाराः सदा सदाचार जनतायां ॥२४॥ समदमदना लीलालायाः प - ना कृताः कृपय  
 दृशां संदृश्यते दृशस्तरलाः परं । मलिनित मुखा यत्रोद्दृशाः परं कठिनाः कृपा विविद  
 रचना नीवी वंधाः परं कुटिलाः कचाः ॥२५॥ गाढोत्तमानि सादृं गुपि कुप कृपायां  
 कामिनीनां मनोज्ञं विद्वस्तीर्णानि प्रकामं सहं घन जघनेदृशता मंदिराणि । गाढं दध  
 शुभ्राण्यतिशय सुनगं नेत्र पात्रैः पवित्रैः सत्रं चित्राणि धात्रो जन हस हृदयविप्रसृतेषु  
 सत्रं ॥२६॥ नधुरा घन पर्वणी हव्यरुपा रसाधिकाः । यत्रेणु वाटा शोभन्तो नरि-  
 क्रत्वाद्भिदेलिमाः ॥२७॥ अस्यां सूरिः सुराणां गुरु त्रिय सुनति मौरि वाशो गुणीने मृं पापानां  
 त्रिलोकी बलय विलसिता नंतरानंत कीर्तिः । नान्ना श्री वांति तद्रो जयदमि प्रविष्टं  
 प्रासमाना समानो कामं कामं समर्था जनित जनमनः संनदा यद्वय सूरिः ॥२८॥ सम्यसुना  
 सुनीन्द्रेण मनोभूरुप निर्जितः । स्वधनेपि न स्वयमेव समगन्तवति उज्ज्वलः ॥२९॥



प्रोक्ष्यत्पद्माकरस्य प्रकटित विकटा शेष जावस्य सूरः सूर्यस्येवामृतांशुं स्फुरित शुभ्र रुचिं  
 वासुदेवामिधस्य । अध्यासीनं पदद्वयां यम मल विलसज्ज्ञान मालोक्य लोको लोका  
 लोकायलोकं सकलमचकलस्केवल संभवीति ॥३०॥ धर्माभ्यास रतस्यास्य संगतो गुण  
 संग्रहः । अन्नग्न मार्गणेच्छस्य चित्रं निदर्शाण वांछना ॥ ३१ ॥ कमपि सर्वगुणानुगतं  
 जनं विधिरयं विदधाति न दुर्विधयः । इति कलंक निराकृतये कृती यमकृतेव कृतास्वित्त  
 सद्गुणं ॥३२॥ तदीय वचनान्निजं घन कलत्र पुत्रादिकं विलोक्य सकलं चलं दल मिवा-  
 निलांदोलितं । गरिष्ठ गुण गोप्यदः समुददी धरद्वीर धीरुददार मति सुंदरं प्रथम तीर्थ  
 कृन्मंदिरं ॥३३॥ रक्तं वा रम्य रामाणां मणि ताराव राजितं । इदं मुख मिवा ज्ञाति भास  
 मान वरालकं ॥३४॥ चतुरस्र पट उजन घाह्दहनिकं शुभ्रशुक्ति करोटक युक्त मिदम् । बहु  
 ज्ञान राजि जिनायतनं प्रविराजति भोजन धाम समं ॥३५॥ विदग्ध नृप कारिते जिन  
 गृहेति जीर्णं पुनः समं कृत समुद्रताविह भवांचुधिरात्मनः । अतिष्ठिपत सीप्यथ प्रथम  
 तीर्थ नाथा कृतिं स्वकीर्त्तिमिव मूर्त्तामुपगतां सितांशु द्युति ॥३६॥ शांत्याचार्ये स्त्रि-  
 पंचाशे सहस्रे शरदा मियं । माघ शुक्ल त्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठैः प्रतिष्ठिता ॥३७॥ विदग्ध  
 नृपतिः पुरा यद तुलं तुलादेर्द्वी सुदान भवदान धारिदम पोपलन्नाद्भुतं । यतो धयल  
 भूपतिर्जिनपतेः स्वयं सात्मजोरचहमद्य पिप्पलोप पद कूपकं प्रादिशत् ॥३८॥ यावच्छेष  
 गिरस्य मेक रजतस्यूणा स्थिताभ्युल्ल सत्पातालातुल मंडपा मल तुलामा लयते भूतलं ।  
 तावत्तार रवाजिराम रमणी गंधर्वं धीर ध्वनिर्द्वामन्यत्र धिनेतु धार्मिक धियः सद्रूप  
 वेला यिधी ॥३९॥ सालंकारा समधि करसा साधु संधान यथा शलाघ्यश्लेषा ललित विल-  
 सतट्टिता रुधात नामा । सृत्ताट्टया रुचिर यिरतिर्दु र्यमाध्यंवर्यासूयाचार्ये द्यंरचिरमणी  
 वाति रम्या प्रशस्तिः ॥४०॥ सम्वत् १०५३ माघ शुक्ल १३ राधि दिने पुष्य नक्षत्रे श्री  
 ऋषभ नाथ देवस्य प्रतिष्ठा कृता महा ध्यज शचारोपितः ॥ मूलनायकः ॥ नाहक  
 जिन्दज सशम्प पूरभद्रः नागपोचिस्य श्रावक गोष्ठिकैर शेष कर्म क्षयार्थं  
 स्व संतान प्रयाव्य तरणार्थं च न्यायोपाज्जित वित्तैः कारितः ॥४१॥ परयादि दम्प  
 मयनं हेतु नय सहस्र भंगकाकीर्णं । नव्य जन दुरित शमनं जिनेद्र वर शासनं  
 जयति ॥४२॥ आसीद्वी यन संमतः शुभ्रगुणा भास्वत्प्रतापोज्ज्वला विश्वपट् प्रतिभः

प्रभाव कलितो भूपोत्तमांगार्चितः । योपित्पीन पयोधरांतर सुव्याभिष्यक्त नन्तार्पितो  
यः श्री मान्हरि धर्म उत्तम मणिः सद्रंश हारे गुरी ॥२॥ तस्माद्भूय भुवि भूरि गुणोपपेतो  
भूप मभूत मुकुटाचिंत पाद पीठः । श्री राष्ट्रकूट कुल कानन कल्प द्रुतः श्री माण्डिक्य  
नृपतिः प्रकट प्रतोपः ॥३॥ तस्माद्भूय गुणान्वित तमा कौर्त्तः परं प्राजनं संभूतः सुभूतः  
सुतोति मतिमान् श्री मंमटी विश्रुतः । येनास्मिन्नज राज वंश गगने चंद्रायितं शासना  
तेनेदं पितु शासनं समधिकं कृत्या पुनः पालयते ॥४॥ श्री बटभद्राचार्य विदग्ध नृप पृथितं  
समभ्यर्च्य । आचंद्राकुं यावद्वृत्तं जयते मया प्रपालयते सर्वम् ॥५॥ श्री इस्ति कश्चिकायां  
चैत्य गृहं जन मनोहरं जत्त्या । श्री मद्रुडभद्र गुरोर्यद्विहितं श्री विदग्धेन ॥६॥ तस्मिन्  
एलोकान्समाहूय नाना देश समागतान । आचंद्राकुं स्त्रियति यावद्वृत्तं सत्तं ॥७॥  
रूपक एको देयो बहतामिह विंशतेः प्रब्रह्णानां । धर्म - - - - कथं विक्रयेन तथा ॥८॥  
संभूत गंड्या देयस्तथा बहंत्याश्च रूपकः श्रेष्ठः । घाणे घटे च कर्षो देयः सर्वेण परिपा-  
त्या ॥९॥ श्री महलोक दत्ता पत्राणां चोण्डिका त्रयोदशिका । पेंगलक पेंगलक मेतद्रु  
द्युत करैः शासने देयं ॥१०॥ देयं पलाश पाटक मर्यादावर्तिक - - - प्रत्यर पटं धान्या-  
ढकं तु गोधूम यव पूर्णं ॥११॥ पेंहुा च पंच पलिका धर्मस्य विशेषक तथा नारे ।  
शासन मेतत्पूर्व्यं विदग्धेन राजेन रुदत्तं ॥१२॥ कर्प्पासक्रांस्य कुंकुम पुर मांजिद्रादि  
सर्व्वं प्रांहस्य । दश दश पलानि नारे देयानि विक - - - ॥१३॥ जादानादे तस्माद्भाग  
द्वय मर्हतः कृतं गुहणा । शेषस्तृतीय भागो विद्या घननारमनो विहितः ॥१४॥ राह्य तस्पुत्र  
पोत्रेश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च । गुरुदेव धनं रक्ष्यं नोपेक्ष्यं हितमोष्णतिः ॥१५॥ दत्तं  
दाने फलं दानोत्पोलिते पालनात्फलं । जज्ञितो पेल्लिते पापं गुरुदेव धनेधिर् ॥१६॥ गोधूम  
मुद्ग यव उवण रालकादेस्तु मेयजा तस्य । द्रोणम् प्रति नाणकनेक मय सर्व्वेण दातव्यं  
॥१७॥ बहुजिर्व्वसुत्रा भुक्ता राजतिः सुगरादितिः । यत्त यत्त यदा भूमिभरय मय  
तदा फलं ॥१८॥ राम गिरि नंद कलितं विक्रम काले गते तु शुचिमाने । श्री मद्रुडभद्र  
गुरोर्विदग्ध राजेन दत्त मिदं ॥१९॥ नवनु शतेषु गतेषु तु प्रणयनी समधि जेन् माणश  
कृष्णाकादश्यामिह समर्पितं संमट नृपेण ॥२०॥ यावद् भूधर भूमि ज्ञानु जगतं भागीरथी



परम श्रायक्रेण संवत् १२३६ वैशाख शुदि ५ गुरी सकल त्रिलोकी कलाभोग भ्रमण  
परिश्रान्त कमला यिलासिनी विश्राम यिलास मंदिरं जय मंडपो निर्मापितः ॥ तथा हि ॥  
नाना देश समागतैर्नयनयैः स्त्री पंसवर्गं मुहु वस्ये -- पाय लोकन परेनी कृष्णभाषाया ।  
स्मारं स्मारमयो यदीय रचना वैचित्र्य विस्फूर्जितं तैः स्वरूपान गनेरपि प्रतिदिनं नान्य-  
ठमावर्ष्यते ॥ ४ ॥ विश्रवंभरावर यधू तिलकं किमेतललीलारविंद्रमय किं दुहितुः प्रयोधैः ।  
दत्तं सुरै रमृतकुंड मिदं किमत्र यस्यायलोकनयित्री त्रिविधा विकल्पाः ॥ ५ ॥ गर्वापूरण  
पातालं --- ण महीतलं । तुंगत्येन नमो येन ध्यानधो ज्ञयन प्रयं ॥ ६ ॥ तिं ण ॥ ककुलं  
द्वयोमसरः समीनमकरं कन्यालिकुंजाकुलं मेपाठय सकुलीरनिह मिधुन प्रोषद्वृपाय-  
कृतं । ताराकरं वमिंदुधाम सलिलं सद्राजहंसास्पदं यावत्तायद्रिहादिनाय पायने नयादभी  
मंडपः ॥ ७ ॥ कृतिरियं श्री पूर्णं जद्र सूरीणां ॥ जद्रमस्तु श्री संपाय ॥

ओं ॥ संवत् १२२१ श्री जावालिपुरीय कांवनगिरि गदस्योपरि प्रभु श्री जैम नृरि प्रयो-  
धित गूर्जर धराधीश्वर परमार्हत लीलेश्वर ॥ महाराजधिराज श्री कुमार पाठ देशकामिने  
श्री पार्श्वनाथ सत्कमूल विंघ सहित श्री कुडर विहारभिक्षाने जैन पीत्ये । सद्रिधि प्रथ-  
र्त्तनाय वृहद्गच्छीय वादींद्र देवाचार्याणां पत्ने लाचंद्राकं समर्पिते ॥ सं० १२२२ वर्षे  
एतद्वेशाधिप चाहमान कुलतिलकमहाराज श्री समर सिंह देवादेगेन सां० यान् सुद्र सां०  
यशोवीरेण समुद्रुते । श्री सद्राजकुलादेशेन श्री देवा चार्यं शिष्यैः श्री पूर्णं देवाचार्यः ।  
सं० १२५१ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ श्री पार्श्वनाथ देवे लोरणादीनां प्रतिष्ठा कार्या कृते । सुय  
शिखरे च कनकमय ध्वजा दंडस्य ध्वजा रोपण प्रतिष्ठायां कृत्यायां ॥ सं० १२५० वर्षे  
दीपोत्सव दिने अतिनय निष्पंदमेक्षा मध्य मंडपे श्री पूर्णदेव नृरि शिष्यैः श्री रामध-  
द्राचार्यैः सुवर्णमय कलसरोपण प्रतिष्ठा कृता ॥ सुहं जवतु ॥ ७ ॥

( २१० )

( १०० )

संवत् १२६१ वर्षे श्री मालीय श्रे० बीसल सुत नाग देवस्तरपुत्रो देवहा सलक्षण  
क्षांपारुषाः क्षांवा पुत्रो बीजाकस्तेन देवद सहितेन पितृक्षां श्रेयोर्थं श्री जावालपुरीय  
श्री महावीर जिन चैत्ये करोदि कारिताः ॥ शुभं भवतु ॥

( १०१ )

संवत् १३२० वर्षे माघ सुदि १ सोमे श्री नाणकीय गच्छ प्रतिवद्द जिनालये महाराज  
श्री चंदन विहारे श्री क्षी व राघेश्वर स्थान पतिना महारक रावल लक्ष्मीधरेण देव श्री  
महावीरस्य आसोज मासे अष्टाहिका पदे द्रम्माणां १०० शतमेकं प्रदत्तं ॥ तद्व्याज मध्यात्  
मठ पतिना गोष्ठिकेश्व द्रम्म १० दशकं वेचनीयं पूजाविधाने देव श्री महावीरस्य ॥

( १०२ )

ओं संवत् १३२३ वर्षे माग सुदि ५ युधे महाराज श्री चाचिग देव कल्याण विजय  
राज्ये तन्मुद्रालंकारिणि महामास्यः श्री जल्लदेवे ॥ श्री नाणकीय गच्छ प्रतिवद्द महा-  
राज श्री चंदन विहारे विजयिनि श्री महुनेश्वर सूरौ तैल गृह गोत्रोद्भवेन महं नर-  
पतिना स्वयं कारित जिन युगल पूजा निमित्तं मठ पति गोष्ठिक समक्षं श्री महावीर देव  
प्रांढागारे द्रम्माणां शनाट्टं प्रदत्तं ॥ तद्व्याजोद्भवेन द्रम्माट्टेन नेचकं भासं प्रति  
करणीयं ॥ शुभं भवतु ॥

( १०३ )

ओं ॥ संवत् १३५३ वर्षे वैशाख वदि ५ सोमे श्री सुवर्णं गिरी अद्येह महाराज कुल  
श्री सामंतसिंह कल्याण विजय राज्ये तरपादपद्मोपजीयनि ॥ राज श्री कान्हडदेव  
राज्य घुरामुद्दहमाने इहैव वास्तव्य संघपति गुणघर ठकुर जांघड पुत्र ठकुर जस पुत्र  
सोनी महणसीह भार्या मारुहणि पुत्र सोनी रतनसिंह शास्त्री मारुहण गजसीह तिहुणा  
पुत्र सोनी नरपति जयता विजयपाल नरपति भार्या नायकदेवि पुत्र लखमीधर मुवण

पाल सुहृदपाल द्वितीय ज्ञार्या जालहण देवि इत्यादि कुटुंब सहितेन ज्ञार्या नायक देवि  
श्रेयोयें देव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये पंचमी यति निमित्त निम्ना निक्षेप इहमेव नरपतिना  
दत्तं तत् प्राटकेन देव श्री पार्श्वनाथ गोष्ठिकैः प्रति वर्षः ज्ञानद्राके पंचमी यतिः  
कार्या ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥

### महावीरजी का मन्दिर ।

( १०४ )

संवत् १६८१ वर्षे प्रथम क्षेत्र याद ५ गुरी जयोह श्री राठोड़ वंशे श्री सूरि सिंह पट्ट  
श्री महाराजे श्री गजसिंह जी विजयि राज्ये.....मुहणोज गोत्रे यह उमवाल ज्ञार्याय  
सा० जैना ज्ञार्या जयवंत दे पुत्र सा० जयराज ज्ञार्या मनोरथदे पुत्र सा० सादा सुभा  
सामल सुरताण प्रमुख परिवार पुण्यायें श्री स्वर्ण गिरि गढ़ादुर्गा परिशिष्ट श्री मत्त  
कुमार विहारे श्री मती महावीर चैत्ये सा० जैसा ज्ञार्या जयवंतदे पुत्र सा० जयमल श्री  
वृह ज्ञार्या सरूपदे पुत्र सा० नइणसी सुन्दरदास आश करण लघुतायां नैनागदे पुत्र सा०  
जगमालदि - - पुत्र पोत्रादि श्रेयसे सा० जयमल जी नाम्ना श्री महावीर चिंत श्री सा  
महोत्सव पूर्वकं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छ पक्षे सुविहितान्तरकारक विधिना-  
चार धारक साधु क्रियोद्धार कारक श्री ६ ज्ञाणंद विमल सूरि पट्ट प्रभाकर श्री विजय  
दान सूरि पट्ट शृङ्गार हार महा म्हेच्छाधिपति पातगाह श्री अजय प्रविशोपक  
तट्ट जगद्गुरु विरुद धारक श्री शत्रुंजयादि तीर्थ जीजीवादि कर मोचक यमनाथ  
जमरि प्रवर्तक महारक श्री ६ हीर विजय सूरि पट्ट सुकुटायमान ज० श्री ६  
विजय सेन सूरि पट्टे संप्रति विजयमान राज्य सुविहित धिरः श्रेयसायमान ज्ञा-  
रक श्री ६ विजय देव सूरिस्वराणामादेशेन महोपाध्याय श्री विद्याधर गणि  
शिष्य पण्डित श्री सहज सागर गणि शिष्य पं० जय सागर गणितः श्रेयसे कारकय ॥

( २२२ )

( २०५ )

संवत् १६८३ आषाढ वदि गुरी अत्रण नक्षत्रे श्री जालोर नगरे स्वर्ण गिरि दुर्गे  
महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय राज्ये महणोत्र गोत्र दीपक मं  
प्रचला पुत्र मं जेसा भार्या जेवंत दे पु० सं श्री जयलला नास्ना मा० सरूपदे द्वितीय  
मुहागदे पुत्र नयपती संहरदास हारणनण नरसिंहदास प्रमुख कुटुंब यत्नेन स्व श्रेयसे  
श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे श्री तपा गच्छाधिकारी श्री हीर विजय सूरि  
महालंकार महारक श्री विजय सैन - - - ।

( २०६ )

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ वदि १ गुरी सुप्रधार ऊट्टारण तत्पुत्र तोडरा इसर टाहा ।  
ट्टा हांराकेन कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे म० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

( २०७ )

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ वदि १ गुरी । महणोत्र गोत्र । प्र० जमल भार्या सरूपदे  
समर्पित । श्री सुपाश्व विंवं । प्रतिष्ठितं तपागच्छे प्र० - - ।

( २०८ )

संवत् १६८३ वर्षे श्री अजित विंवं प्र० त० प्र० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

( २०९ )

संवत् १६८२ वर्षे माघ सुदि १० सोमे श्री मेड़ता नगर वास्तव्य उक्तेश ज्ञातीय  
प्रामेचा गोत्र तिलक सं हर्ष लघु भार्या मनरंगदे सुत संघपति सामीदासकेन श्री  
कृष्णनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे श्री तपा गच्छाधिराज महारक श्री  
विजय देव सूरिभिः ॥ आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितः ॥  
धीरस्तुः ॥

( २२३ )

( २१० )

संवत् १६८३ वर्षे आ० व० गुरी ध० उठांक श्री माण विप्र सा० विजयदेव गुरिसिः ।

( २११ )

## चौमुखर्जा का मन्दिर ।

संवत् १६८१ वर्षे प्रथमा चैत्र वदि ५ गुरी श्री श्री मृहणोत्र । गोत्र सा० जेना जगन्  
जसमादे पुत्र सा० जयमाल भार्या सोहागदेवी श्री सादिनाथ विप्र कारित प्रविष्टा  
महोत्सव पूर्वकं प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छे श्री ६ विजय देव गुरीना मादेभौन प्रथ  
सागर गणिना ।

## हरजी

यह मारवाड़के जालोर के पास गांव है ।

( २१२ )

संवत् १२३१ मार्ग सुदि ८ ज० शांति शिष्येण नेमिचंद्रेण आरम श्री मार्ग प्रदश ।

( २१३ )

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३-आ० श्री सुनिशेपर शिष्य दया सा श्री जीरन्त  
त्फया केरुत ॥

( २१४ )

संवत् १५२७ वर्षे फागुण सुदि ११ दिने सा० श्री धिटाच म० सोम राशि सा० -



( २१४ )

( ११५ )

श्री शीले सार्थो मतिर्यस्यातः स्पृहा वीर देगिते । महिमा कीर्ति लेखा रया । तस्य  
देवेषु दुर्लभा ॥

( ११६ )

-- श्री पञ्जु वधू असोचय -- बहुया भज्जा सुहंकर वणिरस । सो भन सरावि-  
याए घम्मत्थम कारि लग एसा ॥ १ ॥

( ११७ )

--- चंदण वाल नासा --- पा मति सिरी सा -- पी -- लगा कारिता

जूना ।

यह मारवाड़का वाडमेर इलाके में गांव है ।

( ११८ )

ओं ॥ संवत् १३५२ वैशाख सुदि १ श्री बाहद मेरो महाराज कुल श्री सामंत सिंह  
देश कल्याण विजय राज्ये तन्त्रियुक्त श्री २ करणे मं० चीरासेल वेलाउल मां० मिगल  
प्रभृतयो घर्मान्तराणि प्रयच्छन्ति यथा । श्री आदिनाथ मध्ये संतिष्ठमान श्री विघ्न  
मर्दन क्षेत्रपाल श्री चण्डेराज देवयोः उन्नय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृष २०  
उत्तयादीप ऊर्ध्व सार्थ प्रति द्वयोर्देवयोः पाइला । पक्षे भौम प्रिय दशविधापक अर्द्धादिन  
ग्रहीतव्याः । ओसो लागो महाजनेन मानितः ॥ यथोक्तं बहुनिर्घसुधा मुक्ता राज्ञिः  
सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ १ ॥ ॐ ॥

( २१५ )

## जूना वेडा ( मारवाड )

( १९९ )

ॐ ॥ संवत् १९११ माघ सु० ११ भ्रूपतेरं प्रदेष्ट्यास्तु नूनुता जेज्जकेन स्वयं प्रपूर्ण  
वज्र मानाद्ये मिलित्वा सर्वं वांधवैः ॥ १ ॥ स्वस्तके पूर्ण सद्रूप धीरनायक्य मन्दिरे  
कारिता वीर नायक्य श्रेयसे प्रतिमानघा ॥ २ ॥ नूरे प्रद्योतनार्यक्य ऐन्द्र देवेन मुनिषा  
भूपिते सांप्रतं गच्छे निःशेष नय संजुते ॥ ३ ॥

( २२० )

संवत् १६११ वर्षे फागुण दि १३ उकेस ज्ञातीय वापणे गोत्रे नैधयी दीदु भाग्यादीहम  
दे पुत्र सं० गोपा भाग्या गेलमदे पुत्र रूपा चंद्रा श्री रादुडिया भाग्या मन भगोदे पुत्र  
भोजा भा० ना - - - श्री पारशनाथ विंघ कारित तथा गरुड भहारक श्री श्री हीर  
विज - - - ।

( २२१ )

संवत् १३१७ वर्षे वैशाख सुदि १५ रवी श्री जकेस गोत्रे श्री सिद्धा भाग्य संनामे श्री  
वेल्हू भा० देमलतपुत्र श्री० जन सीहेन सकुटुम्बेन जानम श्रेयसे पारशनाथ विंघ कारित  
प्र० श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

( २२२ )

संवत् १५०७ वर्षे माहि सुदि ५ रवी प्र० ग० दीदा राजू पु० योसा भा० विमलादे  
पु० ह्मर सहितेन स्व पुण्यार्थे श्री विमलनाथ विंघे का० प्र० श्री महाशयं सन्धि श्री न०  
कीर्ति सूरिभिः मारुहेण्डू साने वास्तव ।

( ११६ )

( ११३ )

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री बहडा ग्रामे उसवाल सुते गोत्र सीलाकी  
बाघणे सागासाहा जी दाभा० खेमलदे पुत्र राजा ज्ञार्या सेवादे पुत्र माना कमरधी श्री  
कुंभुनाथ विंवं श्री हीर

( ११४ )

सं० १५३० वर्षे सा० व० ६ प्राग्वाट ज्ञाति ठय० चाहड ज्ञार्या राणी पु० ठय० वेला प्रमुख  
कुटुंब्य युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः  
चुंपरा ग्रामे

( ११५ )

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री बहडा ग्राम उसवाल ज्ञातीय गोत्र तिलहरा  
सा० सुदा ज्ञार्या सीहलादे पुत्र नासण बीदा नासण ज्ञार्या न काग देवीदा ज्ञार्या  
कनकादे सुत बला श्री आदिनाथ विंवं कारापित श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

( ११६ )

सं० १५१५ वर्षे माघ शु० १५ उकेश लोढा गोत्र सा० फांजू श्री० कपूरी सुत सा०  
वीरपाठेन मा० गांगी पुत्र पनवंल कर्मसी ज्ञातू दिरहादि युतेन श्री संभवनाथ विंवं  
कारित प्रतिष्ठित तपा श्री रत्न शेखर सूरिभिः ॥

( ११७ )

सं० १६२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्रवारे १० तिथी इडरनगर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय।  
मं० श्री। लहुआ सुत मं० जसा मं० श्री रामा महा आधेन ज्ञार्या रत्ना। दम० करुमा

( २१७ )

म० सिंघराज प्रमुख सकल कुटुंब युतेन श्री शांतिनाथ विंथ कारित । श्री दीनपामनाथ  
युगप्रधान विजय दान सूरि पहे श्री हीर विजय नूरिति प्रतिष्ठित । विंथान्न सुदि  
दशमी दिन ॥

( २१८ )

संवत् १६३४ वर्षे माघ सु० ८ उप० ज्ञाती गादहीया गोत्रे शा० जोहा प्रा० रत्ननाथ  
पु० आका प्रा० यस्मीदे पु० हराजाबह मेरुदि साहि तिथी मति मत श्री वास पूज्य  
विंथ कारि० श्री वपु श्री कुकुदाचार्य संतानं प्र० देव गुप्त नूरितिः ॥ श्री ॥

( २१९ )

सं० १७२२ श्री सर प्रभु सूरि उपदेशेन प्रतिष्ठित ।

( २२० )

संवत् १६४४ वर्षे फागुण यदि १५ उपकेग ज्ञातीय बाहदा गोत्रे - - - - - संज्ञयनाथ  
- - - - - लघ गळ लघ श्री श्री हीर विजर सूरि ।

नगर गांव ( मारवाड )

( २२१ )

संवत् १५१६ वर्षे पौषय यदि ११ दिने गुरुवारे श्री राहुडह राज्ये श्री सोनर घंम पुत्र  
श्री श्री वचं रसल्ल नरेस्यरेष आंध्रव सामंत सकला पुत्र इत्यत्र मुग्ध मपरिवारेण वीर काहे  
प्रतरार प्राटी महिष पुण्यार्थं गोविंदराजेन श्री श्री महावीर वीर्ये श्री नोदनाथ गांधि  
उपदेशेन पटही आंध्रव मं० धारा पुत्र याचल मंडाही पुत्र नागदा मं० प्राणा मं० दे०  
ऊट प्रमुख श्री संघ समु मरां पटही वायनानो चिरं अमातः गुह्यं प्रभु नारदेन कथनं ॥

( २१८ )

## सांचोर ( मारवाड )

( १३२ )

स्वस्ति श्री संवत् १२२५ वर्षे वैशाख वदि १३ दिने श्री सत्य पुर महा स्वाने राज  
श्री भीमदेव कल्याण विजय राज्ये उपकेश ज्ञातीय भंडारी भंजग सिंह पुत्र भंडारी  
पालहा सुत छोघाकेन वृद्ध भ्रातृ ज० साम वधू चासकितेन श्री महावीर चैत्ये आरम्भ  
श्रेयसे चतुष्किका उद्धारः कारितः ॥

## रत्नपुर ।

मारवाडके जसर्वत पुरा इलाके में यह स्वान भी बहुत प्राचीन है ।

( १३३ )

ॐ संवत् १२३८ पोष वदि १० वला० नागू पुत्र श्रे० उदुरण ज्ञार्यया श्रे० देवणाग पुत्रि-  
कया उत्तम परम आधिक्यास्व श्रेयार्थं श्री पारश्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारितः ॥

( १३४ )

ॐ ॥ संवत् १२३८ पोष वदि १० श्रे० आंब कुमार पुत्र श्रे० चवल ज्ञार्यया वला० नागू  
पुत्रिकया संतोष परम आधिक्यास्व श्रेयार्थं श्री पारश्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं  
कारितः ॥

( १३५ )

ॐ ॥ संवत् १३३३ वर्षे माघ सुदि १ प्रतिपदायां महामण्डलेश्वर राज श्री  
आश्विग देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त महामात्य श्री जारवा प्रभृति पंच  
कुल प्रतिपत्तो रत्न पुरे देव श्री पारश्वनाथाय पोष कल्याणिक यात्रा निमित्तं मह माघ

सुत महं मदन सुत महं श्रीणा । श्री कुमरनिह सुत महं जदल प्रभृति पंच प्रभृति श्री  
पार्श्वनाथः देव प्रतिवद् श्री क्षेत्र गच्छीय श्रीदेवचंद्र नृरि संतामे श्री लमरायद् नृरि  
शिष्य श्री अजित देव नृरीणा मुपदेशेन हह द्वय भूमिः प्रदत्ता आ पंटाई नंदकु ४  
बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः समरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि स्वस्य स्वस्य  
तदा फलं ।

संवत् १३४८ वर्षे चैत्र सुदि १५ गुरुवद्योह रत्न पुरे महाराज कुल श्री सोलह मिह ।  
कल्याण विजह राज्ये तन्त्रियुक्तमहं कदुजा प्रभृति पंच कुल प्रतिपत्तो श्री पार्श्वनाथ  
प्रतिवद् महा महणा श्री० सांता महं विजयपाल गो० लपण प्रभृति नमस्त नारीश्यानां  
विदितं अक्षराणि प्रयच्छंति यथा रत्नपुर वास्तव्य नृजंर न्यातीय श्री० राजा सुत यादा  
गांगा सुत मंडलिक मदन प्रभृति कानां देव श्री पार्श्वनाथ प्रति वद् सोलह वर्षे  
द्वार दक्षिण हस्त प्रथम हहात् द्वितीय हह श्री० गांगा श्रीयाये यादा नमह देव प्रभृति  
विंय पूजापनाये श्री पार्श्वनाथ देवेन गोष्टिके । अदिशं हहं नमस्विंते । अस्य हह  
निकड प्रतिदेव श्री पार्श्वनाथस्य श्री वाचकेन थीसद श्रीयाय एत विभास्यवापि  
शत मेकं प्रदत्तं । हह मिद् चतुर्भि गोष्टिकैः समित्तै नृरया भाहृक संन्या करणीया  
स्वार्थीय परिणा श्रीष्टि यादा भुवक सांध विनेः भाहृके हहं कल्यापि नार्थनीय । यथा  
सस्क उक्तपत्ति व्यय कर्ण वाणगोष्टिकान् विना पुमाकनेः न कर्तव्या । उक्तपत्ति नभयान्  
देव कुलिकाया विधानां नैवकप देवी० दूर । ३ वर्षे प्रतिदाहदा एतपत्ति नभयान्  
हहं पत्ति दुसित पदे कमठाव कारापनीया । यत्त भाहृक स्वक द्रव्यं यद्दति नभृ श्रीय  
कल्याणक दिने देव कुलिकाया शिंय श्रीग करणीय । उचित द्रव्यं श्री पार्श्वनाथ स्वक  
नाति कार्यां यथं । न्यां खेपनीयं निक्षेप उपार गोष्टिकैः करणीय । अत्र नभयान् महा  
महणा मतं श्रीष्टि सोता मतं धराने गती या हहदेन नभं विजय पाद मत । गोष्टिक  
लपणा मतं ॥ स

( २५० )

## बिलाडा ( मारवाड )

( १३७ )

सं० १८०३ वर्षे शाके १६६८ प्रवर्तमाने मगधिर सुदि २ दिने सोम वारे महाराज राज राजेश्वर महाराजा जी श्री अजयसिंह जी कुंवर श्री रामसिंह जो विजय राज्ये वृहत खरतर श्री आचार्य गच्छे । महारक श्री जिन कीर्ति सूरि जी वर्तमाने सति । श्री बिलाडा नगरे कटारीया कलावत साह श्री तुंता जी पुत्र गिरधरदासजीकेन जिनालय करापितः स्थानको खमः उपाध्यायजी श्री करम चंद हरष चन्दाभ्यां कृतः कलावत श्रावकाणामपि विशेषोपदेशो दत्तस्ते नायं श्री सुमतिनाथ जी देव लो जातः - - - - द्रधर श्रीयन कमाम्भ्यां कृतः उपाध्याय श्री करमचंद गणि पं० हरषचंद गणि पं० प्रतापसी गणि प्रमुख सपरिकरेन विव-श्री प्रवतु ।

## बोर्डिया ( मारवाड )

( १३८ )

संवत् १२५० आषाढ वदि ११ रवा सुहपट वास्तव्य भावक साम्भ भायां जिसवई सुत रोहड रामदेव भावदेव कुटुंब सहितेन राम्यदेवेन स्तम्भ लता प्रदत्ता द्रा० २० ।

( १३९ )

सं० संवत् १२५० आषाढ वदि ११ रवा बहुविध वास्तव्य र० रोहिल सुत धांघत तत्सुत गुण धर सालहणाभ्यां मातृ धिरम्मति श्रीयार्थे स्तम्भ लता - - - - द्रा० २० प्रदत्ता ।

( २५१ )

### कोंटार (गोड़वाड़)

( २५० )

संवत् १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमेऽथोह समाप्त ... सुटि ... मा प्रा०  
 इनउ ... पयरा महं मज्जन ठ० मह प्रा ... ठ घणसीह ठ देवमीह महति पञ्च  
 कुलेन श्रीधाम त्रिधान श्रीमहाश्रीर देवस्य ने च के - - - वर्षे सियतके इत ठ २० चतु-  
 विंशति द्रम्माः वर्षे वर्षे प्रति - मी मंढपिका पंच कुलेन दाहटयाः ॥ पाटनीया ॥ १ ॥  
 बहुतिर्वसुथा भुक्ता राजतिः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा कर्त्तुं  
 शुभं भवतु ।

( २५१ )

सं० १३३६ वर्षे श्रोष्ठि को सीहन चयपने दत्त १२१ - यद ११ स - प - १ मुंडा -  
 या स्थिति यमाण पञ्च कुलेन वर्षे वर्षे प्रति - - - - या दाहटयाः ॥

### किराहू ।

मारवाड़ के मालानी परगने में यह स्थान प्राचीन है । हिन्दुओं के समय में इस  
 स्थान का नाम किराट कूप या जीर जैनियों के प्रतिह नृपति कुमार याद ने इस  
 स्थान में जैन धर्ममें दीक्षित होने के पुर्य कहेपुत्र यहुत सुन्दर शिव मन्दिर बनवाया  
 था । काठ के चक्र से इस समय उन देवालयों की बहुत धुरी हायत है जीर मण्डप  
 भी नष्ट हो गये हैं ।

( २५२ )

ॐ नमः सूर्यज्ञाय ॥ नमोऽनंताय सूक्ष्माय ज्ञान गन्याय जेपदे । त्रिदशरूपाय शुद्धा-  
 य देव देवाय शंभवे ॥१॥ देवस्य तस्य चरितानि जयति शंभोः स ( ५ ) इत्यु चपाठ



विष्णु ( प्रथम ) विष्णुपणस्य । गद्यः स कोपि हृदि यस्य पदं करोति गीरी जितं च चिर-  
 वरकल वपं दृशात् ॥२॥ अथिष्ठ - - - - - अ्पिते त्र्युद भूधरे । सुरभ्याः  
 परमाराणां वंशो - - - - - नलं कुंडतः ॥३॥ तत्रानेक मही पाल - - - - - सिंधु  
 धिराजो महाराज - - - - - रणे समभून्मरु मंडले ॥४॥ निरगांठ मिळद्वैरि - - -  
 - - - - - प्रतापो ज्वलदूसलः ॥५॥ शंभुवद् भूरि भूमिशाभ्यर्चमीयो भ - - - - -  
 सुः ॥६॥ खड्ग रणरकार रावणो लवण वैरिहं भवः ॥ - - - - - ॥७॥ सिंधु राज घरा  
 धार घरणी घर घाम वान ॥ मा - - - - - ॥८॥ जो भवत्त रमात् सुर राजो इराज्ञया  
 देव राजेश्वर- - - - - ॥९॥ - - - - - मपहाय मही मिमां । मन्वे कल्प  
 द्रुमः प्रायाद दृश्यक - - - - - ॥१०॥ - - - - - दारणात् । श्री मद्दुर्लभ राजोपि  
 राजेंद्रो रंजितो - - - - - ॥११॥ - - - - - धंधुक - तः । येन दुश्चारं वीर्येण  
 अ्पितं मरु मंडलं ॥ १२ ॥ धर्म करो वन्न - - - - - कृष्ण राजो महा शब्द विष्णुपितः  
 ॥ १३ ॥ तत्पुत्रः सोलुट्ट राजारुयः स्य - - - - - स्व - - - - - कल्पद्रुमो भवत् ॥ १४ ॥ तस्मा  
 दुदय राजारुयो महाराज - - - - - मंडलीक पदाधिकः ॥ १५ ॥ प्राचोड गौड कर्णाट  
 मालवोत्तर पश्चिमं । - - - - - कृ - शजं ॥ १६ ॥ प्राश्च सिंधु राज भूपालात्पितृ पुत्र क्रमा-  
 त्पुनः । तस्मादुदय राजश्च पुत्रः सोमेश्वरः सुतः ॥ १७ ॥ उरकीर्ण मपि यो राज्य मुदुधे  
 भुज वीर्यतः । जयसिंह महिपालात् - - - - - यद्व - ॥ १८ ॥ - - - - - अतश्च नव गत वर्ष ११८६  
 १२०० विक्रम भूपतेः प्रसादा उजयसिंहस्य सिंदुराजस्य भू भुजः ॥ १९ ॥ श्री सोमेश्वर  
 राजेन सिंधु राजपुरीद्वयं । भूपो निर्व्याज शौर्येण राज्य मेतरसमुद्भूतं ॥ २० ॥ पुनर्द्वादश  
 संस्येषु पंचाधिक शते १२०५ प्वल । कुमार पाल भूपालात् समतिष्ठ मिदं कृतं ॥ २१ ॥  
 किराट कूप मारमोयं शिव कूप समन्वितं । निजेन क्षत्र धर्मेण वालयामास यशिवर ॥२२॥  
 अष्टा दशाधिके चास्मिन् शत द्वादशक्रेऽशिवने । प्रतिपद्गुरु संयोगे सार्धयामे गते  
 दिनात् ॥ २३ ॥ दंडं सप्तदश शता न्यश्यानां नृप जज्जकात् । सह पंच नखांश्चैवमय-  
 राद्रिभिरष्टाभिः ॥ २४ ॥ तणु कोट नवसरो दुर्गां सोमेश्वरो यद्भूत् । उरचांगवराहा  
 साह्यां चक्रे चैवारम सादसौ ॥ २५ ॥ बहुशः सेवकी कृत्य बीलुक्य जगती पतेः । पुनः

संस्थापयामास तेषु देशेषु जज्जकं ॥ २६ ॥ प्रथमं सकरो देवां नरनिहो नृपाश्रया ।  
लेखको प्रथ (णे) देवः सृष्ट्र धारोस्तु जगोपरः ॥ २७ ॥ विक्रमे सवत् १२५५ जमिन्म  
सुदि १ गुरी ॥ मंगल महा धीः ॥

### सूया पहाड़ी ।

मारवाड़के जसवंतपुरा के पास उत्तरकी तरफ पहाड़ीके टलावमें सूया माता नामक  
धामुंढाके मंदिरमें लगे हुए दो पर्यरों पर यह लेख खुदे हुए हैं ।

ओं ॥ श्वेतांजोजातपत्रं किमु गिरि दुहितुः स्वस्तदिन्या सवालः किंवा श्रीमयात्म  
या महिम मुख महासिद्ध देवी गणस्य । त्रैलोक्यानन्दहेतोः किमुद्विजमत्तयं महाप  
नक्षत्र मुखैः शंजोर्भाष्टस्यर्षेदुः सुदृति हृतनुतिः पातु यी राज लक्ष्मी ॥ १ ॥ हंसव्यां-  
कावनिरनुपमानंद संदोह मूला चंचदासोचल दलमपी हृषण प्रीत प्रया । मण्य  
यण्योदय मुफलिनी पाठवती प्रेम यलथी लक्ष्मी पूज्यात्पनु दिन मति दयक प्रजाया  
नतानां ॥ २ ॥ बिकट मुकट माणसेजसा ध्योन्नि देव्यानिष भुवि नांजमरया संजयाया  
क्वणेन । अनपुरणित लीला हंसदीस्त्रासवती कणि पति मुवतांतरपतिशायः दिव्येभु  
॥ ३ ॥ श्री महत्समहर्षि हपं नयतो हृमृतांयु पूर प्रभा पू गैर्गोपय प्रीति मुगण विम-  
रालंकार तिरमसुतिः । पृथ्वी त्रातु मपारत देव्य तिमिरः ली पाहमानः पूर शंखश्री  
समुद्र सोदर यशो राशि प्रकाशो जवत् ॥ ४ ॥ रत्ना दय्यामिष नृपततो जसवंते विष्णु-  
तायां घमंसंखान प्रकर करण प्राप्त पुण्योत्तथायां । श्री महद्दुर्गापि पतिर मक  
लक्ष्मणी नाम राजा लक्ष्मीलीला उदय उदयादार शार्ङ्गश्रीः ॥ ५ ॥ लीयायाया  
शमर जलधिं मद्रो चरय खड्गो सुन्दिय्याजादृजन पतिना श्रीगर्भ मारुणदृ  
निर्ममध्वोर्धैः सपदि जमटां लील्योद्भृत्तय सत्तरकळे नृकं रांजत जदक शक्ति वायव्यदि

॥ ६ ॥ तस्माद्दि माद्रि प्रवनाय यमो पहारी श्रीशोभितो जनि नृपो स्य तनूद्वयोप । गां-  
 श्रीयंघ्रियं सदनं बाल राज देवो यो मञ्जुराज यत्न भंगमभीकरत् ॥ ७ ॥ साम्राज्याया क रेणुं  
 रिपु नृपति गज स्तोम माक्रम्य जहो यस्वद्वी गंध हस्ती समर रस प्ररे विध्य शोलाय  
 माने । मुक्ता शुक्तीदु कांतोऽज्यल रुचिषु लसत्कीर्तिरेवातटेषु प्रौढाने दीपचारो त्वप  
 यलकततिः पुष्कराणां छलेन ॥ ८ ॥ तस्मिन्पुत्रे जतयाय सांधवः श्री मङ्गादुर जनिष्ट  
 नृपतिः । यस्त्रुपाण लतिकामुपेयुषां छायाया विरहितं मुखं द्विपां ॥ ९ ॥ जज्ञे कांतस्तदनु  
 चभुवस्तस्तनुजो रत्नपालः कालः क्रूरे द्विपि सुचरिते पूर्णं चंद्रायमानः । यः संलग्नो न सख  
 समसा नैव दीपाकरात्मा तेजो मक्तः कृषिदपि न यः किंच मित्रोदयेषु ॥ १० ॥ कैयूराय  
 निविष्ट रत्न निकर प्रोद्यत्प्रभाटं पर वयक्तं संगर रंग मंडपतले यं वैरिलक्ष्मीः श्रिता ।  
 धीरेषु प्रसूनेषु तेषु रजसा नीतेषु दुर्लक्ष्यतां लक्ष्यो पाययलापि निम्मल गुणैर्यथा  
 यशस्या कृतिः ॥ ११ ॥ पुत्रस्तस्याहिल इति नृपस्तन्मयूख सखलेन स्रष्टा यस्य वपथित  
 यशसां तेजसां तोलनां नु । गंगा तोले शशि तपनयो दंनतरचारु खेले मध्यस्थायि  
 द्रुयमिष लसत् कंटके कौतुकेन ॥ १२ ॥ गुर्जराधिपति श्रीम भूभुजः सैन्य पर मजय-  
 द्रुनेषु यः । शंभुवत् त्रिपुर संभवं अलं वाहवानल दृश्यायुधे जलं ॥ १३ ॥ सैन्या क्रांता स्थित  
 वसुमती मंडलस्तस्मिन्पुत्रः श्रीमान् राजा प्रवदय जिताराति मल्लो यद्विल्लः । श्रीम  
 क्षीणी पति गज घटा येन भगना रणाय ह्यार्या भोनिधि रघु कृते वहे पंक्तिः सलानां  
 ॥ १४ ॥ अंभोजानि मुखान्यहो मृग दृशां चंद्रो दयानां मुदो लक्ष्मीर्यत्र नरोत्तमानुसुरण  
 वशापार पारगमा । पानानि प्रसन्नं शुभानि शिखरि श्रेणीव गुण्यद्रुगुरुस्तोमो यस्य  
 नरेश्वरस्य तलनां सेनांशु राशेर्दधौ ॥ १५ ॥ उर्वीरुह विटपावलंघ सुगृही हर्म्येषु दृष्ट्वा  
 दृग्ं ध्यातास्यंत मनोहराकृति निज प्रासाद वातायनः । नृस्फीटानि वनांतरेषु वित-  
 नान्मया लोक्य हाहेति वाक् सस्मारा तपवारणानि शतशो यद्वैरि राज ब्रज — ॥ १६ ॥  
 दृष्टः कै नं चतुर्भुजः स समरे शाकंभरी यो यलाजजयाद्दानुजघान मालव पतेभोजस्य  
 साहाय्यं । दंडाधीशम पार सैन्य विजयं तीव्रं तुरुष्कं च यः साक्षाद्विष्णु साधनीय य-  
 शसा शृंगारिना येन नूः ॥ १७ ॥ जज्ञे भूभुजदनु तनयस्तस्य बाल प्रसादो श्रीमक्ष्मा-

भूचरण युगली मर्दन दयाजतो यः । कुर्वन्शीला नति बलमया मोक्षयामास कारणा-  
 राट् जूमी पति मपि तथा कृष्णदेया निधानं ॥ १८ ॥ श्रीकर्मो जलदमनं दूष्यद्दी शैवेरसो-  
 वारसा यातर्तुप्रतिमे समुज्ज्वल पदा वाजा मराठ तिर्यं । कथं चापु चरितं केतु निपटा-  
 शस्यानुकारं च ते मङ्गीतानि च कोकिलारव तुलां धिक्ते तु तापं द्विजः ॥ १९ ॥ श्रीमो-  
 स्तस्याजनि नर पति श्रीधरो जिंदुगजो यः सहैरेकं हृद्य तिमिर चेरि पदं धिक्ते ।  
 यस्य ज्योतिः प्रकरमप्रितो विद्विपः कौशिकाभा द्रष्टुं शक्ता न हि निरि मुदा मण-  
 मध्या श्रितास्तव ॥ २० ॥ गच्छतीनां रिपु मुग्धयां जूपतानां प्रधानं चतुर्था-  
 र्धनतति तुलां धिभ्रतीनामरणे । दूर्यां श्रान्तिं मरकत मणि सं जयो धरप्रयाने शोभुष्य-  
 श्रममिष चिरं चक्रिरे पद्म रागाः ॥ २१ ॥ एतर्धी पादचितुं पावत्र नतिमान् पः कर्तुं क-  
 णां करं मुंघन् प्राप यशांसि कुंद् घषला न्यानंद हृद्याननः । एतर्धी पाद हति प्रथमिणि  
 पति स्तस्यांग जन्माभ्रतरप्रत्येतीन निधिः स गूजरे पतेः कर्णस्य गेन्या पदः ॥ २२ ॥  
 यरसेना किल कामधेनु सदृशी कीर्ति खंडी पयः स्यच्छट्टं सपररापरेषि सुगमे मारु-  
 स्तृणी कुवंती । धर्म वत्समिव स्यकीय मनवं एहि नयंती मुदा परवानंद कवी मधुर मभूता-  
 श्रीष्टं समातन्वती ॥ २३ ॥ श्री रोजकी जूपतिरस्य कंठु धिक्ते कौश प्रबल प्रलयः ।  
 श्वेतात पद्मेण विराजमानः शक्त्याणहृत्कारय प्रेषि रेने ॥ २४ ॥ स्वयंभवा श्रीधरमुदा-  
 केलि धिपिनं क्रीडाचले दीर्घिकां पलवका धवणं करेणुषु मुदां श्यानं कर्मभाटपि । मरणा-  
 रि क्षितिपाल घाल ललनाः शीले वने निरर्तरे स्पृष्ट श्रावणारस्तु संस्मृति मगु पूर्वोपभु-  
 श्रियां ॥ २५ ॥ श्री ज्ञाशा राज नामा समजति वसुधा नायक कलस्य धीरुः साहाय्यं सा-  
 लवानां मुवि पडति कृतं धीद्वय सिद्धाधिराजः । तुष्टो यतो हन कृष्णं कनक मय मतो  
 मस्य सुप्यद्रुगुह स्य तं हर्तुं नैव शक्तः कलुषिम मुदयः शेष जूपाल धारिणः ॥ २६ ॥ एतय  
 निरि शिरः स्य किं सहस्त्रांगु किंच धिक्ते विनाद् कौशे मुंघिनं किं मुंघिनं । एतय  
 सुभग ताया उद्गता मंजरी किं कनक पादना ज्ञाशाशय सुप्यद्रुगुह स्यः ॥ २७ ॥ एतय  
 रुचि शरीरः शीलसाराधिरानः कणि पति मयनीपस्याप्रकारः स धिक्ते । मुंघिनं किंचि  
 सुताया मंदिरे स्तंभ देशे द्पदधनि मुदारानधिमः पुण्य मूर्तिः ॥ २८ ॥ सुप्यद्रुगुह

तद्भाग-कानन-हरप्रसाद-वापी-प्रपा-रूपादीनि विनिर्ममे द्विज जनानंदी क्षमा नपहले ।  
 धर्मस्थान शतानि यः किल युध श्रेणीषु कल्पद्रुमः कस्तेस्पंदु तुषार गूल धवल स्तोत्र  
 यथाः कोविदः ॥ २६ ॥ श्वेतान्वेष यथांसि तुंगतुरग स्तोमः सितः सुभ्रुवां घञ्चन्मौक्तिक-  
 भूपणानि धवलान्युच्चैः समग्राण्यपि । प्रेमालाप भवं स्मितं च विभटं शुभ्राणि  
 वस्त्रोक्तं वृं दानीति नृपस्य यस्य पृतना कैलास-उदमी श्रिता ॥ ३० ॥ प्रशस्ति त्रियं  
 यद्दृग्गच्छीय-श्री जयमंगला चार्य-कृतिः ॥ त्रिपञ्चि जयपाल-पुत्र-नाम्ब सिंहेन लिखिता ।  
 सूत्र जिसपाल-पुत्र-जिसराविणोरकीर्णा ॥

३० ॥ जटा मूले गंगा प्रबल लहरी पूरकुहना समुन्मील पृष्ठप्र प्रकर इव नन्वेपु  
 नृपतां । प्रदातुं श्री शंभुः सकल भुवनाधीश्वर तथा तथा या देयाद्वः शुभ मिह सुगंधादि  
 मुकुटः ॥ ३१ ॥ आशा राज क्षितिप तनयः श्री मदाल्हादनाहो जज्ञे नूनमुद्रुवन विदित  
 रघाहमानस्य यशे । श्रीनद्रूले शिय भवन कृदुर्म सवंश्व वेत्ता यत्सा हाय्यं प्रति पद  
 महो गूजंरेश श्चकांक्ष ॥ ३२ ॥ चंचत्केतक चम्पक प्रविलसत्ताली तमाळा गुरु स्फुजं  
 रचन्दन नालिकेर कदली द्राक्षाञ्च कम्बु गिरी । सौराण्ट् कुटिलोय कण्टक भिदात्युद्राम  
 कीर्त्तिस्तदा यस्या नृदभिमान जासुर तथा सेनाचराणां रवः ॥ ३३ ॥ श्री मांस्तस्यांगज  
 इह नृपः केतहणो वक्षिणा शाधीशोदंश्चिद्विभिम नृपते मांन हत्सैन्य सिंधुः । निजि-  
 योश्चैः प्रबल कटितं य स्तुरुष्कं व्यधत्त श्री सीमेशस्पर्द मुकुट वत्तीरषं कांचनस्य ॥ ३४ ॥  
 आतास्य प्रबल प्रताप निलयः श्री कीर्त्तिपालो नवद्र नूनायः प्रति पक्ष पार्थिय समुदा-  
 वांयु बाहो पमः । यस्त्रहां दुनिची हतारि करिषां कुंभस्यलीभ्यः क्षरन्मुक्तानां निकरो  
 मराल उलितं घत्ते स्म धारा श्रयः ॥ ३५ ॥ यो दुर्दांत किरात कृत् नृपति त्रिसया शग्गैरासल  
 तस्मि न्कांसहृदे तुरुष्क निकरंजित्वारण प्रांगणे । श्री जावालि पुरं स्थितिं व्यरचयस्व-  
 द्दुल राजेश्वर विचंता रत्न निजः समग्र विदुषां निःसीम सैन्याधिपः ॥ ३६ ॥ श्री

समर सिंह देवस्ततनयः क्षोणि मण्डलाधिपतिः । इन्द्र इव सिद्धः सद्योपमनो वृ-  
पोत्तमो हरिवत् ॥ ३७ ॥ प्राकारः कनका चले विर्गञ्जो येनेह पृथ्वीपतेः माता यथा  
मनाङ्ग कोट्टक ततिर्विद्याधरी शीर्षवान् । किं शेषः फण प्रदनेदुर मन्त्रालयधरी वा सुतः  
हारः किं स्रमण श्रमादुहुं गणः किं वेष भेजे विधीतं ॥ ३८ ॥ कर्मण्य वननिवेदं यथा शीर्षो  
लि दंभान्निखिल विपुल देग श्री समा कर्षणाय । विनिहत विगद विदु यो विदन्मनस  
वेरि क्षितिपति त्रिकला जिस्तोम संरुपा निमित्तं ॥ ३९ ॥ तोडयामास यः शयनीया-  
त्मानं सोमपर्वणि । आराम रम्यं समरपुरं यः श्रुतयान्तर ॥ ४० ॥ श्रीश्रीश्रीं पाणि  
सूपति पुत्रो जावालि पुरधरे अक्रे । श्री रुद्रल देवो शिव मन्दिर मुमते पण्डित मतिः ॥ ४१ ॥  
श्री समरसिंह देवस्य तन्दनः प्रघट शीवं रमणोयः । श्री उदयसिंह सूर्यपति सुप्रभा भावण  
दुपमानः ॥ ४२ ॥ श्री नदूडूल-श्री जावालि पुर-माण्डलपुर-यामुदयसिंह-सुप्रभा-  
राट्टदूद-खेड-रामसेन्य श्री माण्ड-रत्नपुर-सत्यपुर-प्रभृति देवा नामय माण्डपणिः  
॥ ४३ ॥ शेषः स्तोतुमिव प्रयत्न रसना शारः समन्तादभूत् क्षीराशिरः परिवर्त्तु नूदुपूर भूत्  
कल्लोल माटा सिपात् । द्रष्टुं घानि मिराक्षि-वक्रज घनो प्राणोः पतिर्गण्य श्री  
विश्व श्री हृदयस्य हारलतिकां क्षातिं सितांशुउग्रयां ॥ ४४ ॥ यः प्रदत्ताद्वन्देयो भक्तो  
यस्यां गजं प्रसूते स्म । श्री चाचिग देवात् नयेत् यामुदयसिंह ॥ ४५ ॥ श्रीश्रीश्री  
दातस्तुतफाधिपमददलतो गूजरेन्द्रैर जेयः नेशकान जितांगोपिण कर्मण यद् विदु  
राजांतकी यः । प्रोद्दामन्याय हेतु प्ररत सुख महा अन्ध तत्प्रार्थयेता श्री मन्तावादि  
संज्ञे पुरि शिव सदन द्वंद्व कर्ता कृत्स्नः ॥ ४६ ॥ तत्पद्मोदय शैल भागुरतपसोद्भूय धर्म  
क्रिया निष्पातः कननीय रूप निलयो दानेश्वरः सु प्रभुः । श्रीस्यः शूर शिरीर्षोपिण  
सदयः साक्षादिवेद्रः रघवं ह्यो माण्डिवाचिग देव तुज जयनि प्रयत्न कर्मण दूताः ॥ ४७ ॥  
सूभंगेन प्रयंकरेण विजित प्रत्यर्थि भूमि पतिः श्री माण्डिवाचिग देव पूज तन्पुत्रे विधिरेव  
दृशि भुवं । द्वैजिह्वयं विदुभ्यानु यत्नत यतिर्वक्तं वरादी सुवं सुमी मय कति शरीर  
निपहः संघात सौख्यं पर ॥ ४८ ॥ मेनोः स्थिते जयन रथन यारयमे पंथे सुभय श्रीश्री  
आरोदुरणमसमं पत्रनेदानुपनि । साक्षाद्भागः जितयस्यता पूरुं श्रीस्य रमिसिंहोत्त

एवं प्रणयिनि जने देव एवैव तस्मात् ॥ १६ ॥ स्फूर्जद्वीरम गूर्जरेण दलनो यः शत्रुं गच्छ  
 द्विषंश्चत्पातुक पातनेकरसिकः संगस्य रंगा पहः । उन्माद्यजहरा चल स्य कलिशा  
 कार खिलोकी तल आम्बस्कीर्षिं शेष वेरि दहनोदय प्रतापोलक्षणः ॥ ५० ॥ श्री माले  
 द्विज जानुवाटिक कर त्यागो तथा विश्रहादित्य स्यापि च राम सैन्य नगरे निर्याचं-  
 नार्थं प्रदः । प्रोक्तुंगेप्य पराजितेश भवने सौवर्ण-कुंजप्रजारीपी रुष्यज मेखला  
 वितरण स्तस्यैव देवस्य यः ॥ ५१ ॥ अक्रे श्री उप राजितेश भवने शाला तथा-  
 स्यां रवः कैलास प्रतिमखिलोक कमलाङ्कार रत्नोष्णयः । येन क्षोणि परंदरेण  
 कृतिना नानंद संवितये प्राग्यं वा निज मेव पयंत तुलां नीतं समंतादपि ॥ ५२ ॥  
 कर्णो दान रुचिर्बलिश्च सुकृती श्लाघ्यो दधीचि स्तथा हृद्यः करुपतरुः प्रकाम मधुरा-  
 फारश्च चिन्तामणिः । श्री मन्वाचिगदेव दान मुदिता स्तन्नाम गृह्णति यत्तत्कीर्त्त-  
 रपि नूतनस्व मत्तवद्भूमोजुजां सद्मसु ॥ ५३ ॥ स्फूर्जं चिर्करं क्रांतेन सुन्नगं तस्केत-  
 कीनां वनं मिश्री भूतमनेक कश्च कदली वृदेन घत्तेऽत्र यः । आम्वाणां विपिनं च देव  
 ललना यज्ञोरुह स्पर्द्धये वीद्यस्पोद् फलावली क्वचित्तं जम्बू वने नाचितं ॥ ५४ ॥ मरी  
 मेरो स्तुल्यस्त्रिदश ललना केलि सदनं सुगन्धा द्विर्नातातरु निकर सन्नाह सुभगः ।  
 नृपेजेंद्रेणैव प्रसूमर तुरङ्गोच्चय सुर प्रकं प्रोत्थी पीठ रतिरस यशात्तेन ददुरो ॥ ५५ ॥  
 तन्मूर्दिधन त्रिदशेंद्र पूजित पदां भोज द्रुयां देवतां आमुंडा मघटेश्वरीति विदिताम  
 भ्यर्चितां पूर्वजैः । नत्वा भवस्यं नरेश्वरोय त्रिदशेस्या मंदिरे मंडपं क्रौडरिकंनर  
 किञ्चरी कल रवी न्माद्यन्मयूरी कुलं ॥ ५६ ॥ सम्बत् १३१६ त्रयोदश शते कौन विशाली  
 मासि माघये । अक्रेऽक्षय तृतीयायां प्रतिष्ठा मंडपे द्विजेः ॥ ५७ ॥ संपल्लान्न घटयन्तु  
 गुणं कृति वक्त्रो गणेशः सिद्धि देयादन्नि मत तमां चांढिका चारु मूर्तिः । करुणापाय  
 प्रभक्तु सतां धेनु यग्नाः पृथिव्यां राजा राज्यं प्रजन्तु विपुलं स्वस्ति देव द्विजेभ्यः ॥ ५८ ॥  
 स श्रीकरी समूक यादि देवा चार्यं स्य शिष्योऽजनि रामचन्द्रः । सुविदिनेयो जय मङ्गला  
 ऽस्य प्रशरितमेवां सुकृती दयधत्त ॥ ५९ ॥ त्रिपञ्चर-विजय पाठ-पुत्रेण नाम्बसीहंन  
 लिखिता ॥ नृप्रधार-जिसपाल-पुत्रेण-जिसरायणोरकाण्णा ॥

# घटियाला ।

यह स्वान मारवाड़ के राजधानी जोधपुर के पश्चिम उत्तर की ओरमें लखरिपन है और इसी गांवके पास यह छिछा लेख मिला था इसकी भाषा प्राकृत है और मारवाड़ के सब लेखों से प्राचीन है ।

यह लेख जोधपुर के प्रसिद्ध ऐतिहासिक मुंशी देवीप्रसादजी ने अपने मारवाड़ के प्राचीन लेख नामक पुस्तक में संस्कृत अनुवाद के साथ उपजाया था यही यहाँ पर प्रकाशित किया जाता है ।

# घटियाला ।

ओं सग्गापयग्गमग्गं पद्मं सयलाण कारणं देवं । जीनेसु हरिज द्वाण परम पुं  
णमह जिणणाहं ॥ १ ॥ रहित्तल्लो पडिहारो खासी सिरिलवग्गलीचिरामसम । मंण पडि  
हार वन्तो समुणइ एत्थ सम्पत्तो ॥ २ ॥ विपो सिरि हरिजन्दो भग्गो खायाति खल्लि  
मद्दा । अस्स सुओ उप्पणो खीरो सिरि रज्जिलो एत्थ ॥ ३ ॥ अस्सवि जरहण्णो खीरो खा  
ओसिरि णहडोत्तेए अस्स । अस्सवि तणओ ताओ तस्सवि असग्गणो खाओ ॥ ४ ॥  
अस्सवि चन्दुअ णामा उप्पणो सिल्लुओ विए अस्स । त्तोटीत्ति तस्स तणओ अस्स  
वि सिरि त्तिल्लुओ जाइ ॥ ५ ॥ सिरि त्तिल्लुअस्स तणओ कणो सुक सुत्तोह मारविणो ।  
अस्सवि कक्कअ णामो द्दुत्तह देवाए उप्पणो ॥ ६ ॥ ईसिपिज्जसिहमिअ मद्द  
णणिवं पठोइअ सोम्मं । णमव अस्सण दोणां राणोवे ओपियमिणो ॥ ७ ॥ णोअविणव  
ण त्तिसिण्ण अणं ण पठोइअं अम्मरिअं । णणिवं णपिअर मिअं एण अण  
कज्ज परिहोणं ॥ ८ ॥ सुत्थादुत्तरादि पया अहमाणा उप्पिणा विणोपणोअ । अण्णिवं अण  
धरिआ णिव्वंणिय मण्हले सग्गो ॥ ९ ॥ उअरोहण अण्णवण्णं त्तोहिणियाअ पणिव  
अण्णेण । णक्क खंढो एह विसेओ चव्वहारे जाणमअ यणिय ॥ १० ॥ विज्जणं विग्गमाद्द  
अण्णेण अणं रज्जिअण सयत्तन्विय । विम्मसत्तरेण जणिवं द्दुत्ताअ विदुअ विदुअ ॥ ११ ॥



घनरिदु समिदायं शि पउराणं पिअकरस्स अउत्तहिअं । लवसं सयञ्जु सरिसं तणं च तह  
 जेष दिट्ठाइं ॥ १२ ॥ णवजोत्थणरुअपसाहिण्ण सिंगार गुणग कक्केण । जणवयाणउज  
 मलउजं जेष णेह संवरिअं ॥ १३ ॥ वालाण गुरु तरु णाण तह सही गय वयाण तण  
 ओठव । इय सुवरिण्णेहि पिअं जेष जणो पालिओ सधो ॥ १४ ॥ जेष णमन्तेणसया  
 सम्माणं गुण युद्धं कुणं तेण । जम्पन्तेण य ललिअं दिण्णं पण्डेण घणणिअइं ॥ १५ ॥ मरु  
 माइवळ तमणी परिअंका अउजगुञ्जरितासु । जणिओजं जणाणं सववरिअ गुणेहि  
 अणुराओ ॥ १६ ॥ गहिजण गोहणाइं गिरिम्मि जाला उलाओ पल्लिओ । जणिआओ  
 जेष यिस मेवढणाणय मण्डले पयइं ॥ १७ ॥ णीलुप्पल दल गन्धारम्मा मायं टमहु अशि  
 देहि । वरहच्छुपण्ण छण्णा एसा भूमी कया जेष ॥ १८ ॥ यरिस सएसु अणवसु अट्टारइ  
 समरगलेसु चेतम्मि । णवखत्ते विहु हस्ये वइवारे धवल वीआये ॥ १९ ॥ सिरि कक्कुएण  
 इद्धं महाजण विष्यपय इवणि यहुलं । रोहिन्स कुञ्ज गामे णिवेसिअं किशि विट्ठिए ॥ २० ॥  
 मट्ठोअरम्मे एक्को वीओ रोहिन्स कुञ्जगामंम्मि । जेष जसस्स व पुजाए एत्थम्मा स-  
 सुत्थयिआ ॥ २१ ॥ तेण सिरि कक्कुएणं जिणस्स देवस्स दुरिअ णिट्ठणं । कारयिअ  
 अघल मिमं भवणं भत्तोए सुहजणयं ॥ २२ ॥ अप्पिअमेएं भवणं सिट्ठस्स घणेसरस्स  
 गच्छम्मि । तह सन्त जम्भ अम्भय वणि भाउइ पमुइ गोट्ठीए ॥ २३ ॥ इलाओ जन्म कुले  
 कलक रहितं रुपं नयं योवनं । सीभाग्यं गुण भावनं गुचि मनः क्षांति  
 यशो नम्रता ॥ २४ ॥

### संस्कृत अनुवाद ।

स्वर्गायथर्गं मार्गं प्रथमं सकलानां कारणं देवं । निःशेषं दुरितं दलनं परमं गुरुं नमस्त  
 जिन नायम् ॥ १ ॥ रघु तिलकः प्रतिहार आसीत् श्री लक्ष्मण इति रामस्य । तेन प्रतिहार  
 वंशः समुत्थतिमप्र समाप्तः ॥ २ ॥ विप्रः श्री हरिचंद्रः प्रायां आसीत् इति क्षत्रिया भद्रा ।  
 अस्य मृत उत्पन्नः वीरः श्री रज्जिलोत्र ॥ ३ ॥ अस्यापि नर भद्र नामा जातः श्री नाम  
 भद्र इति एतस्य । अस्यापि तनयस्तातः तस्यापि यशो वर्द्धनो जातः ॥ ४ ॥ अस्यापि

चंद्रुक नामा उरपन्नः शिखलुकोपि एतस्य । क्षीरं हति तस्य तनयः । अर्यापि तं प्रियुः कौ  
 जातः ॥ ५ ॥ श्री शिखलुः तनयः श्री ककुः गुण गुणैः गर्विणः । अर्यापि अर्युः कौ नामा  
 दुर्लभं वेद्यामृत्पन्नः ॥ ६ ॥ द्विपद्विकाशं हस्तिं मधुरं क्षणितं प्रयोक्षितं श्रीः यः । तनयः  
 यस्य न दीनं रासः स्वयः स्विरा मैत्री ॥ ७ ॥ नो अस्तिवत् न हस्तिं न कुण्डं न प्रयोक्षितं  
 न संभृतम् । न स्वितं न परिभ्रातं येन जनं कार्यं परिशीलं ॥ ८ ॥ सुखा सुखा द्विपदा  
 अधमा तथा उत्तमा अपि सौख्येन । अनन्येषु येन भूता निरतं निजं मरुदपि मरुतं ॥ ९ ॥  
 उपरोध रागं नत्सरं लोभैरपि न्यायं व्रजितं येन न कृषो दृषोर्विभीषः । उद्यमस्यै कदापि  
 मनागपि ॥ १० ॥ द्विजवरं दत्तानुत्तं येन जनं रंक्तवा मरुदमपि । निर्भयस्यै अस्ति दृष्टः  
 नामपि दण्डनिष्ठपनम् ॥ ११ ॥ धनं श्रद्धं समृद्धानामपि योराजां निजं करणायपरिभ्रमः ।  
 लक्षं शतं च सदृशत्वेन तथा येन दृष्टानि ॥ १२ ॥ नयं योषनं रूपं प्रकाशितं यत्तदं  
 गुणज्ञं ककुकेण जनवचनीयमलब्धं येन जने नैह संभरितम् ॥ १३ ॥ पापानां सुखं प्रकाशनां  
 तथा सुखा गतं धयसां तनयं ह्यत्र । प्रियं सुनरितैर्नित्यं येन जनः पाशितः मरुतः ॥ १४ ॥  
 येन नमता कदा सन्मानं गुणस्तुतिं कुर्यात् । अर्यता च अस्ति दृशं प्रयोक्षितं यत्तदं  
 नियहः ॥ १५ ॥ मरुमाह्वललस्य मणी परि लंका अर्यसुखैरेषः । अस्ति यो येन यत्तदं  
 सच्चरितं गुणैरनुशासः ॥ १६ ॥ गृहीत्वा गोपनानि निरी जाया कृताः यत्तदं । अस्ति यो  
 येन विषमं वदनाणं कल्पदृष्टे प्रकृतम् ॥ १७ ॥ नीलोत्पलं दृष्टानां यत्तदं यत्तदं  
 वृन्दैः । वेरलु पणश्रुत्वा एषा लूमिः कृतायेन ॥ १८ ॥ अर्यं शरीरं यत्तदं यत्तदं यत्तदं  
 श्रुतेषु श्रेष्ठे नक्षत्रे दिग्घु अर्ये यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं ॥ १९ ॥ श्री ककुकेण ह्यत्र  
 महाजनं विप्रं प्रकृतिं यत्तदं यत्तदं । रोहितं कृपं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं ॥ २० ॥  
 मण्डोत्रे एकी द्वितीये रोहितं कृपं यत्तदं । येन यत्तदं ह्यत्र यत्तदं यत्तदं यत्तदं ॥ २१ ॥  
 तेन श्री ककुकेन जितस्य दृष्टस्य दुग्धं निर्दलनम् । यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं  
 प्रकृषा सुतं जनकम् ॥ २२ ॥ अस्ति यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं  
 आश्रकं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं ॥ २३ ॥ यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं  
 योषनं । श्रीजाग्यं सुखं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं यत्तदं ॥ २४ ॥

( २६२ )

## पिंडवाडा ।

सिरोही राज्यका यह स्थान भी प्राचीन है । यहां रेलवे स्टेशन है और सिरोही जाने वाले लोग यहां उतर कर जाते हैं ।

( ११६ )

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुके श्री सिरोही नगरे रायि दूर्जण सालजी श्री विजय राज्य प्राग वंशे साह गोवंद भार्या घनी पुत्र केरहा भार्या चापलदे गुसदे पुत्र जीवा जिणदास केरहा पीडरवाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रसादे देहरी कारापितं श्री तथा गच्छे श्री कमल कलस सूरि तत्पहे श्री विजय दान सूरि । साः जीवा श्री योग्य सा० जीवा दिने १० अणसण सीधा संवत् १६०२ का० फागुण वदि ८ दिने अणसण सीधा शुभं भवतु कल्या० ॥

( ११७ )

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुके श्री सिरोही नगरे । रायि श्री दुर्जण साल जी विजय राज्य प्राग वंशे कीठारी छाछी भार्या हासिलदे पुत्र कीठारी श्री पाल भार्या चेतलदे तस्य पुत्र कीठारी तेजपाल राज पाल रतन सी राम दाम --- वाई छालदे श्रीयोग्य पीडरवाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रसादे देहरी कारापितं । श्री तथा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पहे श्री आणंद विमल सूरि तत्पहे श्री विजय दान सूरि । शुभं भवतु कल्याणमस्तु श्री० वा० छालदे श्री० ।

( ११९ )

सं० १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुके श्री सिरोही नगरे रायि श्री दूर्जण साल जी विजय राज्य प्राग वंशे कीठारी छाछी भार्या हासिल दे पुत्र कीठारी श्री पाल भार्या चेतलदे ।



समयो विनयो चित्ती चणो विजयते तनयो तयोरिमो ॥ ३ ॥ तत्रायः सउजम धेयी रज  
 रजाभिधो घनं । धनापह्य जन मूढ - राज मान्यो धियां निधिः ॥ ४ ॥ द्वितीय सुद्विती-  
 येदु कांति कांच गुणोश्चयः । धरणः धरणं श्रीणां प्रवीणः पुण्य कर्मणि ॥ ५ ॥ रत्ना देवी  
 धारल देवी जात्यो तयोरनुक्रमतः । समभूता मति निर्मल शीलालंकार धारिणी  
 ॥ ६ ॥ तस्य सुता ५-तेजा पासल वास जाहणेनाख्याः । शांत स्वभाव कलिषा गुण  
 बरु मलयाः कला निलयाः ॥ ७ ॥ इतरश्च । श्री प्राग्वाटाभिध जाति शृंग शृंगार  
 शेषरः । पुरा भून्महुणा नामा ध्यवहारी धरस्थितिः ॥ ८ ॥ तस्य जोला मिधः सुनु स्त-  
 त्युप्रो भावदोऽद्यतः ॥ ९ ॥ तदीय पुत्रः सुगुणैः पवित्रः स्वाजन्य वित्तः सुनया सूचितः ।  
 लीलाभिधानः सुकृति प्रधानः सरकार्यं धुर्यो ध्यवहार धर्यः ॥ १० ॥ मयणा देवी नाम सु  
 देवी विख्यात संहिक तस्या दयिते दययो पेतै शीलामुद्यम गुण कलिते ॥ ११ ॥ मयणा  
 देवी तनुजो मनुजो चित्त चारु लक्ष्मणो पेतः । जमरो अमरो गुरु जन जन -- जनन्यादि  
 पद कमले ॥ १२ ॥ प्रीम कांत गुण रुयाते प्रजा पाठन लालसे । हाजाभिधे धरा धीर्गे  
 प्राज्य राज्यं - रीक - ॥ १३ ॥ आस्यामुजाभ्यां धनि पूर पाठ लीयाभिधाभ्यां सदु-  
 पासकाभ्यां । ग्रामेऽग्निने पीडर वाडकारुणे प्रसाद - - - विरुद धारि सारः ॥ १४ ॥  
 विक्रमाद्वाण तर्कविध भूमिते वरसरे तथा । फाल्गुनाख्ये शुभे मासे शुक्रायां प्रतिपत्तियो  
 ॥ १५ ॥ कतयाण वृद्धे भ्युदयेक दायकः, श्री वर्द्धमान श्वरमो जिनेश्वरः । श्री मत्तपः  
 संयम धारि नूरिभिः प्रतिष्ठितः स्पष्ट महा महादीह ॥ १६ ॥ आरथीदु समयादनया श्री  
 वर्द्धमान जिन नायक मूरया । राजमानमभिनंदतु विरवानंद दायक मिदंवर धैर्यं  
 ॥ १७ ॥ श्लो० ॥

राज श्री लमर सिंह जी लपावता देहनारा देहयो आरोहतो - कमनह कायोडह ।  
 आजक - वान देरा माहि घोडसइ तिनइ गवइ इ - गाल छह संवत् १७२१ वर्षे  
 मगसिर सुदि - ॥

( १६५ )

## वीरवाडा ( सिरोही )

महावीर स्वामी का मंदिर ।

( १७३ )

सं० १११० वर्षे श्रे० महम्मद शा० फर्रुखे दे० पु० जगन्नाथेन शा० सुतभद्रे पु० कदुवा  
देवहा समं वीरवाडा ग्राम श्री महावीर चैतन्योद्धारः स्थापितः कठोर्ध्वगतं मण्डपं स० श्री  
नरचंद्र सूरि पते श्री रत्नप्रज्ञ सुरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितः । संगण ३ प्राग्वात शालीयः ३

## वसंत गढ़ ( सिरोही )

( किले के अन्दर जैन मंदिर के मूर्ति पर ।

( अक्षर के दोनो तरफ पीठ पर )

( १७४ )

सं० १५०७ वर्षे भाव सुदि ११ वृषे राजा श्री कुंभ कर्ण राजे वसंत पुत्र श्रीके कदुवा  
कारको प्राग्वात द्वय० कर्णका शा० मेवादे पुत्र द्वय० संवत्सेन शा० शांतिनाथ पुत्र कर्णका  
पुत्र जीणादि युतेन प्राग्वात द्वय० धरणी शा० हीवी पुत्र द्वय० शारदाकेन शा० शारदा  
पुत्र जायतेन शौजादि युतेन मूढ नायक श्री शांतिनाथ त्रिधे स्थापितं प्रतिष्ठितं मण्डपं श्री  
सोम सुन्दर सूरि कल्पहालंकरणं श्री मुनि सुन्दर सूरि श्री जय चन्द्र मूर्ति पद प्रतिष्ठित  
गण्डाधिराज श्री रत्न शीघर सूरि मुनिः ।

## पाटडी ( सिरोही )

( १७५ )

सं० १२१६ वर्षे भाव सुदि १० गुरी जयदेव श्री कदुवे महम्मदशाहिराज श्री शैल  
देव राज्ये कल्पप्र राज श्री जयक शीह देवी त्रिजयी ज - - कर्णका प्राग्वात शालीयः ३

( २११ )

श्रीरामय वासुदेव प्रभृति पंच कुलेन महं सूत्र देव सुत राजदेवेन देव श्री महावीर  
प्रभृति द्र० १ पादहाडी मध्यात् । बहुभिर्घंसुधा भुक्त्वा राजन्ति सागरादिभि यस्य यस्य  
यदा दत्तं तस्य तस्य तदा फलं ॥

### कालाजर ( नवाना के निकट )

( १५६ )

सं० १३०० वरधे जेठ सुदि १० सोमे अद्ये इ चंद्रावत्या महाराजाधिराज श्री आशुहृण  
सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्त्रियुक्त मुद्रायां महं श्री पेंता प्रभृति पंच कुल शासन  
मन्त्रि लिख्यते यथा महं श्री पेंताकेन - - - नान कलागर ग्रामे - - - - - श्री पार्श्व  
नाथ देवस्य ली - - - - रहिता - - - एव ॥ आशुंद्रार्क - - - यस्य यस्य यदा जूमी तस्य  
तस्य तदा फलं ॥ साखि राउठ० ब्रा अठिणव द्राद उव - ब्रजव - सोहण - - - वणादे  
सपा - - - - - कलहा ।

### कामद्रा ( सिरोही )

( १५७ )

श्री । श्री जिल्लमाड निर्यातः प्राग्घाटः वणिजांवरः श्री पतिरिच लक्ष्मी यग्गो ल  
( लक्ष्मी ) - राज पूजितः ॥ आफरी गुण रत्नानां यद्यु पद्म दिवाकरः उज्जकस्तस्य पुत्र  
स्थात् नम्मराम्मे ततो परी ॥ अज्जु सुत गुणाद्ये यामनेन जसाद्दयम् । दृष्ट्वा अके यह  
जेनं मुक्तये विश्व मनोहरम् ॥ सम्यत् १०९१ - - - - सपुने - ।

### उथमा ( सिरोही )

( १६१ )

संवत् १२५१ आषाढ वदि ५ गुरी श्री नाणकीय गच्छे उथण सवधिष्ठाने । श्रीपाश्व-  
नाथ शैले ॥ घनेश्वर पुत्रेण देव घरेण धीमता । सयुक्तेन यगोमद्र आरुहा पाशुहा

( २६७ )

सहोदरैः । यतो जटकर्य पुत्रेण । साहं वरा वरेण सा पुत्र वीर्यादि वृत्तेन भवति हेतु मह  
मना ॥ भगनी धारमद्वारुया । नृतरनेत्र यथा जटः । कारितं वेषे नाम्नी । रत्नेद्वारुया  
महप ॥ छ ॥

## वर्षाणा ( सिरोष्ठी )

( २६८ )

संवत् १३५६ वर्षे वैशाख शुदि १० शनि दिने न - - - ल देशे वायु सौम्यामे महा-  
राजा श्री सामंतसिंह देव फलयाण विजय राज्ये एवं काजे वरांमाने सोलं० पाण्डु पु० राज-  
रसोलं० गामदेव पु० जांगदु मंडलिक सोलं० सी माट पु० कुनापारा सो० माया पु०  
मोहण त्रिभुवण पहा सोहरपाल सो० धूमण पटं पायत् वणिन् सोहा सयं सोरही सम-  
दायेन वाचसीण ग्रामीय अर - - हट अरहट प्रति गोधूम से० १ दोवडा प्रति गोधूम  
सेहं २ तथा धूठिया ग्रामे सो० नवण सोह पु० जयत माल सो० मंडलिक अरहट प्रति  
गोधूम सेहं १ दोवडा प्रति गोधूम सेहं २ तेलिका २ श्री भांतिनाय देवस्य यात्रा महा-  
त्सव निमित्तं दत्ता ॥ एतत् जादानं सोरही समुदायः दानद्वयं पाठनीयं च । जायदानं च  
यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ मंगलं भवतु ॥

## टाजनीतोडा ( सिरोष्ठी )

( २६९ )

संवत् १२ वर्षे ११ माह सु० ६ धे० जेनु अरहट प्रति पनेमणिक वृत्तन सोह  
पतिना । पाऊ रतु ।

( २७० )

मन्दिर पर लपन सिपेन करायी ।



( २६८ )

## नोदिया ( सिरोही )

( १६२ )

संवत् ११३० वैशाख सुदि १३ नन्दियक चैत्य साले बापी निर्मापिता सिव गणेः ।

( १६३ )

ॐ ॥ सतिणि सील वंता च । सद्भाव भक्ति संयुता ॥  
जिन गृहे सैल स्तंभा द्वी । मंडप मूले धापिताः ॥ १ ॥

श्री महावीर स्वामि जी के मन्दिर के स्तंभ पर ।

( १६४ )

ओं ॥ संवत् १२०१ भाद्रवा सुदि १० सोम दिने नित्रा भार्या वरा पुत्र मोतिप्रिया  
स्तंभ का० २

( १६५ )

श्री विजयते ॥ संवत् १२६८ वर्षे पोस सुदि ३ राठउड पून सीह सुन रा० कमण  
श्रेयोर्वं पुत्र श्रीमेष स्तंभो कारितः ॥ श्री - - - - सुरि श्री - - ।

## कोटरा ( सिरोही )

( १६६ )

॥ पूर्व डीडिला ग्राम मल नायकः श्री महावीरः संवत् १२०८ वर्षे पिप्पल गण्ठीय  
श्री विजय सिंह सुरिसिः प्रतिष्ठितः परचात वीर परया प्रा० साह सहदेव कारिते प्रसादे  
पिप्पालचार्य श्री वीर प्रसन्न सुरिसिः स्थापितः । संवत् १२१५ वर्षे ।

( १६८ )

## वरमांण ( त्रिशोष्ठी )

( १६९ )

सं० १३५१ वर्षे माघ यदि १ सोमे प्राग्वाट हातीय ह्ये० सायण भा० रावतु पु० पुत्र  
सीह भा० २ पद्मल जालू पुत्र पद्मेन भा० साहित्य पुत्र विजय सोम सवित्र जिन  
युगल युग्मं कारितं ॥ छ ॥

( १७० )

सं० संवत् १४२६ वर्षे वैशाख यदि ११ बुधे प्राग्वाणीय गण्डे महाराष्ट्र ह्ये० सायण भा०  
सूरि पट्टे श्री नंदिशयर सूरि पट्टे श्री विजय येन सूरि पट्टे श्री महाशर सूरि पट्टे श्री  
हेम तिलक सूरिभिः पृथं गुण धेयोर्थं रंग मंलयः कारापितः ॥

## लोढाना ( त्रिशोष्ठी )

( १७१ )

संवत् १६०८ वर्षे उदे सीह सुत पद्म सीह ।

## नाकरोत्ता [ त्रिशोष्ठी ]

( १७२ )

श्री सुविधि जिन प्रासादान् नाकरोत्ता नख्येः । संवत् १६१४ वर्षे जमल कालसा नख्ये  
महाराष्ट्र ह्ये० सायण भा० रावतु पु० पुत्र सीह भा० २ पद्मल जालू पुत्र पद्मेन भा० साहित्य पुत्र विजय सोम सवित्र जिन  
युगल युग्मं कारितं ॥ छ ॥

( १७० )

मोटा सा० घना मु० दूसरय जीवा सा० अमरा सा० कोठारी करमसी सा० केसर सा० जग-  
न्यायसा० लयमा सा० राजा लाधा संपा तेजाः जीवाः पीथाः जगा अमरा रण छोड़ देवा देवा  
प्रगवान रामजी राज जोगा कल्याणः सुजाणः जोगाः रामजी आसा वाइं चांपी वाइं जगी  
समस्त श्राविक श्रावि-काइ सेवा प्रगति मली रीति कीधी संघस्य कल्याणाय भवतु ।

## धवली [ सिरौही ]

( १७१ )

॥ सं० । १८६१ वैशाख शुक्र ५ बुध वासरे श्री महावीर प्रसाद जीर्णोद्धार श्री संघेन  
प्राग्वाह ज्ञातीय सा० । सुभचंद्र मोती सा । लुंया उमा सा । तलका वाला प्रमुख  
कारापितम् तस्यो परी ध्वज दंड गच्छ नायक श्री कमल कलसा गच्छेश प्रहा० । श्री  
त्वजय महेंद्र सूरिस्वरभिः प्रतिष्ठितम् गं० । पं० हुंजर विजय वां० । नघु प्रमुख,  
इति ज्ञेयम् । शुभं

## सीवेरा [ सिरौही ]

( १७२ )

संवत् १६६५ वर्षे पंडित श्री माहा शिष्य जय कुशल जस कुशल कातिक चोमासु  
कीधु ठाणाः २ सीवेरा ग्रामे ।

## जरिवल पार्श्वनाथ [ सिरौही ]

( १७३ )

संवत् १२८३ वर्षे प्रथम वैशाख शुदि १३ गुरी श्री अंबल गच्छे श्री मेरु सुद्ध सूरिणां  
पक्षोद्धारण श्री जय कीर्ति सूरिप्रवर सुगुरुपदेशेन पत्तन वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय मोठ

दीया सा० संग्राम सुत सा० सलपण सुत सा० नेजा त्तार्या मज्जत दे तयो, पुत्रा सा०  
हीडा सा० पीमा सी० जूरा सा० काया सा० गांगा सा० शीटा सुत सा० नाग राव सा०  
काठा सुत सा० पामा सा० जीय राज सा० जिणदास सा० नेजा द्वितीय सा० सा० मर  
सिंह त्तार्या कडनिगदे तयो: पुत्री सा० पाम दत्त सा० देव दत्त सा० जीराउला पाण्डेनाथ  
स्य घेत्ये देहरी ३ कारापिता थी देव गुरु प्रसादात् प्रवर्तुमान इष्टं मांगलिकं भूयात् ॥

ओं ॥ सं० १९८३ वर्षे ज्ञाद्रया वदि ७ गुरु कृष्ण पक्षे थी तथा गणेश नाचक थी थी  
देव सुंदर सूरि पदे थी सोम सुंदर सूरि थी मुनि सुंदर सूरि थी जयशंकर सूरि थी भुवन  
भुवन सुंदर सूरि उपदेशेन थी कल यर्था नगरे कौठारी प्राहउ सामत ग नाने थी मरपति  
सा० देमाई पुत्र सं० उकदे पासदे पूनसी मना थी उसवाल झातीय कटारिया गोत्र थी  
जीराउला सुयने देव कुलिका कारापिता ॥ गुनं जयतु ॥ थी पाण्डेनाथ प्रसादात् ॥  
ओं कटारिया गोत्र वरं महीयं नास्तुं पिता मे जननी देमाई । थी सोम सुंदर सुयसुंर  
श्रदेयाः थी छालज मंदन मात्र शाळ ॥ १ ॥

ओं ॥ सं० १९८३ वर्षे ज्ञाद्र वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे थी तथा गणेश नाचक थी  
देव सुंदर सूरि पदे थी सोम सुंदर सूरि थी मुनि सुंदर सूरि थी जयशंकर सूरि थी भुवन  
सुंदर सूरि थी उपदेशेन थी कल यर्था नगरे थी उसवाल झातीय सा० मरपति ममाने सा०  
जयता सा० या० तिलज सुत सं० समरसी सं० मोरपी थी जीराउला सुयने देव कुलिका  
कारापिता । गुनं जयतु । थी पाण्डेनाथ प्रसादात् ।

ओं ॥ सं० १९८३ वर्षे ज्ञाद्रया वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे थी तथा गणेश नाचक थी  
देव सुंदर सूरि पदे थी सोम सुंदर सूरि थी मुनि सुंदर सूरि थी जयशंकर सूरि थी भुवन

( २७२ )

सुंदर मूरि उपदेशीन श्री कठवर्मा नगरे जोसवाल ज्ञातीय म० मलुकी संताने सं० रत्न  
मार्था श्री० वीर सुत सं० आमसी श्री जीराउल मुवने देवकुलिका कारापिता । गुप्त मवत  
श्री पार्यनाथ प्रसादात् ॥ छ ॥ सा० आमसी पुत्र गुणराज सहस राज ।

( २७३ )

स्थिति श्री संवत् १९०१ वर्षे वैशाख सुदि ३ गृहत्तपा पत्ने मटा० श्री रत्नाकर मुरी-  
जामनुक्रमेण श्री अन्नसिंह सूरिणा पट्टे श्री जय तिलक सूरिश्वर पट्टावर्तन मटा० श्री  
रत्न सिंह सूरिणामुपदेशेन श्री वीसल नगर वास्तव्य प्रारथाटान्त्रय मंडन श्री० पेत सोड  
नंदन श्री० देवाळ सीह पुत्र श्री० पोपा तस्य जार्था सं० प्रणउ देव्ये तयोः सुता सं० सादा  
सं० दादा सं० मूदा सं० दूघान्निधै रेतैः कारि ।

( २७४ )

स्थिति संवत् १५०८ वर्षे आषाढ सुदि १२ गने सु० काळा सुहडा नरसी श्रीमा  
मांडण सांडा गोपा मेरा मोकल पांन्ना सुरा निरय प्रणम्य अष्टांग सकुटुम्ब ।

( २७५ )

श्री ॥ सं० १८५१ वर्षे आषाढ सुदि १३ दिने श्रीजीरावल पार्यनाथजीरो जीर्णोद्धार  
कारापितः सकल महारक पुरंदर महारक जी श्री श्री श्री श्री श्री १०८ - श्वर राज्येन  
जीर्णोद्धार करापितं हजार ३०१११ रुपिया परचीवी नाल लीयो श्री जीरावल वास्तव्य  
मु० । अजा । श्री । दला । सा० कला । सा० रसा । सा० सवा । सा० जोपन सा०  
अपला । सा० वारम । सा० रामल । - - - यकी काम कारापितः । जोभी नुरगा ।  
मातृ राजा जात्रा सकलः ॥

### श्री अंजारा पादार्चनाय ।

स्वति श्री संवत् १६५२ वर्षे कार्तिके षष्ठी ५ तृते तेषां जगद्गुरुणां सर्वेषां देवतायां  
 सोम्याद्यादि गुणगण श्रवणात् चमस्कृतेर्नंदाराजाधिराज पाति गतिं श्री चक्रवर्ति-  
 निधानैः गुर्जरदेशात् दिल्ली मंडलेषु बहुमानमाकार्यं प्रसीपदेगु कर्तव्यं पृथक् पृथक्  
 कोश समर्पणं हायरात्रिधान महासुरो मत्स्यवध निवारणं प्रति वर्षं पद्मसामिनायाः  
 प्रवर्तनं सर्वदा श्री शत्रुज तीर्थं मुंडकात्रिधान पर निवर्तनं श्रीत्रिपात्रिधान कार्तिके  
 निज सकल देश दानमृत स्वमीपनसदेष चंद्र्य रूप निवारणं विजयदि ५मं पुनः  
 प्रवर्तं तेषां श्री शत्रुजये सकल देश संवयुत कृत चाप्राणां जगद्गुरुं श्रीशत्रुजं विजयदि  
 निवाणां शरीर संस्कार स्नानासत्र फलित नृहकारणां श्री विजय विजय श्रीविजयराणां  
 प्रति दिनं दिव्य नाद्यनाद श्रवण दीप दगंतादिके जीम प्रसादाः स्तूप साहिबाः पादुका  
 कारिताः पं० मेघेन प्रायां छाहकी प्रमूख पुद्गुष पुनेन प्रतिदिनं शत्रुज तपान्तरायाः  
 प्रहारक श्री विजयसेन सूरिभिः श्री श्री विमल हर्षे गतिं श्री श्री प्रयाग विजयगतिं श्री  
 श्री सोम विजय गणिभिः प्रणता ज्ञान्य जनेः पुत्र्यमानाभिर्न नन्दतुं विजयता प्रणति  
 पद्मार्णदगणिना श्री उदत नगरे शुभं प्रथतु ॥

### श्री कापडा पादार्चनाय ।

संवत् १६७८ वर्षे अशाढशुक्ल १५ तिथी सोमवारे स्वामी महाराजाधिराज महाराजा  
 गजसिंह विजय राठवे जज्ञे रावठारवण संताने प्रांदागारिह गार्थे जगता पुत्र प्रीतिर्न  
 प्रायां जगतादेः पुत्र इत्य मारावण नरसिंह खेहटा पीय तारा कट नगर-गतिं राठवे

( २६१ )

परिवार सहितेन श्री श्रीकपटहेटके स्वयंभु पार्वनाय चैत्ये श्री पार्वनाय ...  
...सिद्ध सूरि पहालकार श्री जिन चंद्र सूरिमिः सुप्रसन्नो भवतु ।

## अलवर ।

अलवर राज्यकी राजधानी यह छोटा और सुन्दर शहर है ।

( १६१ )

सं० १२५५ माघ सुदि १ - - - - ।

( १६३ )

सं० १२६२ वै० श० ५ गुरी श्री - - - यंशे पिता मही प्याऊपिउ पितृ सीला श्रेयोर्थे पुत्र  
भाग दिन - न जा० जागत्र मातृ एतेन सहितेन श्री पार्वनायो विप्र कारितः ।  
प्रतिष्ठित श्री पार्वनदेव सूरिमिः ।

( १६४ )

सं० १३०३ वर्षे माघ सुदि - - सोमे देवानं हित गच्छे श्री० १ साला मायां सिंगार देवी  
पुण्यायं सुत हरिपाठादितिः श्री शांतिनाय विप्र कारित प्रतिष्ठित श्री सिद्धत सूरिमिः ।

( १६५ )

सं० १३२२ वैशाख सुदि ३ यरुपति कलेन साणे छोटा - - - - ।

( १६६ )

सं० १३५८ जेष्ठ वदि ५ गुरु श्री उपकेश गच्छे लिङ्ग - । गोत्रे - - - सा० विप्र चर  
मिर पाल मायां पुत्र कीर्त्तहा मणि चंद्र साइव वाहवादि सहिताभ्यां कटुम्ब श्रेयोर्थे श्री  
शांतिनाय विप्र सा० प्रति० श्री कङ्क सूरिमिः ।

सं० ११८० वर्षे फागुण सुदि १० - - उ० छत्रप्राठ गोप्रे साः निहृता पुः सोना हाः  
सोनादे - - - - - शांति नाथ विंश - - - - -

सं० ११८६ वर्षे मागसिर सुदि ५ काकनिया गोप्रे साः साधारण हरपुत्र, साः यति  
श्री आदिनाथ विंश करापितं श्री नचचन्द्र नृसिंहिः प्रतिष्ठितं ।

सं० १५०१ पौष अदि ६ शुभे श्री तुंगद शारदाय परज गोप्रे उ० कडुसा साः कामरु हे  
सुत ठकुर पीमा ज्ञा० कपिणी - - सुनीया पीमा सुत देवनी करमा देवनी ज्ञाः यमपु  
सुत लखमा धरमा यना यना देवी । करमा ज्ञा० शान्ति कडुसा शारदा श्रीश्री पुत्र साधारण  
परिवार सहितेन उ० देव सिंघेन श्री संभव नाथ विंश कारापितं नच पुत्राये प्रः श्री  
सर्व सूरारिभः ।

सं० १५०१ वर्षे माघ अदि ६ उपजेम शारदा सोदा गोप्रे साः शारदा पुत्रा पुः शारदा  
केम निज पूयजा वैमधर साहा प्रारपथं श्री आदिनाथ विंश कारापितं श्री साधारण  
गण्टे प्रः श्री देव सुंदर नृसिंहि पदे प्रः श्री सोम सुंदर नृसिंहिः ।

सं० १५१२ वर्षे फागुण सुदि १२ शुभे उ० ज्ञा० गणपत गोप्रे साः साधारण शारदा  
पाल्हीदे पुत्र सं० साध साधर सोदाय साधारणपणे श्री सुमतिनाथ विंश कारापितं प्रः  
श्री मलधार गण्टे गुण सुंदर नृसिंहिः ।



( २७६ )

( २७७ )

सं० १५१६ वर्षे अषाढ वदि ६ शनी भरतपुर ज्ञा० हीपोहीया - - - सा जगसी  
सा० हर श्री पु० स० हापा स० घर्मा हापा घर्मा भा० खेहा पु० माहवा भा० गागी पु०  
नाथ चांदा युतेन श्री शांतिनाथ विंथ का० प्र० श्री चैत्र गण्डे प्र० श्री गुणाकर सूरिनिः ।

( २७८ )

सं० १५२६ वर्षे जेठ वदि १३ मंगळ वारे उपकेश जातीय नाहर गोत्रे घेता पु० रुग्णा  
भार्या रजलदे मुकांवर अमरा - - - - श्री शांतिनाथ विंथ कारित प्र० श्री घर्मचोप गण्डे  
श्री महेंद्र सूरिनिः ।

( २७९ )

सं० १५२६ वर्षे बैशाख वदि ५ दिने उप० ज्ञा० वालटव गोत्रे सा० - - दे पु० राउळ  
पु० सुर जल सीहा - - - मातृ पितृ पुन्यार्ये आत्म श्रेयसे श्री वास पृज्व विंथ करापित  
प्र० उप० गण्डे ककु० संताने प्र० श्री ककु सूरिनिः ।

( २८० )

सं० १५२७ वर्षे पौष वदि २ गुरी श्री माल ज्ञातीय धोष्टे जोगा भार्या स्तू सुत हेमा  
हरजाभ्यां पितृ मातृ निमित्त आत्म श्रेयोर्ये श्री अजितनाथ विंथ का० प्र० श्री महेंद्र  
गण्डे श्री घन प्रभ सूरिनिः । मेळिपुर नगरे ।

( २८१ )

सं० १५२८ वर्षे अषाढ सुदि २ सोम श्री उकेश वर्ये संखवाल गोत्रे सा० मेहा पुत्र  
ना० हेककिन आतृ उचरण चेला पु० पोमादि सहितेन श्री शांतिनाथ विंथ का० प्र०  
श्री गण्डे श्री जिन चंद्र सूरिनिः ।

( २९९ )

( ३०० )

संवत् १५५८ वर्षे -- सु० ११ गुरी उपदेश जातीय श्री रांदा मोक्ष साधक सुक मधु-  
हठेन महाराज महिष -- युतेन आत्म श्रेयसे श्री मुनि सुत्रक रथामि विंय कर्मिण प्रसिद्धि  
श्रीमद्रूकेश गच्छे श्री कण्डुदाचार्य संताने श्री कङ्कसूरि पठे श्री देव सुम सुर्विण ।

( ३०१ )

सं० १५६१ वर्षे पोस यदि ५ सोमे आंश चंशे छोटा गोत्रे कठभरी काया भावां  
मैत्राणि सु० प्रेम पाल -- सुभ्रावकेण - तेजपाठ शेषोचं श्री मधुसुत मध्ये श्री आद्य सागर  
सूरिणामुपदेशेन श्री आदि नाथ विंय का० प्र० श्री र --

( ३०२ )

सं० १६६१ वै० सु० ज० प्र० सप्तमी - - - ।

( ३०३ )

सं० १८३१ सोम शुक्र पक्षे द्वा० तिथी १२ बुधे श्री प्रथम जिन विंय कारित मधुसुत  
नगर वास्तव्य श्री संघेग मठधार पुननियां विजय गच्छे सायंसीम मधुसुत का विंय  
चंद सागर सूरि पहालंकार सोनित श्री जिन यांति सागर सुर्विण प्रसिद्धि  
मधुसुत मध्ये ।

पटना न्युज्यम ।

( ३०४ )

संवत् १८०९ शके १८३८ प्रवर्तमाने सुम ज्येष्ठमासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथी श्रीमद्विंय  
श्री च्यवहार गिरि शिखरे श्री यांतिजिन परण प्रसिद्धि मधुसुत श्री विंयार्थ सुर्विण ।

संवत् १९११ वर्षे शाके १७७६ शुचि ॥ • दिने श्री शांतिजिन पादभ्यासः ॥ प्रतिष्ठितः  
 सरस्वर गण्ड महारक श्री महेंद्र सुरिभिः सेठ श्री उदयचंद्र भायां पास कुमारजी ॥

## उपसंहार ।

सर्व शक्तिमान परमात्माके कृपासे यह "जैन लेख संग्रह" एक सहस्र लेख सहित वर्षप्रथम समाप्त हुआ । इस संग्रह के लेखोंके गुण दोष विचारकी आवश्यकता नहीं है । जैनियोंकी प्राचीन कीर्ति संरक्षण ही मुख्य उद्देश्य है । मुद्राकरके दोष से, संशोधन-कर्ताके प्रमाद इत्यादि कारणोंसे छपाई में बहुत अशुद्धियां रह गई हैं । प्रथमतः कि बिद्वज्जन अपराध क्षमा करें और सुधार कर पढ़ें । और पाठक जनों से निवेदन है कि बहुत सी अशुद्धियां मूल में ही विद्यमान हैं, जिसको सुधारा नहीं गया है । पाठकोंके सुगमताके लिये ज्ञाति, गोत्र, गण्ड, जाचार्योंकी अक्षरादिक्रमसे तालिका भी दी गई है । जिन सज्जनोंने "संग्रहमें" मदद दी है उन सभीका मैं कृतज्ञ हूँ । यदि यह संग्रह जैन भाई-भादरसे ग्रहण कर मुझे अनुगृहीत करें तो इसका दूसरा भाग भी प्रकाशित करने का उद्योग चलेगा । अलमिति विस्तरेण ।

कलकत्ता

संग्रहकर्ता

ई. सं. १९१८













ज्ञाति-गोत्र	लेखांक	ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
सुहृदोद	१३१	पत्न्य	२२२
सौहृदिक	१३२	गोत्र ( ज्ञाति, वंशादि उल्लेख नहीं है )	२२३
प्रापका	२१६	उत्तापका	२२४
वार्त्तिकीया	१३	उत्तम	२२५, २२६, २२७
परमजा	१३३	गोत्र	२२८
मातृजा	२१	कातृद	२२९
मोद	२४५, २४६	मोदी	२३०
राजपूत		गोत्रशृंग	२३१
गोत्रमान	२२२	उत्तर	२३२
गोत्रपुत्र	१४२	दोस्रो	२३३
प्रतिपक्ष	१४३	दुताद	२३४
पत्न्यद	३४३	प्राप	२३५
गोत्रकी	२११	प्रापका	२३६
लघुशाम्या	२१२	मिथुन	२३७
बधेरवाल	२२८	सुहृदा	२३८
[ गोत्र ]		गोत्रका वंशी	२३९
गण भंडारी	४३८	रदुगामी ( )	२४०
संभारका	३२६	वनागामी	२४१
शाम्बापति	६२८	पुत्रपत्नी सुहृदा	२४२
चंद्रोद	८४३	वार्त्तिकीया	२४३
मोद	३१८	शाम्बा	२४४
दुषद	२४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९	पत्न्यद	२४५
[ गोत्र ]		पतिपत्नी	२४६
गोत्र	४३२	संभारका	२४७
संभारका	१६		
संभारका	१६		

## आचार्यों के गच्छ और संवत् की सूची ।

संवत्	नाम अंचल गच्छ ।	दिनांक	संघत्	नाम	संघत्
१४२०	मैत्राण्ड्य गच्छ	१५२	१४४१	श्री गच्छ	१४४१
१४४१	"	१५३	१४४२	शुभोत्पत्ति गच्छ	१४४२
१४४२	अथर्ववेदि गच्छ	१५४	१४४३	अथर्ववेदि गच्छ	१४४३
१४४३	"	१५५	१४४४	<b>व्यास गच्छ ।</b>	
१४४४	अथर्ववेदि गच्छ	१५६	१४४५	अथर्ववेदि गच्छ	१४४५
१४४५	"	१५७	१४४६	विष्णु गच्छ	१४४६
१४४६	"	१५८	१४४७	"	१४४७
१४४७	"	१५९	१४४८	विष्णु गच्छ	१४४८
१४४८	"	१६०	१४४९	विष्णु गच्छ	१४४९
१४४९	"	१६१	१४५०	विष्णु गच्छ	१४५०
१४५०	"	१६२	१४५१	विष्णु गच्छ	१४५१
१४५१	"	१६३	१४५२	विष्णु गच्छ	१४५२
१४५२	"	१६४	१४५३	विष्णु गच्छ	१४५३
१४५३	"	१६५	१४५४	विष्णु गच्छ	१४५४
१४५४	विष्णु गच्छ	१६६	१४५५	<b>उपनिषद् गच्छ ।</b>	
१४५५	अथर्ववेदि गच्छ	१६७	१४५६	अथर्ववेदि गच्छ	१४५६
१४५६	"	१६८	१४५७	अथर्ववेदि गच्छ	१४५७
१४५७	"	१६९	१४५८	अथर्ववेदि गच्छ	१४५८
१४५८	"	१७०	१४५९	अथर्ववेदि गच्छ	१४५९
१४५९	अथर्ववेदि गच्छ	१७१	१४६०	अथर्ववेदि गच्छ	१४६०
१४६०	अथर्ववेदि गच्छ	१७२	१४६१	अथर्ववेदि गच्छ	१४६१
१४६१	अथर्ववेदि गच्छ	१७३	१४६२	अथर्ववेदि गच्छ	१४६२
१४६२	अथर्ववेदि गच्छ	१७४	१४६३	अथर्ववेदि गच्छ	१४६३
१४६३	अथर्ववेदि गच्छ	१७५	१४६४	अथर्ववेदि गच्छ	१४६४
१४६४	अथर्ववेदि गच्छ	१७६	१४६५	अथर्ववेदि गच्छ	१४६५
१४६५	अथर्ववेदि गच्छ	१७७	१४६६	अथर्ववेदि गच्छ	१४६६
१४६६	अथर्ववेदि गच्छ	१७८	१४६७	अथर्ववेदि गच्छ	१४६७
१४६७	अथर्ववेदि गच्छ	१७९	१४६८	अथर्ववेदि गच्छ	१४६८
१४६८	अथर्ववेदि गच्छ	१८०	१४६९	अथर्ववेदि गच्छ	१४६९
१४६९	अथर्ववेदि गच्छ	१८१	१४७०	अथर्ववेदि गच्छ	१४७०
१४७०	अथर्ववेदि गच्छ	१८२	१४७१	अथर्ववेदि गच्छ	१४७१

संख्या	नाम	लेखांक	संख्या	नाम	लेखांक
१३१७	देवगुप्त म०	२३८	१३२३	देवगुप्त म०	११८
१३१८	कक म०	२३९	१३२४	कक म०	११९
१३१९	"	२४०		<b>अंतराध गण्ट</b>	
१३२०	"	२४१	१३८०	म० नागकर	११७
१३२१	"	२४२		<b>[क] ठोलीवाल गण्ट</b>	
१३२२	"	२४३	१३८१	विजयगज म०	११८
१३२३	मिठ म०	२४४		<b>कहुआमति गण्ट</b>	
१३२४	कक म०	२४५	१३८२	...	११९
१३२५	देवगुप्त म०	२४६		<b>कमलकलसा गण्ट</b>	
१३२६	"	२४७	१३८३	...	
१३२७	"	२४८	१३८४	...	
१३२८	"	२४९	१३८५	...	
१३२९	"	२५०	१३८६	...	
१३३०	कक म०	२५१		<b>कृष्णपि गण्ट</b>	
१३३१	देवगुप्त म०	२५२	१३८७	मण्डलमंड म०	१२०
१३३२	"	२५३	१३८८	मण्डलमंड म०	१२१
१३३३	मिठ म०	२५४	१३८९	मण्डलमंड म०	१२२
१३३४	"	२५५		<b>कोरंट गण्ट</b>	
१३३५	देवगुप्त म०	२५६	१३९०	मण्डलमंड म०	१२३
१३३६	मिठ म०	२५७		मण्डलमंड म०	१२४
१३३७	कक म०	२५८		मण्डलमंड म०	१२५
	<b>विद्युत्पौक गण्ट</b>		१३९१	मण्डलमंड म०	१२६
	( उपर्युक्त )		१३९२	"	१२७
१३३८	मिठ म०	२५९	१३९३	"	१२८
१३३९	कक म०	२६०	१३९४	कक म०	१२९









संयन्त्र	नाम	दिनांक	संख्या	नाम	दिनांक
१०१५	विद्यार्थिनी संघ	१९५५	१०१५	विद्यार्थिनी संघ	१९५५
१०१६	"	१९५६	१०१६	"	१९५६
१०१७	"	१९५७	१०१७	"	१९५७
१०१८	"	१९५८	१०१८	"	१९५८
१०१९	विद्यार्थिनी संघ	१९५९	१०१९	विद्यार्थिनी संघ	१९५९
१०२०	विद्यार्थिनी संघ	१९६०	१०२०	विद्यार्थिनी संघ	१९६०
१०२१	"	१९६१	१०२१	"	१९६१
१०२२	"	१९६२	१०२२	"	१९६२
१०२३	"	१९६३	१०२३	"	१९६३
१०२४	विद्यार्थिनी संघ	१९६४	१०२४	विद्यार्थिनी संघ	१९६४
१०२५	विद्यार्थिनी संघ	१९६५	१०२५	विद्यार्थिनी संघ	१९६५
१०२६	"	१९६६	१०२६	"	१९६६
१०२७	"	१९६७	१०२७	"	१९६७
१०२८	"	१९६८	१०२८	"	१९६८
१०२९	विद्यार्थिनी संघ	१९६९	१०२९	विद्यार्थिनी संघ	१९६९
१०३०	विद्यार्थिनी संघ	१९७०	१०३०	विद्यार्थिनी संघ	१९७०
१०३१	"	१९७१	१०३१	"	१९७१
१०३२	"	१९७२	१०३२	"	१९७२
१०३३	"	१९७३	१०३३	"	१९७३
१०३४	"	१९७४	१०३४	"	१९७४
१०३५	"	१९७५	१०३५	"	१९७५
१०३६	"	१९७६	१०३६	"	१९७६
१०३७	"	१९७७	१०३७	"	१९७७
१०३८	"	१९७८	१०३८	"	१९७८
१०३९	"	१९७९	१०३९	"	१९७९
१०४०	"	१९८०	१०४०	"	१९८०



संख्या	नाम	लेखांक	संख्या	नाम	लेखांक
	<b>त्रिभुजिया गण्ड ।</b>				
१५१०	गणेश गण्ड	५१३	१५११	विद्युत् गण्ड	५१४
	पद्म गण्ड	५१४	१५१२	विद्युत् गण्ड	५१५
	<b>द्वैतानन्दित गण्ड ।</b>		१५१३	गणेश गण्ड	५१६
१५१२	विद्युत् गण्ड	५१५	१५१४	गोपक गण्ड	५१७
	<b>धर्मधोप गण्ड ।</b>		१५१५	गुरुवर्जित गण्ड	५१८
१५१६	गणेश गण्ड	५१६		<b>नाथकीय गण्ड ।</b>	
१५१७	गणेश गण्ड	५१७	१५१६	गणेश गण्ड	५१९
१५१८	गणेश गण्ड	५१८	१५१७	पद्म गण्ड	५२०
१५१९	गणेश गण्ड	५१९		गणेश गण्ड	५२१
१५२०	गणेश गण्ड	५२०		<b>नाथशाल गण्ड ।</b>	
१५२१	गणेश गण्ड	५२१	१५२१	गणेश गण्ड	५२२
१५२२	गणेश गण्ड	५२२		<b>निगमा त्रिभाषक गण्ड ।</b>	
१५२३	गणेश गण्ड	५२३	१५२२	गणेश गण्ड	५२३
१५२४	गणेश गण्ड	५२४		<b>पारिव्यास गण्ड ।</b>	
१५२५	गणेश गण्ड	५२५	१५२३	गणेश गण्ड	५२४
१५२६	गणेश गण्ड	५२६	१५२४	गणेश गण्ड	५२५
१५२७	गणेश गण्ड	५२७	१५२५	गणेश गण्ड	५२६
१५२८	गणेश गण्ड	५२८	१५२६	गणेश गण्ड	५२७
१५२९	गणेश गण्ड	५२९	१५२७	गणेश गण्ड	५२८
१५३०	गणेश गण्ड	५३०	१५२८	गणेश गण्ड	५२९
१५३१	गणेश गण्ड	५३१	१५२९	गणेश गण्ड	५३०
१५३२	गणेश गण्ड	५३२	१५३०	गणेश गण्ड	५३१
१५३३	गणेश गण्ड	५३३	१५३१	गणेश गण्ड	५३२
१५३४	गणेश गण्ड	५३४	१५३२	गणेश गण्ड	५३३
१५३५	गणेश गण्ड	५३५	१५३३	गणेश गण्ड	५३४
१५३६	गणेश गण्ड	५३६	१५३४	गणेश गण्ड	५३५
१५३७	गणेश गण्ड	५३७	१५३५	गणेश गण्ड	५३६
१५३८	गणेश गण्ड	५३८	१५३६	गणेश गण्ड	५३७
१५३९	गणेश गण्ड	५३९	१५३७	गणेश गण्ड	५३८
१५४०	गणेश गण्ड	५४०	१५३८	गणेश गण्ड	५३९
	<b>नागेश गण्ड ।</b>		१५३९	गणेश गण्ड	५४०
१५४१	गणेश गण्ड	५४१	१५४०	गणेश गण्ड	५४१
१५४२	गणेश गण्ड	५४२	१५४१	गणेश गण्ड	५४२
१५४३	गणेश गण्ड	५४३	१५४२	गणेश गण्ड	५४३
१५४४	गणेश गण्ड	५४४	१५४३	गणेश गण्ड	५४४
१५४५	गणेश गण्ड	५४५	१५४४	गणेश गण्ड	५४५
१५४६	गणेश गण्ड	५४६	१५४५	गणेश गण्ड	५४६
१५४७	गणेश गण्ड	५४७	१५४६	गणेश गण्ड	५४७
१५४८	गणेश गण्ड	५४८	१५४७	गणेश गण्ड	५४८
१५४९	गणेश गण्ड	५४९	१५४८	गणेश गण्ड	५४९
१५५०	गणेश गण्ड	५५०	१५४९	गणेश गण्ड	५५०



संख्या	नाम	लखांक	संख्या	नाम	लखांक
<b>महेश्वर गण्ड ।</b>			<b>त्रिधिपन्न गण्ड ।</b>		
१२५५	महेश्वर गण्ड	११५	१२५५	त्रिधिपन्न गण्ड	११५
<b>यशसुर गण्ड ।</b>			<b>बृहस्पति गण्ड ।</b>		
१२५६	यशसुर गण्ड	११६	१२५६	बृहस्पति गण्ड	११६
<b>स्टूपक गण्ड ।</b>			<b>बृहद गण्ड ।</b>		
१२५७	स्टूपक गण्ड	११७	१२५७	बृहद गण्ड	११७
१२५८	स्टूपक गण्ड	११८	१२५८	बृहद गण्ड	११८
१२५९	स्टूपक गण्ड	११९	१२५९	बृहद गण्ड	११९
१२६०	स्टूपक गण्ड	१२०	१२६०	बृहद गण्ड	१२०
१२६१	स्टूपक गण्ड	१२१	१२६१	बृहद गण्ड	१२१
१२६२	स्टूपक गण्ड	१२२	१२६२	बृहद गण्ड	१२२
१२६३	स्टूपक गण्ड	१२३	१२६३	बृहद गण्ड	१२३
१२६४	स्टूपक गण्ड	१२४	१२६४	बृहद गण्ड	१२४
१२६५	स्टूपक गण्ड	१२५	१२६५	बृहद गण्ड	१२५
<b>शंभु गण्ड ।</b>			<b>सुरवाल गण्ड ।</b>		
१२६६	शंभु गण्ड	१२६	१२६६	सुरवाल गण्ड	१२६
१२६७	शंभु गण्ड	१२७	१२६७	सुरवाल गण्ड	१२७
१२६८	शंभु गण्ड	१२८	१२६८	सुरवाल गण्ड	१२८
१२६९	शंभु गण्ड	१२९	१२६९	सुरवाल गण्ड	१२९
<b>विजय गण्ड ।</b>			<b>सुंदर गण्ड ।</b>		
१२७०	विजय गण्ड	१३०	१२७०	सुंदर गण्ड	१३०
१२७१	विजय गण्ड	१३१	१२७१	सुंदर गण्ड	१३१
१२७२	विजय गण्ड	१३२	१२७२	सुंदर गण्ड	१३२
१२७३	विजय गण्ड	१३३	१२७३	सुंदर गण्ड	१३३
१२७४	विजय गण्ड	१३४	१२७४	सुंदर गण्ड	१३४
१२७५	विजय गण्ड	१३५	१२७५	सुंदर गण्ड	१३५
<b>विद्याधर गण्ड ।</b>			<b>सुंदर गण्ड ।</b>		
१२७६	विद्याधर गण्ड	१३६	१२७६	सुंदर गण्ड	१३६
१२७७	विद्याधर गण्ड	१३७	१२७७	सुंदर गण्ड	१३७









